अल्लाह से शर्म कीजिए

एक जामेअ रिवायत की तश्रीह के ज़िम्न में अहम तरीन इस्लाही मज़ामीन का मुरत्तब और मुस्तनद मज्मूआ

मुरत्तिब

मुफ़्ती मुहम्मद सलमान मन्सूरपुरी

अल्लाह से शर्म कीजिए

एक जामेअ् रिवायत की तश्रीह के ज़िम्न में अहम तरीन इस्लाही मज़ामीन का मुरत्तब और मुस्तनद मज्मूआ

मुरत्तिब

(मुफ़्ती) मुहम्मद सलमान मन्सूरपुरी

ख़ादिम-ए-फ़िक़्ह व हदीस, जामिआ क़ासिमिया मदरसा शाही मुरादाबाद

हिन्दी अनुवाद

मुफ़्ती मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

नाम किताबः

अल्लाह से शर्म कीजिए

मुरत्तिबः

(मुफ़्ती) मुहम्मद सलमान मन्सूरपुरी

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

कम्पोज़िंगः अ० तव्वाब

बा एहतिमामः

नासिर ख़ान

प्रकाशकः

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

ALLAH SE SHARAM KEJIYE

Compiled by: **Mufti Muhammad Salman Mansurpuri**

Pages: 440 Size: 23x36/16 *Edition:* **2014**

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो,
जैसा उससे डरने का हक़ है और तुम इस्लाम
के अ़लावा किसी और हालत पर जान मत देना"

(सूरः आले इम्रान, 102)

بفضلہ تعالیٰ وعونہ

इन्तिसाब

- अपने मुहिब्ब व महबूब और मुश्फ़िक़ और मुहसिन उस्ताज़-ए-आज़म फ़क़ीहुल उम्मत, आरिफ़ बिल्लाह हज़रत अक़्दस मौलाना मुफ़्ती महमूद हसन गंगोही नव्वरल्लाहु मरक़दहु मुफ़्ती-ए-आज़म दारूल उलूम देवबन्द के नाम – जिनकी तवज्जोहात-ए-आलिया और पुर-फ़ैज़ सोह्बतों को अल्लाह तआला ने हम जैसे हज़ारों लोगों की हिदायत और इस्लाह, तज़्कीरे आख़िरत और दीनी मिजाज़ में पुख़्तगी पैदा करने का ज़रीआ बना दिया। अल्लाह तआला आपकी क़ब्र को नूर से मुनव्वर फ़रमाये। आमीन
- अपने मख़्दूम व मुकर्रम वालिद-ए-मुअज़्ज़म हज़रत मौलाना क़ारी सय्यिद मुहम्मद उस्मान साहब मन्सूरपुरी मद्दज़िल्लहुल आली उस्ताज़-ए-हदीस व नाइब मोहतमिम दारूल उलूम देवबन्द के नाम – जो अहक़र के सिर्फ़ मुश्फ़िक़ बाप ही नहीं बल्कि मुहसिन तरीन उस्ताज़ और मुरब्बी भी हैं, जिनकी मिसाली तर्बियत और कामिल निगरानी इस नाकारा के लिए बराबर राहे हक़ पर इस्तिक़ामत और दीनी ख़िद्मात को अंजाम देने में मददगार बनती रही है। अल्लाह तआला आं मौसूफ़ का साया-ए-शफ़क़त व आतिफ़त सेहत और आफ़ियत के साथ क़ाइम रखे और आपकी इनायतों का बेहतरीन बद्ला दारैन में अता फ़रमाये। आमीन
- अपनी मख़्दूमा व मुकर्रमा वालिदा-ए-मुअज़्ज़मा मद्दज़िल्लहा (साहबज़ादी हज़रत शैख़ुल इस्लाम मौलाना सय्यिद हुसैन अहमद मदनी नव्वरल्लाहु मरक़दहु) के नाम – जिनकी मुख़्लिसाना सहरगाही दुआऐं अहक़र के लिए ज़िन्दगी का बड़ा सरमाया हैं। रब्ब-ए-रहमान व रहीम आं मौसूफ़ा का साया-ए-रहमत, सेहत व आफ़ियत के साथ बाक़ी रखे और आपकी दुआओं की बदौलत इस नाकारा को ऐसी दीनी ख़िद्मात की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए जो रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी के साथ वालिदैन मुहतरमैन के दिलों में सुरूर और आँखों में बे-मिसाल ठंडक पैदा करने का ज़रिया बन जायें। आमीन व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बि-अज़ीज़।

फ़क़त वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़

अहक़र **मुहम्मद सलमान मन्सूरपुरी ग़फ़र लहू**

14/2/1423 हिज्री

इज़्हारे मसर्रत और दुआ

○ अमीरुल हिन्द हज़रत मौलाना सय्यिद असुअद साहब मदनी दामत बरकातुहुम सदरे जमइय्यतुल उलमा-ए-हिन्द

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम, अम्मा बाद!

आजकल मुस्लिम मुआशरे में अख़्लाक़ी ज़बूंहाली हद से आगे बढ़ रही है हर तरफ़ बे-हयाई, मआसी और मुन्करात का चलन है, इस्लामी अख़्लाक़ ज़वाल की तरफ़ हैं। आख़िरत से ग़फ़्लत आम है हालांकि क़ुरआन और हदीस में जगह जगह इस्लामी अख़्लाक़ अपनाने, अल्लाह तआला से डरने और आख़िरत को याद रखने की निहायत ताकीद आई है।

मुझे ख़ुशी है कि अज़ीज़म मौलवी मुफ़्ती मुहम्मद सलमान मन्सूरपुरी सल्लमहू ने अम्र-बिल्-मारूफ़ और नहयि अनिल मुन्कर का फ़रीज़ा अदा करते हुए शर्म व हया के बारे में एक जामेअ़ रिवायत की तश्रीह के तहत बहुत से इस्लाही मुफ़ीद मौज़ूआत पर मुस्तनद मवाद एक साथ जमा और मुरत्तब कर दिया है। जिसके पढ़ने से अल्लाह तआला के सामने जवाबदही का एहसास पैदा होगा और आख़िरत की ज़िन्दगी को कामियाब बनाने का जज़्बा दिल में उभरेगा।

इन्शाअल्लाहु तआला।

दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला आं अज़ीज़ की मेह्नत को क़ुबूल फ़रमाए और इस किताब को अवाम व ख़्वास के लिए नफ़ा बख़्श बनाये। आमीन

असुअद ग़फ़र लहू

मदनी मन्ज़िल देवबन्द

24/2/1423 हिज्री

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

फ़ेहरिस्ते-ए-मज़ामीन

छटी फ़स्ल

सातवीं फ़स्ल

आठवीं फ़स्ल

नवीं फ़स्ल

दूसरा हिस्सा

पेट की हिफ़ाज़त

पहली फ़स्ल

दूसरी फ़स्ल

तीसरी फ़स्ल

चौथी फ़स्ल

पांचवीं फ़स्ल

तीसरा हिस्सा

दिल की हिफ़ाज़त

पहली फ़स्ल

दूसरी फ़स्ल

तीसरी फ़स्ल

चौथी फ़स्ल

पांचवीं फ़स्ल

छटी फ़स्ल

चौथा हिस्सा

मौत की याद

पहली फ़स्ल

दूसरी फ़स्ल

तीसरी फ़स्ल

चौथी फ़स्ल

पांचवीं फ़स्ल

पांचवां हिस्सा

क़ब्र के हालात

पहली फ़स्ल

दूसरी फ़स्ल

तीसरी फ़स्ल

छटा हिस्सा

क़ियामत के अहवाल

पहली फ़स्ल

दूसरी फ़स्ल

तीसरी फ़स्ल

चौथी फ़स्ल

पांचवीं फ़स्ल

छटी फ़स्ल

सातवीं फ़स्ल

सातवां हिस्सा

आख़िरी ठिकाने की तरफ़

पहली फ़स्ल

दूसरी फ़स्ल

तीसरी फ़स्ल

चौथी फ़स्ल

पांचवीं फ़स्ल

हर्फ़ आख़िर

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

पेश-ए-लफ़्ज़

अल्-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सय्यिदिल मुर्सलीन, सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्व आलिही व सहबिही अज्मईन, अम्मा बाद!

आज अह्क़र के जिस्म का रूंवा-रूंवा मुन्इम-ए-हक़ीक़ी, रब्बे करीम की बारगाह में शुक्र व इम्तिनान के जज़्बात से मामूर है। बिलाशुब्ह यह अल्लाह रब्बुल आ़लमीन का अ़ज़ीम फ़ज़्ल व एहसान और मुहसिन-ए-इंसानियत, फ़ख़्रे दो-आ़लम, सय्यिदना व मौलाना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इन्तिसाब की बरकत है कि इस नाकारा व ना-लाइक़ को सरापा नाकारगी और तसाहुली के बावुजूद आयात-ए-क़ुरआनिया, अहादीस-ए-तय्यिबा और अक़्वाल व अह्वाल-ए-सलफ़ को एक ख़ास तर्तीब से जमा करने की सआ़दत मयस्सर आई इस अ़ज़ीम नेअ़्मत पर रब्बे करीम का जिस क़द्र भी शुक्रिया अदा किया जाए कम है। अ़रबी का एक शेअ़्र है:

إنَّ الْمَقَادِيْرَ إذَا سَاعَدَتْ ☆ اَلْحَقَتِ الْعَاجِزَ بِالْقَادِرِ

"तक़्दीर-ए-इलाही जब किसी की मददगार होती है तो वे आ़जिज़ और दरमान्दह शख़्स को भी किसी क़ाबिल बना देती है।"

हक़ीक़तन अह्क़र का हाल भी इसी शेअ़्र का मिस्दाक़ है।

यह मज़्मून आज से दस साल पहले लिखना शुरू किया था और इसकी तह्रीक इस तरह हुई थी कि रमज़ानुल मुबारक में जामिआ क़ासिमिया मद्रसा शाही मुरादाबाद की "शाही मस्जिद" में ज़ुहर की नमाज़ के बाद मुख़्तसर इस्लाही बयान का सिलसिला जारी रहता है। रमज़ान 1413 हिज्री में यह ख़िद्मत अहक़र के सुपुर्द की गई। अहक़र ने मुनासिब समझा कि रोज़ाना अलग-अलग हदीस पर बयान करने के बजाए पूरे महीने किसी एक

जामेअ़ हदीस को बुनियाद बनाकर गुफ़्तुगू की जाये ताकि बयान का सिलसिला बर्र-क़रार रहे और हर रोज़ पहली बात दोहराने की वजह से सुनने वालों के लिए याद करना भी आसान हो। चुनांचे हदीसः "استحيوا من الله..." الخ को मुन्तख़ब करके गुफ़्तुगू शुरू हुई और 27-28 दिन तक मुसलसल इसी हदीस शरीफ़ के बारे में बयान होता रहा, इसी दौरान अह्क़र ने अपनी याद दाश्त के लिए "मिश्कात शरीफ़" और अ़ल्लामा मुन्ज़िरी की "अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब" और "इह्याउ़ल उ़लूम" को सामने रखकर मज़ामीन व मौज़ूआ़त (उ़नवानात) की एक सरसरी फ़ेहरिस्त बनाकर रख ली ताकि बाद में काम दे।

रमज़ानुल मुबारक के बाद ख़्याल आया कि इस फ़ेहरिस्त के मुताबिक़ तफ़्सीली मज़्मून लिखकर बिखरे हुए मवाद को एक जगह कर दिया जाये ताकि अपनी हिदायत और इस्लाह का ज़रीया बने। चुनाँचे अल्लाह के भरोसे पर काम शुरू किया गया और "निदा-ए-शाही" दिसम्बर 1993 में इसकी पहली क़िस्त छपी लेकिन 10 क़िस्तों के बाद यह सिलसिला बन्द हो गया क्योंकि अह्क़र अपनी सुस्ती की वजह से आगे मज़्मून न लिख सका था। फिर इसी सुस्ती में कई साल गुज़र गये लेकिन अह्क़र को बराबर इस मज़्मून की फ़िक्र रही और अल्लाह तआ़ला से इसकी तक्मील की दुआ़ करता रहा। आख़िरकार अल्लाह तआ़ला की मदद शामिल-ए-हाल हुई और अगस्त 1998 से दोबारा निदा-ए-शाही में इसकी इशाअ़त शुरू हो गई यहां तक कि आहिस्ता-आहिस्ता अह्क़र की ज़हनी तर्तीब के मुताबिक़ सभी ज़रूरी मौज़ूआ़त (उ़नवानात) पर ख़ासा मवाद जमा हो गया। अब तक इसकी कुल मिलाकर 55 क़िस्तें छप चुकी हैं। فلله الحمد والشكر

इस किताब में अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से तज़्कीर-ए-आख़िरत के बारे में अहादीस-ए-शरीफ़ा का इतना बड़ा ज़ख़ीरा जमा हो गया है कि अगर कोई शख़्स सच्चे दिल से और अ़मल की निय्यत से इसको पढ़ेगा तो इन्शा-अल्लाह यक़ीनन उसको नफ़ा होगा। कम से कम अपने ज़मीर की कोताहियों से परदे ज़रूर हटेंगे और दुनिया की बे-सबाती और आख़िरत की कामियाबी की फ़िक्र दिल में जाँ-गुज़ीं हो जाएगी फिर भी इन हिदायात-ए-नबविया से कामिल और ज़ूद असर नफ़े के लिए मुनासिब होगा कि हम इनको पढ़कर

अपने ज़मीर का जाइज़ा ज़रूर लेते रहें। अगर पढ़ने के वक़्त इसका एहतिमाम रखा गया तो यह मज़ामीन दिल में हिदायत के ऐसे चराग़ जलांएंगे जिनसे पूरी ज़िन्दगी मुनव्वर बल्कि नूर-अफ़्शाँ हो जाएगी। इन्शाअल्लाह तआला।

अहक़र की उम्र-ए-अज़ीज़ का ज़्यादा तर हिस्सा तो यूं ही ख़त्म हो चुका है। अल्लाह तआला ने सेहत व आफ़ियत, फ़ुरसत और मवाक़ेअ़ ग़रज़ हर तरह की नेअ़मतों से इस क़द्र नवाज़ा जिसका इहाता ना-मुमकिन है मगर सुस्ती और काहिली का ग़लबा रहा। जिसकी वजह से नेअ़मतों का कुछ भी हक़ अदा न हो सका। मगर अब तक की तक़्रीबन 35 साला ज़िन्दगी में अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से जिन आमाल-ए-ख़ैर की तौफ़ीक़ बख़्शी है उनमें इस इस्लाही मज़्मून लिखने की सआदत को अहक़र अपने लिए सबसे ज़्यादा मूजिब-ए-नजात अमल तसव्वुर करता है और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात से कामिल यक़ीन है कि यह मज़्मून अहक़र के लिए आख़िरत में ज़ाद-ए-राह बनेगा और ख़ुद अहक़र की ग़फ़्लत को दूर करने में मददगार साबित होगा। इन्शाअल्लाह तआला। उस रब्बे करीम की शान भी कैसी अजीब है कि ख़ैर की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाकर ख़ुद ही क़ुबूलियत से भी मुशर्रफ़ फ़रमाता है।

ऐ अल्लाह! इस मेहनत को ख़ालिस अपनी रज़ा का ज़रीआ बना ले और हम सबके हक़ में दारैन में सलाह और फ़लाह और आफ़ियत के फ़ैसले फ़रमा दे। आमीन

फ़क़त वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़

अहक़र **मुहम्मद सलमान मन्सूरपुरी ग़फ़र लहू**

21/2/1423 हिजरी

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुक़द्दमा

अज़ः हज़रत मौलाना क़ारी सय्यिद मुहम्मद उस्मान साहब मन्सूरपुरी मद्दज़िल्लहुल आली
उस्ताज़-ए-हदीस व नाइब मोहतमिम दारूल उलूम देवबन्द

ख़ुदावन्द-ए-क़ुद्दूस जल्ल मजुदहू ने आक़ा-ए-नामदार, सरकारे दो-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातिमुन नबिय्यीन बनाकर जिन मक़ासिद-ए-आलिया के तहत मबऊस फ़रमाया उनमें अहम मक़सद तज़्किया है। यानी इंसानों को अच्छे अख़्लाक़ इख़्तियार करने और बुरे अख़्लाक़ से दूर रहने की तल्क़ीन करके बेहतरीन, मुहज़्ज़ब और बा-अख़्लाक़ इंसान बनाना, यह काम अगरचे दूसरे तमाम अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम भी अपने अपने ज़माने में अंजाम देते चले आये हैं मगर जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअ्सत इस काम की तक्मील करने के लिए हुई है चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है:

بُعِثْتُ لِأُتَمِّمَ حُسْنَ الْأَخْلَاقِ (رواه أحمد عن أبي هريرة)

मैं अख़्लाक़ी ख़ूबियों को कमाल तक पहुंचाने के लिए मबऊस किया गया हूँ।

एक साहिब-ए-ईमान के लिए अख़्लाक़-ए-हसना से आरास्ता होना कितना ज़रूरी है इसको जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इर्शाद-ए-मुबारक में यूं वाज़ेह फ़रमाया है:

أَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ إِيْمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا. (رواه أبو داؤد، والدارمي)

सबसे कामिल दर्जे का मुसलमान वह शख़्स है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हैं।

"खुलुक़-ए-हसन" उस मलका-ए-रासिख़ा का नाम है जिसकी बिना पर अच्छे आमाल आसानी के साथ बिला तकल्लुफ़ सादिर होते हैं। इस्लाम में पसन्दीदा अख़्लाक़ की एक लम्बी फ़ेहरिस्त है जिनमें सब्र व शुक्र, सिद्क़ व अमानत, ख़ुश कलामी, नर्म मिज़ाजी, उन्स व मुहब्बत, ज़ुह्द व क़नाअ़त, तवक्कुल व रज़ा, ईसार व क़ुरबानी, तवाज़ो व ख़ाकसारी, एह्सान व सख़ावत, रहम दिली वग़ैरह शामिल हैं, मगर इनमें शर्म व हया की ख़स्लत बड़ी अहमियत की हामिल है क्योंकि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक हदीस- ए-पाक में ईमान व हया के दर्मियान बड़ा गह्रा तअ़ल्लुक़ बयान फ़रमाया है:

إِنَّ الْحَيَاءَ وَالْإِيْمَانَ قُرَنَاءُ جَمِيْعًا فَإِذَا رُفِعَ أَحَدُهُمَا رُفِعَ الْآخَرُ. (بيهقى)

हया और ईमान हमेशा एक साथ रहते हैं जब उनमें से एक उठाया गया तो दूसरा भी उठाया गया।

यानी अगर किसी शख़्स में "हया" नहीं पाई जाती तो समझो कि ईमान भी नहीं पाया जाता और एक दूसरी हदीस में है कि:

إِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ الْإِيْمَانِ. (متفق عليه)

हया ईमान का हिस्सा है।

"हया" उस इन्फ़िआ़ली कैफ़ियत का नाम है जो इंसान को इस बात के अंदेशे की वजह से लाहिक़ होती है कि उस काम करने पर उसको मलामत की जाएगी या उसको सज़ा दी जाएगी और इस्तिलाह-ए-शरीअ़त में तबीअ़त -ए-इंसानी की उस कैफ़ियत का नाम है जिससे हर ना-मुनासिब और ना-पसन्दीदा काम से इसको इन्क़िबाज़ और उसके इर्तिकाब से तक्लीफ़ हो जो दर-हक़ीक़त ईमान का तक़ाज़ा है और दीन-ए-इस्लाम का इम्तियाज़ी खुलुक़ है। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

إِنَّ لِكُلِّ دِيْنٍ خُلُقًا وَّخُلُقُ الْإِسْلَامِ الْحَيَاءُ. (ابن ماجه، بيهقى)

हर दीन का इम्तियाज़ी खुलुक़ होता है और दीन-ए-इस्लाम का इम्तियाज़ी खुलुक हया है।

यानी जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शरीअ़त में हया

के इख़्तियार करने पर ख़ास ज़ोर दिया गया है क्योंकि इंसान को बुराइयों से रोकने और ख़ूबियों पर आमादा करने में शर्म व हया को बड़ा दख़ल है।

मख़्लूक़ से शर्मा कर बुराइयों व फ़्वाहिश व मुनकरात से दूर रहना भी अच्छी ख़सलत है लेकिन एक मोमिन की शान यह है कि अपने ख़ालिक़ व मालिक हक़ सुब्हानहु व तआला से शर्म व हया करे, जो तमाम मुहसिनों से बड़ा मुहसिन है क्योंकि इंसानी फ़ित्रत है कि उसके साथ जिसका ज़्यादा एहसान व करम होता है उसी से ज़्यादा शर्माता है और उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ काम करने से बाज़ रहता है इसीलिए नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मौक़े पर हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को नसीहत फ़रमाई किः

اِسْتَحْيُوْا مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ

अल्लाह तआला से ऐसी हया करो जैसी उससे हया करनी चाहिए

रावी-ए-हदीस हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम हाज़िरीन ने अर्ज़ किया किः

اِنَّا نَسْتَحْيِي مِنَ اللّٰهِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ.

हम अल्हम्दुलिल्लाह, अल्लाह से शर्म करते हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

لَيْسَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ الْاِسْتِحْيَاءَ مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ اَنْ تَحْفَظَ الرَّأْسَ وَمَا وَعٰى وَالْبَطْنَ وَمَا حَوٰى وَتَذْكُرَ الْمَوْتَ وَالْبِلٰى وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ تَرَكَ زِيْنَةَ الدُّنْيَا وَاٰثَرَ الْاٰخِرَةَ عَلَى الْاُوْلٰى فَمَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ فَقَدِ

हया का मतलब सिर्फ़ इतना नहीं है। बल्कि अल्लाह तआला से हया करने का हक़ यह है कि सर और जिनको वह जामेअ है (अफ़्कार व ख़यालात) उनकी निगरानी करो और पेट की और जो कुछ उसमें भरा हुआ है (खाना वग़ैरह) उन सबकी निगरानी करो और मौत को और अपनी बोसीदगी को याद करो, जो शख़्स आख़िरत को अपना मत्मह-ए-नज़र बनाये वह

استحيوا من الله حق الحياء

(ترمذی شریف)

दुनिया की टीप टाप से बचा रहेगा और आख़िरत की राहतों को दुनिया की लज़्ज़तों पर तर्जीह देगा, जिस शख़्स ने ये सारे काम कर लिए समझो कि वह वाक़िई तौर पर अल्लाह से हया करता है।

इस हदीस-ए-पाक में हया-ए-ईमानी और उसके समरात व नताइज को बड़े जामेअ़ व मुख़्तसर अंदाज़ में बयान फ़रमाया गया है जिनकी मुफ़स्सल वज़ाहत करने की तौफ़ीक़ अ़ज़ीज़-ए-मुकर्रम जनाब मौलवी व मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद सलमान मन्सूरपुरी सल्लमहू उसताज़-ए-हदीस व मुफ़्ती जामिआ़ क़ासिमिया मद्रसा शाही मुरादाबाद को अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से मिली है।

आं अ़ज़ीज़ की ज़ेरे नज़र तालीफ़ "अल्लाह से शर्म कीजिए" में पढ़ने वालों को "हया" के बारे में बहुत से मज़ामीन एक साथ मिल जाएंगे जिनको पढ़कर हया के तक़ाज़ों को पूरा करने का जज़्बा पैदा होगा। इन्शा-अल्लाह तआ़ला

ख़ुदावन्द-ए-करीम आं अज़ीज़ की मेहनत को शरफ़-ए-क़ुबूलियत से नवाज़े और मुसलमानों को इस तालीफ़ से इस्तिफ़ादे की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाये। आमीन

अहक़र मुहम्मद उस्मान मन्सूरपुरी अ़फ़ाअ़न्हु

ख़ादिम-ए-तद्रीस दारूल उ़लूम देवबन्द

5/सफ़र 1423 हिज्री

तक़रीज़

हज़रत मौलाना मुफ़्ती शब्बीर अहमद क़ासमी मद्दज़िल्लहु

मुफ़्ती व उस्ताज़-ए-हदीस मद्‌रसा शाही मुरादाबाद

الحمد لله الذى جعل الحياء شعبة من الايمان. والصلاة والسلام
على امام المتقين و خاتم الأنبياء وعلى اله وصحبه. امّا بعد!

हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सलमान साहब मन्सूरपुरी की ताज़ा तस्नीफ़ ब-नाम "अल्लाह से शर्म कीजिए" से इस ख़ाकसार ने इस्तफ़ादा किया है।

यह किताब इस्लामी मुआशरे में बढ़ती हुई बे-हयाइ और ऊ़रयानियत और अमरीका और यूरोप की फ़ैशन-परस्ती की इस्लाह और सुधार के लिए निहायत क़ीमती तोह्फ़ा है, इस वक़्त हर मुसलमान और ईमान वाले के घर में इस तरह की किताबें होनी ज़रूरी हैं और इस क़िस्म की किताबें हिन्दी और अंग्रेज़ी में छपकर नये दौर के हर मर्द और औ़रत के मुतालआ में रहना चाहिएं। अल्लाह तआ़ला ने मुफ़्ती साहब मौसूफ़ से वक़्त की ज़रूरत की अहम ख़िद्‌मत ली। अल्लाह तआ़ला इस किताब को शरफ़-ए-क़ुबूलियत से नवाज़े और मौसूफ़ के लिए ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत बनाये। आमीन

शब्बीर अहमद क़ासमी अ़फ़ल्लाहु अ़न्हु

जामिआ़ क़ासिमिया मद्‌रसा शाही मुरादाबाद

15/ज़ी-क़ादा 1422 हिज्री

हर्फ़े आग़ाज़

अल्लाह से शर्म कीजिए

इस्लाम में ह़या की अहमियत

ह़या का मुस्तहिक़ कौन?

ह़या का जज़्बा कैसे पैदा हो?

بسم الله الرحمن الرحیم

ان الحمد للّٰه نحمده ونستعینه من یهده اللّٰه فلامضل له ومن یضلل فلاهادی له واشهد ان لا اله الا اللّٰه وحده لاشریک له (مسلم شریف ۱/۲۸۵) واشهد ان سیدنا ومولانا محمداً عبده ورسوله صلی اللّٰه تعالی علیه وعلی اله واصحابه واهل بیته وذریاته اجمعین. اما بعد :

اَلْحَیَآءُ مِنَ اللّٰهِ (अल्लाह से हया)

حـدثـنـا محمد بن عبیدحدثنا ابان بن اسحق عن الصباح بن محمد عن مُرَّةَ الْهَمَدانِی عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ ذَاتَ یَوْمٍ : اِسْتَحْیُوْا مِنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ حَقَّ الْحَیَآءِ قَالَ قُلْنَـا یَارَسُوْلَ اللّٰهِ : اِنَّـا نَسْتَحْیِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ قَالَ: لَیْسَ ذٰلِکَ. وَلٰکِنْ مَنِ اسْتَحْیٰ مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَیَآءِ فَلْیَحْفَظِ الرَّاْسَ وَمَاحَوٰی. وَلِیَحْفَظِ الْبَطْنَ وَمَا وَعٰی. وَلِیَذْکُرِ الْمَوْتَ وَالْبِلٰی. وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ تَرَکَ زِیْنَةَ الدُّنْیَا. فَمَنْ فَعَلَ ذٰلِکَ فَقَدِ اسْتَحْیٰ مِنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ حَقَّ الْحَیَآءِ. (مسند أحمد بن حنبلؒ رقم ۳۶۷۱)

قال المحقق احمد محمد شاکرؒ: اسناده ضعیف، ابان بن اسحق الاسدی ثقة وثقه العجلی وذکره ابن حبان فی الثقات وترجمه البخاری فی الکبیر ۱/ ۴۵۳ فلم یذکر فیه جرحا، الصباح بن محمد بن ابی حازم البجلی الاحمسی ضعفه ابن حبان جداً. وقال کان ممن یروی الموضوعات عن الثقات وهو غلو، وقال العقیلی فی حدیثه وهم ویرفع الموقوف وقال الذهبی فی المیزان رفع حدیثین هما من قول عبداللّٰهؓ یعنی هذا والذی بعده الخ .(المسند، بتحقیق أحمد محمد شاکر۳/۵۳۸)

وقال المحقق محمد احمدعبدالقادر عطا: الحدیث، اورده السیوطی فی الجامع الصغیر مع اختلاف یسیرفی اللفظ وعزاه لاحمد بن حنبل فی المسند والترمذی فی سننه والحاکم فی المستدرک والبیهقی فی شعب الایمان عن ابن مسعودؓ ورمزلصحته، ورده المناوی، وفی سنده ابان ابن اسحق قال الازدی ترکوه لکن وثقه العجلی عن الصباح بن مرة قال الذهبی فی المیزان :

والصباح واه، وقال المنذری: رواه الترمذی وقال غریب لایعرف الامن هذا الوجه ای من حدیث ابان بن اسحق عن الصباح، وقال المنذری: ابان فیه مقال، والصباح مختلف فیه، وقالوا الصواب وقفه، انظر الحدیث فی: سنن الترمذی۲۴۵۸ ومسند احمد۱/۳۸۷ والمستدرک۴/۳۲۳ والمعجم الکبیر للطبرانی۳/۲۴۶، والمعجم الصغیر للطبرانی ۱/۱۷۷، ومشکاة المصابیح۱۶۰۸، والدرالمنثور۱/۲۶۴، ومجمع الزوائد۱۰/۲۸۴، وامالی الشجری۲/۱۹۷، وحلیة الاولیاء۱/۳۵۸رقم: ۲۰۹۴، واتحاف السادة المتقین ۳/۱۲۱، ۹/۳۲۸-۳۲۹، وکنز العمال۵۷۸۱، ۵۷۵۲، ۵۷۵۳، ۴۷۲۷۹، والمطالب العالیة ۱۵۶۲، والجامع الصغیر۹۷۳، وفیض القدیر۱/۴۸۷ (مکارم الاخلاق لابن ابی الدنیا تعلیق: محمد عبدالقادر عطا،ص ۸۰)

इस्लाम में "हया" की अहमियत

हया इंसान की फ़ितरी सिफ़त है। जो शख़्स जितना ज़्यादा हयादार होगा उतना ही वह अपने मुआशरे में बा-वक़ार समझा जाएगा इसलिए कि हया एक ख़ास हालत का नाम है जो इंसान के दिल में ईमान की वजह से हर बुराई और ऐब के काम से तनफ़्फ़ुर और इन्क़िबाज़ पैदा करती है। (मज़ाहिरे हक़ 4/170)

शरीअ़ते इस्लामी में इस सिफ़त को नुमायाँ मुक़ाम हासिल है और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मत को इसकी निहायत ताकीद फ़रमाई है। इस सिलसिले की चंद अहादीस नीचे दी गई हैं:

1. हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اَلْحَيَاءُ لَايَأْتِیْ اِلَّا بِخَيْرٍ وفی روایۃ اَلْحَيَاءُ خَيْرٌ كُلُّهٗ. (بخاری شریف ۲/۹۰۳، حدیث ٦١١٧، مسلم شریف ۱/٤٨، مشکوٰۃ ۲/٤٣١)

हया का नतीजा सिर्फ़ ख़ैर है और एक रिवायत में है कि हया सारी की सारी ख़ैर ही है।

2. हज़रत ज़ैद बिन त़ल्हा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اِنَّ لِكُلِّ دِيْنٍ خُلُقًا وَّخُلُقُ الْاِسْلَامِ اَلْحَيَاءُ. (بیھقی فی شعب الایمان ٦/١٣٦، حدیث ٧٧١٦، مشکوٰۃ شریف ۲/٤٣٢)

हर दीन की (ख़ास) आ़दत होती है और इस्लाम की आ़दत हया है।

3. हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हुए फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

اِنَّ الْحَيَاءَ وَالْاِيْمَانَ قُرَنَاءُ جَمِيْعًا فَاِذَا رُفِعَ اَحَدُهُمَا رُفِعَ الْاٰخَرُ. (بیھقی فی شعب الایمان ٦/١٤٠، حدیث ٧٧٢٧، مشکوٰۃ شریف ۲/٤٣٢)

हया और ईमान दोनों एक दूसरे से मिले हुए हैं उनमें से कोई एक भी उठ जाये तो दूसरा ख़ुद-ब-ख़ुद उठ जाता है।

4. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत है कि नबी-ए- करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلَامِ النُّبُوَّةِ الْأُولَى إِذَا لَمْ تَسْتَحْيِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ. (بخاری شریف ۲/۹۰٤، حدیث ٦١٢٠، مشکوٰۃ شریف ۲/٤٣١)

पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के कलाम से लोगों ने यह जुम्ला भी पाया है कि अगर तू हया न करे तो जो चाहे कर। (यानी कोई चीज़ तुझको बुराई से रोकने वाली न होगी)

5. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اَلْحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْإِيْمَانِ. (بخاری شریف ۱/٦، حدیث ۹، مسلم شریف ۱/٤٧، مشکوٰۃ شریف ۱/٤)

हया ईमान का (अहम तरीन) हिस्सा है।

6. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

اَلْحَيَاءُ مِنَ الْإِيْمَانِ وَالْإِيْمَانُ فِي الْجَنَّةِ وَالْبَذَاءُ مِنَ الْجَفَاءِ وَالْجَفَاءُ فِي النَّارِ. (ترمذی شریف ۲/۲۱، مشکوٰۃ ۲/٤٣١)

हया ईमान में से है और ईमान (यानी अहले ईमान) जन्नत में हैं और बे-हयाई बदी में से है और बदी (वाले) जहन्नमी हैं।

7. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مَا كَانَ الْفُحْشُ فِي شَيْءٍ إِلَّا شَانَهُ وَمَا كَانَ الْحَيَاءُ فِي شَيْءٍ إِلَّا زَانَهُ. (ترمذی شریف ۲/۱۸ عن انسؓ، الترغیب والترہیب ۳/۲٦٩)

बे-हयाई जब भी किसी चीज़ में होगी तो उसे ऐबदार ही बनाएगी। और हया जब भी किसी चीज़ में होगी तो उसे मुज़य्यन और ख़ूबसूरत ही करेगी।

8. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाह अ़न्हु की रिवायत है कि मुहसिने इन्सानियत हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

إِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ إِذَا أَرَادَ أَن يُّهْلِكَ عَبْدًا نَزَعَ مِنْهُ الْحَيَاءَ فَإِذَا نَزَعَ مِنْهُ الْحَيَاءَ لَمْ تَلْقَهُ إِلَّا مَقِيتًا مُمَقَّتًا فَإِذَا لَمْ تَلْقَهُ إِلَّا مَقِيتًا مُمَقَّتًا نُزِعَتْ مِنْهُ الْأَمَانَةُ فَإِذَا نُزِعَتْ مِنْهُ الْأَمَانَةُ لَمْ تَلْقَهُ إِلَّا خَائِنًا مُخَوَّنًا فَإِذَا لَمْ تَلْقَهُ إِلَّا خَائِنًا مُخَوَّنًا نُزِعَتْ مِنْهُ الرَّحْمَةُ فَإِذَا نُزِعَتْ مِنْهُ الرَّحْمَةُ لَمْ تَلْقَهُ إِلَّا رَجِيْمًا مُلَاعَنًا فَإِذَا لَمْ تَلْقَهُ إِلَّا رَجِيْمًا مُلَاعَنًا نُزِعَتْ مِنْهُ رِبْقَةُ الْإِسْلَامِ. (الترغيب والترهيب ٣/٢٧٠، ابن ماجه شريف/٢٩٤ عن ابن عمرؓ)

अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे को हलाक करने का इरादा करता है तो उससे हया की सिफ़त छीन लेता है पस जब उस से हया निकल जाती है तो वह (ख़ुद) बुग़्ज़ रखने वाला और (दूसरों की नज़र में) मबग़ूज़ हो जाता है। फिर जब वह बग़ीज़ व मबग़ूज़ हो जाता है तो उस से अमानत निकल जाती है। जब उससे अमानत निकल जाती है तो वह ख़ाइन और (लोगों की नज़र में) बद्-दियानत हो जाता है जब वह ख़इन और बद्-दियानत हो जाता है तो उसमें से रहम का माद्दा निकल जाता है। जब उससे रहमत निकल जाती है तो वह लाइन और मलऊ़न हो जाता है तो जब लाइन और मलऊ़न होता है तो उससे इस्लाम का फंदा (अ़हद) निकल जाता है।

मतलब यह कि बुराइयों से हया और शर्म न सिर्फ़ आ़म लोगों बल्कि शरीअ़त के नज़्दीक भी निहायत पसन्दीदा आ़दत है जो हर मोमिन में पूरी तरह पाई जानी चाहिए, मुसलमान अगर इस सिफ़त से महरूम हो तो वह कभी भी कामिल तौर पर ईमान के तक़ाज़ों पर अ़मल नहीं कर सकता।

हया का मुस्तहिक़ कौन ?

वैसे तो हर इन्सान अपने अन्दर कुछ न कुछ हया और शर्म का माद्दा रखता है। यानी वह दूसरे इन्सानों के सामने ज़्यादा-तर बे-हयाई और बे-शर्मी के कामों को पसन्द नहीं करता और कोशिश करता है कि उसे कोई शख़्स बुराई करते हुए न देख सके। इसी तरह अपनी बे-इज़्ज़ती के ख़्याल से बहुत से लोग खुलेआ़म बुराई से बचे रहते हैं। लेकिन इन सब बातों का जज़्बा इन्सानों से शर्म की वजह से पैदा होता है, जिससे दुनिया में बचाव की बहुत सी शक्लें मौजूद हैं। जैसे सतॣर खोलना ऐसा अ़मल है जो लोगों के सामने हया की वजह से नहीं

किया जाता लेकिन ख़िल्वत यानी तन्हाई में यह अमल हया और मुरव्वत के ख़िलाफ़ नहीं समझा जाता वग़ैरह।

मगर इस्लामी शरीअत में हया से मतलब सिर्फ़ इन्सानों से हया नहीं बल्कि इस्लाम अपने मानने वालों को उस अल्लाह अलीम व ख़बीर से शर्म करने की तल्क़ीन करता है जो ज़ाहिर व पौशीदा (छुपा हुआ), हाज़िर व ग़ायब हर चीज़ को अच्छी तरह जानने वाला है। उससे शर्म करने का तक़ाज़ा यह है कि जो काम भी उसकी नज़र में बुरा हो उसे किसी भी हाल में हरगिज़ हरगिज़ न किया जाय और अपने तमाम आज़ा व जवारेह को इसका पाबन्द बनाया जाए कि उनसे कोई भी काम न हो जो अल्लाह तआला से शर्माने के तक़ाज़े के ख़िलाफ़ हो। इस सिलसिले में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मत को खुले तौर पर हिदायत फ़रमाई है, चुनांचे एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से ख़िताब करते हुए इर्शाद फ़रमायाः

اِسْتَحْيُوْا مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَآءِ قَالُوْآ اِنَّا نَسْتَحْيِي مِنَ اللّٰهِ يَا نَبِيَّ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ قَالَ لَيْسَ ذٰلِكَ وَلٰكِنْ مَنِ اسْتَحْيٰ مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَآءِ فَلْيَحْفَظِ الرَّأْسَ وَمَا وَعٰى وَلْيَحْفَظِ الْبَطْنَ وَمَا حَوٰى وَلْيَذْكُرِ الْمَوْتَ وَالْبِلٰى وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ تَرَكَ زِيْنَةَ الدُّنْيَا فَمَنْ فَعَلَ ذٰلِكَ فَقَدِ اسْتَحْيٰ مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَآءِ.

(شعب الایمان للبیهقی ۱۴۲/۶)

अल्लाह तआला से इतनी शर्म करो जितनी उससे शर्म करने का हक़ है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के नबी! तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है, हम अल्लाह से शर्म तो करते हैं। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह मुराद नहीं बल्कि जो शख़्स अल्लाह से शर्माने के हक़ को अदा करेगा तो (उसे तीन काम करने होंगे पहला यह कि) अपने सर कि हिफ़ाज़त करे और उस चीज़ की जिस को सर ने जमा किया और (दूसरे यह कि) पेट की हिफ़ाज़त करे और उस चीज़ की जो पेट से लगी हुई हो और (तीसरे यह कि) मौत को और मौत के बाद के हालात को याद करे और (ख़ुलासा यह कि) जो शख़्स आख़िरत

का इरादा करे वह दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत छोड़ दे। तो जो ऐसा करेगा तो वह अल्लाह से हया करने का हक़ अदा करेगा।

مشکوٰۃ شریف ۱/۱٤٠، ترمذی شریف ۲/۷۲، الترغیب والترهیب ۳/۲٦۹)

इस खुली हदीस से मालूम हुआ कि अल्लाह से हया करना ज़रूरी है और इसके लिए सिर्फ़ ज़बानी दावा काफ़ी नहीं बल्कि अपने जिस्म व रूह और ख़्वाहिशात को इताअ़त-ए-ख़ुदावन्दी के रंग में रंगना और हर हालत में अल्लाह की बन्दगी का ख़्याल रखना ज़रूरी और लाज़िम है।

अल्लाह से हया का जज़्बा कैसे पैदा होगा?

अल्लाह तआ़ला से हया करने का जज़्बा कैसे पैदा किया जाए? इसके बारे में उलमा-ए-आ़रिफ़ीन के नीचे दिए गये अक़्वाल (बातें) इन्तिहाई चश्म-कुशा और मुफ़ीद हैं।

मुलाहज़ा फ़रमायें:

- हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि "अल्लाह की नेअ़्मतों के इस्तिहज़ार के साथ अपनी कोताहियों (ग़लतियों) पर नज़र करने से जो दर्मियानी हालत पैदा होती है उसी का नाम हया है"। (शुअ़बुल ईमान 6/147)
- हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रहमतुल्लाहि अ़लैहि का इर्शाद है कि "जो चीज़ इन्सानों को अल्लाह तआ़ला से हया करने पर आमादा करती है वह इन्आ़मात-ए-ख़ुदावन्दी की मारिफ़त और उसके मुक़ाबले में उनपर जो शुक्रगुज़ारी वाजिब है उसमें कौताही का एहसास है, इसलिए कि जिस तरह अल्लाह की अ़ज़्मत बेहद व हिसाब है उसी तरह उसके शुक्र की भी कोई इन्तिहा नहीं है। (शुअ़बुल ईमान 6/147)
- मुहम्मद बिन फ़ज़्ल रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि "हया इस तरह पैदा होती है कि पहले तुम अपने मुहसिन (एहसान करने वाला) के एहसानात की तरफ़ नज़र करो फिर यह ग़ौर करो कि इन एहसानात की बदौलत तुमने अपने मुहसिन के साथ कैसी ज़ियादतियाँ कर रखी हैं? जब तुम इन दोनों बातों का इस्तिहज़ार करने लगोगे तो तुम्हें इन्शाअल्लाह हया की सिफ़त से

सरफ़राज़ किया जाएगा"। (शुअ्बुल ईमान 6/8)

इन अक़्वाल का हासिल यह है कि हमें पहले अल्लाह तआ़ला की उन अनमोल और बे-हिसाब नेअ़्मतों को याद रखना चाहिए जो हम पर हर वक़्त बारिश की तरह बरस रही हैं, फिर यह देखना चाहिए कि हम उन नेअ़्मतों का क्या हक़ अदा कर रहे हैं? और हमसे कितनी ग़लतियाँ हो रही हैं? इस इस्तिहज़ार से ख़ुद ब-ख़ुद हमें एहसास होगा कि हमारे लिए कोई भी ऐसा काम करना हरगिज़ मुनासिब नहीं जिससे हमारे अ़ज़ीम मुहसिन को नागवारी होती हो और उसकी नेअ़्मतों की ना-क़द्री लाज़िम आती हो, इसी एहसास का नाम "हया" है जो मोमिन की अहम तरीन इम्तियाज़ी सिफ़त है, अल्लाह तआ़ला उम्मत के हर फ़र्द को सिफ़त-ए-"हया" से मालामाल फ़रमाये। आमीन

❒ ❒ ❒

सर की हिफ़ाज़त

- शिर्क से इज्तिनाब
- तकब्बुर से परहेज़
- ज़बान की हिफ़ाज़त
- आँख की हिफ़ाज़त
- सत्रपोशी का एहतिमाम
- कान की हिफ़ाज़त
- ढाढ़ी मुंडवाना भी बे-शर्मी है

पहली फ़स्ल

सर की हिफ़ाज़त

इस से पहले लिखी हदीस में पहली हिदायत सर और उस से मुताल्लिक़ आज़ा की हिफ़ाज़त की दी गई है इससे यह मुराद नहीं कि सर को सिर्फ़ जिस्मानी बीमारियों से बचाया जाये और दवा वग़ैरह के ज़रिये से उसकी हिफ़ाज़त के तरीक़े इख़्तियार किये जायें बल्कि मतलब यह है कि सर और उससे जुड़े दूसरे आज़ा को हर उस बुराई से महफ़ूज़ रखा जाये जिस से शरीअ़त में मना किया गया है। जैसे हमारा सर अल्लाह के दरबार के अ़लावा किसी और के दरबार में न झुके, हमारी आँखें नाजाइज़ चीज़ों को न देखें, हमारे कान हराम आवाज़ों को न सुनें और हमारी ज़बान नाजाइज़ बातों को अदा न करे। क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस-ए-तय्यिबा में इन चीज़ों की हिफ़ाज़त पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ पर ज़ोर दिया गया है। जिसकी कुछ तफ़्सील नीचे पेश है।

शिर्क से इज्तिनाब (बचना)

सर की हिफ़ाज़त का पहला जुज़ यह है कि आदमी का दिमाग़ किसी भी हाल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के साथ इबादत में किसी दूसरे को शरीक करने का रवादार न हो इसलिए कि अल्लाह तआ़ला के अ़लावा दूसरे को माबूद बनाना या समझना इस्लाम की नज़र में नाक़ाबिल-ए-माफ़ी जुर्म है।

इर्शाद-ए-ख़ुदावन्दी है:

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَادُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ.

(سورۂ نساء آیت: ۴۸، ۱۱۶)

बेशक अल्लाह तआ़ला नहीं बख़्शता उसको जो उसका शरीक करे और बख़्शता है उससे नीचे के गुनाह जिसके चाहे।

अहादीस-ए-तय्यिबा में सख़्ती के साथ शिर्क की मुमानअ़त (मना करना) वारिद हुई है। और न सिर्फ़ शिर्क-ए-हक़ीक़ी (यानी माबूद समझ कर अल्लाह के अ़लावा को सज्दा करना वग़ैरह) बल्कि शिर्क के शाइबा (यानी अल्लाह के अ़लावा से माबूद जैसा मुआमला करने) से भी बचने की तल्क़ीन फ़रमाई गई

3

है। मरज़ुल वफ़ात में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मत को जो चंद अहम तरीन वसिय्यतें इर्शाद फ़रमाई उनमें एक यह भी थी किः

اَلَا وَاِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ كَانُوْا يَتَّخِذُوْنَ قُبُوْرَ اَنْبِيَآئِهِمْ وَصَالِحِيْهِمْ مَسَاجِدَ. اَلَا فَلَا تَتَّخِذُوا الْقُبُوْرَ مَسَاجِدَ. اِنِّيْ اَنْهَاكُمْ عَنْ ذٰلِكَ.
(مسلم شريف ١/٢٠١)

ख़बरदार! तुमसे पहली उम्मतों के लोग अपने अम्बिया और नेक लोगों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लेते थे। ख़बरदार! तुम लोग क़ब्रों को सज्दागाह मत बनाना। मैं तुमको इस काम से रोकता हूँ।

आ़म तौर पर अम्बिया या औलिया अल्लाह को ख़ुदा नहीं समझा जाता और न उन्हें ख़ुदा समझ कर सज्दा किया जाता है। लेकिन फिर भी क़ब्रों को सज्दा करने से निहायत सख़्ती से मना किया गया। इसलिए कि यह ज़ाहिरी तौर पर शिर्क-ए- हक़ीक़ी की तरह है। और आहिस्ता-आहिस्ता आदमी के अन्दर शिर्क के जरासीम को बढ़ाने का ज़रिया बन जाता है। लिहाज़ा सर की हिफ़ाज़त और अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया इस बात का तक़ाज़ा करती है कि हमारा सर अल्लाह तआ़ला के दरबार के अ़लावा किसी के सामने न झुके और अल्लाह तआ़ला जैसी इज़्ज़त और किसी की न की जाये।

एक ग़लत फ़हमी का इज़ाला (दूर करना)

आज कल क़ब्रों के सामने सर झुकाने और माथा टेकने का रिवाज आ़म है। जब लोगों को इस बद-अ़मली से मना किया जाता है और उनके सामने वे सही अहादीस पढ़ी जाती हैं जिनमें क़ब्रों के सज्दे से मना किया गया है तो उनमें से कुछ बे-तौफ़ीक़ लौग सिर्फ़ धोखा देने के लिए यह बेकार तावील करते हैं कि "अहादीस-ए-शरीफ़ा में जिस सज्दे से मना किया गया है वह नमाज़ वाला सज्दा है।" यानी क़ब्रों को ऐसा सज्दा न किया जाये जैसे नमाज़ में होता है। इसलिए "नमाज़ के सज्दे के अ़लावा दूसरी तरह सर झुकाना अहादीस की रू से मना नहीं है"। हालांकि यह तावील बिल्कुल बे-अस्ल है। यहां जो हुक्म सज्दे का है वही हुक्म रूकूअ़ या किसी भी तरह माथा टेकने का है। और इस तरह की सभी इबादत जैसी हरकतें अल्लाह के अ़लावा के लिए नाजाइज़ और हराम हैं। ख़ुद फ़ुक़हा-ए-अह्नाफ़ ने भी इसकी वज़ाहत फ़रमाई है। चुनांचे फ़िक़ह-ए-

हनफ़ी की मशहूर किताब दुर्रे मुख़्तार में लिखा है:

وَكَذَا مَا يَفْعَلُوْنَهُ مِنْ تَقْبِيْلِ الْاَرْضِ بَيْنَ يَدَيِ الْعُلَمَآءِ وَالْعُظَمَآءِ فَحَرَامٌ وَالْفَاعِلُ وَالرَّاضِيْ بِهٖ آثِمَانِ، لِاَنَّهٗ يُشْبِهُ عِبَادَةَ الْوَثَنِ. وَهَلْ يُكَفَّرُ؟ اِنْ عَلٰى وَجْهِ الْعِبَادَةِ وَالتَّعْظِيْمِ كُفِّرَ وَاِنْ عَلٰى وَجْهِ التَّحِيَّةِ لَا. وَصَارَ اٰثِمًا مُرْتَكِبًا لِلْكَبِيْرَةِ. (درمختار)

और इसी तरह जो जाहिल लोग उलमा और बड़े लोगों के सामने ज़मीन चूमने का अमल करते हैं वह हराम है। और इस अमल का करने वाला और इस से राज़ी होने वाला दोनों गुनहगार हैं इसलिए कि यह बुत की इबादत जैसा है। और क्या इसकी तक्फ़ीर की जाएगी? तो अगर इबादत और ताज़ीम की निय्यत से हो तो तक्फ़ीर होगी और अगर सिर्फ़ एहतिराम के तौर पर हो तो तक्फ़ीर तो न होगी, मगर वह गुनाहे कबीरा का मुरतकिब होगा

इस पर अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं:

وَفِى الزَّاهِدِىْ: اَلْاِيْمَآءُ فِى السَّلَامِ اِلٰى قَرِيْبِ الرُّكُوْعِ كَالسُّجُوْدِ وَفِى الْمُحِيْطِ: اَنَّهٗ يُكْرَهُ الْاِنْحِنَآءُ لِلسُّلْطَانِ وَغَيْرِهٖ وَظَاهِرُ كَلَامِهِمْ اِطْلَاقُ السُّجُوْدِ عَلٰى هٰذَا التَّقْبِيْلِ.

(شامی بیروت ۹/۶۸ء کتاب الحظر والاباحة، قبل فصل فی البیع، شامی کراچی ۶/۳۸۳)

और फ़तावा ज़ाहिदी में है कि रूकूअ के क़रीब तक झुककर सलाम करना भी सज्दे ही के हुक्म में है और मुहीत में है कि बादशाह के सामने झुकना मकरूह-ए-तहरीमी है। और फ़ुक़हा के ज़ाहिर कलाम से यही मालूम होता है कि इस तरह की तक़बील (झुककर सलाम करना) पर सज्दे ही का हुक्म लगाया गया है।

बहरहाल फ़ुक़हा की इबारत (मज़्मून) से यह साबित हो गया कि मनाही सिर्फ़ नमाज़ जैसे सज्दे तक महदूद नहीं है। बल्कि जिस तरह भी हद से ज़्यादा ताज़ीम की जाये और इबादत की सूरत अपनाई जाये वह अल्लाह के अलावा के सामने मना है। इसलिए जो शख़्स भी अल्लाह से शर्म करेगा वह अपने सर को कभी भी क़ब्रों वग़ैरह के सामने झुकाने की हिम्मत न कर सकेगा।

शिर्क-ए-ख़फ़ी

शिर्क की एक क़िस्म और है जिसे शिर्क-ए-ख़फ़ी (छोटा) या रियाकारी के नाम से जाना जाता है। इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला की इबादत इस तरह की जाए ताकि कोई दूसरा शख़्स उससे ख़ुश हो। या उसका कोई दुनियवी मतलब शौहरत व इज़्ज़त, दौलत वग़ैरह इसके ज़रिए हासिल हो जाए। शरीअ़त की नज़र में यह काम अगरचे कुफ़्र व शिर्क के दर्जे का नहीं, लेकिन अपनी ज़ात के ऐतिबार से निहायत ग़लत है और इन्सान की सारी मेहनत को ख़त्म कर देता है। इस बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कुछ इर्शादात-ए-मुबारका नीचे लिखे गये हैं:

① مَنْ تَزَيَّنَ بِعَمَلِ الْاٰخِرَةِ وَهُوَ لَا يُرِيْدُهَا وَلَا يَطْلُبُهَا لُعِنَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ. (الترغيب والترهيب ١/٣٢ عن ابي هريرةؓ)

1. जो शख़्स आख़िरत के अ़मल को मुज़य्यन करे हालांकि वह आख़िरत का चाहने वाला न हो तो उस पर आसमान व ज़मीन में लानत की जाती है।

② مَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا بِعَمَلِ الْاٰخِرَةِ طُمِسَ وَجْهُهُ وَمُحِقَ ذِكْرُهُ وَاُثْبِتَ اسْمُهُ فِي النَّارِ. (الترغيب والترهيب ١/٣٢ عن الجارودؓ)

2. जो आख़िरत के किसी अ़मल से दुनिया को चाहे तो उसके चेहरे पर फिट्कार होती है, उसका ज़िक्र मिटा दिया जाता है और उस का नाम जहन्नम में लिख दिया जाता है।

③ مَنْ اَحْسَنَ الصَّلٰوةَ حَيْثُ يَرَاهُ النَّاسُ وَاَسَاءَهَا حَيْثُ يَخْلُوْ فَتِلْكَ اسْتِهَانَةٌ اِسْتَهَانَ بِهَا رَبَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى.

(الترغيب والترهيب ١/٣٣ عن ابن مسعودؓ)

3. जो शख़्स नमाज़ को इसलिए अच्छा पढ़े ताकि लोग उसे देखें और जब तन्हाई में जाये तो नमाज़ ख़राब पढ़े (आदाब व शराइत का लिहाज़ न रखे) तो यह ऐसी बे-इज़्ज़ती है जिसके ज़रिये से वह अल्लाह तबारक व तआ़ला की तौहीन कर रहा है।

④ مَنْ صَامَ يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ وَمَنْ صَلّٰى يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ وَمَنْ

4. जिसने रिया की वजह से रोज़ा रखा उसने शिर्क किया, जिसने दिखावे के लिए नमाज़ पढ़ी उसने शिर्क किया

تَصَدَّقَ يُرَائِيْ فَقَدْ اَشْرَكَ.

(الترغيب والترهيب ١/٣٣ عن شداد بن اوسؓ)

और जिसने शौहरत के लिए सद्का किया उसने भी शिर्क किया।

⑤ اَلشِّرْكُ الْخَفِيُّ اَنْ يَّقُوْمَ الرَّجُلُ فَيُصَلِّيْ فَيُزَيِّنُ صَلٰوتَهٗ لِمَايَرٰى مِنْ نَظَرِ رَجُلٍ. (ابن ماجه ٣١٠، الترغيب والترهيب ١/٣٣ عن ابى سعيد الخدريؓ)

5. शिर्क-ए-ख़फ़ी यह है कि आदमी खड़े होकर नमाज़ पढ़े और जब यह देखे कि कोई शख़्स उसे देख रहा है तो अपनी नमाज़ ख़ूब अच्छी कर दे।

⑥ يَآاَيُّهَا النَّاسُ اِيَّاكُمْ وَشِرْكَ السَّرَآئِرِ! قَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا شِرْكُ السَّرَآئِرِ؟ قَالَ: يَقُوْمُ الرَّجُلُ فَيُصَلِّيْ فَيُزَيِّنُ صَلٰوتَهٗ جَاهِدًا لِمَايَرٰى مِنْ نَظَرِ النَّاسِ اِلَيْهِ فَذٰلِكَ شِرْكُ السَّرَآئِرِ. (الترغيب والترهيب ١/٣٤ عن محمود بن لبيدؓ)

6. ऐ लोगो! छुपे हुए शिर्क से बचते रहो, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! छुपा हुआ शिर्क क्या है? तो आपने फ़रमाया कि एक आदमी नमाज़ के लिए खड़ा हुआ तो लोगों के उसकी तरफ़ देखने की वजह से वह अपनी नमाज़ को ख़ूब कोशिश करके अच्छा करे तो यह पोशीदा शिर्क है।

⑦ اِنَّ اَخْوَفَ مَآاَخَافُ عَلَيْكُمُ الشِّرْكُ الْاَصْغَرُ قَالُوْا وَمَا الشِّرْكُ الْاَصْغَرُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ : اَلرِّيَآءُ يَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ اِذَا جَزَى النَّاسَ بِاَعْمَالِهِمْ اِذْهَبُوْآ اِلَى الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُرَآءُوْنَ فِى الدُّنْيَا فَانْظُرُوْا هَلْ تَجِدُوْنَ عِنْدَهُمْ جَزَآءً ا.

(الترغيب والترهيب ١/٣٤)

7. मैं सबसे ज़्यादा तुम पर जिस बात का अंदेशा करता हूँ वह शिर्क-ए-असग़र (छोटा) है। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा कि शिर्क-ए-असग़र क्या होता है? तो आपने जवाब दिया यह रिया है। अल्लाह तआ़ला लोगों को उनके आमाल का बदला देते वक़्त इर्शाद फ़रमायेगा कि उन्हीं लोगों के पास जाओ जिनको दुनिया में तुम (अपनी इबादत) दिखाते थे तो देखो क्या तुम उनके पास कोई बदला पाओगे।

⑧ اَمَآ اِنَّهُمْ لَايَعْبُدُوْنَ شَمْسًا وَّلَاقَمَرًا وَّلَاحَجَرًا وَّلَاوَثَنًا وَّلٰكِنْ

8. (उम्मत में शिर्क जारी होने की वजह पूछने पर आपने इर्शाद फ़रमाया)

يُرَاءُوْنَ بِأَعْمَالِهِمْ. وَالشَّهْوَةُ الْخَفِيَّةُ أَنْ يُصْبِحَ أَحَدُهُمْ صَائِمًا فَتَعْرِضُ لَهُ شَهْوَةٌ مِّنْ شَهَوَاتِهِ فَتَرَكَ صَوْمَهُ.

(مشكوة شريف ٢/٤٠٦)

कि वे लोग सूरज (चाँद), पत्थर और बुत की पूजा तो नहीं करेंगे लेकिन अपने आमाल में रियाकारी करेंगे (यही शिर्क है) और पोशीदा शह्वत यह है कि कोई आदमी सुब्ह को इस हालत में उठे कि वह रोज़ेदार हो फिर शह्वतों में से कोई शह्वत उसके सामने आ जाये जिसकी वजह से वह अपना रोज़ा छोड़ दे।

⑨ تَعَوَّذُوْا بِاللّٰهِ مِنْ جُبِّ الْحُزْنِ قَالُوْا يَارَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا جُبُّ الْحُزْنِ؟ قَالَ: وَادٍ فِيْ جَهَنَّمَ تَتَعَوَّذُ مِنْهُ جَهَنَّمُ كُلَّ يَوْمٍ أَرْبَعَ مِائَةِ مَرَّةٍ قِيْلَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَنْ يَّدْخُلُهُ؟ قَالَ: أُعِدَّ لِلْقُرَّاءِ الْمُرَائِيْنَ بِأَعْمَالِهِمْ.

(الترغيب والترهيب ١/٣٣)

9. अल्लाह तआला से पनाह मांगते रहो जुब्बुल हुज़्न (ग़म की घाटी) से। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जुब्बुल हुज़्न क्या है? तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि वह जहन्नम में ऐसी वादी है जिससे ख़ुद जहन्नम हर दिन 400 बार पनाह मांगती है। आप से पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उसमें कौन लोग दाख़िल होंगे? तो आप ने फ़रमाया रियाकार क़ारियों के लिए उसे तैयार किया गया है।

ये इर्शादात-ए-आलिया हमारी तम्बीह के लिए काफ़ी हैं कि हमें अपने सर को हर उस अमल व अक़ीदे से महफ़ूज़ करना चाहिए जो अल्लाह तआला से शर्म करने के तक़ाज़े के ख़िलाफ़ हो। रियाकारी और इबादत में अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक करना, दर-हक़ीक़त अल्लाह तबारक व तआला के साथ निहायत बे-हयाई और बे-शर्मी की बात है। इसीलिए अल्लाह से हया करने में सबसे पहले जिस चीज़ को ज़िक्र किया गया वह सर और उस से मिली हुई चीज़ों को मुहर्रमात (हराम की हुई) से महफ़ूज़ रखना है। □ □

दूसरी फ़स्ल

तकब्बुर से परहेज़

सर की हिफ़ाज़त का दूसरा जुज़ और अल्लाह तआ़ला से हया करने का एक अहम तक़ाज़ा यह है कि हमारा सर और हमारा दिमाग़ किब्र और ख़ुदनुमाई के मुहलिक जज़्बात व जरासीम से पूरी तरह पाक हो। किब्रियाई सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़ात-ए-ख़ुदावन्दी को ज़ेब देती है। क़ुरआन-ए-करीम खुले लफ़्ज़ों में ऐलान करता है:

① وَلَـهُ الْـكِبْـرِيَـآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُـوَ الْـعَزِيْـزُ الْـحَكِيْمُ. (سورۂ جاثیہ آیت ۳۷)

और उसी की बड़ाई है आसमानों में और ज़मीन में और वही है ज़बरदस्त, हिक्मत वाला।

ज़मीन पर अकड़ कर चलना और सर को तकब्बुराना अन्दाज़ में हिलाना जुलाना, क़ुरआन व हदीस की नज़र में सख़्त ना-पसन्दीदा है। क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया गया:

② وَلَا تَـمْـشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا. اِنَّكَ لَـنْ تَـخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلاً. (سورۂ بنی اسرائیل ۳۷)

और मत चल ज़मीन पर अकड़ता हुआ तू फाड़ न डालेगा ज़मीन को और न पहुंचेगा पहाड़ों तक लम्बा होकर।

③ وَلَا تَـمْشِ فِى الْاَرْضِ مَرَحًا اِنَّ اللّٰهَ لَايُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ. (سورۂ لقمان آیت ۱۹)

और मत चल ज़मीन पर इतराता, बेशक अल्लाह को नहीं भाता कोई इतराता, बड़ाइयां करने वाला।

और आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

① قَالَ اللّٰهُ تَعَالَى الْكِبْرِيَآءُ رِدَآئِىْ وَالْعَظَمَةُ اِزَارِىْ فَمَنْ نَـازَعَنِىْ وَاحِدًا مِنْهُمَـا قَذَفْتُهُ فِى النَّارِ. (ابوداؤد ۲/۵٦٦ عن ابی ہریرۃ، مسلم ۲/۳۲۹، ابن ماجہ ۳۰۸)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: बड़ाई मेरी चादर है और अ़ज़्मत मेरी इज़ार है। जो इनमें से कोई चीज़ भी मुझसे लेने की कोशिश करेगा मैं उसे जहन्नम में दाख़िल करूंगा।

② لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ اَحَدٌ فِىْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ

कोई भी ऐसा शख़्स जन्नत में न जा

حَبَّةِ خَرْدَلٍ مِّنْ كِبْرِيَآءٍ. (مسلم ١/٦٥ عن عبدالله بن مسعودؓ، ترمذی ٢/٢٠، مشكوة ٢/٤٣٣)

सकेगा जिसके दिल में राई के दाने के बराबर तकब्बुर हो।

٣ يُحْشَرُ الْمُتَكَبِّرُوْنَ اَمْثَالَ الذَّرِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيْ صُوَرِ الرِّجَالِ يَغْشَاهُمُ الذُّلُّ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ يُسَاقُوْنَ اِلٰى سِجْنٍ فِيْ جَهَنَّمَ يُسَمّٰى "بُوْلَسُ" تَعْلُوْهُمْ نَارُ الْاَنْيَارِ يُسْقَوْنَ مِنْ عُصَارَةِ اَهْلِ النَّارِ طِيْنَةِ الْخَبَالِ.

(ترمذی عن عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده، مشكوة ٢/٤٣٣، الترغيب والترهيب ٣/٣٥٥)

तकब्बुर करने वालों को क़ियामत के दिन चींटियों की तरह आदमियों की सूरत में जमा किया जाएगा। ज़िल्लत उनको हर तरफ़ से घेरे होगी, उनको जहन्नम के क़ैदख़ाने की तरफ़ ले जाया जाएगा जिसका नाम "बौलस" होगा उन पर "आगों की आग" बुलन्द होगी। और उन्हें दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों का निचोड़ (ख़ून, पीप वग़ैरह) पिलाया जाएगा जिसका नाम "तीनतुल ख़बाल" होगा।

٤ لَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَذْهَبُ بِنَفْسِهٖ حَتّٰى يُكْتَبَ فِي الْجَبَّارِيْنَ فَيُصِيْبُهٗ مَآ اَصَابَهُمْ.

(ترمذی شريف ٢/٢٠ عن سلمة الاكوعؓ)

आदमी बराबर अपने नफ़्स को (तकब्बुर की जानिब) खींचता रहता है यहां तक कि उसका नाम सरकशों में लिख दिया जाता है। फिर उसे भी वही (अज़ाब) होगा जो इन तकब्बुर करने वालों को होगा।

٥ مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ سُبْحَانَهٗ دَرَجَةً يَرْفَعُهُ اللّٰهُ بِهٖ دَرَجَةً حَتّٰى يَجْعَلَهُ اللّٰهُ فِيْٓ اَعْلٰى عِلِّيِّيْنَ وَمَنْ تَكَبَّرَ عَلَى اللّٰهِ دَرَجَةً يَضَعُهُ اللّٰهُ بِهٖ دَرَجَةً حَتّٰى يَجْعَلَهٗ فِيْٓ اَسْفَلِ سَافِلِيْنَ.

(ابن ماجه ٣٠٨، الترغيب والترهيب ٣/٣٥١)

जो अल्लाह के लिए एक दर्जा आजिज़ी करे अल्लाह तआला उसका मर्तबा बुलन्द करता है यहां तक कि उसे इल्लिय्यीन (जन्नत में बुलन्द मुक़ाम का नाम है) में बुलन्द मुक़ाम तक पहुंचा देता है। और जो अल्लाह पर एक दर्जा तकब्बुर करता है तो अल्लाह तआला उसका मर्तबा घटाता है। यहाँ तक कि उसे जहन्नम के सबसे निचले दर्जे में पहुंचा देता है।

٦ اِيَّاكُمْ وَالْكِبْرَ فَاِنَّ الْكِبْرَ يَكُوْنُ فِيْ

तकब्बुर से बचते रहो। इसलिए कि

الرَّجُلِ وَاِنَّ عَلَيْهِ الْعَبَاءَةَ. (رواه الطبرانی عن عبد الله بن عمرؓ الترغیب والترهیب ۲/۳۵۲)

तकब्बुर आदमी में पाया जाता है। अगरचे उस पर (बुज़ुर्गी का) चोग़ा हो।

⑦ بَيْنَمَا رَجُلٌ مِّمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ يَجُرُّ اِزَارَهُ مِنَ الْخُيَلَاءِ خُسِفَ بِهٖ فَهُوَ يَتَجَلْجَلُ فِى الْاَرْضِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ. (نسائی شریف ۲/۲۹۸ عن عبد الله بن عمرؓ الترغیب والترهیب ۳/۳۵۶)

तुम से पहली उम्मतों का एक शख़्स तकब्बुर की बिना पर अपना तहबन्द लटकाता था तो उसे ज़मीन में धंसा दिया गया और वह क़ियामत तक धंसता ही चला जा रहा है।

⑧ مَنْ جَرَّ ثَوْبَهٗ خُيَلَاءَ لَمْ يَنْظُرِ اللّٰهُ تَعَالٰى اِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. (بخاری شریف ۲/۸۶۰ عن عبد الله بن عمرؓ حدیث ۵۷۸۵، الترغیب والترهیب ۳/۳۵۷)

जो शख़्स बड़ाई की वजह से अपने कपड़े को (टख़ने से) नीचे लटकाये तो अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ रहमत की नज़र न फ़रमायेगा।

⑨ مَنْ تَعَظَّمَ فِىْ نَفْسِهٖ اَوِ اخْتَالَ فِىْ مِشْيَتِهٖ لَقِىَ اللّٰهَ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ. (رواه الطبرانی عن ابن عمرؓ الترغیب والترهیب ۳/۳۵۷)

जो शख़्स अपने आप को बड़ा समझे और चाल में तकब्बुर का इज़्हार करे तो अल्लाह तआ़ला से वह इस हाल में मिलेगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर गुस्सा होगा।

हासिल यह है कि तकब्बुर और ख़ुद-पसन्दी ऐसी बद-तरीन ओ़दत है, जो इन्सान को दुनिया, आख़िरत कहीं का नहीं छोड़ती और फिर अल्लाह के मुक़ाबले में तकब्बुर करना नऊ़ज़ु बिल्लाह (अल्लाह हमें पनाह में रखे) निहायत ही बे-हयाई और दीदा दिलेरी की बात है। इसलिए अपने दिमाग़ को इस नासूर से महफ़ूज़ रखे बग़ैर अल्लाह तआ़ला से शर्म करने का हक़ अदा नहीं हो सकता। हमें हर ऐतिबार से तवाज़ो और इन्किसारी की आ़दत पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। तवाज़ो के ज़रिये इन्सान बुलन्दी के नाक़ाबिल-ए-तसव्वुर मुक़ाम तक पहुँच जाता है और तकब्बुर की वजह से अगरचे ख़ुद को कितना ही बड़ा समझता रहे मगर लोगों की नज़र में कुत्ते और ख़िन्ज़ीर से भी बद्तर हो जाता है। (मिश्कात शरीफ़ 2/434)

अल्लाह तआ़ला इस मन्हूस बुराई से हमें महफ़ूज़ रखे और अपनी ज़ात से कामिल हया करने की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन

तीसरी फ़स्ल

ज़बान की हिफ़ाज़त

पीछे लिखी हुई हदीस में सर की हिफ़ाज़त ही को हया का मदार (बुनियाद) क़रार नहीं दिया गया बल्कि "فَلْيَحْفَظِ الرَّأْسَ وَمَا وَعَى" के अल्फ़ाज़ लाकर बताया गया कि सर के मुताल्लिक़ जो आज़ा व जवारेह हैं और जिनसे किसी काम और तसर्रुफ़ का सुदूर हो सकता है अल्लाह तआला से हया करने के लिए उन्हें भी नाफ़रमानियों और बुराइयों से बचाना और महफ़ूज़ रखना ज़रूरी और लाज़िम है।

सर से मिले हुए आज़ा में इन्सान की ज़बान को सबसे ज़्यादा अहमियत हासिल है। यह छोटी सी ज़बान अगर सीधी चलती रहे तो अज़ीमुल-क़द्र दरजात के हासिल होने का ज़रिया और वसीला बनती है और अगर ज़बान ही बे-हया बन जाये और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ौफ़ से बे-नियाज़ होकर बुरे कलिमात बोलती रहे तो इन्सान के लिए हद दर्जा बद्नसीबी और महरूमी का सबब बन जाती है। हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ियल्लाहु अन्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं:

إِذَا أَصْبَحَ ابْنُ آدَمَ فَإِنَّ الْأَعْضَاءَ كُلَّهَا تُكَفِّرُ اللِّسَانَ فَتَقُولُ: اِتَّقِ اللّٰهَ فِيْنَا فَإِنَّمَا نَحْنُ بِكَ فَإِنِ اسْتَقَمْتَ اسْتَقَمْنَا وَإِنِ اعْوَجَجْتَ اعْوَجَجْنَا. (ترمذی شریف ۲/۶۶، بیهقی فی شعب الایمان ۴/۲۴۴ حدیث ۴۹۴۶، مشکوٰۃ شریف ۲/۴۱۳)

जब आदमी सुब्ह सोकर उठता है तो सारे आज़ा ज़बान के सामने आजिज़ी करते हुए कहते हैं कि हमारे लिए अल्लाह से डरती रह! इसलिए कि हम तेरे साथ हैं और अगर तू सीधी रहे तो हम सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी होगी तो हम टेढ़े होंगे।

मालूम हुआ कि ज़बान को क़ाबू में रखना अल्लाह से हया का हक़ अदा करने वाले के लिए ज़रूरी है। बग़ैर इसके शर्म का हक़ अदा नहीं हो सकता। इसी वजह से नबी-ए-बरहक़ रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निहायत ताकीद के साथ ज़बान की हिफ़ाज़त की तरग़ीब दी है। आप का इर्शाद है:

① مَنْ صَمَتَ نَجَا.

1. जो (ग़लत बात कहने से) ख़ामोश रहा वह नजात पा गया।

(بیہقی فی شعب الإیمان ٤/٢٥٤ حدیث٤٩٨٣)

2. एक सहाबी उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि नजात कैसे हासिल होगी? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब दिया:

اَمْلِکْ عَلَیْکَ لِسَانَکَ وَلْیَسَعْکَ بَیْتُکَ وَابْکِ عَلٰی خَطِیْئَتِکَ.

अपनी ज़बान क़ाबू में रखो और तुम्हारा घर तुम्हें गुन्जाइश दे (बिला ज़रूरत वहाँ से न निकलो) और अपनी ग़लती पर रोया करो।

(ترمذی ٢/٦٦، بیہقی فی شعب الإیمان١/٤٩٢ حدیث ٨٠٥)

3. हज़रत सुफ़ियान बिन अ़ब्दुल्लाह सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि या रसूलल्लाह! आप मेरे ऊपर सबसे ज़्यादा किस बात का ख़ौफ़ करते हैं? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी ज़बान पकड़ी और (उसकी तरफ़ इशारा करके) फ़रमाया: هذا यानी सबसे ज़्यादा ख़तरे की चीज़ यह ज़बान है।

4. आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَقَامُ الرَّجُلِ لِلصَّمْتِ اَفْضَلُ مِنْ عِبَادَةِ سِتِّیْنَ سَنَةً. (مشکوٰۃ٢/٤١٤ عن عمران بن حصینؓ، بیہقی فی شعب الإیمان ٤/٢٤٥ حدیث: ٤٩٥٣)

इंसान का ख़ामोशी को इख़्तियार करने का मर्तबा 60 साल की इबादत से बढ़कर है।

5. एक मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ख़िताब करते हुए फ़रमाया:

یَا اَبَاذَرٍّ اَ لَا اَدُلُّکَ عَلٰی خَصْلَتَیْنِ هُمَا اَخَفُّ عَلَی الظَّهْرِ وَاَثْقَلُ فِی الْمِیْزَانِ مِنْ غَیْرِهِمَا؟ قَالَ: بَلٰی یَارَسُوْلَ اللّٰهِ! قَالَ: طُوْلُ الصَّمْتِ وَحُسْنُ الْخُلُقِ. وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ مَا عَمِلَ الْخَلَائِقُ بِمِثْلِهِمَا.

ऐ अबूज़र! क्या मैं तुम्हें ऐसी दो आदतें न बताऊं जो पीठ पर हल्की (यानी करने में आसान) और मीज़ान-ए-अ़मल में भारी हैं। मैंने अ़र्ज़ किया: ज़रूर बतायें। तो आप ने फ़रमाया ● लम्बी ख़ामोशी, ● ख़ुश अख़्लाक़ी। क़स्म है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। मख़्लूक़ ने इन दो आदतों से बढ़कर

कोई अ़मल नहीं किया।

(مشکوٰۃ شریف ۲/۴۱۰، بیھقی فی شعب الایمان ۴/۲۴۲ حدیث ۴۹۴۱)

6. एक बार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنْ يَضْمَنُ لِي مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَضْمَنُ لَهُ الْجَنَّةَ.

जो शख़्स मुझ से उस चीज़ की ज़मानत ले ले जो उस के दो जबड़ों के दर्मियान है (यानी ज़बान) और उस चीज़ की जो उस के पैरों के दर्मियान है (यानी शर्मगाह) तो मैं उसके लिए जन्नत की ज़मानत लेता हूँ।

(بخاری شریف ۲/۹۵۸ عن سھل بن سعدؓ)

7. नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ख़िताब करते हुए फ़रमाया:

أَتَدْرُونَ مَا أَكْثَرُ مَا يُدْخِلُ النَّاسَ الْجَنَّةَ؟ تَقْوَى اللّٰهِ وَحُسْنُ الْخُلُقِ، أَتَدْرُونَ مَا أَكْثَرُ مَا يُدْخِلُ النَّاسَ النَّارَ؟ الْأَجْوَفَانِ: الْفَمُ وَالْفَرْجُ.

क्या तुम जानते हो क्या चीज़ लोगों को सबसे ज़्यादा जन्नत में दाख़िल करेगी? वह अल्लाह का तक़्वा और ख़ुश अख़्लाक़ी है। और क्या तुम्हें मालूम है सब से ज़्यादा क्या चीज़ लोगों को जहन्नम में पहुंचायेगी? वह दो दर्मियानी चीज़ें यानी मुँह और शर्मगाह हैं।

(رواہ الترمذی عن ابی ھریرۃ، مشکوٰۃ ۲/۴۱۲)

8. बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हवाले से आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की यह नसीहत नक़्ल की गई है:

مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ.

जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो उसे चाहिए कि या तो ख़ैर की बात कहे वर्ना ख़ामोश रहे।

(بخاری شریف ۲/۹۵۹)

9. एक दूसरी हदीस में हज़रत बिलाल बिन अल्-हारिस रज़ियल्लाहु अ़न्हु यह इर्शाद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नक़्ल फ़रमाते हैं:

إِنَّ الرَّجُلَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنَ الْخَيْرِ مَا يَعْلَمُ مَبْلَغَهَا يَكْتُبُ اللّٰهُ لَهُ بِهَا

बेशक आदमी कोई ख़ैर की बात ज़बान से निकालता है मगर उसके दर्जे को नहीं जानता कि अल्लाह तआ़ला उस

رِضْوَانَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَاهُ. وَاِنَّ الرَّجُلَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مِنَ الشَّرِّ مَايَعْلَمُ مَبْلَغَهَا يَكْتُبُ اللّٰهُ بِهَا عَلَيْهِ سَخَطَهٗ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَاهُ. (مشكوٰة شريف ٢/٤١٢)

कलिमे की वजह से उसके लिए क़ियामत तक अपनी रज़ा को लिख देता है। और आदमी कोई बुरा कलिमा कहता है उसके दर्जे को भी नहीं जानता कि अल्लाह तआला उसकी वजह से क़ियामत तक उस से अपनी नाराज़ी मुक़र्रर फ़रमा देता है।

ये इर्शादात-ए-मुबारका हमें बताते हैं कि ज़बान की हिफ़ाज़त किस क़द्र अहम और ज़रूरी अम्र है, जिसका लिहाज़ रखे बग़ैर अल्लाह तआला से शर्माने का हक़ हरगिज़ अदा नहीं हो सकता।

ज़बान की आफ़तें

ज़बान के ज़रिये जो गुनाह होते हैं, या ज़बान जिन गुनाहों के करने का ज़रीया बनती है वे बे-शुमार हैं, उन सबको लिखना मुश्किल है। फिर भी इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि ने इह्या-उल-ऊलूम में ज़बान के गुनाहों को 20 सबक़ों में समेटने की कोशिश की है। जिनमें इन्सान ज़बान के ज़रीये मुब्तला होता है। नीचे वे गुनाह तर्तीब वार पेश हैं:

1. बे ज़रूरत कलाम करना
2. ज़रूरत से ज़्यादा बात करना
3. हराम चीज़ों का ज़िक्र करना (जैसे फ़िल्म की कहानी, झूठों की मज्लिसों का ज़िक्र करना वग़ैरह)
4. झगड़ा करना।
5. दूसरे की हिक़ारत की ग़रज़ से शौर मचाना।
6. गालियाँ और गन्दी बातें करना।
7. मिठार-मिठार कर बात करना।
8. दूसरे पर लअ्न तअ्न करना।
9. ना-जाइज़ मज़ाक़ करना।
10. गाना और ग़लत अश्आर पढ़ना।
11. दूसरे का मज़ाक़ उड़ाना।
12. किसी का राज़ ज़ाहिर करना।
13. झूठा वादा करना।
14. झूठ बोलना।
15. किसी की पीठ पीछे बुराई करना।

16. चुग़ली खाना। 17. दोग़ली बातें करना।

18. ग़ैर मुस्तहिक़ की तारीफ़ करना। 19. अपनी ग़लतियों से बे-ख़बर रहना।

20. अ़वाम में ऐसी दीनी बातें ब्यान करना जो उनकी समझ से बाहर हों (जैसे तक़्दीर और ज़ात व सिफ़ात-ए-ख़ुदावन्दी के बारे में बातें करना, वग़ैरह)

(इह्या-उल-उ़लूम, जिल्द 3)

ये सब गुनाह ऐसे हैं जो ज़्यादा तर ज़बान ही की बे-एहतियाती की वजह से होते हैं। अल्लाह तआ़ला से हया और शर्म करने के लिए अपने को इन सब बुराइयों से बचाना ज़रूरी और लाज़िम है। ☐ ☐

चौथी फ़स्ल

झूठ

ज़ुबान की वजह से सबसे ज़्यादा जिस गुनाह को करके बे-हयाई का सुबूत दिया जाता है वह झूठ बोलना और झूठी गवाही देना है।

क़ुरआन-ए-करीम में झूठ बोलने वालों पर लानत की गई है। इर्शाद है:

فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكَاذِبِيْنَ.

पस लानत करें हम अल्लाह की उन पर जो कि झूठे हैं।

(سورۂ آل عمران آیت ٦١)

और अहादीस-ए-मुबारका में मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से इस गुनाह की बुराई को बयान फ़रमाया गया है।

1. एक हदीस में है:

اِذَا كَذَبَ الْعَبْدُ تَبَاعَدَ عَنْهُ الْمَلَكُ مِيْلًا مِّنْ نَتْنِ مَاجَاءَ بِهٖ.

(رواه الترمذی ٢/١٨)

जब आदमी झूठ बोलता है तो उस कलिमे की बदबू की वजह से जो उसने बोला है रह्मत का फ़रिश्ता उस से एक मील दूर चला जाता है।

2. रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सच्चाई को इख़्तियार करने और झूठ से बचने की निहायत ताकीद फ़रमाई है। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु नक़्ल करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

عَلَيْكُمْ بِالصِّدْقِ فَاِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِيْ اِلَى الْبِرِّ وَاِنَّ الْبِرَّ يَهْدِيْ اِلَى الْجَنَّةِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَصْدُقُ وَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ اللّٰهِ صِدِّيْقًا. وَاِيَّاكُمْ وَالْكِذْبَ فَاِنَّ الْكِذْبَ

सच को इख़्तियार करो, इसलिए कि सच बोलना नेकी की तरफ़ ले जाता है और नेकी जन्नत तक पहुँचा देती है और आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच को ढूंडता रहता है यहाँ तक कि अल्लाह के नज़्दीक उसका नाम सिद्दीक़ीन (सच बोलने वाले) में लिख दिया जाता है।

يَهْدِىْ اِلَى الْفُجُوْرِ وَاِنَّ الْفُجُوْرَ يَهْدِىْ اِلَى النَّارِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَكْذِبُ وَيَتَحَرَّى الْكَذِبَ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ اللّٰهِ كَذَّابًا.

(متفق عليه، مشكوٰة شريف ٢/٤١٢)

और झूठ से बचते रहो। इसलिए कि झूठ फ़िस्क़ व फुजूर (बुरी बातों) की तरफ़ ले जाता है और फ़िस्क़ व फुजूर जहन्नम तक पहुंचा देता है। और आदमी बराबर झूठ बोलता है और झूठ को तलाश करता रहता है। यहां तक कि अल्लाह के यहां उसका नाम झूठों में लिख दिया जाता है।

3. एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़्वाब में देखा कि दो फ़रिश्ते आप को आसमान पर ले गये हैं, वहां आप ने दो आदमियों को देखा, एक खड़ा हुआ है दूसरा बैठा है, खड़ा हुआ शख़्स बैठे हुए आदमी के कल्ले को लोहे की ज़म्बूर (काटने का आला) से गुद्दी तक काटता है, फिर दूसरे कल्ले को उसी तरह काटता है, इतने में पहला कल्ला ठीक हो जाता है और उसके साथ यह अ़मल बराबर जारी है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने साथी फ़रिश्तों से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया:

اَلَّذِىْ رَاَيْتَهٗ يُشَقُّ شِدْقُهٗ فَكَذَّابٌ يَكْذِبُ بِالْكِذْبَةِ تُحْمَلُ عَنْهُ حَتّٰى تَبْلُغَ الْاٰفَاقَ فَيُصْنَعُ بِهٖ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ.

(بخاری شریف ١/١٨٥و٢/٩٠٠)

जिसको आपने देखा कि उसके कल्ले चीरे जा रहे हैं वह ऐसा बड़ा झूठा है जिसने ऐसा झूठ बोला कि वह उस से नक़्ल होकर दुनिया जहाँ में पहुंच गया, लिहाज़ा उसके साथ क़ियामत तक यही मुआ़मला किया जाता रहेगा।

4. रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मज़ाक़ में भी झूठ बोलने से मना किया, बल्कि ऐसे शख़्स के लिए तीन मर्तबा बद्-दुआ फ़रमाई है।

وَيْلٌ لِمَنْ يُحَدِّثُ فَيَكْذِبُ لِيُضْحِكَ بِهِ الْقَوْمَ، وَيْلٌ لَّهٗ، وَيْلٌ لَّهٗ.

(رواه احمد والترمذی، مشکوٰة شریف ٢/٤١٣)

जो शख़्स लोगों को हंसाने के लिए झूठ बोले उसके लिए बर्बादी हो, बर्बादी हो, बर्बादी हो।

आजकल आ़म लोग हंसाने के लिए नये-नये चुटकुले तैयार करते हैं। और सिर्फ़ इसलिए झूठ बोलते हैं ताकि लोग हंसे, उन्हें आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मज़्कूरा इर्शाद अपने पैश-ए-नज़र रखना चाहिए और इस बुरे काम

से बाज़ आना चाहिए।

5. रसूल-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने झूठ बोलने को बड़ी ख़ियानत क़रार दिया है। एक हदीस में है:

كَبُرَتْ خِيَانَةً اَنْ تُحَدِّثَ اَخَاكَ حَدِيْثًا هُوَ لَكَ بِهِ مُصَدِّقٌ وَاَنْتَ بِهِ كَاذِبٌ. (رواه ابو داؤد، مشكوة ٢/٤١٣)

यह बड़ी ख़ियानत है कि तू अपने भाई से ऐसी बात करे जिसमें वह तुझे सच्चा समझता हो हालांकि तू उससे झूठ बोल रहा है।

6. झूठ बोलने को मुनाफ़िक़ की ख़ास निशानियों में शुमार किया गया। एक हदीस में इर्शाद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम है:

آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ. إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ وَإِذَا وَعَدَ اَخْلَفَ وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ.

(بخاری شریف ٢/٩٠٠ومسلم شریف ١/٥٦)

मुनाफ़िक़ की तीन (ख़ास) निशानियाँ हैं, जब बात करे तो झूठ बोले, जब वादा करे तो उसके ख़िलाफ़ करे और जब उसे अमीन (अमानत रखने वाला) बनाया जाये तो उसमें ख़ियानत करे।

7. एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सच को जन्नत की ज़मानत क़रार देते हुए इर्शाद फ़रमाया:

اِضْمَنُوْا لِيْ سِتًّا مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَضْمَنْ لَكُمُ الْجَنَّةَ. اُصْدُقُوْا إِذَا حَدَّثْتُمْ، وَ اَوْفُوْا إِذَا وَعَدْتُمْ، وَاَدُّوْا إِذَا اؤْتُمِنْتُمْ، وَاحْفَظُوْا فُرُوْجَكُمْ، وَغُضُّوْا اَبْصَارَكُمْ، وَكُفُّوْا اَيْدِيَكُمْ.

(بیهقی فی شعب الایمان ٤/٢٠٠-٣٢٠ حدیث ٤٨٠٢-٥٢٥٦ عن عبادة بن الصامتؓ)

तुम मुझ से अपनी तरफ़ से छः बातों की गरन्टी ले लो, मैं तुम्हारे लिए जन्नत की ज़मानत लेता हूँ। ❶ जब बात करो तो सच बोलो, ❷ जो वादा करो उसे पूरा करो, ❸ अपनी अमानत को अदा करो, ❹ अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो, ❺ अपनी निगाहें नीची रखो और ❻ अपने हाथों को (ज़ुल्म से) रोके रखो।

8. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सच बोलने को उन आमाल में शुमार फ़रमाया जो मुहब्बत-ए-ख़ुदा व रसूल की निशानी हैं, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

مَنْ سَرَّهٗ اَنْ یُّحِبَّ اللّٰہَ وَ رَسُوْلَہٗ اَوْ یُحِبَّہُ اللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ فَلْیَصْدُقْ حَدِیْثَہٗ اِذَا حَدَّثَ وَلْیُؤَدِّ اَمَانَتَہٗ اِذَا اؤْتُمِنَ وَلْیُحْسِنْ جِوَارَ مَنْ جَاوَرَہٗ.

(بیہقی فی شعب الایمان ۲/۲۰۱ حدیث ۱۵۳۳)

जिस शख़्स को यह बात पसन्द हो कि वह अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करे और अल्लाह और उसका रसूल उससे मुहब्बत करे तो वह जब बोले सच बोले और जब उसे कोई अमानत सुपुर्द की जाये तो उसे अदा करे और अपने पड़ोसी के साथ अच्छा बर्ताव करे।

9. इसी तरह झूठ से बचने पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जन्नत की ज़मानत ली है।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

اَنَا زَعِیْمٌ بِبَیْتٍ فِیْ وَسَطِ الْجَنَّۃِ لِمَنْ تَرَکَ الْکِذْبَ وَ اِنْ کَانَ مَازِحًا. (الترغیب والترھیب ۳/۳٦٤، بیھقی فی شعب الایمان ٤/۲۱۷ حدیث ٥۲٤۳ عن ابی امامۃ)

मैं उस शख़्स के लिए बीच जन्नत में घर की किफ़ालत (ज़मानत) लेता हूँ जो झूठ को छोड़ दे अगरचे मज़ाक़ ही में क्यों न हो।

सच में ही नजात है

हक़ीक़त यह है कि झूठ से बचना और हर मुआ़मले में सच को इख़्तियार करना क़ुरबत-ए-ख़ुदा वन्दी का एक बड़ा ज़रीया है। इस सिफ़त की बदौलत इन्सान में हक़ीक़तन अल्लाह रब्बुल आ़लमीन से शर्म व हया करने का जज़्बा पैदा होता है और ख़ैरात की तौफ़ीक़ अ़ता होती है, उसके बर-ख़िलाफ़ झूठ के मुआ़मले में लापरवाही बरतना सख़्त नुक़्सान और महरूमी का सबब है, झूठ से वक़्ती तौर पर कोई दुनियवी फ़ायदा तो उठाया जा सकता है लेकिन अन्जाम के ऐतिबार से वह नजात का ज़रीया नहीं बन सकता और सच बोल कर हो सकता है वक़्ती तौर पर कुछ नुक़्सान महसूस हो लेकिन उसका नतीजा अख़ीर में हमेशा अच्छा और फ़ायदे मंद ही निकलता है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

تَحَرَّوا الصِّدْقَ وَاِنْ رَاَیْتُمْ اَنَّ الْھَلَکَۃَ

सच को तलाश करो, अगरचे तुम्हें उस

فِيْهِ، فَإِنَّ فِيْهِ النَّجَاةَ.

(الترغيب والترهيب ٣/٣٦٥ عن منصور بن المعتمرؒ)

में हलाकत मालूम हो, इसलिए कि नजात इसी (सच बोलने) में है।

इस्लामी तारीख़ में जंग-ए-तबूक में बिला वजह शिरकत न करने वाले मुख़्लिस सहाबा (हज़रत कअ़ब बिन मालिक, हज़रत मुरारा निब अल्- रबीअ़ और हज़रत हिलाल इब्ने उमैया रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) का नाम सुनहरे हुरूफ़ से नक़्श है। जिन्होंने सच को इख़्तियार करके सही सही मुआ़मला आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बतला दिया था जिसकी वजह से अगरचे उन्हें 50 दिन बाइकाट की तकलीफ़ झेलनी पड़ी, लेकिन आख़िरकार उनकी तौबा की क़ुबूलियत के सिलसिले में क़ुरआन -ए-करीम की आयात (وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا... الخ) नाज़िल हुयीं और उन्हें उनकी सच्चाई की वजह से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत व मग़्फ़िरत का तमग़ा (इन्आ़म) अ़ता किया गया और जिन मुनाफ़िक़ीन ने झूठे उ़ज़्र (मज्बूरी) पैश करके बज़ाहिर अपनी जान बचा ली थी, अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन-ए-करीम में उनके जहन्नमी होने का ऐलान फ़रमाया।

(बुख़ारी शरीफ़ 2/636)

तज्रिबे से भी यह बात साबित है कि झूठे आदमी का ऐतिमाद लोगों में मजरूह हो जाता है और लोग उसे अच्छी निगाह से नहीं देखते, यही वजह है कि हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को झूठ से ज़्यादा कोई सिफ़त ना-पसन्द न थी।

(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/367)

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह भी इर्शाद है कि मोमिन में हर सिफ़त हो सकती है लेकिन वह झूठा नहीं हो सकता (यानी अगर झूठा हो तो उसके ईमान में नुक़्स होगा)। (अत्तर्ग़ीब 3/367)

और हज़रत उ़मर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह इर्शाद नक़्ल फ़रमाया है कि कोई शख़्स उस वक़्त तक पूरा ईमान हासिल नहीं कर सकता जब तक कि मज़ाक़ (तक) में झूठ बोलने और झगड़ा करने से बाज़ न आ जाये, अगरचे वह हक़ पर ही क्यों न हो।

(अत्तर्ग़ीब 3/367)

यह भी झूठ है

इन हिदायात और इर्शादात को सामने रखकर हमें अपने काम करने के तरीक़े का जाइज़ा लेना चाहिए, झूठ का मुआमला कितना नाज़ुक है? इसका अन्दाज़ा इस वाक़िए से होता है:

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَامِرٍ ﷺ قَالَ: دَعَتْنِيْ أُمِّيْ يَوْمًا وَرَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ قَاعِدٌ فِيْ بَيْتِنَا فَقَالَتْ هَا تَعَالَ أُعْطِيْكَ فَقَالَ لَهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: مَا أَرَدْتِ أَنْ تُعْطِيَهُ؟ قَالَتْ أَرَدْتُ أَنْ أُعْطِيَهُ تَمْرًا. فَقَالَ لَهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: أَمَا إِنَّكِ لَوْ لَمْ تُعْطِهِ شَيْئًا كُتِبَتْ عَلَيْكِ كِذْبَةٌ.

(الترغيب والترهيب ٣/ ٣٧٠)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारे मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे, मेरी वालिदा ने (मेरी तरफ़ बन्द मुट्ठी बढ़ाकर) कहा, यहां आओ मैं तुम्हें दूंगी (जैसे मांए बच्चे को पास बुलाने के लिए ऐसा करती हैं) आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने (मेरी) वालिदा से इर्शाद फ़रमाया: तुम्हारा इसे क्या देने का इरादा था? वालिदा ने जवाब दिया कि मैं इसे खजूर देना चाहती थी, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम इसे खजूर न देतीं तो तुम्हारे नामा-ए-आमाल में एक झूठ लिखा जाता।

इस हदीस से मालूम हुआ कि बहुत सी ऐसी बातें जिन्हें मुआ़शरे (समाज) में झूठ नहीं समझा जाता है, उनपर भी झूठ का गुनाह हो सकता है। बच्चों को झूठी तसल्ली देने और झूठे वादे करने का आ़म तौर पर हर जगह रिवाज है और इसे झूठ समझा ही नहीं जाता। हालांकि इर्शाद-ए-नबवी के मुताबिक़ यह भी झूठ में दाख़िल है। इसी तरह हंसाने के लिए और सिर्फ़ मज़ाक़ करने के लिए झूठ बोलने को गोया जाइज़ समझा जाता है और इसे बिल्कुल ऐब की चीज़ शुमार नहीं किया जाता। जबकि इस मक़्सद से झूठ बोलना भी सख़्त गुनाह है।

तिजारत करने वाले हज़रात मुतवज्जेह हों

ख़रीद व फ़रोख़्त के मुआ़मले में भी दिल खोलकर झूठ बोला जाता है और

बिल्कुल भी इसके गुनाह होने का एहसास नहीं किया जाता। ताजिर के पेश-ए-नज़र बस यह रहता है कि उसकी दुकान का माल बिकना चाहिए भले ही झूठ बोलना पड़े। गाहकों को लुभाने के लिए तरह तरह के हथकंडे इस्तिमाल किये जाते हैं। और सिर्फ़ चन्द रोज़ा नफ़ा के लिए आख़िरत की महरूमी मोल ली जाती है। इसी बिना पर रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है:

اَلتُّجَّارُ يُحْشَرُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فُجَّارًا اِلَّا مَنِ اتَّقٰى وَبَرَّ وَصَدَقَ.

(مشكوٰة ١/٢٤٤، ترمذى ١/٢٣٠)

(अक्सर) ताजिर क़ियामत के दिन फ़ाजिरों की सफ़ (गिरोह) में उठाये जाएंगे, मगर वह (ताजिर) जो अल्लाह से डरे और नेकी करे और सच बोले।

एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ख़िताब करते हुए फ़रमायाः

اِنَّ التُّجَّارَ هُمُ الْفُجَّارُ.

बेशक ताजिर ही फ़ाजिर हैं।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या अल्लाह ने बैअ़ (बेचना ख़रीदना) को हलाल नहीं फ़रमाया (फिर बैअ़ (बेचना ख़रीदना) करने वाले क्यों ख़ताकार हैं?) तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब दियाः

بَلٰى! لٰكِنَّهُمْ يَحْلِفُوْنَ فَيَأْثَمُوْنَ وَيُحَدِّثُوْنَ فَيَكْذِبُوْنَ.

(الترغيب ٢/٣٦٦)

हाँ (बैअ़ हलाल तो है) मगर ये (ताजिर) क़स्में खाकर गुनहगार होते हैं। और जब बात करते हैं तो झूठ बोलते हैं। (इसलिए उन्हें फ़ाजिर कहा गया)

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन आदमी ऐसे हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआ़ला रहमत की नज़र न फ़रमायेगा और न उनका तज़्किया (पाक) करेगा और उनको दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ऐसे बद्-नसीब लोग कौन होंगे? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

اَلْمُسْبِلُ وَالْمَنَّانُ وَالْمُنَفِّقُ

(एक) वह जो अपने कपड़े को टख़्ने से नीचे लटकाये, (दूसरे) वह जो सद्क़ा

करके एहसान जताये (तीसरे) वह जो अपने सामान को झूठी क़सम के ज़रीये बेचे।

مُنَفِّقُ سِلْعَتَهُ بِالْحَلِفِ الْكَاذِبِ.

(مسلم شریف ۱/۷۱، الترغیب ۲/۳۶۷)

हमारा अमल

आज हाल यह है कि आम तौर पर दुकानदार अपने माल को बेचने के लिए ● कम दर्जे के माल को आला दर्जे का बताते हैं। ● क़ीमत के बारे में बे-धड़क झूठ बोल देते हैं कि इतने रूपये की तो हमें भी नहीं पड़ी, ताकि गाहक मुतास्सिर हो जाये और इस से ज़्यादा क़ीमत पर ख़रीद ले। ● अगर गाहक किसी कम्पनी का सामान मांगे तो यह नहीं कहते कि हमारे पास इस कम्पनी का माल नहीं है दूसरी जगह से ले लो, बल्कि यह कहकर गाहक को धोका देते हैं कि तुम जिस कम्पनी का माल मांग रहे हो, उसका माल तो बाज़ार में आ ही नहीं रहा है, दूसरी कम्पनी का ख़रीद लो ताकि उसके यहां रखा हुआ माल बिक जाये। ● पुराने माल पर नया लेबल लगा देते हैं और ● माल की तारीफ़ में ज़मीन व आसमान को एक कर देते हैं।

मतलब यह कि हर वह तरीक़ा अपनाते हैं जिससे गाहक ख़रीदने पर मजबूर हो जाये और इसी को अपनी कामियाबी समझते हैं, यह दीनी कामों से बे-रग़बती और लापरवाही की दलील है, झूठ हर हाल में झूठ है, वह जिस वक़्त भी बोला जाये उसका गुनाह होगा, इसलिए ख़ास कर तिजारत पेशा हज़रात को अपनी ज़बानों को लगाम देने की ज़रूरत है, वे अगर अल्लाह पर भरोसा करके सच्चाई और दियानतदारी के साथ कमाई करेंगे तो अल्लाह तआला दुनिया में बे-हिसाब बरकत अता फ़रमायेगा और आख़िरत में भी उनका हश्र हज़रात अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन के साथ होगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ 1/229)

झूठी तारीफ़ें

शैतान ने इस ज़माने में झूठ के फैलाव के लिए नई-नई रस्में और तरीक़े ईजाद कर रखे हैं। इन्हीं में से एक रस्म लोगों की झूठी तारीफ़ करने और बे-सरोपा अल्क़ाब देने की भी है। और तो और ख़ुद उलमा भी इस बारे में एहतियात नहीं करते। जल्सों के इश्तिहारात में इस झूठ की भरमार होती है। यहाँ तक कि एक मामूली शख़्स के साथ एक-एक लाइन के आदाब व अल्क़ाब

लगाकर मुकम्मल झूठ का इज़्हार किया जाता है। इसी तरह तक़रीर करने वालों के तआरूफ़, सिपास-नामों और मनक़बती नज़्मों में वह मुबालग़ा आराई की जाती है कि अल्-अमान अल्- हफ़ीज़। फिर तअ़ज्जुब यह कि इस अ़मल को झूठ समझा भी नहीं जाता, अल्लाह की नज़र में यह अ़मल निहायत ना-पसन्दीदा है। ख़ासकर जब किसी ना-अहल और फ़ासिक़ व फ़ाजिर की तारीफ़ की जाती है (जैसा कि आजकल लीडरों और अफ़्सरान की ख़ुशामद वग़ैरह का तरीक़ा है) तो इस गुनाह की वजह से अ़र्शे ख़ुदावन्दी तक काँप उठता है, एक हदीस के अल्फ़ाज़ हैं:

إِذَا مُدِحَ الْفَاسِقُ غَضِبَ الرَّبُّ تَعَالٰى وَاهْتَزَّ لَهُ الْعَرْشُ.

(مشكوٰة شريف ٢/٤١٤ عن انسؓ)

जब फ़ासिक़ शख़्स की तारीफ़ की जाती है तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को ग़ुस्सा आ जाता है और उसकी बिना पर अ़र्श-ए-ख़ुदावन्दी हरकत में आ जाता है।

मालदारों, उ़हदेदारों और फ़ासिक़ व फ़ाजिर लोगों की तारीफ़ करने वाले लोग इस हदीस से इब्रत हासिल करें और सोचें कि वे अपनी ज़बान को इस गुनाह में मुब्तला करके किस क़द्र बे-हयाई का सुबूत दे रहे हैं।

तारीफ़ में एहतियात

फिर चूंकि सिर्फ़ तारीफ़ करना भी इस मतलब से ख़ाली नहीं है कि जिस शख़्स की तारीफ़ की जा रही है बहुत मुमकिन है कि वह अपनी तारीफ़ सुनकर उ़ज्ब और तकब्बुर में मुब्तला हो जाये और अपने बातिनी उ़यूब उससे पोशीदा हो जायें, इसलिए शरीअ़त में मुँह पर तारीफ़ करने वालों की हिम्मत शिक्नी के अहकामात दिये गये हैं और ख़्वाह-म-ख़्वाह तारीफ़ करने में एहतियात से काम लेने की ताकीद की गई है, ताकि ज़बान की हिफ़ाज़त के साथ साथ अपने मुसलमान भाई की ख़ैर ख़्वाही भी पेश-ए-नज़र रहे,[1] हज़रत अबू बक्रह रज़ियल्लाहु अ़न्हु नक़्ल करते हैं कि एक शख़्स ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि

1. तारीफ़ तीन तरह की होती है। 1. मुँह पर तारीफ़ करना, 2. ग़ाइबाना तारीफ़ करना, इस निय्यत से कि जिसकी तारीफ़ की गई है उस तक बात पहुंच जाये, ये दोनों सूरतें मना हैं 3. ग़ाइबाना में तारीफ़ क़तअ़ नज़र इससे कि किसी को इसका इ़ल्म हो या न हो, यह जाइज़ है। (मज़ाहिर-ए-हक़ 4/96)

वसल्लम के सामने किसी शख़्स की तारीफ़ की तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

اَهْلَكْتُمْ اَوْ قَالَ قَطَعْتُمْ ظَهْرَ الرَّجُلِ. (بخاری شریف ۲/۸۹۵ عن ابی موسی الاشعری، مسلم شریف ۲/۴۱۴)

तुमने इसे हलाक कर डाला, या फ़रमाया कि तुमने इस आदमी की कमर तोड़ दी।

दूसरे मौक़े पर फ़रमायाः

وَيْحَكَ قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ يَقُوْلُهُ مِرَارًا، اِنْ كَانَ اَحَدُكُمْ مَادِحًا لَامَحَالَةَ فَلْيَقُلْ اَحْسِبُ كَذَا وَكَذَا اِنْ كَانَ يَرَى اَنَّهُ كَذٰلِكَ وَحَسِيْبُهُ اللّٰهُ، وَلَا يُزَكِّيْ عَلَى اللّٰهِ اَحَدًا. (بخاری شریف ۲/۸۹۵ عن ابی بکرۃ، مسلم شریف ۲/۴۱۴، مشکوۃ ۲/۴۱۲)

तेरे लिए हलाकत हो, तूने अपने साथी की गरदन काट दी (यह जुमला कई बार इर्शाद फ़रमाया) तुम में जिसे किसी की तारीफ़ ही करनी हो तो यूँ कहा करे कि मेरा फ़्लां के बारे में यह गुमान है (जैसे वह नेक है) जबकि वह उसे हक़ीक़तन ऐसा ही समझता हो और अल्लाह तआ़ला ही हक़ीक़त-ए-हाल का जानने वाला है और तारीफ़ करने वाला जज़्म व यक़ीन के साथ हत्मी तौर पर किसी की तारीफ़ न करे (कि उसका हक़ीक़ी इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है)।

इसी तरह एक दूसरी हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पेशावर तारीफ़ करने वालों को इस तरह हिम्मत तोड़ने वाले जवाब देने की तल्क़ीन फ़रमाईः

اِذَا رَاَيْتُمُ الْمَدَّاحِيْنَ فَاحْثُوْا فِيْ وُجُوْهِهِمُ التُّرَابَ. (مسلم شریف ۲/۴۱۴ عن المقداد بن الاسودؓ، مشکوۃ شریف ۲/۴۱۲)

जब तुम (मफ़ाद परस्त) तारीफ़ करने वालों को देखो तो उनके मुँह में मिट्टी डाल दो।

मक़्सद यह है कि ऐसे लोगों को मुँह न लगाओ और वे तुमसे जिन दुनियवी फ़ायदों की उम्मीदें बांधे हुए हैं उन्हें पूरा न करो, ताकि वे फिर आगे भी इस बे-जा तारीफ़ की जुरअत न कर सकें। ग़रज़ हया-ए-खुदावन्दी का तक़ाज़ा यह है कि हम अपनी ज़बान को हर उस चीज़ से महफ़ूज़ रखें जिसमें झूठ और ख़िलाफ़-ए-वाक़िआ़ होने का शुब्ह पाया जाता हो। हमें जहाँ तक हो सके अल्लाह से शर्म का लिहाज़ रखना चाहिए। □ □

पांचवीं फ़स्ल

ग़ीबत भी बे-हयाई है

ज़बान के ज़रीये से जो गुनाह पैदा होते हैं और जिनके ज़रीये खुल्लम खुल्ला अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के साथ बे-शर्मी और बे-हयाई का सुबूत दिया जाता है उन में एक घिनावना जुर्म ग़ीबत का है। यह वबा आज चाय को होटलों से लेकर "सफ़ेद पोश हामिलीन जुब्बा व दस्तार" की मुबारक मज्लिसों तक फैली हुई है। मज्लिस की गर्मी आज ग़ीबतों के दम से होती है और सिलसिला-ए-गुफ़्तुगू लम्बा करने के लिए आम तौर से ग़ीबत का ही सहारा लिया जाता है। अब यह मरज़ इस क़द्र आ़म हो चुका है कि इसकी बुराई और गुनाह होने का एहसास तक दिल से निकलता जा रहा है। यह सूरत-ए-हाल अफ़्सोसनाक ही नहीं बल्कि अन्देशानाक भी है, इसका तदारुक जभी हो सकता है और इससे बचने और महफ़ूज़ रहने का जज़्बा उसी वक़्त पैदा हो सकता है जबकि हदीस के अल्फ़ाज़ "فليحفظ الرأس وما وعى" के मज़ामीन का हर वक़्त इस्तिहज़ार रखा जाये और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से हया का हक़ अदा करने की बराबर कोशिश की जाती रहे और साथ में अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इलहा व ज़ारी और लजाजत के साथ इस बदतरीन रूहानी बीमारी से नजात और शिफ़ा की गुज़ारिश भी की जाती रहे। आज के दौर में अल्लाह की ख़ास तौफ़ीक़ के बग़ैर इस गुनाह से बचने का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

ग़ीबत करना मुरदार भाई का गोश्त खाने के बराबर है

ग़ीबत की बुराई का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि क़ुरआन-ए-करीम ने ग़ीबत से बचने का हुक्म करते हुए ग़ीबत करने को अपने मुरदार भाई का गोश्त खाने के बराबर क़रार दिया है। इर्शाद होता है:

وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ. (الحجرات آيت: ١٢)

और बुरा न कहो पीछे एक दूसरे के, भला अच्छा लगता है तुम में किसी को कि खाये गोश्त अपने भाई का जो मुर्दा हो सो घिन आती है तुम को उससे।

ज़ाहिर है कि कोई शख़्स हरगिज़ हरगिज़ इस बात को सोच भी नहीं सकता कि किसी भी मुर्दे का गोश्त खाये और फिर अपने मरे हुए भाई का। क़ुरआन-ए-करीम यह यक़ीन हमारे दिल में बिठाना चाहता है कि जिस तरह तुम्हारी तबीअ़त अपने भाई का गोश्त खाने पर आमादा नहीं होती, इसी तरह तुम्हें उसकी बुराई करने से भी पूरी तरह बचना चाहिए क्योंकि ग़ीबत करना ऐसा है जैसे कि उसकी इ़ज़्ज़त-ए-नफ़्स को बेच खाना है, जो इसी तरह मकरूह और नापसन्दीदा है जैसे उसका गोश्त खाना ना-पसन्दीदा और नफ़रत का सबब होता है।

ग़ीबत क्या है ?

जब ग़ीबत पर किसी को टोका जाता है तो वह फ़ौरन यह जवाब देता है कि क्या हुआ? मैं तो हक़ीक़त-ए-हाल बयान कर रहा हूँ। जैसे कि यह हक़ीक़त बयान करना जाइज़ है। हालांकि यह सोचना बिल्कुल ग़लत है। रसूल-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

أَتَدْرُوْنَ مَا الْغِيْبَةُ؟ قَالُوْا: اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَمُ. قَالَ: ذِكْرُكَ اَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ. قِيْلَ أَرَأَيْتَ لَوْ كَانَ فِيْ اَخِيْ مَا اَقُوْلُ؟ قَالَ: اِنْ كَانَ فِيْهِ مَا تَقُوْلُ فَقَدِ اغْتَبْتَهٗ وَاِنْ لَّمْ يَكُنْ فِيْهِ فَقَدْ بَهَتَّهٗ.

(مسلم شریف ۲/۳۲۲ عن ابی ہریرۃ)

क्या तुम्हें मालूम है ग़ीबत क्या है? सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया? अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा जानता है, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः अपने भाई के बारे में उन बातों का ज़िक्र करना जो उसे नापसन्द हों (ग़ीबत है)। एक शख़्स ने सवाल किया कि अगर मेरे भाई के अन्दर वे आ़दात हों जो मैंने कही हैं (तो क्या फिर भी ग़ीबत होगी?) तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर वह बुराई तेरे साथी में पायी जाये तभी तो वह ग़ीबत होगी और अगर वह बात उसके अन्दर न हो तो तूने उस पर बोहतान बांधा है। (जो ग़ीबत से भी बड़ा गुनाह है)

इससे मालूम हुआ कि उस बुराई का ब्यान कर देना भी ग़ीबत है जो बुराई उस शख़्स में पाई जाती हो और उसके उ़मूम में हर ऐसी बुराई का ब्यान शामिल है जिस से उस शख़्स की इज़्ज़त में फ़र्क़ आता हो चाहे वह दुनिया की बुराई हो या दीन की। जिस्म की बुराई हो या अख़्लाक़ की, औलाद की बुराई हो या बीवी की, ख़ादिम की बुराई हो या ग़ुलाम की। ग़रज़ जिस चीज़ के ब्यान से किसी की बेइज़्ज़ती होती हो उसका इज़्हार ग़ीबत के हुक्म में दाख़िल है।

(रूहुल मआ़नी 26/158)

सामने बुराई करना भी गुनाह है

और कुछ हज़रात ने यह भी लिखा है कि जिस तरह पीठ पीछे बुराई करना ग़ीबत है उसी तरह सामने बुराई करना भी बुराई में ग़ीबत के बराबर बल्कि उससे बढ़कर है। क़ुरआन के अल्फ़ाज़ "وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ" में तफ़्सील के साथ इससे भी मना फ़रमाया गया है। और हदीस के अल्फ़ाज़ ذِكْرُكَ اَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ के उ़मूम से भी यही मालूम होता है। अ़ल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अ़लैहि रूहुल मआ़नी में नक़्ल फ़रमाते हैं:

وَفِي الزَّوَاجِرِ: لَا فَرْقَ فِي الْغِيْبَةِ بَيْنَ اَنْ تَكُوْنَ فِيْ غَيْبَةِ الْمُغْتَابِ اَوْبِحَضْرَتِهٖ هُوَ الْمُعْتَمَدُ. (روح المعانی ۱۵۸/۲٦، کتاب الزواجر ۲/۲٦)

और ज़वाजिर (किताब का नाम) में लिखा है कि ग़ीबत चाहे मुग़्ताब (जिसकी ग़ीबत की जाए) की ग़ैर-मौजूदगी में की जाये या उसकी मौजूदगी में (दोनों सूरतों में) कोई फ़र्क़ नहीं है। यही क़ाबिले एतिमाद बात है।

आ़म तौर पर ग़ीबत की यह तावील भी ब्यान की जाती है कि "साहब! यह बात तो मैं उसके मुँह पर कह चुका हूँ"। यानी यह समझा जाता है कि ग़ीबत सिर्फ़ वह है जो पीठ पीछे की जाये और सामने किसी की तौहीन करें तो वह ग़ीबत नहीं है हालांकि हज़रात-ए-मुफ़स्सिरीन की तशरीह से यह बात वाज़ेह है कि किसी के सामने हर ऐसी बात कहना जो उसे बुरी लगे और उसकी इज़्ज़त में उसकी वजह से फ़र्क़ आये, ये सब सूरतें ग़ीबत की सज़ा में शामिल हैं और उनसे बचने की ज़रूरत है, मगर यह कि ग़ीबत से मक़्सूद बेइज़्ज़ती न हो, बल्कि इस्लाह या दूसरों को बुराई से बचाना वग़ैरह हो, तो उसके मसाइल ज़रूरत और

मजबूरी के तहत फ़िक़्ह की किताबों में अलग से ब्यान किये गये हैं।[1]

(आलमगीरया 5/362, मआरिफ़ुल क़ुरआन 8/123)

आँखें खोलिए

अहादीस-ए-मुबारका में बहुत ज़्यादा सख़्ती के साथ मुआशर-ए-इस्लामी से इस घिनावने जुर्म की बुनियादें उखाड़ फैंकने की तलक़ीन फ़रमाई गई है, नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ग़ीबत के बारे में इतनी सख़्त वईदें (सज़ाऐं) इर्शाद फ़रमाई हैं जिन्हें पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये:

1. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सफ़रे मेराज में दोज़ख़ को देखते वक़्त कुछ ऐसे लोगों को देखा जो मुरदार खा रहे थे, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि यह कौन लोग हैं, तो हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया:

هٰٓؤُلَاۤءِ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ لُحُوْمَ النَّاسِ. (الترغيب والترهيب ٣/٣٢٠)

ये वे लोग हैं जो (दुनिया में) लोगों का गौश्त (यानी उनकी इज़्ज़त) खाते थे। (यानी ग़ीबत किया करते थे)।

---

1. अ़ल्लामा शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने वे ग्यारह मौक़े ब्यान किये हैं जिनमें किसी की बुराई ब्यान करना ग़ीबत के दायरे में दाख़िल नहीं है। 1. बतौर हस्रत व अफ़्सोस के किसी की बुराई करना, 2. किसी शख़्स को ख़ास किए बग़ैर आम तौर पर अहले बस्ती के ऐब ब्यान करना, 3. खुले आम बुरी हरकतें करने वाले की हरकतें ब्यान करना, 4. लोगों को होशियार करने के लिए किसी बद्-अक़ीदा शख़्स की बद्-अक़ीदगी का इज़्हार करना, 5. हाकिम के सामने ज़ुल्म को रोकने के लिए ज़ालिम का ज़ुल्म ब्यान करना, 6. जो भी शख़्स बुराई रोकने पर क़ादिर हो उसके सामने उस शख़्स के ऐब ज़ाहिर कर देना, जैसे बाप के सामने बेटे या मालिक के सामने ख़ादिम की बुराई करना, 7. रिश्तेदारी क़ाइम करने के बारे में मश्वरा देते वक़्त उस शख़्स के ऐबों को ज़ाहिर कर देना, 8. फ़त्वा लेते वक़्त सही सूरत-ए-हाल मुफ़्ती को बता देना, 9. ग़ुलाम वग़ैरह ख़रीदने वाले से ग़ुलाम का ऐब ब्यान करना, 10. सिर्फ़ तआरूफ़ कराने के लिए किसी को "ना-बीना, लंगड़ा वग़ैरह कहना, 11. मजरूह और ग़ैर मोतबर हदीस के रावियों और मुसन्निफ़ीन के हालात को ज़ाहिर करना, ये सूरतें ग़ीबत में दाख़िल नहीं हैं लेकिन सबमें यह शर्त है कि इन में भी तह्क़ीर-ए-मुस्लिम का पहलू हरगिज़ शामिल न होना चाहिए। (शामी कराची, 6/408-409, शामी 9/500-501, फ़स्ल फ़िल बैअ़)

2. इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोज़ख़ में कुछ ऐसे बद्-नसीबों को भी देखा जो अपने तांबे के नाख़ूनों से अपने चहरों और सीनों को खुरच रहे थे। उनके बारे में पूछे जाने पर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

هٰؤُلَآءِ الَّذِيْنَ يَأْكُلُوْنَ لُحُوْمَ النَّاسِ وَيَقَعُوْنَ فِيْ أَعْرَاضِهِمْ. (ابوداؤد شريف ٢/٦٦٩، رواه البيهقي ٥/٣٠٠ عن انسؓ، الترغيب والترهيب ٣/٣٣٠)

ये वही लोग हैं जो लोगों का गोश्त खाते थे और उनकी इज़्ज़तों से खिलवाड़ करते थे।

3. और एक लम्बी हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ब्यान फ़रमाते हैं कि मैंने सफ़र-ए-मेराज के दौरान कुछ ऐसी औरतों और मर्दों को देखा जो सीनों के बल लटके हुए थे। तों मैं (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से उनके बारे में पूछा तो उन्होनें जवाब दियाः

هٰؤُلَآءِ اللَّمَّازُوْنَ وَالْهَمَّازُوْنَ الخ. (رواه البيهقي عن راشد بن سعدؓ، الترغيب والترهيب ٣/٣٣٠)

ये ज़बान और आँख के इशारों के ज़रिए ग़ीबत करने वाले हैं।

4. एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़ीबत और किसी मुसलमान की आबरु-रैज़ी को बद्तरीन सूद से ताबीर फ़रमाया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद-ए-मुबारक हैः

إِنَّ الرِّبَا نَيِّفٌ وَّ سَبْعُوْنَ بَابًا أَهْوَنُهُنَّ بَابًا مِّنَ الرِّبَا مِثْلُ مَنْ أَتَى أُمَّهُ فِي الْإِسْلَامِ وَدِرْهَمٌ مِّنَ الرِّبَا أَشَدُّ مِنْ خَمْسٍ وَّثَلَاثِيْنَ زَنْيَةً وَأَشَدُّ الرِّبَا وَأَرْبَى الرِّبَا وَأَخْبَثُ الرِّبَا اِنْتِهَاكُ عِرْضِ الْمُسْلِمِ وَانْتِهَاكُ حُرْمَتِهٖ. (رواه البيهقي ٥/٢٩٩ عن ابن عباسؓ حديث ٦٧١٥، الترغيب ٣/٣٢٦)

सूद के 70 से ज़्यादा दरवाज़ें हैं उनमें सबसे कमतर सूद के दरवाज़े का गुनाह ऐसा है जैसे (हम अल्लाह से पनाह चाहते हैं) कोई शख़्स अपनी माँ से बहालत-ए-इस्लाम बद्कारी करे और सूद का एक दिर्हम 35 मर्तबा ज़िना करने से भी सख़्त है। और सबसे सख़्त तरीन सूद, सबसे बड़ा सूद और सबसे बद्तरीन सूद किसी मुसलमान की इज़्ज़त व हुरमत को पामाल करना है।

5. एक मर्तबा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से बे-ख़्याली में उम्मुल मौमिनीन हज़रत सफ़िय्या रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में ग़ीबत के कलिमात निकल गये (यानी आप ने इशारे से उन्हें कसीरह (पस्ता क़द) कह दिया) तो आंहज़रत

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को इस तरह तंबीह फ़रमाईः

لَقَدْ قُلْتِ كَلِمَةً لَوْ مُزِجَ بِهَا الْبَحْرُ لَمَزَجَتْهُ. (رواه أحمد والترمذی وابوداؤد، مشکوٰة شریف ٢/٤١٤)

तुमने ऐसी बात कही है कि अगर उसे समन्दर में डाल दिया जाय तो वह बात समन्दर के पानी को ख़राब कर दे।

6. एक हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की जमाअ़त में फ़रमाया कि ग़ीबत ज़िना से बढ़कर है, सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने हैरत से सवाल किया कि हज़रत यह कैसे? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब दियाः

إِنَّ الرَّجُلَ لَيَزْنِيْ فَيَتُوْبُ فَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَفِيْ رِوَايَةٍ فَيَتُوْبُ فَيَغْفِرُ اللّٰهُ لَهُ وَإِنَّ صَاحِبَ الْغِيْبَةِ لَا يُغْفَرُ لَهُ حَتّٰى يَغْفِرَهَا لَهُ صَاحِبُهُ وَفِيْ رِوَايَةِ أَنَسٍ قَالَ: صَاحِبُ الزِّنَا يَتُوْبُ وَصَاحِبُ الْغِيْبَةِ لَيْسَ لَهُ تَوْبَةٌ.

(رواه البيهقی فی شعب الايمان ٥/٣٠٦، عن ابی سعيد وجابرؓ حديث ٦٧٤١-٦٧٤٢، مشکوٰة شريف ٢/٤١٥)

इन्सान ज़िना करके तौबा करे तो अल्लाह तआ़ला (सिर्फ़ उसके सच्ची तौबा करने पर उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेता है) और एक रिवायत में है कि जब वह तौबा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। और (उसके बरख़िलाफ़) ग़ीबत करने वाले की उस वक़्त तक मग़्फ़िरत नहीं होती जब तक कि उसको वह आदमी जिस की ग़ीबत की गई है माफ़ न कर दे। और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत में है कि ज़िना करने वाला बड़े गुनाह के एहसास से तौबा कर लेता है और ग़ीबत करने वाले को (अपने गुनाह का एहसास न होने की वजह से) तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होती (यही वजह है कि ग़ीबत का गुनाह ज़िना से भी ज़्यादा है)।

7. मश्हूर सहाबी हज़रत अबू बकरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की एक रिवायत से मालूम होता है कि ग़ीबत की वजह से इन्सान अ़ज़ाबे क़ब्र का मुस्तहिक़ हो जाता है। वह फ़रमाते हैं:

بَيْنَمَا اَنَا اُمَاشِىْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ وَهُوَ اٰخِذٌ بِيَدِىْ وَرَجُلٌ عَنْ يَسَارِهٖ فَاِذَا نَحْنُ بِقَبْرَيْنِ اَمَامَنَا، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ، اِنَّهُمَا لَيُعَذَّبَانِ وَمَا يُعَذَّبَانِ فِىْ كَبِيْرٍ وَّبَلٰى، فَاَيُّكُمْ يَاْتِيْنِىْ بِجَرِيْدَةٍ فَاسْتَبَقْنَا فَسَبَقْتُهٗ فَاَتَيْتُهٗ بِجَرِيْدَةٍ فَكَسَرَهَا بِنِصْفَيْنِ فَاَلْقٰى عَلٰى ذَا الْقَبْرِ قِطْعَةً وَعَلٰى ذَا الْقَبْرِ قِطْعَةً وَقَالَ اِنَّهٗ يُهَوَّنُ عَلَيْهِمَا مَا كَانَتَا رَطْبَتَيْنِ وَمَا يُعَذَّبَانِ اِلَّا فِى الْبَوْلِ وَالْغِيْبَةِ.

(مسند أحمد بن حنبل ٣٥/٥ حديث ٢٠٢٥٢)

इस दौरान कि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ चल रहा था और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरा हाथ पकड़े हुए थे और एक शख़्स आप के बायीं तरफ़ था कि अचानक हम दो क़ब्रों पर पहुंचे जो हमारे सामने थीं, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन दोनों (क़ब्र वालों) को अ़ज़ाब हो रहा है और (तुम्हारी समझ में) किसी बड़े गुनाह पर अ़ज़ाब नहीं हो रहा है हालांकि वह गुनाह बड़ा है। लिहाज़ा कौन है जो एक टहनी मेरे पास लाये तो हम हुक्म को पूरा करने के लिए झपटे। मैं जल्दी जाकर आप के लिए एक टहनी ले आया आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस टहनी के दो टुकड़े किए और एक टुकड़ा इस क़ब्र पर और दूसरा टुकड़ा दूसरी क़ब्र पर डाल दिया और फ़रमाया कि जब तक ये टहनियां तर रहेंगी इन (क़ब्र वालों) पर अ़ज़ाब में कमी की जाती रहेगी और इन दोनों को सिर्फ़ पैशाब से न बचने और ग़ीबत (करने) की वजह से अ़ज़ाब दिया जा रहा है।

8. हज़रत शुफ़ा बिन मातेअ़ अल्-अस्बही मुर्सलन रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اَرْبَعَةٌ يُؤْذُوْنَ اَهْلَ النَّارِ عَلٰى مَا بِهِمْ مِنَ الْاَذٰى يَسْعَوْنَ مَا بَيْنَ الْحَمِيْمِ وَالْجَحِيْمِ يَدْعُوْنَ

चार क़िस्म के जहन्नमी अहल-ए-जहन्नम के लिए अज़िय्यत पर अज़िय्यत का सबब होंगे जो हमीम (खोलते हुए पानी) और जहीम (दहकती हुई आग) के

दर्मियान दौड़ते होंगे और मौत और हलाकत को पुकारते होंगे (जिन्हें देख कर) अहल-ए-जहन्नम आपस में कहेंगे कि इन पर क्या मुसीबत आई कि ये (अपने साथ) हमें भी मुसीबत दर मुसीबत में मुब्तला कर रहे हैं तो (उन चारों में) एक वह शख़्स होगा जो बेड़ियों में बंधा होगा और उस पर अंगारों का सन्दूक़ रखा होगा, दूसरा वह शख़्स होगा जो अपनी आंतें घसीटता होगा और तीसरे शख़्स के मुँह से पीप और ख़ून बह रहा होगा और चौथा शख़्स ख़ुद अपना गोश्त खाता होगा। फिर सन्दूक़ वाले से पूछा जाएगा कि अबुअ़द (अल्लाह की रहमत से दूर) का क्या माजरा है जिसने हमें मुसीबत पर मुसीबत में डाल रखा है, वह जवाब देगा कि यह बद-नसीब इस हाल में मरा कि उसकी गरदन पर लोगों के माली हुक़ूक़ थे, फिर आंतें खींचने वाले से इसी तरह सवाल किया जाएगा। वह जवाब देगा कि यह महरूमुल क़िस्मत इसकी बिल्कुल परवाह नहीं करता था कि पैशाब उसके बदन पर कहाँ लग रहा है, इसके बाद मुँह से पीप और ख़ून निकालने वाले से अहल-ए-जहन्नम इसी तरह का सवाल करेंगे तो वह जवाब में कहेगा कि यह अज़ली बद्-बख़्त जब किसी ग़लत बात को देखता तो उस से इस तरह लुत्फ़ अन्दोज़ होता था जैसे बद्कारी से लुत्फ़ हासिल किया जाता है। और आख़िर में ख़ुद अपना गोश्त

بِالْوَيْلِ وَالثُّبُوْرِ يَقُوْلُ بَعْضُ أَهْلِ النَّارِ لِبَعْضٍ، مَا بَالُ هٰؤُلَاءِ قَدْ اٰذَوْنَا عَلٰى مَا بِنَا مِنَ الْأَذٰى، قَالَ: فَرَجُلٌ مُغْلَقٌ، عَلَيْهِ تَابُوْتٌ مِنْ جَمْرٍ، وَرَجُلٌ يَجُرُّ أَمْعَاءَهُ وَرَجُلٌ يَسِيْلُ فُوْهُ قَيْحاً وَّدَماً. وَرَجُلٌ يَأْكُلُ لَحْمَهُ، فَيُقَالُ لِصَاحِبِ التَّابُوْتِ مَا بَالُ الْأَبْعَدِ قَدْ اٰذَانَا عَلٰى مَا بِنَا مِنَ الْأَذٰى؟ فَيَقُوْلُ: إِنَّ الْأَبْعَدَ قَدْ مَاتَ وَفِيْ عُنُقِهٖ أَمْوَالُ النَّاسِ، ثُمَّ يُقَالُ لِلَّذِيْ يَجُرُّ أَمْعَاءَهُ مَا بَالُ الْأَبْعَدِ قَدْ اٰذَانَا عَلٰى مَا بِنَا مِنَ الْأَذٰى؟ فَيَقُوْلُ: إِنَّ الْأَبْعَدَ كَانَ لَا يُبَالِيْ أَيْنَ أَصَابَ الْبَوْلُ مِنْهُ ثُمَّ يُقَالُ لِلَّذِيْ يَسِيْلُ فُوْهُ قَيْحاً وَّدَماً، مَا بَالُ الْأَبْعَدِ قَدْ اٰذَانَا عَلٰى مَا بِنَا مِنَ الْأَذٰى؟ فَيَقُوْلُ: إِنَّ الْأَبْعَدَ كَانَ يَنْظُرُ إِلٰى كَلِمَةٍ فَيَسْتَلِذُّهَا كَمَا يُسْتَلَذُّ الرَّفَثُ ثُمَّ يُقَالُ لِلَّذِيْ يَأْكُلُ لَحْمَهُ مَا بَالُ الْأَبْعَدِ

قَدْ اٰذَانَا عَلٰى مَا بِنَا مِنَ الْاَذٰى ؟ فَيَقُوْلُ : اِنَّ الْاَبْعَدَ كَانَ يَاكُلُ لُحُوْمَ النَّاسِ بِالْغِيْبَةِ وَيَمْشِىْ بِالنَّمِيْمَةِ.
(رواه ابن ابي الدنيا، والطبراني، الترغيب والترهيب ٣/٣٢٩)

खाने वाले से सूरत-ए-हाल मालूम की जाएगी तो वह कहेगा कि यह कमतरीन महरूमुल क़िस्मत (दुनिया में) पीठ पीछे (ग़ीबत करके) लोगों का गौश्त खाया करता था और चुगली खाने में दिलचस्पी लेता था। (अल्लाह हमें इन बुरी बातों से महफ़ूज़ रखे)। आमीन

9. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु इर्शाद फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़बरदार फ़रमायाः

مَنْ اَكَلَ لَحْمَ اَخِيْهِ فِى الدُّنْيَا قُرِّبَ اِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ : فَيُقَالُ لَهٗ : كُلْهُ مَيْتًا كَمَا اَكَلْتَهٗ حَيًّا فَيَاكُلُهٗ وَيَكْلَحُ وَيَصِيْحُ. (رواه ابويعلى، الترغيب والترهيب ٣/٣٢٩)

जो शख़्स दुनिया में अपने भाई का गौश्त खाये (ग़ीबत करे) तो वह गौश्त क़ियामत के दिन उसके क़रीब किया जाएगा और उससे कहा जाएगा कि जैसे दुनिया में ज़िन्दगी की हालत में (अपने भाई का) गौश्त खाया था अब मुर्दा होने की हालत में उसका गौश्त खा। तो वह (मजबूरन) उसे खायेगा और मुँह बनायेगा और चीख़ता जाएगा। हम अल्लाह से इसकी पनाह चाहते हैं।

10. हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हम आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे, हम में से एक शख़्स उठकर चला गया, तो बाद में एक दूसरे शख़्स ने उस जाने वाले शख़्स के बारे में कुछ ग़ीबत वाले जुमले कह दिये तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसे हुक्म दिया कि वह दांतों में ख़िलाल करे तो उसने जवाब दिया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मैंने गौश्त खाया भी नहीं, किस वास्ते ख़िलाल करूं? तो आप ने फ़रमायाः

اِنَّكَ اَكَلْتَ لَحْمَ اَخِيْكَ.
(الترغيب والترهيب ٣/٣٢٨)

तूने अपने भाई का (ग़ीबत करके) गौश्त खाया है।

11. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ुद अपना वाक़िआ नक़्ल फ़रमाती हैं:

قُلْتُ لِامْرَأَةٍ مَرَّةً وَأَنَا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِنَّ هٰذِهٖ لَطَوِيْلَةُ الذَّيْلِ فَقَالَ اِلْفِظِيْ، اِلْفِظِيْ، فَلَفَظْتُ بُضْعَةً مِّنْ لَحْمٍ. (رواه ابن أبي الدنيا، الترغيب والترهيب ٣/٣٢٧)

एक मर्तबा जबकि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास थी मैंने एक औरत के बारे में कह दिया कि यह तो लम्बे दामनवाली है तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझसे दो मर्तबा फ़रमायाः थूको, थूको, चुनांचे मैंने गोश्त का लोथड़ा थूका (यह ग़ीबत के कलिमे का असर था)।

12. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हम आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे कि एक बदबूदार हवा का झोंका आया, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

أَتَدْرُوْنَ مَا هٰذِهِ الرِّيْحُ؟ هٰذِهٖ رِيْحُ الَّذِيْنَ يَغْتَابُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ. (رواه أحمد، الترغيب والترهيب ٣/٣٢١)

क्या तुम जानते हो यह कैसी हवा है? यह उन लोगों की (बदबूदार) हवा है जो अहले ईमान की ग़ीबत करते हैं।

इन रिवायात से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि शरीअ़त में ग़ीबत किस क़द्र नागवार सिफ़त है जिससे बचना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है।

उलमा की ग़ीबत

उ़लमा और अकारिब-ए-मिल्लत की तह्क़ीर व तज़्लील (बेइज़्ज़ती) की ग़रज़ से ग़ीबत करना आ़म लोगों की ग़ीबतों के मुक़ाबले में ज़्यादा शिद्दत और क़बाहत रखता है। वजह यह है कि अल्लाह तआ़ला की नज़र में उ़लमा-ए-किराम की जमाअ़त का दर्जा निहायत बुलंद है। इसलिए उनकी बेइज़्ज़ती भी अल्लाह तआ़ला को बहुत नापसन्द होती है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

مَنْ عَادٰى لِيْ وَلِيًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ. (بخاری شریف ٢/٩٦٣ عن أبي هريرة)

जो मेरे किसी वली से दुश्मनी रखता है मैं उसके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग कर देता हूं।

इसी तरह मिसाल मशहूर है: لُحُومُ الْعُلَمَاءِ مَسْمُومَةٌ यानी उलमा का गोश्त निहायत ज़हरीला होता है, जो उनकी ग़ीबत करने वालों को सख़्त नुक़्सान पहुंचाता है। उलमा और औलिया अल्लाह की तह्क़ीर व तज़्लील (बेइज़्ज़ती) ऐसा जुर्म है। जिसकी सज़ा अल्लाह तआला न सिर्फ़ आख़िरत में बल्कि दुनिया में भी देता है। जो लोग इस बारे में बे-एहतियाती करते हैं वे क़ुदरती तौर पर दुनिया ही में ज़िल्लत व ख़ुवारी और तंगियों में मुब्तला कर दिए जाते हैं। इसलिए हर मुसलमान का फ़र्ज़ है और अक़्लमन्दी का तक़ाज़ा है कि वह अपने आप को अज़ाब-ए-ख़ुदावन्दी से बचाये और "ख़ासाने ख़ुदा" (उलमा-ए-किराम) की बुराई करके अपने लिए तबाही का सामान तैयार न करे और किसी ऐसी मज्लिस में न शरीक हो जिस में लोगों की ग़ीबतें की जाती हों।

चुग़लख़ोरी

चुग़लख़ोरी भी असल में ग़ीबत ही का एक ऊंचा दर्जा है जिसका मतलब "फ़साद की ग़रज़ से[1] किसी शख़्स के राज़ को दूसरों के सामने ज़ाहिर करना है"

क़ुरआन-ए-करीम में बहुत सी जगह चुग़लख़ोरों पर लानत की गई है और नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चुग़लख़ोर के बारे में निहायत सख़्त वईदें इर्शाद फ़रमाई हैं, मशहूर हदीस है:

لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ نَمَّامٌ .(مسلم شريف ١/٧٠)

चुग़लख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।

इसी तरह एक मौक़े पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कि ज़्यादा तर क़ब्र का अज़ाब चुग़लख़ोरी और पैशाब की छींटों से न बचने की वजह से होता है। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/323) इसलिए ज़बान की हिफ़ाज़त में यह भी दाख़िल है कि हम उसे चुग़ली की गन्दगी में दाख़िल होने से महफ़ूज़ रखें।

चुग़ली और ग़ीबत सुने तो क्या करे ?

आम तौर पर लोगों का यह मामूल है कि अगर उनके सामने किसी शख़्स

---

1. यह क़ैद इसलिए लगाई गई कि अगर किसी के राज़ को ज़ाहिर करने में कोई शरई मस्लहत हो तो उस राज़ का ज़ाहिर करने में हर्ज नहीं है, बल्कि कभी कभी ऐसा करना ज़रूरी होता है। (नववी अला मुस्लिम 1/71)

की बुराई की जाती है तो या तो कहने वाले की हाँ में हाँ मिलाते हैं, या ख़ामोश रहते हैं हालांकि यह तरीक़ा शरीअ़त के मुताबिक़ नहीं, नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद-ए-गिरामी है:

مَنِ اغْتِيْبَ عِنْدَهُ أَخُوْهُ الْمُسْلِمُ فَلَمْ يَنْصُرْهُ وَهُوَ يَسْتَطِيْعُ نَصْرَهُ أَدْرَكَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. (الترغيب والترهيب ٣/٣٣٤ عن انس ﷺ)

जिस शख़्स के सामने उसके मुसलमान भाई की ग़ीबत की जाये और वह ताक़त होने के बावुजूद (उसका दिफ़ाअ़ करके) उस भाई की मदद न करे तो उस शख़्स को (अपने मुसलमान भाई की तरफ़ से दिफ़ाअ़ न करने का) वबाल दुनिया और आख़िरत में होगा।

इस हदीस से मालूम हुआ कि ग़ीबत सुनकर ख़ामोश रहना भी गुनाह है। जहाँ तक हो सके अपने मुसलमान भाई से अच्छा गुमान रखकर उसकी तरफ़ से सफ़ाई देने की कोशिश करनी चाहिए। यह कोशिश करना निहायत अज्र व सवाब का सबब है। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि जो शख़्स अपनी ताक़त के मुताबिक़ उस आदमी की तरफ़ से जिसकी ग़ीबत की जाए सफ़ाई पेश करता है तो अल्लाह तआ़ला दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद फ़रमाता है। (अत्तर्ग़ीब 3/335)

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इह्याउल उ़लूम में लिखा है कि जब कोई शख़्स किसी की ग़ीबत या चुग़ली सुने तो उसे 6 बातों का ध्यान रखना चाहिए। 1. चुग़लख़ोर की शिकायत पर हरगिज़ यक़ीन न करे इसलिए कि वह ख़बर देने वाला शरअ़न फ़ासिक़ है, 2. चुग़लख़ोर को उसके ग़लत काम पर ख़बरदार करे और उसे आ़र (शर्म) दिलाये, 3. चुग़लख़ोर के काम को दिल से बुरा समझे और इस वजह से उससे नापसन्दीदगी का इज़्हार करे, 4. जिसकी चुग़ली की गई हो उसकी तरफ़ से बदगुमान न हो, 5. चुग़लख़ोर ने जो बात पहुंचाई हो उसकी तह्क़ीक़ व तफ़्तीश में न पड़े, 6. चुग़लख़ोर की बातों को किसी दूसरे से ब्यान न करे वर्ना ख़ुद चुग़ली करने वाले के दर्जे में आ जाएगा।

(इह्याउल उ़लूम 3/94)

हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह रहमतुल्लाहि अ़लैहि का मामूल

हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाहि अ़लैहि का मामूल था कि उनके यहां न तो किसी की शिकायत सुनी जाती थी और न वह किसी से बद्गुमान होते थे, अगर कोई शख़्स किसी की बात नक़्ल करता तो सुनकर उसको ग़लत साबित फ़रमा देते, कि तुम ग़लत कहते हो वह ऐसा नहीं है। (मआ़रिफ़-ए-इम्दादिया 43)

एक मर्तबा थाना भवन के ज़माना-ए-क़ियाम में एक शख़्स ने आकर कहा कि फ़लां शख़्स ने आपके बारे में यह नाज़ेबा बातें कहीं हैं। हज़रत हाजी साहब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने उसे जवाब देते हुए फ़रमाया कि उसने तो मेरी पीठ पीछे बुराई की थी और तूने मेरे मुँह पर मेरी बुराई कर दी। इसलिए तू उससे ज़्यादा बुरा हुआ। हज़रत के इस जवाब का यह असर हुआ कि उसे फिर कभी किसी की शिकायत करने की हिम्मत न हुई। (मआ़रिफ़-ए-इम्दादिया 116)

काश अगर आज भी हम इस तरीक़े को अपना लें तो बाआसानी हम इस अ़ज़ीम गुनाह से अपने को बचा सकते हैं और अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का सच्चा हक़ अदा कर सकते हैं।

कुछ बुज़ुर्गों के अक़्वाल व वाक़िआत

हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अ़ज़ाबे क़ब्र के तीन हिस्से हैं। एक हिस्सा ग़ीबत से होता है, एक हिस्सा चुग़ली से और एक हिस्सा पैशाब से न बचने से।

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मुसलमान के दीन में ग़ीबत का असर आकूला बीमारी से ज़्यादा ख़तरनाक सूरत में रूनुमा होता है। जिस तरह मरज़-ए-आकूला पूरे इन्सानी बदन को गला देता है इसी तरह मरज़-ए-ग़ीबत दीन को चट कर जाता है।

रिवायत है कि एक शख़्स ने हज़रत अ़ली ज़ैनुल आ़बिदीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि के सामने किसी शख़्स की ग़ीबत की, तो आप ने फ़रमायाः ख़बरदार! ग़ीबत मत करना, यह अ़मल उन लोगों का खाना है जो इन्सानों की सूरत में कुत्ते हैं।

एक शख़्स ने हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि से पूछा कि मैंने सुना

है कि आप मेरी ग़ीबत किया करते हैं, आप ने जवाब दिया कि मेरी नज़र में तुम्हारी इतनी क़द्र नहीं है कि मुफ़्त में अपनी नेकियाँ तुम्हारे हवाले कर दूँ।

इसी तरह मन्क़ूल है कि एक मर्तबा हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि को ख़बर मिली कि फ़्लां शख़्स ने उनकी ग़ीबत की है, तो आपने ग़ीबत करने वाले के पास कुछ ताज़ा खजूरें भेजीं और कहलवाया कि तुमने अपनी नेकियों में से कुछ हिस्सा मुझे हद्या किया है तो मैं इस एहसान के बदले में ये खजूरें भेज रहा हूँ, अगरचे यह तुम्हारे एहसान का पूरा बदला नहीं है, इसलिए माज़ूर ख़्याल फ़रमायें। (अज़ मज़ाक़ुल आरिफ़ीन तर्जुमा इह्याउल उ़लूम मुलख़्ख़सन)

मश्हूर साहिब-ए-मारिफ़त बुज़ुर्ग हज़रत मैमून बिन सय्यार रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैंने ख़्वाब में देखा कि एक हब्शी का मुर्दा जिस्म है और कोई कहने वाला उनको मुख़ातब करके कह रहा है कि इस को खाओ! मैंने कहा कि ऐ ख़ुदा के बन्दे मैं इसको क्यों खाऊं? तो उस शख़्स ने कहा कि इसलिए की तूने फ़्लां शख़्स के हब्शी ज़न्गी ग़ुलाम की ग़ीबत की है, मैंने कहा, ख़ुदा की क़सम मैंने उसके बारे में कोई अच्छी बुरी बात की ही नहीं। तो उस शख़्स ने कहा कि हां! लेकिन तूने उसकी ग़ीबत सुनी तो है और तू इस पर राज़ी रहा। रिवायत करने वाले कहते हैं कि इसके बाद हज़रत मैमून रहमतुल्लाहि अ़लैहि का यह हाल हो गया था कि न तो ख़ुद कभी किसी की ग़ीबत करते और न किसी को अपनी मज्लिस में ग़ीबत करने देते।

(तफ़्सीर-ए-ख़ाज़िन, बैरूत 4/171)

हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि "اَلْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا" (ग़ीबत ज़िना से भी बढ़कर है) में ग़ीबत के शदीद तर होने की वजह यह है कि ज़िना गुनाह-ए-बाही (शहवत से सादिर होने वाला) है और ग़ीबत गुनाह-ए-जाही (तकब्बुर से निकलने वाला) है। ज़िना होने के बाद नफ़्स में आ़जिज़ी पैदा होती है कि मैंने यह ख़बीस और घिनावना काम किया (और तौबा की तौफ़ीक़ हो जाती है) और ग़ीबत करने के बाद आदमी को अफ़्सोस तक नहीं होता (और वह तौबा से महरूम रहता है) इस वजह से ग़ीबत को ज़िना से भी बद्तर फ़रमाया गया है। (मआ़रिफ़ुल इम्दादिया 141)

एक वाक़िआ

चुग़लख़ोरी की बुराइयां ब्यान करते हुए इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने

यह वाक़िआ नक़्ल किया है कि एक शख़्स बाज़ार में ग़ुलाम ख़रीदने गया, एक ग़ुलाम उसे पसन्द आ गया। बेचने वाले ने कहा कि इस ग़ुलाम में कोई ऐब नहीं है बस यह है कि इसमें चुग़ली की आ़दत है। ख़रीदने वाला इस पर राज़ी हो गया और ग़ुलाम ख़रीद कर घर ले आया। अभी कुछ ही दिन गुज़रे थे कि ग़ुलाम को चुग़लख़ोरी की आ़दत ने यह गुल खिलाया कि उसने उस शख़्स की बीवी से जाकर तन्हाई में कहा कि तुम्हारा शौहर तुम्हें पसन्द नहीं करता और अब उसका इरादा बांदी रखने का है। लिहाज़ा रात को जब वह सोने आये तो उस्तरे से उसके कुछ बाल काटकर मुझे दे दो ताकि मैं उसपर अ़मल-ए-सह्र (जादू) कराकर तुम दोनों में दोबारा मुहब्बत का इन्तिज़ाम कर सकूँ। बीवी इस पर तैयार हो गई और उसने उस्तरे का इन्तिज़ाम कर लिया। इधर ग़ुलाम ने अपने आक़ा से जाकर यूं बात बनाई कि तुम्हारी बीवी ने किसी ग़ैर मर्द से ताल्लुक़ात क़ाइम कर लिए हैं और अब वह तुम्हें रास्ते से हटा देना चाहती है। इसलिए होशियार रहना। रात को जब बीवी के पास गया तो देखा कि बीवी उस्तरा ला रही है। वह समझ गया कि ग़ुलाम ने जो ख़बर दी थी वह सच्ची थी। इसलिए इससे पहले कि बीवी कुछ कहती उसने उसी उस्तरे से बीवी का काम तमाम कर दिया। जब बीवी के घर वालों को इस वाक़िए की ख़बर मिली तो उन्होंने आकर शौहर को क़त्ल कर दिया। इस तरह अच्छे ख़ासे ख़ानदानों में ख़ून बहाने की नौबत आ गई। (इह्याउल उ़लूम 3/95)

मतलब यह कि ग़ीबत और चुग़ली ऐसी बद्तरीन बीमारियां हैं, जिनसे मुआ़शरा (समाज) फ़साद का निशाना बन जाता है, घर-घर लड़ाइयाँ होती हैं, दिलों में कशीदगी और नफ़्रत पैदा होती है। रिश्तेदारियाँ टूट जाती हैं, ख़ानदानों में आग लग जाती है और बने बनाये घर उजड़ जाते हैं और यह सब फ़साद ज़बान की बे-एहतियाती और अल्लाह तआ़ला से बेशर्मी और बेहयाई की वजह से पैदा होता है। इसीलिए ऊपर दी हुई हदीस में फ़रमाया गया है कि हया-ए-ख़ुदावन्दी का हक़ उस वक़्त तक अदा नहीं हो सकता जब तक कि पहले सर और उसके साथ जुड़े हुए दूसरे आज़ा की हिफ़ाज़त का एहतिमाम न किया जाये। और उन आज़ा में ज़बान को मुमताज़ और नाज़ुक हैसियत हासिल है, इसलिए हमें ज़बान की हिफ़ाज़त का हर मुम्किन ख़्याल रखना चाहिए।

❑ ❑

छठी फ़स्ल

गालम-गलोच और फ़ह्श कलामी

ज़बान से होने वाले बद्तरीन गुनाहों में बुरा भला कहना और फ़ह्श कलामी करना दाख़िल है। यह बद्ज़बानी किसी भी साहिब-ए-ईमान को हरगिज़ ज़ैब नहीं देती। ज़बान के ज़रिए तक्लीफ़ देने वालों को क़ुरआन-ए-करीम में सख़्त गुनाह करने वाला क़रार दिया गया है। इर्शाद-ए-ख़ुदावन्दी है:

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا. (الاحزاب آیت۵۸)

और जो लोग तोह्मत लगाते हैं मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बग़ैर गुनाह किये, तो उठाया उन्होंने बोझ झूठ का और सरीह गुनाह का।

और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बहुत सी अहादीस-ए-मुबारका में गालम गलोच, बद्ज़बानी और फ़ह्श कलामी की सख़्त मज़म्मत फ़रमायी है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कुछ इर्शादात-ए-मुबारका नीचे दिए गये हैं:

(۱) لَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهٖ. (مسلم شریف ۱/۷۳)

1. मोमिन पर लानत करना ऐसा (ही बुरा) है जैसा उसको क़त्ल करना।

(۲) لَا يَنْبَغِيْ لِصِدِّيْقٍ اَنْ يَّكُوْنَ لَعَّانًا. (ریاض الصالحین ۵۵۳)

2. किसी सिद्दीक़ (सच बोलने वाला) को यह ज़ैब नहीं देता कि वह बहुत लानत करने वाला हो।

(۳) لَا يَكُوْنُ اللَّعَّانُوْنَ شُفَعَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ. (ریاض الصالحین ۵۵۳)

3. लानत करने वाले लोग क़ियामत के रोज़ न तो सिफ़ारिशी होंगे और न गवाही देने वाले होंगे।

(۴) لَا تَلَاعَنُوْا بِلَعْنَةِ اللّٰهِ وَلَا بِغَضَبِهٖ وَلَا بِالنَّارِ. (مشکوٰۃ شریف ۲/۴۱۳)

4. अल्लाह की लानत, उसके ग़ज़ब और जहन्नम के ज़रिये आपस में बुरा भला मत किया करो।

5. मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ (बुरा) है।

(٥) سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوْقٌ. (مسلم شریف ۱/۵۸)

6. सच्चा मोमिन लानत करने वाला नहीं होता।

(٦) لَا يَكُوْنُ الْمُؤْمِنُ لَعَّانًا. (مشکوۃ شریف ۲/۴۱۳)

7. मोमिन-ए-कामिल बुरा भला करने वाला और फ़ह्श और बे-हयाई करने वाला नहीं होता।

(٧) لَيْسَ الْمُؤْمِنُ بِالطَّعَّانِ وَلَا بِاللَّعَّانِ وَلَا الْفَاحِشِ وَلَا الْبَذِيِّ.
(مشكوة شريف ٢/٤١٣)

8. जब कोई शख़्स किसी चीज़ पर लानत करता है तो उसकी लानत आसमान की तरफ़ जाती है वहां उसके लिए दरवाज़े बन्द होते हैं। फिर ज़मीन की तरफ़ उतरती है तो उसके दरवाजों को भी बन्द पाती है। फिर दाएं बाएं जाने का रास्ता ढूंढती है और जब कोई रास्ता नहीं पाती तो जिस पर लानत की गई है, उस शख़्स की तरफ़ आती है, अगर वह लानत का मुस्तहिक़ है तो ठीक, वर्ना लानत करने वाले पर लौट जाती है (यानी लानत करने वाले की लानत ख़ुद उसी के गले पड़ जाती है)

(٨) إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا لَعَنَ شَيْئًا صَعِدَتِ اللَّعْنَةُ إِلَى السَّمَاءِ فَتُغْلَقُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ دُوْنَهَا ثُمَّ تَهْبِطُ إِلَى الْأَرْضِ فَتُغْلَقُ أَبْوَابُهَا دُوْنَهَا، ثُمَّ تَأْخُذُ يَمِيْنًا وَ شِمَالًا، فَإِذَا لَمْ تَجِدْ مَسَاغًا رَجَعَتْ إِلَى الَّذِيْ لُعِنَ فَإِنْ كَانَ أَهْلًا لِذٰلِكَ وَ إِلَّا رَجَعَتْ إِلٰى قَائِلِهَا.
(رواه أبوداؤد حديث ٤٩٠٥، رياض الصالحين ٥٥٣)

9. कामिल मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से आम मुसलमान महफ़ूज़ रहें (वह किसी को हाथ और ज़बान से तकलीफ़ न दे)।

(٩) اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسَانِهٖ وَ يَدِهٖ. (مسلم شريف ١/٤٨، مشكوة شريف ١/١٥ عن ابي هريرةؓ)

10. यहूदी अपनी दिली ख़बासत की वजह से जब जनाब रसूल-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में आते तो बजाये "अस्सलामु अ़लैकुम" कहने के "अस्सामु अ़लैकुम" कहा करते थे, जिसका मतलब मौत है, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनके जवाब में "व अ़लैकुम" कहकर ख़ामोश हो जाते जिसका मतलब यह होता कि उनकी बद्-दुआ़ उन्हीं के मुँह पर

मार दी जाती लेकिन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को यहूदियों की हरकत पर सख़्त गुस्सा आता और वह जवाब के साथ साथ उन पर लानत भेजतीं और अल्लाह के ग़ज़ब की बद्-दुआ देतीं थीं, इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा को यह नसीहत फ़रमाई:

مَهْلاً يَا عَائِشَةُ! عَلَيْكِ بِالرِّفْقِ، وَإِيَّاكِ وَالْعُنْفَ وَالْفُحْشَ. (بخاری شریف ۲/۸۹۱)

आइशा ठहरो! नर्मी इख़्तियार करो और सख़्ती और बदकलामी से बचती रहो।

इसलिए कि मक़्सद इसके बग़ैर भी हासिल है क्योंकि उनकी बद-दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हक़ में क़ुबूल न होगी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बद-दुआ उनके बारे में क़ुबूल हो जायगी।

11. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़ादिम-ए-ख़ास हज़रत अनस इब्ने मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ ﷺ سَبَّابًا وَلَا فَاحِشًا وَلَا لَعَّانًا كَانَ يَقُوْلُ لِأَحَدِنَا عِنْدَ الْمَعْتَبَةِ: مَالَهُ تَرِبَ جَبِيْنُهُ. (بخاری شریف ۲/۸۹۱)

रसूल-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम गालियां देने वाले, फ़ह्श कलामी करने वाले और लानत करने वाले न थे, (ज़्यादा से ज़्यादा) हम में से किसी पर गुस्सा आता तो यह फ़रमाते, उसकी पैशानी ख़ाक आलूद हो। उसे क्या हुआ।

12. एक मौक़े पर रसूल-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अपने वालिदैन को गाली देना गुनाह-ए-कबीरा है। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! भला यह कैसे मुम्किन है कि कोई शख़्स ख़ुद अपने वालिदैन को गालियाँ दे? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

نَعَمْ: يَسُبُّ اَبَا الرَّجُلِ فَيَسُبُّ اَبَاهُ وَيَسُبُّ اُمَّهُ فَيَسُبُّ اُمَّهُ. (مسلم شریف ۱/۶۴)

हाँ (यह इस तरह मुम्किन है कि) वह शख़्स किसी के बाप को गाली दे फिर वह शख़्स उसके बाप को गाली दे। इसी तरह यह किसी की माँ को गाली दे फिर उस की माँ को गाली दी जाये (इस तरह यह गाली देने वाला ख़ुद

अपने वालिदैन (माँ- बाप) को गालियाँ दिलवाने का सबब बन गया)।

13. हज़रत जाबिर बिन सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में पहली बार हाज़िर हुए। सलाम किया, तआ़रूफ़ हुआ, दौलत -ए-इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कुछ नसीहतों पर अ़हद लेने की दरख़्वास्त की। रसूल-ए-अक्‍रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कई नसीहतें फ़रमाईं जिनमें एक अहम नसीहत यह थी:

"لَا تَسُبَّنَّ أَحَداً". (الترغيب والترهيب ٣/٣١٢)

तुम हरगिज़ किसी को गाली मत देना।

हज़रत जाबिर इब्ने सुलैम रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इसी नसीहत को इस क़द्र मज़्बूती से थामा कि फिर मरते दम तक किसी इन्सान को तो किया किसी जान रखने वाले तक को भी गाली नहीं दी।

14. एक मर्तबा नबी-ए-अक्‍रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मज्लिस में कुछ लोगों को मच्छरों ने काट लिया, उन्होंने मच्छरों को बुरा भला कहना शुरू किया, हुज़ूर-ए-अक्‍रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस को मना फ़रमाया कि:

لَا تَسُبُّوهَا فَنِعْمَتِ الدَّابَّةُ فَإِنَّهَا أَيْقَظَتْكُمْ لِذِكْرِ اللهِ. (الترغيب والترهيب ٣/٣١٥)

मच्छर को बुरा भला न कहो, वह अच्छा जानवर है। इसलिए कि वह तुम्हें अल्लाह की याद के लिए उठाता और ख़बरदार करता है। (इसी तरह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुर्ग़ को लानत करने से भी मना फ़रमाया है)।

ज़रा अन्दाज़ा लगायें जब जानवरों को बुरा भला कहने से रोका गया है तो इन्सानों को एक दूसरे को भला बुरा कहने की कैसे इजाज़त दी जा सकती है।

अपनी इज़्ज़त अपने हाथ

इस बदज़बानी और फ़ह्श कलामी से इन्सान का वक़ार ख़ाक में मिल जाता है, चाहे आदमी कितना ही बा-सलाहियत और ऊंचे ओ़हदे पर हो, लेनिक बद्-ज़बानी की वजह से वह लोगों की नज़रों से गिर जाता है। इसलिए अपनी इज़्ज़त और वक़ार की हिफ़ाज़त के लिए भी ज़बाम पर कन्टरोल करना और

उसे बद्-कलामी से महफ़ूज़ रखना ज़रूरी है। आज जब हम अपने मुस्लिम मुआशरे की तरफ़ नज़र उठाकर देखते हैं तो यह देखकर सर, शर्म से झुक जाता है कि हमारे यहां गालियां लोगों के तकिया कलाम के तौर पर इस्तिमाल होती हैं। निहायत फ़ह्श और गन्दी बातें ज़बानों पर इस तरह चढ़ी रहती हैं कि उनके निकलते वक़्त बिल्कुल भी उनकी बुराई का एहसास तक नहीं होता और यह सिर्फ़ बड़ों ही का हाल नहीं बल्कि सड़कों पर खेलते कूदते बच्चे भी गालियों के मुआमले में अपने बड़ों के कान काटते नज़र आते हैं। यह निहायत तक्लीफ़ देने वाली सूरत-ए-हाल है। हमारा यह फ़रीज़ा होना चाहिए कि हम खुद अपने को इस्लामी रंग में रंगें और ज़बान की हिफ़ाज़त करके अल्लाह तआला से शर्म व हया का सुबूत पेश करें ताकि हमें मुआशरे मे बा-वक़ार मुक़ाम हासिल हो सके और हमारी आने वाली नस्लें भी बाइज़्ज़त तौर पर ज़िन्दगियाँ गुज़ार सकें।

खुलासा यह कि हमारी ज़बान झूठ, ग़ीबत, चुग़ली, गन्दी बातों, बुरा भला कलाम और हर उस गुनाह से महफ़ूज़ रहनी चाहिए, जिनकी अदाएगी ज़बान से मुम्किन हो। इसी सूरत में हम इर्शाद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम "فليحفظ الرأس وما وعى" पर सही तरीक़े से अ़मल कर सकते हैं। ☐ ☐

सातवीं फ़स्ल

आँख की हिफ़ाज़त

शरीअ़त में सर की हिफ़ाज़त का तीसरा अ़हम हिस्सा अपनी आँखों को गुनाहों से मह्फ़ूज़ रखना है, आँखों की ज़रा सी बे-एहतियाती इन्सान को बड़े बड़े संगीन गुनाहों में मुब्तला कर देती है। आज जो दुनिया में फ़हाशी और बे-हयाई का दौर-दौरा है उसकी सब से बड़ी वजह यही बद्-नज़री और नज़र की बे-एहतियाती है। शैतान इन्सान के हाथ में बद्-नज़री का हथियार देकर पूरी तरह मुत्मइन हो चुका है। अब उसे किसी भी शैतानी काम को अ़मल में लाने के लिए ज़्यादा कोशिश व मेह्नत नहीं करनी पड़ती। यह बद्-नज़री ख़ुद-बख़ुद उसकी आरज़ुओं की काफ़ी हद तक तक्मील कर देती है। नज़र की हिफ़ाज़त में कौताही बेशर्मी की बुनियाद, फ़ित्ना व फ़साद का कामियाब ज़रिया और बुराइयों और गुनाहों का सबसे बड़ी मुहर्रिक (उकसाने वाला) है। तज्रिबे और तह्क़ीक़ से बा-आसानी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आज कम से कम 70 फ़ीसद जुर्म और फ़हाशियाँ सिर्फ़ इसी बुनियाद पर दुनिया में होती हैं कि उनकी बाक़ायदा तरबियत सिनेमा हॉलों, टी० वी० प्रोग्रामों और वीडयो कैसिटों के ज़रिये दी जाती है। इन शैतानी आलात के फ़रोग़ ने मुकर्रम व मुह्तरम रिश्तों की आँखों से हया और शर्म का पानी ख़त्म कर दिया। बा-इज़्ज़त घरानों का मुआ़शरती वक़ार ख़ाक में मिल गया। अच्छे अच्छे दीनदारों की शराफ़त दाग़दार हो गई। इसी बद्-नज़री के नतीजे में बुलन्द व बाला तक़्वे के मीनारों में दराड़ें पड़ गईं और ज़रा सी बद-एहतियाती ने ज़िन्दगी भर की नेक नामियों पर बट्टा लगा दिया।

इस बद्-तरीन गुनाह की संगीनी और ख़तरनाकी को मह्सूस करते हुए इस्लामी शरीअ़त ने बद्-नज़री के हर दरवाज़े को बन्द करने पर निहायत ज़ोर दिया है। क़ुरआन-ए-करीम के अह्कामात और अहादीस-ए-तय्यिबा की रौशन हिदायात इस सिलसिले में हमारी भरपूर रहनुमाई करती हैं।

क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया गया है:

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ

आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिए कि

وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ، ذٰلِكَ أَزْكٰى لَهُمْ. (سورة النور ايت: ٣٠ ب: ١٨)

अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्म गाहों की हिफ़ाज़त करें यह उनके लिए ज़्यादा सफ़ाई की बात है।

इसी तरह की हिदायत मुसलमान औरतों को भी ख़ुसूसियत के साथ दी गई है और उन्हें पाबन्द किया गया है कि वे अपने आज़ा-ए-ज़ीनत को फ़ित्ने की जगहों पर ज़ाहिर न करें। (सूरः नूर, आयत 31) और सूरः अह्ज़ाब की आयात में जो परदे के अह्कामात दिए गये हैं वह भी बद्-नज़री को रोकने के लिए एहतियाती तदाबीर की हैसियत रखते हैं। इस्लामी शरीअ़त ने इन तदाबीर को वुजूब का दर्जा देकर अपनी जामिइय्यत और सही तरीक़े पर अ़मली मज़्हब होने का मुज़ाहरा किया है। इस्लाम बुराइयों को जड़ से उखाड़ फैंकने का इरादा रखता है। और इसके लिए इसी अन्दाज़ में तद्बीरें भी करता है। आजकल के नाम निहाद, मुहज़्ज़ब समाज की तरह नहीं, कि जो फ़हाशी को रोकने के लिए सिर्फ़ मिटिंगों, रैलियों और तज्वीज़ों का सहारा लेता है। और ख़ुद सर से पैर तक फ़हाशी की गंदगियों में लिपटा हुआ हैं। दुनिया में इस्लाम से बढ़कर कोई मज़्हब बे-हयाइयों पर रोक लगाने वाला नहीं है। क़ुरआन व सुन्नत में फ़हाशी की बुनियाद (जहां से यह बीमारी जड़ पकड़ती है) यानी आँख की बे-एहतियाती को सख़्ती से क़ाबू में करने की तल्क़ीन की गई है। यह ऐसी बुनियाद है कि अगर सिर्फ़ इसपर ही क़ाबू पा लिया जाये तो सारी बे-हयाइयाँ दुनिया से ख़त्म हो सकती हैं।

कुछ अहादीस-ए-शरीफ़ा

यही वजह है कि नबी-ए-आख़िरूज़् ज़माँ सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नज़र को शैतान का ज़हरीला तीर क़रार दिया है। इर्शाद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

اَلنَّظْرَةُ سَهْمٌ مَسْمُوْمٌ مِنْ سِهَامِ إِبْلِيْسَ مَنْ تَرَكَهَا مِنْ مَخَافَتِيْ اَبْدَلْتُهُ إِيْمَانًا يَجِدُ حَلَاوَتَهُ فِيْ قَلْبِهِ.
(الترغيب والترهيب ٣/٢٢ عن عبد الله بن مسعودؓ)

नज़र शैतान के तीरों में से एक ज़हरीला तीर है जो उसे मेरे ख़ौफ़ से छोड़ दे तो मैं उसके बदले उसे ऐसा ईमान अ़ता करूंगा जिसकी मिठास वह अपने दिल में महसूस करेगा।

एक दूसरी हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मत को सख़्ती से ख़बरदार फ़रमायाः

لَتَغُضُّنَّ أَبْصَارَكُمْ وَلَتَحْفَظُنَّ فُرُوجَكُمْ أَوْ لَيَكْسِفَنَّ اللّٰهُ وُجُوهَكُمْ.

(الترغيب والترهيب ٣/٢٠ عن ابي امامة)

अपनी नज़रें नीची रखो और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो, वर्ना अल्लाह तआला तुम्हारे चेहरों को बे-नूर बना देगा।

एक मौक़े पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गया कि अगर अचानक किसी (अजनबी) औरत पर नज़र पड़ जाये तो क्या करें? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया कि फ़ौरन वहां से नज़रें हटा लो। (मिश्कात शरीफ़ 2/268)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नसीहत फ़रमाई थी कि अली! एक मर्तबा बिला इरादा देखने के बाद दूसरी मर्तबा (अजनबी औरत को) देखने का इरादा मत करना। इसलिए कि पहली (बिला इरादा) नज़र तो माफ़ है मगर दूसरी मर्तबा देखने की कोई गुन्जाइश नहीं है। (मिश्कात शरीफ़ 2/269)

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुरसलन रिवायत फ़रमाते हैं कि आप ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला की लानत है उस शख़्स पर जो जानकर (बग़ैर किसी वजह के किसी के सत्र को या अजनबी औरत को) देखने वाला हो और वह भी मलऊन है जिसे (बग़ैर वजह व मजबूरी) देखा जाये। (जैसे मर्द सत्र खोलकर घूमें या औरत बे-परदा फिरे) (मिश्कात शरीफ़ 2/270)

इन पाक इर्शादात से आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि शरीअत की नज़र में निगाह की हिफ़ाज़त पर किस क़द्र ज़ोर दिया गया है।

परदे के अहकामात

इसी वजह से इस्लामी फ़िक़्ह में पूरी तफ़्सील और वज़ाहत के साथ परदा और हिजाब के अह्काम बयान किए गयें हैं ताकि उनको पेश-ए-नज़र रखकर इन्सान हर ऐतिबार से अपनी नज़र को जहन्नम का ईंधन बनाने से महफ़ूज़ रख सके। हकीमुल उम्मत हज़रत अक़्दस मौलाना अशरफ़ अली थानवी क़द्दस सिर्रहु

ने "इस्लाहुर्रुसूम" में परदे के अहकामात का ख़ुलासा बयान फरमाया है जिसकी तल्ख़ीस नीचे दी गई है:

- मर्द के लिए नाफ़ से घुटने के नीचे तक मर्दों और औरतों से बदन छुपाना फ़र्ज़ है। सिवाए अपनी बीवी के कि उससे कोई हिस्सा छुपाना ज़रूरी नहीं। मगर बिला ज़रूरत उसे भी बदन दिखाना ख़िलाफ़-ए-औला है।
- औरत को दूसरी (मुसलमान) औरत के सामने नाफ़ से घुटने तक बदन खोलना जाइज़ नहीं है इससे मालूम हुआ कि कुछ औरतें (ख़ासकर देहातों में) दूसरी औरतों के सामने नंगी बैठ जाती हैं। यह बिल्कुल गुनाह है।
- औरत को अपने शरअ़ी मेहरम के सामने नाफ़ से घुटने तक और कमर और पेट खोलना हराम है। अलबत्ता सर, चेहरा, बाज़ू और पिंडली खोलना गुनाह नहीं है। मगर कुछ आज़ा का बिला ज़रूरत खोलना मुनासिब भी नहीं। और शरअ़ी मेहरम वह है जिससे उम्र भर किसी तरह भी निकाह सही होने का एहतिमाल न हो, जैसे बाप, बेटा, हक़ीक़ी भाई, अ़ल्लाती (बाप शरीक) भाई, अख़्याफ़ी (माँ शरीक) भाई, इन भाइयों की औलादें। इसी तरह इन्हीं तीनों तरह की बहनों की औलाद और इन्हीं जैसे रिश्तेदार जिनसे हमेशा के लिए निकाह हराम है और जिस से उम्र में कभी भी निकाह सही होने का एहतिमाल हो वह शरअ़न मेहरम नहीं बल्कि ना-मेहरम है और शरीअ़त में जो हुक्म अजनबी और ग़ैर आदमी का है वही हुक्म उन का भी है। अगरचे उनके साथ क़राबत का रिश्ता भी हो, जैसे चचाज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद और मामूज़ाद या देवर या बहनोई या ननदोइ वग़ैरह. ये सब ना-मेहरम हैं और इनसे भी वही परहेज़ है जो ना-मेहरमों से होता है। बल्कि चूंकि ऐसे मौके पर फ़ित्ने का होना आसान है इसलिए इनसे और भी ज़्यादा एहतियात का हुक्म है।
- जो शरअ़न ना-मेहरम हो उसके सामने सर और बाज़ू और पिंडली वग़ैरह भी खोलना हराम है और अगर सख़्त मजबूरी हो जैसे औरत को ज़रूरी कारोबार के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता हो, या कोई रिश्तेदार कसरत से घर में आता जाता हो और घर में तन्गी की वजह से हर वक़्त परदा नहीं रखा जा सकाता, सिर्फ़ ऐसी हालत में जाइज़ है कि अपना चेहरा और दोनों हाथ कलाई के जोड़ तक और पैर टख़ने के नीचे तक खोले रखे इसके

अलावा और किसी हिस्सा-ए-बदन का खोलना जाइज़ न होगा। लिहाज़ा ऐसी औरतों पर लाज़िम है कि सर को ख़ूब ढांके, कुर्ता बड़ी आसतीन का पहनें, पाजामा ग़रारेदार न पहनें और कलाई और टख़ने न खुलने दें।

- जिस हिस्से को ज़ाहिर करना जाइज़ नहीं, (जिसकी तफ़्सील अभी गुज़री) उसको कभी भी देखना हराम है चाहे शह्वत बिल्कुल न हो और जिस हिस्से को देखना और उस पर नज़र करना जाइज़ है उसमें क़ैद है कि शह्वत का अंदेशा न हो अगर ज़रा सा शक भी हो तो उस वक़्त देखना हराम है। अब यहां समझ लीजिए कि बूढ़ी औरत जिसकी तरफ़ बिल्कुल रग़्बत का एहतिमाल न हो उसका चेहरा देखना तो जाइज़ होगा मगर सर और बाज़ू वग़ैरह देखना जाइज़ न होगा। ऐसी औरतें घरों में इसकी एहतियात नहीं करतीं और अपने ना-मेह्रम रिश्तेदारों के सामने नंगे सर और बे-आसतीन का कुर्ता पहने बैठी रहती हैं और ख़ुद भी गुनहगार होती हैं और मर्दों को भी गुनाहगार करती हैं।
- जिस हिस्से का देखना हराम है, अगर इलाज की ज़रूरत से उसकी तरफ़ देखा जाये तो यह जाइज़ है मगर शर्त यह है कि नज़र उस जगह से आगे न बढ़ाए।
- ना-मेह्रम मर्द के साथ औरत का तन्हा मकान में रहना हराम है। इसी तरह अगर तन्हाई न हो बल्कि दूसरी औरत मौजूद हो मगर वह भी ना-मेह्रम हो तब भी मर्द का उस मकान में होना जाइज़ नहीं। अलबत्ता अगर उस औरत का मेह्रम या शौहर या उस मर्द की कोई मेह्रम या बीवी भी उस मकान में हो तो कोई बात नहीं, (मगर फ़ित्ने से मह्फ़ूज़ होना यहां भी शर्त है, मुरत्तिब)।
- ना-मेह्रम औरत और मर्द में बिला ज़रूरत आपस में बातचीत करना भी मना है। और ज़रूरत के वक़्त भी फ़ुज़ूल बातें न करें, न हंसे, न मज़ाक़ की कोई बात करे, यहां तक कि लह्जे को भी नर्म न करे।
- मर्द के गाने की आवाज़ औरत को और औरत के गाने की आवाज़ मर्द को सुनना मना है।
- हज़रात फ़ुक़हा ने नौजवान ना-मेह्रम औरत को सलाम करने या उसका सलाम लेने से मना किया है।

- ना-मेह्रम औरत का झूठा मर्द के लिए और ना-मेह्रम मर्द का झूठा औरत के लिए इस्तिमाल करना मना है। जबकि दिल में लज़्ज़त पैदा होने का एहतिमाल हो।
- अगर ना-मेह्रम का लिबास वग़ैरह देखकर तबीअ़त में मैलान पैदा होता हो तो उसका देखना भी हराम है।
- ऐसी ना-बालिग़ लड़की जिसकी तरफ़ रग़्बत होती हो उसका हुक्म बालिग़ा औरतों की तरह है।
- जिस तरह बुरी निय्यत से ना-मेह्रम की तरफ़ नज़र करना, उसकी आवाज़ सुनना, उससे बोलना और छूना हराम है, उसी तरह इसका ख़्याल दिल में जमाना और उससे लज़्ज़त लेना भी हराम है। और यह दिल का गुनाह है।
- इसी तरह ना-मेह्रम का ज़िक्र करना या ज़िक्र सुनना या फ़ोटो देखना या उससे ख़त व किताबत करना ग़रज़ जिस ज़रिये से भी ख़्यालात-ए-फ़ासिदा पैदा होते हों वे सब हराम हैं।
- जिस तरह मर्द को इजाज़त नहीं कि ना-मेह्रम औरत को बिला ज़रूरत देखे भाले इसी तरह औरत को भी जाइज़ नहीं कि बिला ज़रूरत ना-मेह्रम को झांके। उससे मालूम हुआ कि औरतों की यह आदत कि तक़्रीबात(शादी मंगनी वग़ैरह) में दुल्हा को या बारात को झांक झांक कर देखती हैं, बुरी बात है।
- ऐसा बारीक कपड़ा पहनना जिसमें बदन झलकता हो वह नंगे होने की तरह है। अहादीस में इसकी बुराई आई है।
- मर्द को ग़ैर औरत से बदन दबवाना जाइज़ नहीं है।
- बजने वाला ऐसा ज़ेवर जिसकी आवाज़ ना-मेह्रम तक जाये, या ऐसी ख़ुश्बू जिसकी महक ग़ैर मेह्रम के दिमाग़ तक पहुंचे इस्तिमाल करना औरतों को जाइज़ नहीं। यह भी बे-परदगी में दाख़िल है। और जो ज़ेवर ख़ुद न बजता हो मगर दूसरी चीज़ से लगकर बजता हो उसमें यह एहतियात वाजिब है कि पाँव ज़मीन पर आहिस्ता रखे ताकि आवाज़ न हो।
- छोटी बच्ची को भी बजने वाला ज़ेवर न पहनाया जाये।
- ना-मेह्रम पीर के सामने भी बे-परदा होना हराम है।

- अमूरद यानी बे-दाढ़ी वाला (ख़ूबसूरत और पुर-कशिश) लड़का भी कुछ अह्काम में अजनबी औरत की तरह है। यानी अन्देशा-ए-शह्वत के वक़्त उसकी तरफ़ नज़र करना, उससे हाथ मिलाना, या मुआनक़ा करना (गले लगाना), उसके पास तन्हाई में बैठना, उससे गाना सुनना, या उसके सामने गाना सुनना, उससे बदन दबवाना, या उससे बहुत प्यार और इख़्लास से बातें करना यह सब हराम है।
- सफ़र में अगर कोई मर्द मेह्रम (या शौहर) साथ न हो तो औरत को सफ़र करना हराम है।
- कुछ लोग जवान लड़कियों (या क़रीबुल बुलूग़ बच्चियों) को ना-बीना या बीना मर्दों से बेपरदा पढ़वाते हैं, यह बिल्कुल ख़िलाफ़-ए-शरीअ़त है।

(मुलख़्ख़स अज़ इस्लाहुर्रुसूम 55-57, बतग़य्युर अल्फ़ाज़)

यह सब मस्अले क़ुरआन और हदीस की साफ़ दलीलों से निकले हैं और "इस्लाहुर्रुसूम" में हाशिये पर इनके फ़िक़्ही हवाले भी दर्ज हैं, इनमें से हर-हर मस्अले को पढ़कर हमें सोचना चाहिए कि आज हमारे घराने में उनपर कितना अ़मल होता है और कितना ख़िलाफ़ होता है। अल्लाह तआ़ला हमें शरीअ़त पर कामिल तौर पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन

बारीक और चुस्त लिबास पहनना भी मना है

परदे के अह्कामात में यह भी है कि मर्द और औरत ऐसा लिबास हरगिज़ न पहना करें जिससे छुपाने वाले आज़ा की शक्ल बजाये छुपने के और उभर कर आये। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जहन्नम में जाने वाली औरतों की सिफ़त बयान फ़रमाई है कि वे लिबास पहनने के बावुजूद नंगी होंगी। (मुस्लिम शरीफ़ 2/205)

और इस जुमले की तफ़्सीर में हदीस की शरह करने वाले फ़रमाते हैं कि इससे या तो ऐसा लिबास मुराद है जो पूरी तरह बदन को न ढके या ऐसा बारीक लिबास मुराद है जो बदन की रंगत (और बनावट) को न छुपा सके।

(नववी अ़ला मुस्लिम 2/205)

तबरानी में मशहूर सहाबी हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु का यह इर्शाद नक़्ल किया गया है:

إِنَّ الرَّجُلَ لَيَلْبَسُ وَهُوَ عَارٍ. يَعْنِي الثِّيَابَ الرِّقَاقَ.

(اللباس و الزينة من السنة المطهرة ٥٨٠)

आदमी ऐसा लिबास पहनता है जिसे पहनने के बावुजूद वह बे-लिबास रहता है (यानी बारीक कपड़े जो पूरी तरह बदन न छुपा सकें)

आजकल नये फ़ैशन में ये दोनों बातें कस्रत से फैली हुई हैं। या तो ऐसे बारीक लिबास पहने जाते हैं जिनसे बदन पूरी तरह झलकता है, या फिर ऐसे चुस्त लिबास इस्तिमाल किये जाते हैं जो बदन की शक्ल को उभार देते हैं। यह तरज़-ए-लिबास मर्द और औरत दोनों के लिए शर्म की वजह और तरज़-ए-ग़ैरत के ख़िलाफ़ है। जब से जीन्स (कसी हुई पैन्ट) और टी-शर्ट का बेहूदा फ़ैशन चला है यह बे-ग़ैरती बिल्कुल आ़म हो गई है। नौजवान लड़कियां और लड़के खुलेआ़म इस बे-हया लिबास को पहन कर बे-हयाई का मुज़ाहरा करते हैं। मगर हमें एहसास भी नहीं होता। जबकि अल्लाह से शर्म करने का तक़ाज़ा यह है कि हम ख़ुद भी इन बे-हयाइयों से बचें और अपने घर वालों को भी बचाने की कोशिश करें।

तन्हाई में भी बिला ज़रूरत सत्र न खोलें

अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का तक़ाज़ा यह है कि हम तन्हाई की हालत में भी जहाँ तक हो सके अपने सत्र को छुपाने का एहतिमाम करें।

1. हज़रत बहज़् बिन हकीम अपने दादा का वाक़िआ़ बयान करते हैं कि उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि "ऐ अल्लाह के रसूल! हम अपना सत्र किससे छुपायें? और किससे न छुपायें?" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि "बीवी और बांदी के अ़लावा सबसे छुपाओ।" फिर उन सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ! अगर हमारे साथ दूसरे लोग भी रहते हों तो फिर क्या करें? आप ने फ़रमाया कि "जहां तक मुम्किन हो कोशिश करो कि तुम्हारे सत्र पर किसी की नज़र न पड़ सके"। फिर उन्होंने अ़र्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह! अगर हम तन्हा हों तो क्या करें?" इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

فَاللّٰهُ أَحَقُّ أَنْ يُسْتَحْيَى مِنْهُ مِنَ النَّاسِ. (شعب الايمان ١٥١/٦)

तो लोगों से ज़्यादा अल्लाह तआ़ला इसका मुस्तहिक़ है कि उससे हया की जाये।

इमाम बैहक़ी इस जुम्ले की वज़ाहत में फ़रमाते हैं कि "इस बात से शर्म की जाये कि अल्लाह तआ़ला हमें अपने सत्र पर नज़र करते हुए न देखे। क्योंकि अल्लाह तआ़ला से तो कोई चीज़, किसी जगह भी छुपी हुई नहीं है। इस ऐतिबार से गोया कि सत्रपोशी को छोड़ देना अल्लाह के सामने बे-हयाई है और सत्र का एहतिमाम रखना ही हया है। (शुअ़बुल ईमान 6/151)

2. सय्यिदना हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने एक मर्तबा तक़रीर के दौरान यह नसीहत फ़रमाई:

يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِيْنَ اِسْتَحْيُوْا مِنَ اللّٰهِ فَوَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ اِنِّىْ لَأَظَلُّ حِيْنَ اَذْهَبُ إِلَى الْغَائِطِ فِى الْفَضَاءِ مُتَقَنِّعًا بِثَوْبِى اسْتِحْيَاءً مِنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ. (شعب الإيمان ١٤٢/٦)

ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला से शर्म किया करो। उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं जब क़ज़ा-ए-हाजत के लिए सहरा में जाता हूँ तो अल्लाह तआ़ला से शर्म की वजह से अपने कपड़े लपेट कर जाता हूँ। (यानी जितना मुम्किन हो सके सत्रपोशी का एहतिमाम करता हूँ)

3. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि मशहूर सहाबी हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु सोते वक़्त (लुंगी के नीचे) नेकर पहन कर लेटते थे कि कहीं सोने की हालत में उनका सत्र न खुल जाये। (शुअ़बुल ईमान 4/154)

4. इसी तरह एक रिवायत में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मत को यह हिदायत फ़रमाई:

إِنَّ اللّٰهَ حَيِيٌّ سِتِّيْرٌ، فَإِذَا أَرَادَ أَحَدُكُمْ أَنْ يَغْتَسِلَ فَلْيَتَوَارَ بِشَيْءٍ. (شعب الإيمان ١٦١/٦)

अल्लाह तआ़ला हया करने वाला और सत्रपोशी को पसन्द करने वाला है इस लिए जब तुम में से कोई ग़ुस्ल का इरादा करे तो किसी चीज़ से आड़ कर ले।

यह हिदायात हम सबके लिए तवज्जोह के लाइक़ हैं। आजकल ज़्यादातर तन्हाइयों में सत्र का एहतिमाम नहीं रहता, यहां तक कि घरों के बाहर सड़कों पर लगे हुए नलों और पानी की टंकियों पर बड़ी बड़ी उम्र के लोग सत्र का

एहतिमाम किए बग़ैर नहाते हुए नज़र आते हैं और नहरों, दरियाओं के किनारों पर तो इस तरह की बे-हयाइयों के नज़ारे ज़्यादातर देखने को मिलते हैं, तो ग़ौर फ़रमाया जाये कि जब हमारी शरीअ़त तन्हाई में भी ज़रूरत से ज़्यादा सत्र खोलने से मना करती है तो भला खुली जगह पर इस बे-हयाई और बे-ग़ैरती को दिखाने की कहाँ इजाज़त हो सकती है?

मियाँ बीवी भी सत्र का ख़्याल रखें

इस्लामी तालीम यह है कि मियाँ बीवी भी आपस में बिल्कुल बे-शर्म न हो जाया करें बल्कि जहाँ तक हो सके सत्र का ख़्याल रखा करें। चुनांचे एक मुर्सल रिवायत में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु रसूल-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह मुबारक इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं:

إِذَا أَتَى أَحَدُكُم أَهْلَهُ فَلْيَسْتَتِرْ وَلَا يَتَجَرَّدَانِ تَجَرُّدَ الْعِيْرَيْنِ.

(شعب الإيمان ١٦٣/٦)

जब तुम में से कोई शख़्स अपनी बीवी के पास जाये तो जितना हो सके सत्र पोशी करे और जानवरों की तरह बिल्कुल नंगे न हो जाया करें।

मालूम हुआ कि हया का तक़ाज़ा यह है कि मियाँ बीवी भी एक दूसरे के सत्र को न देखें। सय्यिदना हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि पूरी ज़िन्दगी न मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का सत्र देखा, न आपने ने मेरा देखा। इसलिए हमें इस बात का ख़ास लिहाज़ रखकर शर्म व हया का सुबूत देना चाहिए। माँ-बाप के आमाल व अख़्लाक़ का औलाद पर बहुत असर पड़ता है। अगर हम शर्म व हया के तक़ाज़ों पर अ़मल करेंगे तो हमारी औलाद भी उन्हीं सिफ़ात व ख़साइल वाली होगी। और अगर हम शर्म व हया का ख़्याल न रखेंगे तो औलाद में भी उसी तरह के ख़राब जरासीम आ जाएंगे। आज टेलीविज़न के परदे पर नंगे और इन्सानियत से गिरे हुए मनाज़िर देखकर हमारे मुआ़शरे में उनकी नक़्ल उतारने की कोशिश की जाती है और इसका बिल्कुल लिहाज़ नहीं रखा जाता कि हमारा रब और हमारा ख़ालिक़ व मालिक तन्हाइयों में भी हमारे आमाल से पूरी तरह वाक़िफ़ है। वह इस बद्तरीन हालत में हमें देखेगा तो उसे किस क़द्र ना-गवार (बुरा) गुज़रेगा। इसलिए अल्लाह तआ़ला से शर्म करनी ज़रूरी है। यह शर्म का जज़्बा ही हमें

ऐसी बुरी बातों से बचा सकता है।

इसके अ़लावा सतर छुपाने में लापरवाही का एक और नुक़्सान हज़रात फ़ुक़हा ने लिखा है कि इसकी वजह से आदमी पर भूल और निसयान का ग़लबा हो जाता है और ज़रूरी बातें भी उसे याद नहीं रहतीं। अ़ल्लामा शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि भूल का मरज़ पैदा करने वाली चीज़ों में से यह भी है कि आदमी अपनी शर्मगाह से खेल करे और उसकी तरफ़ देखे।

(शामी 1/225, किताबुत्तहारत मतलब सित्तुन तुरिसुन्निस्यान)

बहरहाल नज़र से होने वाली ना-मुनासिब बातों में से अपने सतर पर बिला ज़रूरत नज़र करना भी है जिससे नज़र को महफ़ूज़ रखना चाहिए।

मियाँ बीवी अपना राज़ ब्यान न करें

इसी तरह यह भी बड़ी बे-शर्मी और बे-ग़ैरती की बात है कि मियाँ बीवी अपने राज़ को अपने दोस्तों और सहेलियों से बयान करें। एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

إِنَّ مِنْ شَرِّ النَّاسِ عِنْدَ اللّٰهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ الرَّجُلُ يُفْضِيْ إِلَى امْرَأَتِهِ وَ تُفْضِيْ إِلَيْهِ ثُمَّ يَنْشُرُ أَحَدُهُمَا سِرَّ صَاحِبِهِ.

(رواه مسلم ١/٤٦٤ عن أبي سعيد الخدري وأبوداؤد وغيرهما، الترغيب والترهيب ٣/٦١)

क़ियामत के रोज़ अल्लाह की नज़र में लोगों में सबसे बद्-तरीन मरतबे पर वह शख़्स होगा जो अपनी बीवी के पास जाये और उसकी बीवी उसके पास आये फिर उनमें से एक अपने साथी का राज़ (किसी दूसरे के सामने) खोल दे।

हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा मैं दूसरे मर्दों और औरतों के साथ आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थी कि आप ने इर्शाद फ़रमाया कि "मुम्किन है कि कोई मर्द अपनी बीवी के साथ किये जाने वाले काम को बयान करता हो और कोई औरत अपने शौहर के साथ किये जाने वाले काम की दूसरों को ख़बर देती हो।" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह इर्शाद सुन कर और लोग तो ख़ामोश रहे, मगर मैं ने अ़र्ज़ किया कि जी हाँ ऐ अल्लाह के रसूल! मर्द भी ऐसा करते हैं, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

فَلَا تَفْعَلُوْا، فَإِنَّمَا مَثَلُ ذٰلِكَ مَثَلُ شَيْطَانٍ لَقِيَ شَيْطَانَةً فَغَشِيَهَا وَالنَّاسُ يَنْظُرُوْنَ. (رواه احمد، الترغيب والترهيب ٢/٦١)

तो ऐसा न किया करो, इसलिए कि यह काम ऐसा ही है जैसे कोई शैतान (खुले आम) किसी चुड़ैल से जिमाअ़ (सोहबत) करे और लोग उसे देख रहे हों।

इस्लाम बे-हयाइयों की बातें फैलाने से रोकता है, मियाँ-बीवी का अपना राज़ लोगों में बयान करना बद्तरीन क़िस्म की बे-हयाई है। और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से शर्म व हया के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। इसलिए हमें इस बद्-तरीन काम से भी बचना चाहिए, ख़ासकर नये बियाहता जोड़े इस हिदायत का ख़्याल रखें। इसलिए कि बिगड़े हुए मुआशरे में ज़्यादा तर उन्हें ही अपने राज़ बयान करने पर मजबूर किया जाता है। अहादीस से मालूम हो गया है कि यह बयान करना और ब्यान पर मजबूर करना सब बद्तरीन गुनाह है। अल्लाह तआ़ला हमें महफ़ूज़ रखे। आमीन

दूसरे के घर में तांक-झांक करना

आँख के ज़रिये किये जाने वाले गुनाहों में से एक यह भी है कि आदमी किसी दूसरे शख़्स के घर जाये और अन्दर जाने की इजाज़त लेने से पहले दरवाज़े या खिड़की के सुराख़ों से अन्दर झांकने लगे, या दरवाज़ा अगर खुला हुआ हो तो सीधा दरवाज़े के सामने जाकर खड़ा हो जाए। इसलिए कि दाख़िले की इजाज़त से पहले देख लेने से इजाज़त का मक़्सद ही ख़त्म हो जाता है।

1. एक मर्तबा हज़रत सअ़्द बिन मुआ़ज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुजूरा-ए-मुबारका में तशरीफ़ लाये और दरवाज़े के बिल्कुल सामने आकर इजाज़त मांगने लगे तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आपको एक किनारे खड़े होने का इशारा करते हुए फ़रमाया कि ऐ सअ़्द! ऐसे (आड़ में) खड़े होकर इजाज़त लिया करो, इसलिए कि असल में इजाज़त का हुक्म तो नज़र ही की वजह से है। (शुअ़बुल ईमान 6/443 हदीस 8825)

2. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस तरह तांक झांक को सख़्त नापसन्द फ़रमाते थे। हज़रत सह्ल बिन सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दौलत ख़ाने के सुराख़ में झांकने लगा, उस वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दस्ते

मुबारक में सींग थी जिससे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सर-ए-मुबारक को खुजा रहे थे, तो आप ने (उस शख़्स की हरकत को देख कर) फ़रमायाः

لَوْ اَعْلَمُ اَنَّکَ تَنْظُرُ لَطَعَنْتُ بِهٖ فِیْ عَیْنِکَ اِنَّمَا جُعِلَ الْاِسْتِیْذَانُ مِنْ اَجْلِ الْبَصَرِ.
(بخاری شریف ۲/۹۲۲)

अगर मुझे मालूम होता कि तू देख रहा है तो मैं यही (बारीक सींग) तेरी आँख में चुभो देता, क्योंकि इजाज़त लेने का हुक्म तो इसी वजह से है कि (दूसरे की) नज़र से हिफ़ाज़त रहे।

और एक मुत्तफ़क़ अ़लैहि हदीस में है कि जो शख़्स किसी के घर में बिला इजाज़त नज़र डाले तो घर वालों के लिए उसकी आँख फोड़ देना जाइज़ है।
(मुस्लिम शरीफ़ 2/212)

3. सय्यिदना हज़रत उमर बिन अल्-ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु इर्शाद फ़रमाते हैं किः

مَنْ مَلَاَ عَیْنَیْهِ مِنْ قَاعَةِ بَیْتٍ قَبْلَ اَنْ یُؤْذَنَ لَهٗ فَقَدْ فَسَقَ.
(شعب الایمان ٦/٤٤١)

जिस शख़्स ने दाख़िले की इजाज़त से पहले घर का सहन आँख भर कर देखा उसने गुनाह और फ़िस्क़ (बुराई) का काम किया।

इसलिए अल्लाह से शर्म और हया का तक़ाज़ा यह है कि हम अपनी निगाहों को इस बद्-अमली से महफ़ूज़ रखें। अल्लाह तआ़ला हमें तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन ☐ ☐

आठवीं फ़स्ल

कान की हिफ़ाज़त

अल्लाह तबारक व तआ़ला से शर्म व हया का एक अहम तक़ाज़ा यह भी है कि इन्सान अपने कानों को ग़लत आवाज़ सुनने से महफ़ूज़ रखे। इन ग़लत आवाज़ों में अल्लाह के नज़्दीक सबसे बद्-तरीन आवाज़ गाने बजाने की आवाज़ है। क़ुरआन-ए-करीम में इसे "शैतान की आवाज़, बेकार बात, लह्व व लइब की चीज़" क़रार दिया गया है। क़ुरआन-ए-करीम की नीचे दी गई तीन आयतों से गाना सुनना मना मालूम होता है।

1. अल्लाह तआ़ला शैतान को जवाब देते हुए बतौर तम्बीह फ़रमाता है:

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ. (اسراء آیت: ٦٤)

और घबरा ले तू उनमें जिसको तू घबरा सके अपनी आवाज़ से।

यहाँ कुछ मुफ़स्सिरीन ने आवाज़ से बाजा गाना मुराद लिया है।

نقله القرطبی عن مجاهد والضحاک. (١٢٩/٥)

(٢) وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِیْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ يَتَّخِذَهَا هُزُوًا، اُولٰٓئِکَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ. (لقمان آیت: ٦)

2. और एक वे लोग हैं जो ख़रीदार हैं खेल की बातों के ताकि बिचलायें (गुमराह करें) अल्लाह की राह से बिन समझे और ठहरायें उसको हंसी, वे जो हैं उनको ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।

इस आयत में खेल की बातों से वे सब चीज़ें मुराद हैं जो अल्लाह की याद से हटाने वाली हों जैसे फ़ुज़ूल क़िस्सा गोई, हंसी मज़ाक़ की बातें, बेकार मश्ग़ले और गाने बजाने वग़ैरह। रिवायत में आता है कि नज़र बिन हारिस जो मक्के का एक सरदार था वह गाने बजाने वाली बांदियों को ख़रीद लाता और उनसे गाने सुनवाकर लोगों को क़ुरआन से रोकता था। (क़ुरतबी 7/49)

(٣) وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ، وَاَنْتُمْ سَامِدُوْنَ. (النجم آیت: ٦٠-٦١)

3. और हंसते हो, रोते नहीं और तुम खिलाड़ियां करते हो।

इस आयत में खिलाड़ियां करने से मुराद कुछ मुफ़स्सिरीन ने गाना बजाना लिया है। (हाशिया अल्-जुमल 4/240, तफ़सीर अबू मसऊद 8/166)

अहादीस-ए-शरीफ़ा में गाने की हुरमत

इसी तरह अहादीस-ए-तय्यिबा में गाने बजाने पर सख़्त वओ़ीदें (सज़ाएं) आई हैं।

1. एक हदीस में इर्शाद है:

صَوْتَانِ مَلْعُوْنَانِ فِی الدُّنْیَا وَالْآخِرَۃِ مِزْمَارٌ عِنْدَ نِعْمَۃٍ وَرَنَّۃٌ عِنْدَ مُصِیْبَۃٍ.

(الترغیب و الترهیب ۴/۱۸۴)

दो आवाज़ें दुनिया और आख़िरत में क़ाबिले लानत हैं, एक ख़ुशी के वक़्त म्यूज़िक की आवाज़, दूसरे मुसीबत के वक़्त मातम की आवाज़।

(۲) مَنْ جَلَسَ إِلٰی قَیْنَۃٍ یَسْمَعُ مِنْهَا صُبَّ فِیْ أُذُنِهِ الْآنُکُ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ.

(قرطبی ۷/۵۰ پ۲۱، ومثله فی حاشیه ابی داؤد ۲/۶۷۴)

2. जो शख़्स अपनी बान्दी से बैठकर गाना सुने उसके कानों में क़ियामत के दिन सीसा पिघलाकर डाला जाएगा।

3. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक लम्बी हदीस में वे अ़लामात बयान फ़रमाई हैं जिनके पाये जाने के वक़्त में उम्मत-ए-मुस्लिमा अ़ज़ाब से दोचार होगी उन्हीं में से एक अ़लामत यह है:

وَظَهَرَتِ الْقَیْنَاتُ وَالْمَعَازِفُ.

(ترمذی ۲/۴۵ عن علیؓ، قرطبی ۷/۵۰)

और गाने वाली बान्दियां और गाने बजाने के आलात आ़म हो जाएंगे।

4. एक हदीस में हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूर-ए-पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह इर्शाद नक़्ल फ़रमाती हैं:

مَنْ مَاتَ وَعِنْدَهٗ جَارِیَۃٌ مُغَنِّیَۃٌ فَلَا تُصَلُّوْا عَلَیْهِ. (قرطبی ۷/۵۱)

जिसका इन्तिक़ाल हो जाये और उसके पास कोई गाने बजाने वाली बान्दी हो तो उसकी नमाज़-ए-जनाज़ा न पढ़ो।

इस रिवायत से आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नज़र में गाने की ना-पसन्दीदगी का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

5. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اَلْغِنَاءُ يُنْبِتُ النِّفَاقَ كَمَا يُنْبِتُ الْمَاءُ الزَّرْعَ وَفِي رِوَايَةٍ يُنْبِتُ النِّفَاقَ فِي الْقَلْبِ الخ. (مشكوة شريف ٢/٤١١، شعب الإيمان ٤/٢٧٩ حديث ٥١٠٠ عن جابر)

गाना बजाना दिल में निफ़ाक़ को ऐसे उगाता है जैसे पानी खेती को उगाता है।

6. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لَيَشْرَبَنَّ أُنَاسٌ مِنْ أُمَّتِي الْخَمْرَ يُسَمُّوْنَهَا بِغَيْرِ اسْمِهَا وَ يُضْرَبُ عَلٰى رُؤُوْسِهِمُ الْمَعَازِفُ يَخْسِفُ اللّٰهُ بِهِمُ الْأَرْضَ وَيَجْعَلُ مِنْهُمْ قِرَدَةً وَخَنَازِيْرَ. (شعب الإيمان ٤/٢٨٢ حديث ٥١١٤)

मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब ज़रूर पियेंगे मगर उसको दूसरी चीज़ का नाम देंगे और उनके सरों पर गाने बजाने के आलात बजायें जाएंगे तो अल्लाह तआ़ला उन्हें ज़मीन में धंसा देगा और उन्हीं में से कुछ को बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना देगा।

गाना बजाना उ़लमा और फ़ुक़हा की नज़र में

ये अहादीस गाने बजाने की हुरमत पर वाज़ेह दलील हैं इसी बिना पर उम्मत के अकाबिर उ़लमा गाने बजाने की हुरमत पर मुत्तफ़िक़ रहे हैं। इमाम शअ़बी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि गाने वाला और जिसके लिए गाया जाये दोनों मलऊ़न हैं।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ फ़रमाते हैं कि गाना बजाना, ज़िना का जन्तर मन्तर है। हज़रत नाफ़ेअ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि वह एक मर्तबा हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के साथ सफ़र कर रहे थे तो उन्होंने मिज़्मार (गाने बजाने का आला) की आवाज़ सुनी तो अपने दोनों कानों में उंग्लियां दे लीं और उस जगह से दूर हट गये ताकि आवाज़ न सुन सकें और फ़रमाया कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी जब ऐसी आवाज़ सुनते थे तो यह अ़मल फ़रमाया करते थे। (शुअ़बुल ईमान 4/283)

साहिब-ए-दुर्रे मुख़्तार अ़ल्लामा हस्कफ़ी से नक़्ल करते हुए लिखते हैं:

اِسْتِمَاعُ صَوْتِ الْمَلَاهِيْ كَضَرْبِ قَصَبٍ وَ نَحْوِهٖ حَرَامٌ لِقَوْلِهٖ عَلَيْهِ

लह्व व लइ़ब वाली चीज़ों की आवाज़ सुनना जैसे बीन और हारमोनियम वग़ैरह हराम है। इसलिए कि आंहज़रत सल्लल्लाहु

الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ : اِسْتِمَاعُ الْمَلَاهِیْ مَعْصِیَةٌ، وَالْجُلُوْسُ عَلَیْهَا فِسْقٌ، وَالتَّلَذُّذُ بِهَا كُفْرٌ اَیْ بِالنِّعْمَةِ، فَصَرْفُ الْجَوَارِحِ اِلٰی غَیْرِ مَاخُلِقَ لِاَجْلِهٖ كُفْرٌ بِالنِّعْمَةِ لَاشُكْرٌ، فَالْوَاجِبُ كُلُّ الْوَاجِبِ اَنْ یُجْتَنَبَ كَیْ لَا یَسْمَعَ لِمَا رُوِیَ اَنَّهٗ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ اَدْخَلَ اِصْبَعَهٗ فِیْ اُذُنِهٖ عِنْدَ سِمَاعِهٖ.

(در مختار مع الشامی کراچی ۳٤۹/۶ قبیل فصل فی اللبس)

अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है कि लह्व व लइ़ब की चीज़ें सुनना गुनाह है और ऐसी मज्लिस में बैठना फ़िस्क़ (बुरा) है और उनसे लज़्ज़त हासिल करना कुफ़रान-ए-नेअ़मत है। इसलिए कि आज़ा व जवारेह को उन कामों में लगाना जिनके लिए उनकी पैदाइश नहीं हुई है (यानी गुनाहों के कामों में लगाना) शुक्र नहीं बल्कि नेअ़मत-ए-ख़ुदावन्दी की नाशुक्री है। इसलिए वाजिब से बढ़कर वाजिब है कि ऐसी आवाज़ें सुनने से बचा जाये जैसा कि रिवायत किया गया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनके सुनने के वक़्त अपने कानों में उंग्लियाँ डाल लीं।

शरीअ़त-ए-इस्लामी ने जिस शिद्दत से मुसलमानों को गाने बजाने में मश्ग़ूल होने से रोका है। अफ़्सोस है कि आज उसी कस्रत के साथ इस बड़े गुनाह का करना आ़म हो गया है। अब दरो दीवार से गाने बजाने की आवाज़ें आती हैं। काम करने वाले कारीगर गानों के इतने आ़दी हो चुके हैं कि बग़ैर इस आवाज़ के उनका दिल ही काम में नहीं लगता। घरों से क़ुरआन-ए-करीम की आवाज़ों के बजाये दिन रात म्यूज़िक और डैक की आवाज़ें सुनाई देती हैं। और फिर इसी पर बस नहीं कि आदमी ख़ुद ही सुनकर गुनाहगार हो बल्कि तेज़ तरीन आवाज़ में उसे बजाकर सारे मुहल्ले वालों को गुनाहगार बनाने की कोशिश की जाती है। आज हमारे नोजवानों के लिए सबसे ज़्यादा पसन्दीदा चीज़ टेप रिकार्ड और गाने बजाने और फ़िल्म की कहानियों की कैसिट हैं जिन्हें दिन-रात बजाकर वक़्त को बर्बाद और अख़्लाक़ व आ़दात को तबाह किया जाता है। "फ़हाशियों का पिटारा" टेलीवीज़न वी.सी.आर. और केबल टी०वी० के वसाइल आ़म हो गये हैं और उनके ज़रिये हमारे कान गुनाहों में पूरी तरह शामिल हो चुके हैं।

मुरव्वजा क़व्वाली (जिसका आजकल रिवाज है) भी हराम है

इससे आगे बढ़कर शैतान ने क़व्वाली की शक्ल में इस हराम काम को जाइज़ करने का बहाना भी घड़ लिया है। आज क़व्वालियाँ, म्यूज़िक की थापों पर गाई जाती हैं और तब्लों और हारमोनियम के साज़ पर क़व्वाल अश्आर पढ़ते हैं। ये अश्आर चाहे कितने भी सही और हक़ीक़त पर क्यों न बने हों, म्यूज़िक और आलात-ए-मौसीक़ी के साथ मिल जाने की वजह से इनकी हुरमत और मनाही में कोई कमी नहीं हो सकती। म्यूज़िक हर हाल में हराम है। फ़िक़ह-ए-हनफ़ी के मश्हूर आ़लिम अ़ल्लामा शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

وَمَا يَفْعَلُهُ مُتَصَوِّفَةُ زَمَانِنَا حَرَامٌ لَايَجُوْزُ الْقَصْدُ وَالْجُلُوْسُ إِلَيْهِ.

(شامی ٦/٣٤٩ قبیل فصل فی اللبس)

और जो हमारे ज़माने के सूफ़ी लोग (क़व्वालियाँ गाते और वजूद) करते हैं वह हराम है ऐसी मज्लिसों में जाना और शरीक होना भी जाइज़ नहीं है।

मगर अफ़्सोस है कि आज क़व्वालियों को ख़ास इबादत समझकर इसे जाली और बनावटी रूहानियत के हासिल होने का ज़रिया बनाया जाने लगा है। और पहले तो ये क़व्वालियाँ ख़ासकर उ़र्स और मज़ारात तक महदूद थीं मगर जब से नये इलैक्ट्रानिक आलात, टैप-रिकार्ड और ग्रामोफ़ौन वग़ैरह ईजाद हुए हैं तो ये चीज़ें बहुत आ़म हो गई हैं। हक़ीक़त यह है कि आ़म गानों के मुक़ाबले में मज़्हबी अश्आ़र की क़व्वालियाँ और ज़्यादा ख़तरनाक हैं। इसलिए कि उनमें अल्लाह और उसके रसूल का नाम म्यूज़िक के साथ लिया जाता है जो अल्लाह और उसके रसूल के अह्कामात के साथ भोंडे मज़ाक़ का मुज़ाहरा करने के बराबर है। यह तो ऐसा ही है जैसे कोई शख़्स अल्लाह की पनाह क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस तय्यिबा को म्यूज़िक पर पढ़ने लगे। ज़ाहिर है कि कोई भी मुसलमान इसे हरगिज़ बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसी तरह अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का तक़ाज़ा और ग़ैरत-ए-इस्लामी का तक़ाज़ा यह है कि हम नाजाइज़ आवाज़ों के साथ अल्लाह और उसके मुक़द्दस रसूल का नाम लेना भी हरगिज़ पसन्द न करें।

रमज़ान की बे-हुरमती

इन क़व्वालियों का सबसे ज़्यादा बेदर्दी का इस्तिमाल रमज़ान के महीने में

होता है। रमज़ान की वे मुबारक और रूहानी घड़ियाँ जिनमें एक फ़रीज़े का सवाब 70 गुना तक ज़्यादा हो जाता है। उनमें क़व्वालियों और गानों का सुनना और सुनाना सख़्त गुनाह है। मगर अफ़्सोस है कि बड़े शहरों में रमज़ानुल मुबारक की रातों में होटलों और दुकानों पर पूरी-पूरी रात क़व्वालियों की रिकॉर्डिंग होती रहती है और आवाज़ इतनी बुलन्द होती है कि मुहल्ले वालों का इबादत करना भी दूभर हो जाता है। यह अल्लाह और उसके रसूल की तौहीन के साथ-साथ रमज़ानुल मुबारक के महीने की भी तौहीन और ना-क़द्री है।

बहर-हाल हमारी यह ग़लती ठीक होने के क़ाबिल है। अगर हमें अल्लाह से डर है और आख़िरत में दरबार-ए-ख़ुदावन्दी में जवाब देने का ख़ौफ़ है तो हमें इन बुराइयों से बचना चाहिए और अपने कानों को हर बुरी बात सुनने से बचाना चाहिए। अल्लाह तआ़ला हमें तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन

दूसरों की राज़ की बातें सुनना

कान से किए जाने वाले गुनाहों में से एक बड़ा गुनाह यह है कि आदमी दूसरों की राज़ की बातों को सुनने की कोशिश में लगा रहे। बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنِ اسْتَمَعَ إِلَى حَدِيثِ قَوْمٍ وَهُمْ لَهُ كَارِهُونَ صُبَّ فِي أُذُنِهِ الْآنُكُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

(بخاری شریف ۲/۱۰٤۲ عن ابن عباسؓ)

जो शख़्स लोगों की ऐसी बातें ग़ौर से सुने जिन बातों को वे दूसरों को सुनाना ना-पसन्द समझते हैं तो उसके कानों में क़ियामत के दिन पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा।

और क़ुरआन-ए-करीम में भी तजस्सुस (जासूसी) से मना फ़रमाया गया है। और एक हदीस में इर्शाद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम है।

إِنِ اتَّبَعْتَ عَوْرَاتِ النَّاسِ أَفْسَدْتَهُمْ أَوْ كِدْتَ أَنْ تُفْسِدَهُمْ.

(ابوداؤد شریف ۲/٦۷۰)

अगर तुम लोगों के पौशीदा ऐबों वग़ैरह के दरपे होगे तो तुम उन्हें फ़साद में मुब्तला कर दोगे या फ़साद के क़रीब तक पहुंचा दोगे।

एक इब्रतनाक वाक़िआ

अ़ल्लामा अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद अल्-क़ुर्तबी ने "अल्-जामिउ़ लिअह्कामिल क़ुरआन" में अ़म्र बिन दीनार के हवाले से लिखा है कि मदीना मुनव्वरा में रहने वाले एक शख़्स की बहन का इन्तिक़ाल हो गया। इत्तिफ़ाक़ से तद्फ़ीन के वक़्त उस शख़्स की एक थैली जिसमें दीनार भरे हुए थे, क़ब्र में रह गई, चुनांचे उसने क़ब्र खोदी तो क्या देखता है कि पूरी क़ब्र आग के शौलों से भरी हुई है। उसने जाकर अपनी वालिदा से पूछा कि मेरी बहन की अ़मली ज़िन्दगी कैसी थी? वालिदा ने बताया कि एक तो नमाज़ को अपने वक़्त से टाल देती थी यानी क़ज़ा कर देती थी, दूसरे यह कि जब रात को पड़ौसी अपने अपने कमरों में चले जाते तो यह उठकर उनके दरवाज़ों पर कान लगा लेती और उनके राज़ों को हासिल कर लेती थी। तो उस शख़्स ने अपना आँखों देखा वाक़िआ ज़िक्र किया और कहा कि उसकी इन ही बद्-अमलियों का वबाल है। اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا مِنْهُ. (अल्लाह इससे हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए) (क़ुरतबी 8/302)

इन हक़ाइक़ की रौशनी में हमें अपने किरदार का जाइज़ा लेने की ज़रूरत है। आज हर आदमी दूसरे की टोह में लगा हुआ है कि क्या चीज़ लाइक़-ए-तन्क़ीद मिले और हम बात का बतन्गड़ बनायें। अपने उ़यूब से लापरवाही और दूसरे के ऐबों की खोज कुरेद ही फ़साद और बद-गुमानियों की बुनियाद है। तज्रिबा यह बताता है कि तजस्सुस में रहने वाला आदमी कभी भी चैन से नहीं रह सकता। हमेशा ज़हनी कौफ़्त और उलझन में मुब्तला रहेगा। इस के अ़लावा जो आदमी अपने काम से काम रखे और दूसरों के मुआ़मलात में ज़्यादा न पड़े उसकी ज़िन्दगी निहायत सुकून से गुज़रेगी। शरीअ़त की ये हिदायतें हमारे लिए दुनियवी और आख़िरत की कामियाबी की ज़ामिन हैं। इसलिए ज़िन्दगी के हर मोड़ पर हमें उनका लिहाज़ रखना चाहिए। और अल्लाह तआ़ला से सच्ची शर्म व हया का सुबूत देना चाहिए। ☐ ☐

नवीं फ़स्ल

दाढ़ी मुंडाना भी बे-शर्मी है

सर की हिफ़ाज़त का एक हिस्सा यह भी है कि सर और चेहरे की तराश और ख़राश शरीअ़त की बताई हुई हिदायात के बिल्कुल मुताबिक़ हो। अल्लाह तआ़ला ने मर्द व औ़रत दो अलग-अलग क़िस्में बनाई हैं और उनमें जहां आज़ा की बनावट में फ़र्क़ रखा है वहीं उनके दर्मियान इम्तियाज़ की एक वाज़ेह अ़लामत दाढ़ी को क़रार दिया गया है। क़ुद्‌रती तौर पर मर्दों के चेह्‌रे पर दाढ़ी निकलती है और औ़रतों के नहीं निकलती। यह ऐसा वाज़ेह फ़र्क़ है जिससे पहली ही नज़र में मर्द व औ़रत में इम्तियाज़ हो जाता है। अब जो शख़्स दाढ़ी मुंडाता है वह मर्द होने के बावुजूद औ़रतों से मुशाबहत इख़्तियार करता है और इस तरह की मुशाबहत पर अहादीस में सख़्त लानत आई है। एक हदीस में आया है:

لَعَنَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ اَلْمُتَشَبِّهِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ بِالنِّسَآءِ وَالْمُتَشَبِّهَاتِ مِنَ النِّسَآءِ بِالرِّجَالِ. (البخاری ۲/۸۷٤ حدیث ٥٨٨٥ عن ابن عباسؓ، اللباس والزینة ٤٣٩)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने औ़रतों से मुशाबहत करने वाले मर्दों और मर्दों से मुशाबहत करने वाली औ़रतों पर लानत फ़रमाई है।

इसलिए जो शख़्स भी शर्म व हया रखता है उस पर लाज़िम है कि अपने को औ़रतों की मुशाबहत से बचाकर वाक़ई अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का सुबूत दे और अपने सर और उस से मुताल्लिक़ आज़ा को जहन्नम की आग से बचाने का इन्तिज़ाम करे।

दाढ़ी न रखने में एक तो औ़रतों की मुशाबहत पाई जाती है। एक मुसलमान मर्द के लिए यही ख़राबी क्या कम थी मगर इसी को काफ़ी नहीं समझा गया बल्कि इससे भी ज़्यादा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दाढ़ी न रखने को मुश्रिकीन और मजूसियों की अ़लामत क़रार दिया है। और मुसलमानों को ताकीद के साथ दाढ़ी रखकर उनकी मुख़ालफ़त का हुक्म फ़रमाया है। चुनांचे इर्शाद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम है:

7

خَالِفُوا الْمُشْرِكِيْنَ، وَ فِّرُوا اللُّحٰى وَاَحْفُوا الشَّوَارِبَ.
(بخاری شریف ۲/۸۷۵ عن ابن عمرؓ)

मुश्रिकीन की मुख़ालफ़त करो, दाढ़ियाँ बढ़ाओ और मूंछों को ख़ूब कतरवाओ।

एक दूसरी हदीस में है:

قُصُّوا الشَّوَارِبَ وَاَرْخُوا اللُّحٰى خَالِفُوا الْمَجُوْسَ.
(رواہ مسلم ۱/۱۲۹، زاد المعاد ۱/۱۷۹)

मूंछें कतरवाओ और दाढ़ियाँ छोड़ो, मजूसियों की मुख़ालफ़त करो।

और एक रिवायत में है कि एक मर्तबा दरबार-ए-नुबुव्वत में बादशा-ए-किस्रा के दा क़ासिद हाज़िर हुए। दोनों की दाढ़ियाँ मुंडी हुई थीं और मूंछें बढ़ी हुई थीं उन्हें इस सूरत में देखकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सख़्त नागवारी हुई, फ़रमाया तुम्हारा बुरा हो, आख़िर तुम्हें किसने ऐसी सूरत बनाने का हुक्म दिया है? उन्होंने जवाब दिया कि हमारे आक़ा यानी किस्रा ने। इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لٰكِنَّ رَبِّيْ اَمَرَنِيْ بِاِعْفَاءِ لِحْيَتِيْ وَقَصِّ شَوَارِبِيْ. (البدایہ والنہایہ ۳/۲۶۹)

लेकिन मेरे रब ने मुझको दाढ़ी बढ़ाने और मूंछें कतरवाने का हुक्म दिया है।

तो मालूम हुआ कि दाढ़ियाँ मुंडवाना असल में मुश्रिकीन और आतिश परस्तों का तरीक़ा है। और दाढ़ियाँ रखना ईमान वालों का तरीक़ा है। और इसका शुमार उन सुन्नतों में होता है जो पहले अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम से भी साबित हैं और जिन्हें फ़ितरत कहा जाता है।

हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाती हैं:

عَشْرٌ مِّنَ الْفِطْرَةِ... قَصُّ الشَّوَارِبِ وَاِعْفَاءُ اللِّحْيَةِ... الخ. (مسلم شریف ۱/۱۲۹)

दस बातें फ़ितरत में से हैं जिनमें मूंछें कतरवाना और दाढ़ी बढ़ाना शामिल है।

इन वुजूहात की वजह से दाढ़ी रखने को वाजिब और दाढ़ी मुंडाने को हराम कहा जाता है इसमें यह कहकर कमी नहीं की जा सकती कि यह तो "सिर्फ़ एक सुन्नत है करें तो अच्छा है न करें तो गुनाह नहीं"। जैसा कि आ़म लोग कह देते हैं इस लिए कि पहले तो किसी सुन्नत की इस तरह तह्क़ीर ख़ुद तक़ाज़ा-ए-मुहब्बत-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बर-ख़िलाफ़ है। दूसरे

यह कि उसे सुन्नत-ए- ज़ाइदा के दर्जे में रखना ग़लत है। अगर यह सिर्फ़ सुन्नत-ए-ज़ाइदा होती तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके ख़िलाफ़ करने पर नागवारी का इज़्हार न फ़रमाते। और न इसकी इस क़द्र ताकीद की जाती। इसी वजह से तमाम ही फ़ुक़हा के नज़्दीक दाढ़ी मुंडाना और एक मुश्त से कम होने की सूरत में उसे कतरवाना हराम क़रार दिया गया है। जिसकी तफ़्सीलात फ़िक़ह की किताबों में मौजूद हैं।

लम्हा-ए-फ़िक्रिया (ग़ौर करने की बात)

एक तरफ़ तो दाढ़ी की यह शरअ़ी हैसियत है दूसरी तरफ़ उम्मत के ज़्यादातर लोगों का अ़मल उसके बिल्कुल ख़िलाफ़ है। दाढ़ी मुंडाने की वबा ऐसी आ़म हो गई कि अब ज़हन से इसके नाजाइज़ होने का तसव्वुर ही ख़त्म हो गया। बल्कि अगर किसी को बताया और समझाया जाये तो ग़लती मानने के बजाये बेकार और बेहूदा क़िस्म के उ़ज़्र (बहाने) पेश करने लगता है और "उ़ज़्र-ए-गुनाह बद-तर अज़् गुनाह" का मिस्दाक़ बन जाता है।

अफ़्सोस है कि दूसरी क़ौमें जिनका दामन तसव्वुर-ए-आख़िरत से ख़ाली है वे तो अपने शआ़इर (अ़लामात) का हद दर्जा एहतिमाम करें और हर जगह पर अपनी पहचान बनाने की कोशिश करें और मुसलमान जो दुनिया में तमाम इन्सानियत की फ़लाह व बहबूद का ज़ामिन और आख़िरत में कामियाबी का परवाना ले कर आया है वे अपनी पहचान बनाने के बजाये दूसरी क़ौमों की अ़लामतों में मिलकर अपना वुजूद ही ख़त्म करने पर तैयार हो। यह सूरत-ए-हाल अफ़्सोसनाक ही नहीं बल्कि मुस्तक़बिल के लिए ख़तरनाक भी है। आज हिन्दुस्तान में नज़र डालकर देखिए। पूरे मुल्क में सिख क़ौम के लोगों की तादाद सिर्फ़ दो करोड़ है लेकिन ये लोग अपने तरीक़े और पहचान के मज़्बूती से पाबन्द हैं कि सैकड़ों लोगों में अगर एक भी सिख होगा तो वह अपनी पगड़ी और दाढ़ी और किरपान के ज़रिये दूर से ही पहचाना जाएगा। इस क़ौम का आदमी चाहे असम्बली या पारलिमेंट में जाये यहां तक कि सदर-ए-जमूहूरिया क्यों न हो जाये। इसी तरह फ़ौजी नौकरी में रहे या शहरी कम्पनियों में रहे, हर हाल में अपनी क़ौमी पहचान को सीने से लगाये रखता है। जबकि मुसलमान जो मुल्क में लगभग बीस करोड़ की तादाद में है। उनके कपड़ों और तराश

ख़राश किसी भी चीज़ में ऐसी शनाख़्त बाक़ी नहीं रह गई जो उन्हें दूसरों से अलग कर दे। सफ़र के दौरान मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम में पहचान करना मुश्किल है। इसी ग़फ़लत और लापरवाही बल्कि मरऊबियत की वजह से आज मुसलमानों की आवाज़ कमज़ोर है। और वह मिलजुल कर अपनी बात मनवाने की हैसियत में नहीं हैं। यह हिदायत-ए-नबवी से दूरी का ही नतीजा है। और इसका इलाज सिर्फ़ यही है कि हम अपने काम करने के तरीक़े का जाइज़ा लें और माहौल का असर लिए बग़ैर पूरे इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करें कि हमारी ज़िन्दगी की डगर अल्लाह तआला से शर्म व हया के तक़ाज़ों के मुताबिक़ है या उनके ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ से नवाज़े। आमीन

सर पर अंग्रेज़ी बाल

सर के बालों के बारे में भी शरअ़ी हिदायात खुले तौर पर मौजूद हैं। जिनका लिहाज़ रखना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आ़म तौर पर सर-ए-मुबारक पर पट्टे बाल रखते थे। जो ज़्यादा तर कान की लौ तक रहते और कभी उससे नीचे तक भी हो जाते थे और हज और उ़म्रे के मौक़े पर आप का सारे बालों को मुंडवाना भी साबित है। आप के तरीक़े से इतनी बात साबित हुई कि बाल रखे जायें तो सब रखे जायें और काटे जायें तो सब बराबर काटे जायें, यह न हो कि कहीं से मुंडवा लिया और कहीं से छोड़ दिया। चुनांचे आपने "क़ज़अ़" (यानी बाल कहीं से मूंड देना और कहीं से छोड़ देना) से मना फ़रमाया है। (बुख़ारी शरीफ़ बाब अल्-क़ज़अ़ 2/877)

उ़लमा ने इसी हदीस से यह मस्अला निकाला है कि एक वक़्त में बाल छोटे बड़े रखना जाइज़ नहीं है, जैसा कि आजकल अंग्रेज़ी बाल रखे जाते हैं कि पीछे से छोटे करके आगे के हिस्से में बड़े छोड़ दिये जाते हैं तो इस तरीक़े में एक तो "क़ज़अ़" जैसी ख़राबी पाई जाती है और दूसरे इसमें ग़ैर क़ौमों से मुशाबहत भी है जिस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन अल्फ़ाज़ में वई़द फ़रमाई है कि:

مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ

जो शख़्स किसी क़ौम का तरीक़ा इख़्तियार करे वह उन्हीं में से है।

(مشکوٰۃ شریف ۲/۳۷۵)

मगर अफ़्सोस कि यही ग़ैर क़ौमों का तरीक़ा आज हमें सबसे ज़्यादा पसन्द

है। शायद गिन्ती के दो-चार फ़ीसद लोग होंगे जो बालों के बारे में शरई हिदायात पर अ़मल करते हैं। वर्ना अब तो बस अंग्रेज़ी बालों का चलन है, टोपियाँ ग़ाइब हैं और सरों पर अंग्रेज़ियत छाई हुई है। बच्चों से लेकर नौजवानों यहां तक कि बड़े बूढ़े लोग भी छोटे बड़े बे-हंगम बाल रखने के शौक़ीन नज़र आते हैं और सुन्नत को अपनाने का ख़्याल तक दिल में नहीं आता।

औरतों के बाल

शरीअ़त में सर के बालों को औ़रत की ज़ीनत क़रार दिया गया है और हुक्म दिया गया है कि वे सर के बालों को न मुंडवायें। एक हदीस में आया है कि:

نَهٰى رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ اَنْ تَحْلِقَ الْمَرْاَةُ رَاْسَهَا. (نسائی شریف ۲/۲۷۵)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने औ़रत को अपना सर मुंडवाने से मना फ़रमाया है।

और फ़िक़्ह-ए-हनफ़ी की मशहूर किताब "दुर्रे मुख़्तार" में लिखा है कि:

قَطَعَتْ شَعْرَ رَاْسِهَا اَثِمَتْ وَلُعِنَتْ، وَاِنْ بِاِذْنِ الزَّوْجِ، لِاَنَّهٗ لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوْقٍ فِيْ مَعْصِيَةِ الْخَالِقِ.

(در مختار ٦/٤٠٧)

औ़रत ने अपने सर के बाल काट लिये तो गुनहगार और मलऊ़न हुई, अगरचे शौहर की इजाज़त से ऐसा करे। इसलिए कि ख़ालिक़ (अल्लाह तआ़ला) की नाफ़रमानी वाले काम में किसी मख़्लूक़ की इताअ़त जाइज़ नहीं है।

औ़रतों के लिए बाल काटने की मनाही की बुनियाद यह है कि इस अ़मल की वजह से औ़रत मर्दों जैसी शक्ल वाली बन जाती है और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मर्दों की शक्ल इख़्तियार करने वाली औ़रतों पर लानत फ़रमाई है। इस तफ़्सील से मालूम हुआ कि आज के दौर में औ़रतों में जो बाल काटने का रिवाज हो गया है यह शरीअ़त-ए-इस्लामी की रू से बिल्कुल ना-जाइज़ है, जिस तरह मर्द के लिए दाढ़ी काटना हराम है इसी तरह औ़रतों के लिए सर के बाल मर्दों की तरह काटना हराम है। और उसे चाहे दुनिया बे-शर्मी न कहे मगर अल्लाह तबारक व तआ़ला की नज़र में यह हरकत हर हाल में बे-शर्मी और बे-हयाई में दाख़िल है। इस से हर हाल में बचना ज़रूरी है और घर वालों को भी बचाना चाहिए। ☐ ☐

दूसरा हिस्सा

पेट की हिफ़ाज़त

आमदनी के हराम ज़राए

सूद, जुआ, सट्टा

ग़सब, रिश्वतख़ोरी

मदारिस की रूक़ूम में एहतियात

शर्मगाह की हिफ़ाज़त

हम-जिन्सी की लानत

पहली फ़स्ल

हराम माल से बचना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से शर्म व हया की दूसरी जामेअ़ अ़लामत यह बयान फ़रमाई कि "وليحفظ البطن وما حوى" यानी "आदमी अपने पेट और उसमें जमा की हुई चीज़ों की हिफ़ाज़त करे"। इस हिदायत का सबसे पहला मक़्सद हराम कमाई से बचाव और एहतियात है। साथ में उन आज़ा व जवारेह की ग़लतकारियों से हिफ़ाज़त की तरफ़ भी इशारा मिलता है जो पेट से मुतअ़ल्लिक़ हैं। जैसे शर्म गाह, हाथ पैर और दिल को बुराइयों से बचाना। ये सब बातें क़ाबिल-ए-लिहाज़ हैं और इनकी रिआ़यत रखे बग़ैर अल्लाह तबारक व तआ़ला से शर्म व हया का हक़ अदा नहीं हो सकता।

क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस-ए-तय्यिबा में जगह जगह हलाल माल इख़्तियार करने की ताकीद और हराम से न बचने पर सख़्त वओ़ीदें आई हैं और क़ुरआन व सुन्नत में साफ़ हिदायात दी गई हैं कि आदमी हराम तरीक़ों से माल जमा न करे। क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया गया है:

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَ تُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ. (سورة البقرة: ١٨٨)

और न खाओ माल एक दूसरे का नाहक़ और न पहुंचाओ उनको हाकिमों तक, कि खा जाओ कोई हिस्सा लोगों के माल में से ज़ुल्म करके (नाहक़) और तुम को मालूम है।

एक जगह यतीमों का माल नाहक़ खाने पर इस तरह नकीर फ़रमाई गई:

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا، وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا. (سورة النساء: ١٠)

जो लोग कि खाते हैं माल यतीमों का नाहक़ वे लोग अपने पेटों में आग ही भर रहे हैं और जल्द ही दाख़िल होंगे आग में।

एक जगह इर्शाद है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ

ऐ ईमान वालो! न खाओ माल एक

بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّآ أَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ. (سورة نساء: ٢٩)

दूसरे के आपस में नाहक़, मगर यह कि तिजारत हो आपस की ख़ुशी से।

यही हुक्म हर हराम माल का है। जो माल भी शरीअ़त की रिआ़यत रखे बग़ैर हासिल किया जायेगा वह अ़ज़ाब को वाजिब करने वाला होगा और उसका इस्तिमाल करने वाला अल्लाह की रहमत से दूर हो जायेगा।

इर्शादात-ए-नबविय्यह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

1. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

إِنَّ اللّٰهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا وَإِنَّ اللّٰهَ أَمَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ بِمَآ أَمَرَ بِهِ الْمُرْسَلِيْنَ فَقَالَ: يَآ أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا، إِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ. (سورة المومنون: ٥١)

"अल्लाह तआ़ला पाकीज़ा है और, वह पाकीज़ा माल के अ़लावा कोई और माल (अपने दरबार में) क़ुबूल नहीं करता और अल्लाह तआ़ला ने (पाकीज़ा चीज़ें इस्तिमाल करने के बारे में) मोमिनीन को भी वही हुक्म दिया है जो रसूलों को दिया है। चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: ऐ रसूलों! खाओ उ़म्दा पाकीज़ा चीज़ों में से और काम करो नेक, बेशक मैं तुम्हारे काम से वाक़िफ़ हूँ।

وَقَالَ: يَآ أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ. (البقرة: ١٧٢) ثُمَّ ذَكَرَ: الرَّجُلَ يُطِيْلُ السَّفَرَ أَشْعَثَ أَغْبَرَ يَمُدُّ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَآءِ يَا رَبِّ يَا رَبِّ وَمَطْعَمُهُ حَرَامٌ وَمَشْرَبُهُ حَرَامٌ وَمَلْبَسُهُ حَرَامٌ وَغُذِيَ بِالْحَرَامِ فَأَنّٰى يُسْتَجَابُ لِذٰلِكَ.

और (ईमान वालों से फ़रमाया) ऐ ईमान वालो! हमारी अ़ता की हुई पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ, फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस शख़्स का ज़िक्र फ़रमाया जो (जैसे) लम्बे सफ़र की वजह से धूल मिट्टी में होने, मैले कुचैले बाल होने की हालत में अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर दुआ़ मांगे कि ऐ मेरे रब! ऐ मेरे रब! लेकिन उसका खाना, पीना और

लिबास हराम हो और उसकी हराम से परवरिश हुई हो तो कहाँ उसकी दुआ क़ुबूल हो सकती है?

(رواه مسلم ١/٣٢٦، الترغيب و الترهيب ٢/٣٤٤، مشكوٰة شريف ١/٢٤١)

इस हदीस से मालूम हुआ कि अगरचे इन्सान की ज़ाहिरी हालत क़ाबिले रहम क्यों न हो लेकिन हराम माल में शामिल होने की वजह से वह शख़्स अल्लाह के रहम व करम और नज़रे करम से महरूम कर दिया जाता है। और उसकी दुआ क़ाबिले क़ुबूल नहीं होती।

2. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं।

مَنِ اشْتَرٰى ثَوْباً بِعَشَرَةِ دَرَاهِمَ وَفِيْهِ دِرْهَمٌ مِّنْ حَرَامٍ لَّمْ يَقْبَلِ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ لَهٗ صَلٰوةً مَادَامَ عَلَيْهِ.

(رواه أحمد، الترغيب والترهيب ٢/٣٤٦)

"जिस शख़्स ने एक कपड़ा दस दिर्हम का ख़रीदा और उसमें एक दिर्हम हराम की मिलावट हो तो जब तक वह कपड़ा उसके बदन पर रहेगा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसकी कोई नमाज़ क़ुबूल न फ़रमायेगा।"

3. एक हदीस में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमायाः

وَالَّذِیْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ اِنَّ الْعَبْدَ لَيَقْذِفُ اللُّقْمَةَ الْحَرَامَ فِیْ جَوْفِهٖ مَا يُتَقَبَّلُ مِنْهُ عَمَلُ اَرْبَعِيْنَ يَوْماً، وَاَيُّمَا عَبْدٍ نَبَتَ لَحْمُهٗ مِنْ سُحْتٍ فَالنَّارُ اَوْلٰى بِهٖ. (رواه الطبراني فی الصغير، الترغيب و الترهيب ٦/٢٤٥)

उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की जान है आदमी अपने पेट में हराम लुक़्मा डालता है जिसकी वजह से चालीस रोज़ तक उसका कोई अ़मल अल्लाह के यहाँ क़ुबूल नहीं होता और जिस शख़्स का गोश्त पोस्त हराम ही से परवान चढ़ा हो उसके लिए तो जहन्नम ही मुनासिब है।

4. सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لَاتَدْخُلُ الْجَنَّةَ جَسَدٌ غُذِىَ بِحَرَامٍ.
(رواہ ابویعلی والبزار الخ، الترغیب والترھیب ۳٤۹/۲)

ऐसा बदन जन्नत में नहीं जाएगा जिसकी परवरिश हराम माल से हुई हो।

5. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़बरदार फ़रमायाः

لَا تَغْبِطَنَّ جَامِعَ الْمَالِ مِنْ غَيْرِ حِلِّهٖ فَإِنَّهٗ إِنْ تَصَدَّقَ بِهٖ لَمْ يُقْبَلْ مِنْهُ وَمَا بَقِىَ كَانَ زَادَهٗ إِلَى النَّارِ. (رواہ الحاکم، الترغیب و الترھیب ۳٤۸/۲)

तुम हराम माल जमा करने वाले पर रश्क न करो इसलिए कि अगर वह उस माल से सद्क़ा करेगा तो वह क़ुबूल न होगा और बाक़ी माल भी उसे जहन्नम तक ले जाने का सबब बन जायेगा।

6. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لَأَنْ يَجْعَلَ أَحَدُكُمْ فِىْ فِيْهِ تُرَابًا خَيْرٌ لَّهٗ أَنْ يَجْعَلَ فِىْ فِيْهِ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ. (شعب الإیمان ۵۷/۵)

तुम में से कोई आदमी अपने मुँह में मिट्टी भर ले, यह अपने मुँह में हराम माल दाख़िल करने से बेहतर है।

7. एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि जन्नत में दाख़िल करने वाले आमाल ज़्यादातर कौन से हैं? तो आप ने फ़रमाया कि तक़्वा और हुस्ने अख़्लाक़। फिर पूछा गया कि जहन्नम तक ले जाने वाले आमाल कौन से हैं? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

اَلْأَجْوَفَانِ : اَلْفَرْجُ وَالْفَمُ.
(شعب الإیمان ۵۵/۵)

दो दर्मियानी आज़ा यानी मुँह (जिससे हराम चीज़ पेट तक पहुंचती है) और शर्मगाह।

यानी ज़्यादा तर लोग हराम कमाई और ना-जाइज़ शह्वत रानी के ज़रिये जहन्नम के मुस्तहिक़ होंगे। اعاذنا الله منه (अल्लाह हमें इससे बचाए रखे)

इन रिवायात से यह मालूम हुआ कि हराम माल का इस्तिमाल शरीअ़त की नज़र में सख़्त ना-पसन्दीदा है और आख़िरत में बद्तरीन अ़ज़ाब का सबब है।

माल-ए-तय्यिब के सम्रात (फ़ायदे)

इसके अलावा वरअ़ यानी तक़्वा और मुश्तबा व हराम माल से बचना

आख़िरत में कामियाबी और माद्दी व रूहानी कामियाबी का ज़रिया है।

चुनांचे अहादीस-ए-तय्यिबा में हलाल माल के एहतिमाम पर दुनिया और आख़िरत में शानदार नतीजे सामने आने के वादे बयान हुए हैं। जैसे:

1. एक रिवायत में है कि एक मर्तबा हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरख़्वास्त की कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे लिए दुआ़ फ़रमा दीजिए कि मेरी दुआ़ क़ुबूल होने लगे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

يَاسَعْدُ : اَطِبْ مَطْعَمَکَ تَکُنْ مُسْتَجَابَ الدَّعْوَةِ. (الترغيب ٢/٣٤٥)

ऐ सअ़्द! अपना खाना तय्यिब (पाक) कर लो तुम्हारी दुआ़ क़ुबूल होने लगेगी।

2. एक हदीस में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह ख़ुशख़बरी सुनाई।

مَنْ اَكَلَ طَيِّباً وَعَمِلَ فِیْ سُنَّةٍ وَاَمِنَ النَّاسُ بَوَائِقَهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ. (شعب الایمان ٥/٥٤، الترغيب ٢/٣٤٥ عن ابی سعيد الخدریؓ)

जो शख़्स तय्यिब (पाक) माल खाये और सुन्नत पर अ़मल करे और लोग उसकी बुराई से महफ़ूज़ हों तो वह जन्नत मे जाएगा।

3. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल्-आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اَرْبَعٌ إِذَا كُنَّ فِيْكَ فَلَا عَلَيْكَ مَا فَاتَكَ الدُّنْيَا، حِفْظُ اَمَانَةٍ، وَصِدْقُ حَدِيْثٍ، وَحُسْنُ خَلِيْقَةٍ وَعِفَّةٌ فِیْ طُعْمَةٍ.

(الترغيب ٢/٣٤٥)

अगर तेरे अन्दर चार बातें मौजूद हों तो तुझे दुनिया के (माल व दौलत वग़ैरह) के ख़त्म होने का कोई अफ़्सोस न होना चाहिए। ❶ अमानत की हिफ़ाज़त, ❷ सच्चाई, ❸ अख़्लाक़-ए-हसना और ❹ खाने में हराम से परहेज़।

यानी ये चार आ़दतें जिसको नसीब हो जाएं उसे इतनी बड़ी अ़ज़ीम दौलत हाथ आ गई कि उसके मुक़ाबले में सारी काइनात की दौलत व सरवत बेकार है।

4. हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत अबुद्दहना रज़ियल्लाहु

अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हमारा गुज़र एक देहाती शख़्स पर हुआ, उसने बताया कि एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़कर कुछ नसीहतें फ़रमाईं। उनमें से एक नसीहत ख़ास तौर पर मुझे याद रह गई। आप ने इर्शाद फ़रमाया थाः

إِنَّكَ لَا تَدَعُ شَيْئًا اِتِّقَاءَ اللّٰهِ إِلَّا أَعْطَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا مِّنْهُ.

(شعب الایمان ٥/٥٣)

तुम जो चीज़ अल्लाह के डर से छोड़ दोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें इससे बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमायेगा।

यानी आज बज़ाहिर तक़्वे पर अ़मल करने में दुनियावी नुक़्सान नज़र आता है। लेकिन अगर हमारा यक़ीन पुख़्ता हो तो अल्लाह तआ़ला से उम्मीद रखनी चाहिए कि वह हमें इस तक़्वे के बदले में हमारा मक़्सद इस तरह पूरा कराएगा कि जहाँ से हमें मक़्सद के हासिल होने का वहम व गुमान भी न होगा।

ताजिरों को ख़ुशख़बरी

दुनिया में माल हासिल करने का सबसे बड़ा ज़रिया तिजारत है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसी ज़रीया-ए-तह्सील-ए-माल को सबसे ज़्यादा साफ़ सुथूरा बनाने की तर्ग़ीब दी है, अल्लाह के नज़्दीक उस ताजिर का मर्तबा बहुत बुलन्द है, जो अमानत और सच्चाई का ख़्याल रखकर हलाल रोज़ी कमाने की कोशिश करता है। चुनांचे हदीस में इर्शाद फ़रमाया गयाः

اَلتَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْأَمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ.

(ترمذی ١/٢٢٩ عن أبی سعيد الخدری)

सच्चे अमानतदार ताजिर का हश्र (क़ियामत में) हज़रात अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम, सिद्दीक़ीन, शुहदा और नेक लोगों के साथ होगा।

मालूम हुआ कि ताजिर का सबसे बड़ा ऐज़ाज़ उसका सच्चा अमानतदार होना है। यह सच्चाई और अमानत उसे दुनिया में भी नेक नाम बनाती है और आख़िरत में भी सुर्ख़रूई से सरफ़राज़ करेगी। ताजिर हज़रात को चाहिए कि वह अपनी कमाई ख़ालिस हलाल बनाने के लिए हर क़िस्म के झूठ, फ़रेब और बद-दियानती से बचते रहें। इसी में नजात है।

हज़रत सिर्री सक़ती रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि नजात तीन बातों में है। ❶ पाक खाना। ❷ कामिल परहेज़गारी। ❸ सीधा रास्ता। (शुअ़बुल ईमान 5/60)

हज़रत जुन्दुब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने वसिय्यत फ़रमाई कि "क़ब्र में सबसे पहले इन्सान का पेट सड़ेगा इसलिए जो शख़्स भी क़ुदरत रखे वह सिवाए पाकीज़ा खाने के और कोई चीज़ इस्तिमाल न करे।" (शुअ़बुल ईमान 5/54)

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह अल्-तसतरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं "जो शख़्स अपनी रोज़ी पर नज़र रखे, यानी हराम से बचता रहे तो बग़ैर किसी दावे के वह "ज़ुह्द फ़िद्दीन" की सिफ़त से नवाज़ा जाता है"। (शुअ़बुल ईमान 5/63)

इसके अ़लावा करोबार में हराम की मिलावट और सच्चाई और दियानत में कोताही कारोबार में बे-बरकती का बड़ा सबब है। मुआ़मलात में शरओ़ी हद की रिआ़यत न रखने की वजह से बड़ी बड़ी इबादतों का सवाब ग़ारत हो जाता है।

यूसुफ़ बिन इस्बात रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि "जब कोई जवान इबादत में मशग़ूल हो जाता है तो शैतान अपने चेलों से कहता है कि देखो इस जवान का खाना क्या है। अगर उसका खाना हराम होता है तो वह कहता है बस इसे अपने हाल ही पर छोड़ दो यह मेह्नत करता रहेगा और थकता रहेगा और कोई फ़ायदा हासिल न हो सकेगा"। (शुअ़बुल ईमान 5/60)

हराम माल से बचने का जज़्बा कैसे पैदा हो ?

माल व दौलत की हवस ऐसी चीज़ है जो इन्सान को हर सूरत में माल बटोरने पर आमादा करती है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि माल की भूख मरने तक नहीं मिटती। और मालदार का जैसे जैसे माल बढ़ता है वैसे वैसे ज़्यादा माल की ख़्वाहिश बढ़ती जाती है और उस ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए फिर वह हराम और हलाल की तमीज़ नहीं करता। बल्कि सिर्फ़ रूपये के दा रूपये बनाने के चक्कर में पड़ जाता है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है:

يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِي الْمَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ أَمِنَ الْحَلَالِ أَمْ مِنَ

लोगों पर एक ऐसा ज़माना आने वाला है कि आदमी इसकी परवाह नहीं करेगा

الْحَرَامِ. (رواه البخاری ١/٢٧٦-٢٧٩)

कि वह जो माल ले रहा है वह हलाल है या हराम।

आज बिलाशुब्हा वह ज़माना आ चुका है और हर तरफ़ यही लापरवाही फैली हुई है और जो जितना बड़ा मालदार है वह उतना ही उस कौताही मे मुब्तला है। हमें इस कौताही का एहसास करना चाहिए और इसे दूर करने की कोशिश करनी चाहिए और यह कोशिश उस वक़्त तक कामियाब नहीं हो सकती जब तक कि हम आख़िरत की जवाबदही पर ग़ौर न करें। इसी वजह से आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لَا يَزَالُ قَدَمَا ابْنِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُسْأَلَ عَنْ خَمْسٍ عَنْ عُمْرِهٖ فِيْمَا أَفْنَاهُ وَعَنْ شَبَابِهٖ فِيْمَا أَبْلَاهُ وَعَنْ مَالِهٖ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهٗ وَفِيْمَا أَنْفَقَهٗ وَمَاذَا عَمِلَ فِيْمَا عَلِمَ.
(رواه الترمذی ٢/٦٧ باب ماجاء فی شان الحساب والقصاص)

क़ियामत के दिन आदमी के क़दम अपनी जगह से हिल नहीं पाएंगे जब तक कि उससे पाँच सवाल न कर लिये जाएं। ❶ उम्र कहाँ लगाई? ❷ जवानी कहाँ गंवाई? ❸ माल कहाँ से कमाया? ❹ माल कहाँ लगाया? ❺ दीन के इल्म पर कहाँ तक अ़मल किया?

मालदार लोग रोक लिये जाएंगे

दुनिया में माल व दौलत को इज़्ज़त का ज़रिया समझा जाता है और आ़मतौर पर माल के हासिल करने और उसे ख़र्च करने में लोग शरीअ़त की हुदूद की रिआ़यत नहीं करते। लेकिन बारगाहे ख़ुदावन्दी में हाज़िरी के वक़्त यही माल जन्नत में देर का सबब बन जाएगा और दुनिया में फ़क्र व मस्कनत में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले हज़रात मालदारों से बहुत पहले जन्नत में अपनी जगह बना लेंगे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद-ए-आ़ली है:

قُمْتُ عَلٰى بَابِ الْجَنَّةِ فَإِذَا عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا الْمَسَاكِيْنُ وَإِذَا أَصْحَابُ الْجَدِّ مَحْبُوْسُوْنَ الخ.
(مسلم شریف ٢/٣٥٢ عن اسامة بن زيدؓ)

मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो देखा कि उसमें दाख़िल होने वाले ज़्यादा तर मिस्कीन हज़रात हैं और माल व वजाहत वाले लोग (हिसाब के लिए) रोक लिये गये हैं।

अब अगर हिसाब किताब साफ़ होगा तो जल्दी छुटकारा मिल जाएगा और अगर जमा और ख़र्च और आमद व ख़र्च में अल्लाह की रज़ा का ख़्याल न रखा गया होगा तो फ़िर देरी में देर होती चली जाएगी इसलिए हर शख़्स पर ज़रूरी है कि वह दुनिया की ज़िन्दगी ही में अपना हिसाब साफ़ करके तैयार रखे। आमदनी भी शरीअ़त के मुताबिक़ हो और ख़र्च भी अल्लाह के हुक्म के मुवाफ़िक़ हो। ☐ ☐

दूसरी फ़स्ल

आमदनी के हराम ज़राए

इस्लामी शरीअ़त में माल कमाने के कुछ ज़राए को मना क़रार दिया गया है और तजरिबे और मुशाहदे से यह बात साबित है कि दुनिया का अम्न व अमान और मुआ़शरे की सलाह व फ़लाह इसी मुमानअ़त पर अ़मल करने में छुपी हुई है और जिस मुआ़शरे में शरअ़ी मुमानअ़त की परवाह नहीं रखी जाती वह मुआ़शरा ख़ुदग़र्ज़ी और मफ़ाद परस्ती का नमूना बन जाता है, जैसा कि आज पूरी दुनिया का हाल है कि आदमी माल व दौलत के हासिल करने में बिल्कुल आज़ाद हो चुका है और हर शख़्स अपने मफ़ाद की तक्मील के लिए कुछ भी कर गुज़रने के लिए तैयार है और दूसरे की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा ख़त्म होता जा रहा है। नीचे कुछ हराम आमदनी के ज़राए के बारे में शरअ़ी हिदायात लिखी जा रही हैं ताकि हमारे दिल में ख़ौफ़-ए-ख़ुदा पैदा हो और हम हराम से पूरी तरह परहेज़ कर सकें।

सूद

आमदनी के हराम ज़राए में सबसे बद-तरीन तरीक़ा "सूद" है। क़ुरआन-ए-करीम में न सिर्फ़ यह कि सूदी लेन-देन से मना किया गया है बल्कि सूदी कारोबार में लगे रहने वालों से ऐलाने जंग किया गया है। (सूरः अल्-बक़रा) क़ुरआन-ए-करीम में इस तरह की सख़्त वअ़ीद किसी और अ़मल पर नहीं आई है। इस से सूदी आमदनी के मन्हूस होने का आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। और अहादीस-ए-शरीफ़ा में भी बहुत ज़्यादा सूद की मनाही आई है। हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

(١) دِرْهَمُ رِبٰوا يَأْكُلُهُ الرَّجُلُ وَهُوَ يَعْلَمُ اَشَدُّ مِنْ سِتَّةٍ وَّثَلٰثِيْنَ زِنْيَةً.

(رواه أحمد، الترغيب ٣/٥، مظاهر حق ٣/٢٥)

1. सूद का एक दिरहम जिसे आदमी जानबूझ कर खाये उसका वबाल और गुनाह 36 मर्तबा मुँह काला करने से बद्-तरीन जुर्म है।

2. सय्यिदना हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं:

لَعَنَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ آكِلَ الرِّبٰوا وَمُوْكِلَهٗ وَكَاتِبَهٗ وَ شَاهِدَيْهِ وَقَالَ هُمْ سَوَآءٌ.

(رواه مسلم ۲/۲۷، مظاهر حق ۳/۲۳)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सूद खाने वाले, खिलाने वाले, सूदी मुआ़मले को लिखने वाले और उसकी गवाही देने वालों पर लानत फ़रमाई है और फ़रमाया है कि ये सब (गुनाह में) बराबर हैं।

3. सय्यिदना हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं:

اَلرِّبٰوا سَبْعُوْنَ جُزْءًا اَيْسَرُهَا اَنْ يَّنْكِحَ الرَّجُلُ اُمَّهٗ. (مظاهر حق ۳/۲٦)

सूद के 70 हिस्से हैं जिनमें सबसे हलका दर्जा ऐसा है जैसे कोई शख़्स अपनी माँ से (अल्लाह की पनाह) मुँह काला करे।

4. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं:

فَاَتَيْتُ عَلٰى قَوْمٍ بُطُوْنُهُمْ كَالْبُيُوْتِ فِيْهَا الْحَيَّاتُ تُرٰى مِنْ خَارِجِ بُطُوْنِهِمْ فَقُلْتُ مَنْ هٰؤُلَآءِ يَا جِبْرِيْلُ؟ قَالَ هٰؤُلَآءِ اَكَلَةُ الرِّبٰوا.

(رواه أحمد، الترغيب و الترهيب ۳/۷)

मेराज की रात में मेरा गुज़र ऐसी जमाअ़त पर हुआ जिनके पेट कमरों (घरों) की तरह थे जिनमें साँप (लोट रहे) थे जो बाहर से नज़र आ रहे थे, मैंने पूछा कि ऐ जिब्रील ये कौन लोग हैं? तो हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि ये सूद खाने वाले लोग हैं

5. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اِذَا ظَهَرَ الزِّنَا وَالرِّبَا فِىْ قَرْيَةٍ فَقَدْ اَحَلُّوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَذَابَ اللّٰهِ.

(رواه ابو يعلى، الترغيب و الترهيب ۳/٦)

जब किसी बस्ती में बद्-कारी और सूदख़ोरी आ़म हो जाये तो वहाँ के रहने वाले अपने को अल्लाह के अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ बना लेते हैं।

इसी तरह की और रिवायात भी अहादीस के ज़ख़ीरे में मौजूद हैं जिनको पढ़कर किसी भी साहिब-ए-ईमान को हरगिज़ हरगिज़ यह हिम्मत न होनी चाहिए कि वह अपनी आमदनी में सूद का एक लुक़्मा भी शामिल करे। लेकिन बुरा हो

माल की हवस और दौलत की चाहत का कि आज हम इस्लाम का दावा करने के बावुजूद सूदी कारोबार से बचने का एहतिमाम नहीं करते और माल के ज़्यादा होने के शौक़ में हलाल व हराम की तमीज़ ख़त्म कर देते हैं। हालांकि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

اَلرِّبَا وَاِنْ كَثُرَ فَاِنَّ عَاقِبَتَهٗ اِلٰى قُلٍّ.

सूद का माल अगरचे बहुत हो जाये मगर उसका अन्जाम कमी ही कमी है।

(رواه الحاكم عن عبد الله بن مسعودؓ، الترغيب و الترهيب ٣/٨)

तज्रिबा भी यही बताता है कि हराम माल जैसे आता है वैसे ही बे-फ़ायदा जगहों पर ख़र्च होकर चला भी जाता है। और कभी कभी दूसरे हलाल माल की बरकत भी ख़त्म कर देता है। इसलिए अल्लाह से शर्म व हया का हक़ उसी वक़्त अदा हो सकता है जबकि हम अपनी कमाई और कारोबार को सूद की नापाकियों से जहाँ तक हो सके पाक कर लें और हराम तरीक़ों से बचकर अपना ठिकाना जन्नत में बना लें।

बैंक का इन्ट्रेस्ट भी यक़ीनन सूद है

कुछ आज़ाद ख़्याल दानिश्वरों ने काफ़ी वक़्त से यह ग़लत फ़हमी पैदा कर रखी है कि बैंक में रक़्म रखने पर जो ज़ाइद पैसा मिलता है वह तो शिरकत है कि बैंक उसी रक़्म से कारोबार करता है। फिर अपने नफ़े में से कुछ हिस्सा रूपया रखने वालों को भी दे देता है। इसलिए उसे सूद नहीं कहा जाएगा, बल्कि ज़ाइद रक़्म शिरकत का मुआवज़ा क़रार दी जाएगी। हालांकि यह बात बिल्कुल बिला दलील है। फ़िक़ह-ए-इस्लामी में बैंक से जो ज़ाइद रक़्म मिलती है वह बिलाशक व शुब्ह "रिबाउन नस्या" में दाख़िल है जिसकी हुरमत पर तमाम उलमा और फ़ुक़हा-ए-इस्लाम मुत्तफ़क़ हैं। क्योंकि बैंक में जो भी ज़ाइद रक़्म मिलती है वह एक ख़ास वक़्त गुज़रने पर मिलती है। कारोबार में शिरकत का वहां वहम व गुमान भी नहीं होता। इसलिए यह निहायत सत्ही और वाक़ई इन्तिहाई फ़ासिद तावील है कि बैंकों में जारी सूद को "रिबाउन नस्या" से निकालकर ख़्वाह मख़्वाह शिरकत में डाल दिया जाये। ये सूदख़ोरों के शैतानी वस्वसे हैं जिन्हें उम्मत बार बार ठुकरा चुकी है।

सूद और दारूल हरब

आमतौर पर हिन्दुस्तान में सूदी कारोबार करने वाले हज़रात यह कहते हैं कि चूंकि हिन्दुस्तान दारूल हरब है इसलिए वहाँ सूदी कारोबार जाइज़ है। इसलिए इस मुआमले को अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है।

❶ सबसे पहली बात तो यह है कि तमाम उलमा व फ़ुक़हा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि दारूल हरब में सूदी क़र्ज़ लेना जिसमें ग़ैर मुस्लिम या हरबी को सूद देना पड़ता हो बिल्कुल हलाल नहीं है। इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ सूद लेने में है। अ़ल्लामा शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

وَقَدْ أَلْزَمَ الْأَصْحَابُ فِي الدَّرْسِ أَنَّ مُرَادَهُمْ مِنْ حِلِّ الرِّبَا وَالْقِمَارِ مَا إِذَا حَصَلَتِ الزِّيَادَةُ لِلْمُسْلِمِ نَظَرًا إِلَى الْعِلَّةِ.(شامی کراچی ۵/۱۸۶)

मशाइख़ ने दर्स (सबक़) में यह बात बताई है कि दारूल हरब में सूद और जुए के जाइज़ होने से फ़ुक़हा का मक़्सद वह सूरत है जब ज़्यादती मुसलमान को हासिल हो इल्लत से यही पता चलता है।

इससे यह मालूम हो गया कि आजकल जो बड़े-बड़े कारोबार के लिए सरकारी बैंकों से सूदी कर्ज़े लिए जाते हैं और इसके लिए दारूल हरब होने का सहारा पकड़ा जाता है यह नावाक़िफ़ियत या ग़लत फ़हमी है। किसी दारूल हरब में किसी मुसलमान के लिए सूदी क़र्ज़ लेना जाइज़ नहीं है।

❷ अलबत्ता दारूल हरब में हरबी से सूद लेने के सिलसिले में फ़ुक़हा की दो राये हैं:

1. इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि और तीनों इमामों (इमाम मालिक, इमाम शाफ़अ़ी, इमाम अहमद रहिमहुमुल्लाह) के नज़्दीक किसी भी मुसलमान के लिए दारूल हरब या दारूल इस्लाम कहीं भी सूदी लेन देन या उ़क़ूद-ए-बातिला की बिल्कुल इजाज़त नहीं है। दलील की ताक़त के ऐतिबार से इन हज़रात की दलील बहुत मज़्बूत है। (मुस्तफ़ाद बदाए अस्-सनाए 5/192)
2. इसके बरख़िलाफ़ हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि और हज़रत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अ़लैहि के नज़्दीक दारूल हरब में अहल-ए-हरब के माल मुसलमानों के लिए बिल्कुल मुबाह होने की बिना पर वहां सूद वग़ैरह का वुजूद ही नहीं होता बल्कि रज़ामन्दी माल को लेने के लिए काफ़ी

समझी जाती है। (बदाए अस्-सनाए 5/192)

मगर ख़्याल रहे कि इन हज़रात के नज़्दीक यह इजाज़त आम नहीं है बल्कि इसमें नीचे दी गई शर्तों का लिहाज़ रखना ज़रूरी है:

① मुआमला हक़ीक़ी दारूल हरब में हो ② हरबी से हो, ③ मुस्लिम-ए-अस्ली (दारूल हरब के मुसलमान शहरी) से न हो, ④ मुआमला करने वाला बाहर से वीज़ा लेकर आने वाला मुस्तामिन हो। मुस्लिम-ए-अस्ली न हो।

(मुस्तफ़ाद इम्दादुल फ़तावा 3/157)

इनमें से अगर एक शर्त भी न पाई जाये तो सूद लेने की इजाज़त न होगी। अब ग़ौर किया जाये कि हिन्दुसतान में ये सब शर्तें पाई जा रही हैं या नहीं।

पहली बात तो यह कि इसके दारूल हरब होने में शदीद इख़्तिलाफ़ रहा है। क्योंकि यहां क़ानूनी ऐतिबार से मुसलमानों को जमूहूरी हुक़ूक़ दिये गये हैं। दूसरे यह कि तमाम सरकारी बैंक क़ानूनी तौर पर मुल्क के हर आदमी की मिल्कियत हैं जिनमें हिन्दु मुसलमान सब शामिल हैं तो जो शख़्स बैंकों से सूद लेता है वह सिर्फ़ हरबियों से ही सूद नहीं लेता बल्कि यहां के मुस्लिम बाशिन्दों की मिल्कियत का कुछ हिस्सा भी इसके पास पहुंचता है। इसलिए दूसरी और तीसरी शर्त के सही होने में भी शुब्ह पाया गया। और ज़्यादातर फ़िक़ह की किताबों में यह इजाज़त सिर्फ़ मुस्लिम मुस्तामिन को दी गई है। लिहाज़ा यहां के अस्ली मुसलमान बाशिन्दों के लिए इसमें कोई सहूलत नहीं दी जा सकती। इसी वजह से हुज्जतुल इस्लाम हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने एक ख़त में दारूल हरब के मुसलमान बाशिन्दों के लिए यहां रहते हुए सूद लेने को नाजाइज़ लिखा है। (मक्तूब-ए-हश्तुम)

और मौजूदा अकाबिर उलमा-ए-देवबन्द ने इदारतुल मबाहिसुल फ़िक़्हिय्या जमइय्यतुल उलमा-ए-हिन्द के पांचवे फ़िक़ही इज्तिमाअ (जो 17-19 रजब 1416 हिजूरी में हुआ था) में भी हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि की राय से इत्तिफ़ाक़ करते हुए हिन्दुस्तान के रहने वालों के लिए सूद की मनाही का फ़ैसला किया है।

और ख़ातिमुल मुहक़्क़िक़ीन हज़रत मौलाना फ़त्ह मुहम्मद साहब लखनवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी मारिकतुल आरा किताब "इतर-ए-हिदाया" में लिखा है:

"जो लोग दारूल कुफ़्र में ब-अमान रहते हों, या दाख़िल हों, या बाहम सुल्ह

व अ़हद रखते हों उन्हें कोई ऐसा मुआ़मला करना जो शरअ़न नाजाइज़ हो जैसे बैअ़ या इजारा-ए-फ़ासिद व बातिल, या शर्त या रिश्वत वग़ैरह हरगिज़ जाइज़ नहीं और हदीस لا ربوا بين المسلم والحربي का यह मतलब है कि मुसलमान दारूल हरब में काफ़िर से सूद ले तो वह सूदख़्वार मूजिब-ए-वअ़ीद-ए-रिबा न होगा। अगरचे मिल्क-ए-हराम का मुआख़ज़ा बाक़ी है। मगर सूद देना किसी तौर पर भी जाइज़ नहीं होगा। मगर जबकि उस सूद लेने वाले से वहां के लोगों का अ़हद व सुलह हो या यह वहीं का रहने वाला हो तो लेना भी जाइज़ नहीं है।"

(इतर-ए-हिदाया 181)

❸ अगर हज़रात तरफ़ैन यानी हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा और हज़रत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अ़लैहिमा के मौक़िफ़ को मुत्लक़ भी मान लिया जाये तो इसका मतलब उ़लमा-ए-मुहक़्क़िक़ीन ने यह ब्यान किया है कि मान लो अगर कोई शख़्स दारूल हरब से यह माल लेकर दारूल इस्लाम आ जाये और मुआ़मला दारूल इस्लाम में मुसलमान क़ाज़ी के सामने पेश किया जाये तो वह मुसलमान क़ाज़ी उस माल की वापसी का हुक्म नहीं करेगा। अलबत्ता लेने वाले के लिए ना-जाइज़ मुआ़मला करने का गुनाह बदस्तूर क़ाइम रहेगा। गोया कि मुसलमान के लिए जवाज़ का हुक्म सिर्फ़ क़ज़ा के तौर पर है दियानतन मुमानअ़त बदस्तूर बाक़ी है। हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी क़द्दस सिर्रहू ने अपने उस्ताज़-ए-गिरामी हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से यही मतलब नक़्ल फ़रमाया है

(ब-हवाला ग़ैर इस्लामी हुकूमत के शरअ़ी अह्काम 68)

साहिब-ए-इत्रे हिदाया तह्रीर फ़रमाते हैं:

"जो माल ऐसे दारूल कुफ़्र से लाया जाये जहां से सुलह व मुआ़हदा नहीं है या ब-क़ह्र व ग़लबा मिले, या धोखा व बहाने से मिले हलाल है और बरज़ाए ग़ैर मौतबर मिले जैसे सूद, क़िमार, बदला-ए-ज़िना वग़ैरह तो मिल्क आ जायेगी इसलिए कि वह माल ग़ैर मासूम है और हिल्लत न आयेगी। इसलिए कि हासिल करने का तरीक़ा शरअ़ी नहीं है"। (इत्र-ए-हिदाया 180)

बहरहाल सूदख़्वारों के लिए हिन्दुस्तान को दारूल हरब कहने का सहारा लेना किसी भी तरह मुफ़ीद-ए-मतलब नहीं। सही क़ौल के मुताबिक़ यहां भी सूदी लेन देन इसी तरह हराम है जैसे दूसरे मुल्कों में। एहतियात और आ़फ़ियत

का रास्ता यही है। इसलिए जो भी मुसलमान अल्लाह से शर्म व हया रखते हैं उन्हें अपने मुआमलात से सूदी जरासीम के निकालने की पूरी कोशिश करनी चाहिए और सिर्फ़ वक़्ती नफ़ा के लिए ग़ैर मुस्तन्द दलीलों का सहारा न लेना चाहिए। (اللّٰهم وفقنا لما تحبه و ترضى)

जुआ और सट्टा

शरीअ़त में आमदनी के जिन तरीक़ों की सख़्ती से मनाही आई है उनमें जुआ और सट्टा भी शामिल है। क़ुरआन-ए-करीम नें सूरः माइदा में जुए और शराब को एक साथ ज़िक्र करके उन्हें गन्दगी और ग़िलाज़त बताया है और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चौसर (जो सट्टे में खेला जाता है) के बारे में फ़रमाया:

مَنْ لَعِبَ بِالنَّرْدَ شِيْرِ فَكَأَنَّمَا صَبَغَ يَدَهُ فِيْ لَحْمِ خِنْزِيْرٍ وَدَمِهِ. (مسلم شريف ٢/٢٤٠)

जिसने चौसर खेला गोया कि उसने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और उसके ख़ून में सान लिया।

देखिए सट्टा खेलने को आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किस क़द्र घिनावने काम से मिलता जुलता बताया है जिसका कोई मुसलमान तसव्वुर भी नहीं कर सकता। सट्टा खेलने की दीनी व दुनियवी बुराइयाँ बिल्कुल ज़ाहिर और रोज़े रौशन की तरह खुली हुई हैं। अ़ल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अ़लैहि रूहुल मआ़नी में लिखते हैं:

وَمِنْ مَفَاسِدِ الْمَيْسِرِ أَنَّ فِيْهِ أَكْلَ الْأَمْوَالِ بِالْبَاطِلِ وَأَنَّهُ يَدْعُوْ كَثِيْراً مِنَ الْمُقَامِرِيْنَ إِلَى السَّرِقَةِ وَتَلَفِ النَّفْسِ وَإِضَاعَةِ الْعِيَالِ وَارْتِكَابِ الْأُمُوْرِ الْقَبِيْحَةِ وَالرَّذَائِلِ الشَّنِيْعَةِ وَالْعَدَاوَةِ الْكَامِنَةِ وَالظَّاهِرَةِ، وَهٰذَا أَمْرٌ مُشَاهَدٌ لَا يُنْكِرُهُ إِلَّا مَنْ أَعْمَاهُ

और जुए के मफ़ासिद (ख़राबियों) में से ये हैं। ● लोगों का माल नाजाइज़ तरीक़े पर खाना, ● अक्सर जुवारियों का चोरी करना, ● क़त्ल करना, ● बच्चों और घर वालों का ख़्याल न करना, ● गन्दे और बद्-तरीन जुर्म करना, ● ज़ाहिरी और पोशीदा दुश्मनी करना और ये बिल्कुल तज्रिबे की बातें है। इनका कोई शख़्स इन्कार नहीं कर सकता। मगर यह कि अल्लाह तआ़ला

ने किसी को सुनने और देखने की सलाहियत से महरूम कर दिया हो। الله تعالى واصمه.

(روح المعانی ۲/۱۱۵)

तज्रिबे से यह बात ज़ाहिर है कि जिस मुआशरे में सट्टा बाज़ों की कस्रत होती है वह मुआशरा जुर्म और बुरे कामों की जगह बन जाता है इसलिए कि मुफ़्त में हराम ख़ोरी की जब आदत पड़ जाती है तो मेहनत मज़्दूरी करके कमाना बहुत मुश्किल होता है। लाखों ख़ानदान इस बुराई में गिरफ़्तार होकर तबाही और बर्बादी के ग़ार में जा चुके हैं और दोनों जहाँ की रूस्वाई मौल ले चुके हैं।

लाटरी वग़ैरह

इस दौर में जुए और सट्टे की बहुत सी शक्लें रिवाज पा चुकी हैं। और वे सब हराम हैं। इनमें एक "लाटरी" की लानत भी है जिसके ज़रिये बड़े ख़ूबसूरत अन्दाज़ में पूरी क़ौम का ख़ून चूसा जा रहा है। ज़रा ग़ौर फ़रमायें! लाटरी की एक कम्पनी रोज़ाना मिसाल के तौर पर तीन लाख के टिकट बेचती है और उनमें से एक लाख रूपया इनआम में दे देती है, तो यह दो लाख रूपये जो लाटरी की कम्पनी को मिले, यह किसका पैसा है। बेचारे ग़रीब रिक्शा पोलरों और मज़्दूरों का। जिनके ख़ून पसीने की कमाई सरमाया दारों और हुकूमत के ख़ज़ानों में सिमटकर चली जाती है और सिर्फ़ एक बनावटी फ़ायदे के लालच में वे सादा मिजाज़ अवाम अपनी मेह्नत की कमाई ख़ुशी ख़ुशी ख़ून चूसने वालों के हवाले कर देते हैं। हमारे सामने ऐसी मिसालें हैं कि लाटरी की वजह से कितने लोगों ने अपने घरों के बरतन, बीवी के ज़ेवर, यहां तक कि कपड़े और मकानात तक बेच दिये या गिरवी रखवा दिये और वे देखते ही देखते कंगाल हो गये।

इसी तरह आज मुहल्ले मुहल्ले इस्कीमों के नाम पर सरमाया-कारी की जा रही है। उनमें भी जुए की सूरतें पाई जाती हैं। जैसे जिसका नाम पहली क़िस्त अदा करते ही निकल आये वह बहुत कम क़ीमत में किसी मशीनरी वग़ैरह या एक बड़ी रक़्म का मालिक बन जाता है और बाक़ी लोगों को अपने नम्बर का इन्तिज़ार करना होता है और मुअम्मा यानी सवाल बाज़ी, पतंग बाज़ी, कबूतर बाज़ी, शतरंज, केरम बोर्ड, जिनमें हार जीत पर दोनों तरफ़ से लेन देन की शर्त

होती है। ये सब शक्लें हराम हैं यहां तक कि उलमा ने लिखा है कि बच्चे जो गौलियाँ और गट्के खेलते हैं और उसपर दूसरे से जुर्माना लेते हैं यह सब जुआ और सट्टा है। बच्चों और बड़ों को इनसे बचकर अल्लाह से शर्म व हया का तक़ाज़ा पूरा करना चाहिए।

इन्शोरेंस

सूद और जुए की एक तरक़्क़ी पाई हुई सूरत वह है जिसे बीमा या इन्शोरेंस कहा जाता है, बीमा ख़्वाह माली हो या जानी, इसमें सट्टे की शक्ल ज़रूर पाई जाती है। यानी यह शर्त होती है कि अगर पालीसी की मुद्दत में माल ख़राब हो गया या पालीसी लेने वाला मर गया तो जितनी रक़्म का बीमा हुआ हो बीमा कम्पनी पर वह रक़्म अदा करना ज़रूरी होगा। अब माल के बीमा की शक्ल में शर्त न पाये जाने की सूरत में कोई रक़्म वापस नहीं होती और ज़िन्दगी के बीमा (लाइफ़ इन्शोरेंस) में अगर पालीसी लेने वाला न मरे तो पालीसी पूरी होने के बाद सारी जमा हुई रक़्म सूद के साथ उसे वापस की जाती है। इस ऐतिबार से लाइफ़ इन्शोरेंस में जुआ भी है और सूद भी है। जबकि माल के इन्शोरेंस में सिर्फ़ जुए की शक्ल पाई जा रही है। इसलिए उलमा-ए-मुहक़्क़िक़ीन के नज़्दीक लाइफ़ इन्शोरेंस की हुरमत माली इन्शोरेंस के मुक़ाबले में ज़्यादा बुरी है। इस बिना पर मुसलमान का यह फ़रीज़ा है कि वह इख़्तियारी तौर पर बीमा और इन्शोरेंस के मुआमलात से दूर रहे और जहां कोई क़ानूनी या इज़्तिरारी मज्बूरी हो तो पूरी सूरत-ए-हाल बताकर उलमा-ए-हक़ से मसअला पूछकर अमल करे। नफ़े नुक़्सान का मालिक सिर्फ़ अल्लाह है। जो नुक़्सान अल्लाह की तरफ़ से मुक़द्दर में है वह इन्शोरेंस की वजह से टल नहीं सकता। इसलिए अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। उसका ख़ौफ़ दिल में बिठाना चाहिए और सिर्फ़ चंद रोज़ के नफ़े के लालच में आख़िरत के असली नफ़े पर बट्टा न लगाना चाहिए। नजात और आफ़ियत का रास्ता यही है।

दूसरे के माल या जायदाद पर नाहक़ क़ब्ज़ा करना

हराम आमदनी के ज़राए में से यह भी है कि बिला किसी हक़ के किसी दूसरे के माल या जायदाद पर क़ब्ज़ा कर लिया जाये। क़ुरआन-ए-करीम में

जगह जगह आपसी रज़ामन्दी के बग़ैर ग़लत तरीक़े से एक दूसरे का माल खाने से सख़्त मना किया गया है। और एक हदीस में आया है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ ظَلَمَ قِيدَ شِبْرٍ مِنَ الْأَرْضِ طُوِّقَهُ مِنْ سَبْعِ أَرَضِينَ.
(رواه البخاري ٤٥٣/١ عن ابي سلمة، ومسلم ٣٣/٢ و الترغيب و الترهيب ٩/٣)

जो आदमी बालिश्त भर ज़मीन भी ज़ुल्मन ले ले तो सात ज़मीनों से उस पर तौक़ बनाकर डाला जायेगा।

इस हदीस के मफ़्हूम के बारे में बहुत से मतलब ब्यान किये गये हैं। अ़ल्लामा बग़वी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने लिखा है कि इससे मुराद यह है कि बालिश्त भर जगह सातों ज़मीनों तक खोदने का उसे हुक्म दिया जाएगा तो इस तरह खोदने की वजह से वह हिस्सा उसके गले में तौक़ की तरह मालूम होगा। बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत से भी इस की ताईद होती है और दूसरा मतलब यह ब्यान किया गया है कि क़ब्ज़ा की गई ज़मीन के साथ सातों ज़मीन की मिट्टी को मिलाकर उसे हुक्म दिया जाएगा कि उस मिट्टी के वज़न को अपने सर पर उठाकर ले जाये। मुस्नद अहमद और तबरानी की रिवायत से इस मज़मून की ताईद होती है।

और एक दूसरी रिवायत में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः कि जो शख़्स नाजाइज़ तरीक़े पर दूसरे की ज़मीन का कुछ हिस्सा भी दबा ले तो उसकी कोई नफ़्ली या वाजिबी इबादत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में क़ाबिले क़ुबूल न होगी। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/10)

और एक दूसरी रिवायत में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يَأْخُذَ عَصاً بِغَيْرِ طِيبِ نَفْسٍ مِنْهُ. (رواه ابن حبان عن ابي حميد الساعدي، الترغيب و الترهيب ١١/٣)

किसी मुसलमान के लिये यह हलाल नहीं कि वह दूसरे की लाठी भी बग़ैर उसकी दिली रज़ामन्दी के ले।

इस तरह की अहादीस से यह बात खुलकर सामने आती है कि दूसरे के माल को बग़ैर हक़ के दबा लेना अल्लाह की नज़र में सख़्त नापसन्दीदा है और आख़िरत में बद्-तरीन रुस्वाई का सबब है।

अफ़्सोस है कि जो चीज़ अल्लाह की नज़र में नापसन्द है आज उसे कमाल

का सबब जाना जाता है। एक बालिश्त नालियों और परनालों के ऊपर सालों साल मुक़द्दमा बाज़ियाँ होती हैं। और नाहक़ तरीक़े पर मुक़द्दमा जीत जाना ही इज़्ज़त और क़ाबिले फ़ख़्र समझा जाता है। इस तरह की हरकतों का असल सबब आख़िरत से ग़फ़लत और अल्लाह के अ़ज़ाब से बे-तवज्जोही है। अगर लोगों को नाजाइज़ क़ब्ज़े का गुनाह मालूम हो जाये तो कोई भी अक़्लमंद आदमी दो-चार गज़ के लिए लड़ाई झगड़ा और मुक़द्दमात करने को अपनी दुनिया और आख़िरत बर्बाद करने पर तैयार न हो।

एक हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह हिदायत फ़रमाईः

مَنْ كَانَتْ عِنْدَهُ مَظْلِمَةٌ لِأَخِيهِ مِنْ عِرْضٍ أَوْ مِنْ شَيْءٍ فَلْيَتَحَلَّلْهُ الْيَوْمَ، مِنْ قَبْلِ أَنْ لَا يَكُونَ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ إِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ أُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلِمَتِهِ وَإِنْ لَمْ تَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَيْهِ.

(رواه البخاري ٢/٩٦٧ عن ابي هريرة، الترغيب والترهيب ٣/١٢٨، مسند أحمد ٢/٥٠٠٦-٤٣٥)

जिस किसी के पास दूसरे भाई का इज़्ज़त या माल के बारे में कोई हक़ हो तो उससे आज ही माफ़ करा ले इससे पहले कि वह दिन आये कि जब दीनार व दिर्हम न चलेंगे बल्कि अगर उसका कोई नेक अ़मल होगा तो उससे दूसरे के हक़ के बराबर ले लिया जायेगा और अगर उसके पास नेकियाँ न होंगी तो उसके भाई की बुराइयाँ लेकर उसपर लाद दी जाएंगी।

इसलिए हर मुसलमान को ज़ुल्म और ग़सब (किसी का माल ज़बरदस्ती लेना) से बचकर अल्लाह से शर्म व हया का सुबूत देना चाहिए और आख़िरत की बद्-तरीन रू-स्याही से अपने आप को बचाना चाहिए।

रिश्वतख़ोरी

रिश्वतख़ोरी यानी दूसरों से नाहक़ रक़्म वग़ैरह लेने का मरज़ ऐसा ख़तरनाक और बद-तरीन है जिससे न सिर्फ़ क़ौम की कमाई तबाह हो जाती है बल्कि जुर्म करने वाले लोगों को भी रिश्वत के सहारे ख़ूब फलने फूलने का मौक़ा मिलता है। जो शख़्स रिश्वत की चाहत में पड़ जाता है तो उसकी नज़र में न अपने मज़्हब और क़ौम का फ़ायदा रहता है और न मुल्क की सलामती की एहमियत

उसके सामने रहती है। उसकी निगाह में तो सिर्फ़ अपनी जेब का फ़ायदा और मुनाफ़ाख़ोरी ही का जज़्बा होता है। और दौलत के नशे में वह किसी दूसरे के नुक़सान की हरगिज़ परवाह नहीं करता। उसका दिल सख़्त हो जाता है। और दिमाग़ से रहम व मुरव्वत का जज़्बा ख़त्म हो जाता है। इसी वजह से रिश्वत लेने और देने की शरीअ़त में सख़्त मज़म्मत आई है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الرَّاشِيْ وَالْمُرْتَشِيْ.
(رواہ ابن حبان الترغیب والترھیب ۲/۱۲۵)

रिश्वत लेने वाले और (बिला ज़रूरत) रिश्वत देने वाले पर अल्लाह की लानत है।

और दूसरी हदीस में इर्शाद फ़रमायाः

اَلرَّاشِيْ وَالْمُرْتَشِيْ فِي النَّارِ.
(رواہ الطبرانی، الترغیب ۳/۱۲۵)

रिश्वत लेने वाला और (अपनी ख़ुशी से बिला ज़रूरत) रिश्वत देना वाला दोनों जहन्नम में जाएंगे।

और एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रिश्वत लेने और देने वाले के साथ राइश यानी उस शख़्स पर भी लानत भेजी है जो रिश्वत के लिए दर्मियान में दलाली करता है। (अदबुल ख़स्साफ़ 83)

और एक रिवायत में है कि जो शख़्स रिश्वत लेकर नाहक़ फ़ैसला करे, तो अल्लाह तआ़ला उसे इतनी गहरी जहन्नम में डालेगा कि पाँच सौ बरस तक बराबर गिरते चले जाने के बावुजूद उसकी तह तक न पहुंच पाएगा। اللهم احفظنا منه (अल्लाह हमारी इससे हिफ़ाज़त फ़रमाए) (अत्तरग़ीब वत्तर्हीब 3/126)

इन सख़्त तरीन वअ़ीदों से रिश्वत के भयानक अंजाम का बाआसानी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। इसके अ़लावा रिश्वत ऐसा नासूर है जिसके मफ़ासिद (बुराइयाँ) सिर्फ़ उख़रवी ही नहीं बल्कि दुनिया में भी उसके भयानक नतीजे जानने वाले लोगों से छुपे हुए नहीं हैं। आज अपने ही मुल्क के सरकारी महकमों की तरफ़ नज़र उठाकर देखें, किस तरह रिश्वत का बाज़ार गर्म है? आख़िर कौन सा ऐसा ग़ैर क़ानूनी काम है जो रिश्वत देकर बा-आसानी अन्जाम न दिया जा सकता हो? बिजली की चोरी से लेकर ट्रेन और बसों में बिला टिकट सवारी तक हर जगह रिश्वत का चलन है। और अ़दालतों, महकमा-ए-पौलिस और कस्टम

में तो रिश्वतें ऐसी हिम्मत और दबाओ से ली जाती हैं। जैसे कि वह उनका हक़ हो। यहां तक कि सरकारी अहलूकारों से लेकर वज़ीरों तक रिश्वत के मुआमलात में शामिल हैं। जिसका नतीजा ज़ाहिर है कि यह क़ुदरती ज़राए से मालामाल मुल्क आज़ादी के 54 साल गुज़र जाने के बावुजूद आज भी तरक़्क़ी पाये हुए मुल्कों से बहुत पीछे है। वाक़िआ यह है कि इस मुल्क को सबसे ज़्यादा नुक़्सान इसी रिश्वत ख़ोरी ने पहुंचाया है और जब तक यह लानत यहां बाक़ी रहेगी मुल्क के वसाइल से कभी भी सही फ़ायदा नहीं उठाया जा सकता। रिश्वत का आदी मुआशरा कामचोर होता है। बे मुरव्वत और मफ़ाद परस्त होता है। वह अपने फ़ायदे के लिए मुल्क की बड़ी से बड़ी दौलत का भी सौदा कर सकता है और क़ौम को नाक़ाबिल-ए-तलाफ़ी नुक़्सान पहुंचा सकता है। इसलिए इस लानत से मुआशरे को बचाने की ज़रूरत है। हर सतह पर रिश्वत ख़ोरी की हौसला शिक्नी करनी चाहिए ताकि ख़ुदग़रज़ी का दरवाज़ा बन्द हो सके।

रिश्वत लेने वाले के लिए रिश्वत का पैसा किसी भी सूरत में हलाल नहीं है। अलबत्ता कुछ ख़ास सूरतों में जब कि अपना हक़ ख़त्म हो रहा हो या बहुत नुक़्सान होने का ख़तरा हो तो फ़ुक़हा ने ज़रूरत की वजह से रिश्वत देने की इजाज़त दी है। (शामी कराची, 6/423)

ना-जाइज़ ज़ख़ीरा अन्दोज़ी (माल जमा करना)

शरीअत ने आम लोगों को नुक़्सान पहुंचाकर ज़रूरत की चीज़ों को जमा करके ज़्यादा कमाने से भी मना किया है। इसे अरबी की इस्तिलाह में "एहतिकार" कहा जाता है। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अमल से सख़्ती से मना फ़रमाया है।

1. एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنِ احْتَكَرَ فَهُوَ خَاطِئٌ.

(مسلم ۲/۳۱ عن عمرؓ، كتاب المساقاة)

जो शख़्स ग़ल्ला वग़ैरह जमा करे वह ग़लतकार है।

2. और एक कमज़ोर रिवायत में आया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

بِئْسَ الْعَبْدُ الْمُحْتَكِرُ إِنْ أَرْخَصَهُ

माल जमा करके रखने वाला आदमी

اَللّٰهُ الْاَسْعَارَ حَزِنَ وَاِنْ اَغْلَاهَا فَرِحَ. (الترغيب والترهيب ٢/٣٦٤)

बहुत बुरा है कि अगर अल्लाह तआला चीज़ों की क़ीमतें सस्ती करे तो उसे ग़म होता है और जब महंगाई हो तो उसे ख़ुशी होती है।

3. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के गुलाम फ़र्रूख़ कहते हैं कि कुछ अनाज वग़ैरह मस्जिद-ए-नबवी के दरवाज़े पर ढेर लगाया गया। उस वक़्त हज़रत उमर बिन अल्-ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अमीरूल मौमिनीन थे। जब आप बाहर तशरीफ़ लाये, अनाज को देखकर पूछा कि यह कहाँ से आया? लोगों ने कहा कि यह बाहर से लाया गया है तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुआ दी कि अल्लाह तआला इस अनाज को और जो लोग इसे लाये हैं उनको बरकत से नवाज़े। उसी वक़्त कुछ लोगों ने यह भी ख़बर दी कि इस का "एहतिकार" (माल जमा करना और महंगाई के वक़्त निकालना) भी किया गया है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि किसने यह अमल किया है? लोगों ने जवाब दिया कि एक तो "फ़र्रूख़" ने, दूसरे फ़लां शख़्स ने जो आपका आज़ाद किया हुआ गुलाम है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सुनकर दोनों को बुलाया और उनसे पूछ-ताछ की। उन लोगों ने जवाब दिया कि हम अपना माल ख़रीद और बेच रहे हैं (यानी इसमें दूसरे का क्या नुक़्सान है?) इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इर्शाद फ़रमाया कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना है:

مَنِ احْتَكَرَ عَلَى الْمُسْلِمِيْنَ طَعَامَهُمْ ضَرَبَهُ اللّٰهُ بِالْجُذَامِ وَالْاِفْلَاسِ.

जो शख़्स मुसलमानों पर उनका ग़ल्ला वग़ैरह रोक कर रख ले, अल्लाह तआला उसे कोढ़ के मरज़ और तंगदस्ती में मुब्तला करेगा।

यह सुनकर फ़र्रूख़ ने कहा कि मैं आप से और अल्लाह से अहद करता हूँ कि आइंदा कभी "एहतिकार" नहीं करूंगा। फिर वह मिस्र चले गये। जबकि उस फ़लां शख़्स ने कहा कि हमारा माल है हम जैसे चाहें ख़रीदें-बेचें। इस रिवायत को ब्यान करने वाले अबू यह्या कहते हैं कि उन्होंने उस शख़्स को कोढ़ी और तंगदस्ती की हालत में देखा है। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 2/363)

"एहतिकार" की मनाही उस वक़्त है जबकि उसकी वजह से शहर वालों और अ़वाम को नुक़्सान हो, इसमें वे तमाम चीज़ें शामिल हैं, जिनसे अ़वाम को नुक़्सान पहुंच सकता है। जैसे अनाज वग़ैरह, कपड़े, रोज़ाना इस्तिमाल की ज़रूरी चीज़ें। हाँ अगर जमा करने से किसी नुक़्सान का अन्देशा न हो तो फिर ख़रीद कर जमा करने में कोई हर्ज नहीं है। इसी तरह जबकि बाज़ार में उस चीज़ की कोई कमी न हो, अगर कोई शख़्स शुरू फ़स्ल में कोई चीज़ ज़्यादा तादाद में ख़रीद कर रख ले कि अख़ीर फ़स्ल में क़ीमत बढ़ जाने पर उसको बेचेगा यह भी मना नहीं है। इसलिए कि उसके इस अ़मल की वजह से क़ीमत नहीं बढ़ेगी। (मुस्तफ़ाद शामी कराची 6/398)

तीसरी फ़स्ल

मद्रसों और मिल्ली इदारों की रुक़ूमात में एहतियात

पेट को जहन्नम की आग से बचाने के लिए यह भी ज़रूरी है कि जो लोग किसी ऐसे इदारे से जुड़े हुए हों जिसमें क़ौम का रूपया ख़ास कामों में इस्तिमाल के लिए जमा होता है। उसकी अमानतों में वह नाहक़ इस्तिमाल न करें और इस बारे में इन्तिहाई मुह्तात रवैया अपनायें। क़ुरआन-ए-करीम में यतीम के माल खाने को "पैट में आग भरने" के बराबर बताया गया है। और उ़लमा लिखते हैं कि सभी औक़ाफ़ वग़ैरह के अह्कामात भी यतीम के माल की तरह हैं। यानी क़ौमी और मिल्ली इदारों का इन्तिज़ाम करने वाले यहां तक कि अमीरूल मोमिनीन भी इस्लामी हुकूमत के ख़ज़ानों का पूरा मालिक नहीं है। बल्कि उस पर इस्लामी हिदायात के मुताबिक़ हर मद का रूपया उसी की मद में ख़र्च करना ज़रूरी है। और बग़ैर ज़रूरत ख़र्च करने पर या ग़ैर मुस्तहिक़ पर ख़र्च करने पर उस से अल्लाह के यहां पूछा जाएगा।

अफ़्सोस है कि आज इस सिलसिले में सख़्त लापरवाही और कोताही आ़म होती जा रही है। कुछ इदारे तो ऐसे हैं जिन्होंने ज़बरदस्ती अपने को "आ़मिल-ए-हुकूमत" के दर्जे में रख कर ज़कात की रुक़ूमात बग़ैर हिसाब के अपने मनचाहे कामों पर ख़र्च करने की राह निकाल ली है। हालांकि यह बात दलाइल की रौशनी में बिल्कुल ग़लत है और बड़ी तादाद ऐसे इदारों की है जिनमें अगरचे "आ़मिल-ए-हुकूमत" का नाम तो नहीं है लेकिन ज़कात की रक़्म में ज़रूरत बिला ज़रूरत "तमूलीक का बहाना" अपनाया जा रहा है और यह रक़्म जो सिर्फ़ ग़रीब फ़ुक़रा का हक़ है, उसे मकान बनाने, महमान-नवाज़ी और मद्रसे के तआ़रूफ़ के लिए बड़े क़ीमती और ख़ुशनुमा किताबचों में ख़र्च किया जाने लगा है। मद्रसे में तालीम चाहे कहीं तक भी हो लेकिन उसके बारे में इतना अच्छा लिखा जाता है और इसमें इस क़द्र मुबालग़ा किया जाता है कि मालूम हो कि पूरे इलाक़े का दारूल उ़लूम यही है। इसी तरह बहुत से ऐसे मा़मूली मकातिब जिनमें तंख़्वाह के अ़लावा ख़र्च का कोई क़ाबिल-ए-ज़िक्र काम

नहीं है और वहाँ ग़रीब बच्चों के रहने और खाने पीने का भी इन्तिज़ाम नहीं है। उनमें सिर्फ़ तामीरात और मुशाहरात पर ज़कात की रक़ूमात बग़ैर सोचे समझे ख़ूब ख़र्च की जा रही हैं।

हीला-ए-तम्लीक सिर्फ़ मजबूरी में जाइज़ है

और "हीला-ए-तम्लीक" जो एक इन्तिहाई मजबूरी की चीज़ थी उसे ही असल क़ानून के दर्जे में रख दिया गया है। इसलिए अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि तम्लीक के हीले की इजाज़त सिर्फ़ उसी वक़्त है जबकि मदरसा या इदारे में फ़िलहाल मसरफ़ मौजूद हो और ज़रूरत इतनी सख़्त हो कि अगर हीला न किया जाये तो वहाँ दीनी ज़रूरत किसी भी दर्जे में अन्जाम न दी जा सके। वाज़ेह रहे कि हर मक्तब को एकदम दारूल उलूम बनाना हमारे ज़िम्मे नहीं है। बल्कि जितने ख़र्च का इन्तिज़ाम आसानी से और शरओ़ी तरीक़े पर हो सके उतने ही दर्जे पर इदारे को रखा जाये और आहिस्ता-आहिस्ता तरक़्क़ी दी जाये। आज बे-एहतियातियों का एक बड़ा सबब यह है कि हर इदारा पहली फ़ुरसत में ऊंचे प्लान और मन्सूबे बनाता है और जब उसे उन मन्सूबों को पूरा करने के लिए सरमाया नहीं मिलता तो ज़कात के मालों को हलाल करने के रास्ते अपनाता है और बिला ज़रूरत हीला इख़्तियार करता है। हालांकि यह कितनी महरूमी की बात है कि आदमी दूसरों के फ़ायदे के नाम से ख़ुद अपनी आक़िबत ख़राब कर ले। اللهم احفظنا منه

मौलाना बिन्नौरी रहमतुल्लाहि अलैहि का काम करने का तरीक़ा

इन ही बे-एहतियातियों की वजह से आज अवाम व ख़्वास मदरसों और दीनी इदारों को शक की निगाह से देखने लगे हैं। जबकि अगर ज़िम्मेदारान तक़्वे पर मुकम्मल अमल करें तो उनके ऐतिमाद को कभी ठेस नहीं पहुंच सकती। इस सिलसिले में रहनुमाई के लिए आलिम-ए-रब्बानी इमामुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ बिन्नौरी रहमतुल्लाहि अलैहि का तरीक़ा नीचे पेश है। आपके एक कफ़श बरदार अब्दुल मजीद फ़ारक़लीत साहब लिखते हैं:

"हज़रत शैख़ नव्वरल्लाहु मरक़दहु ने अपने मदरसे (जामिआ इस्लामिया बिन्नौर टाउन कराची, पाकिस्तान) के लिए बहुत मुश्किल रास्ता अपनाया और

चन्द ऐसे उसूल क़ाइम फ़रमाये जो पहले पढ़ने सुनने और देखने में न आये थे। आपने सबसे अहम उसूल यह अपनाया कि मद्रसे को हासिल होने वाली आमदनी को दो हिस्सों में बांट दिया। एक हिस्सा ज़कात व सद्क़ात का और दूसरा तौहफ़ों का। ज़कात फ़ंड की रक़म सिर्फ़ पढ़ने वाले बच्चों के ख़र्चों, यानी खाने पीने और वज़ीफ़ों के लिए ख़ास कर दी गई। इस फ़ंड को मद्रसे की तामीर, किताबों की ख़रीद और उस्ताज़ों की तंख़्वाह वग़ैरह पर बिल्कुल ख़र्च न किया जाता था। तौह्फ़ों के फ़ंड से उस्ताज़ों की तंख़्वाहें और दूसरे ज़रूरी कामों की अदायगी की जाती थी। ज़्यादा तर मालदार लोग ज़कात की ज़्यादा तर रक़्म दीनी मदारिस को देते हैं और तोह्फ़ों की तरफ़ तवज्जोह कम देते हैं। इस तरह दीनी मदारिस के पास ज़कात के फ़ंड में ख़ासी रक़्म जमा हो जाती है। जबकि तहाइफ़ वाला फ़ंड ज़्यादा तर कमी का शिकार रहता है। मदरसा अ़रबिया इस्लामिया में कई मौक़े ऐसे भी आये कि ज़कात फ़ंड में काफ़ी रक़्म मौजूद है जबकि ग़ैर ज़कात की मद ख़ाली है। एक मर्तबा हाजी मुहम्मद याक़ूब साहब हज़रत की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि उस्ताज़ों की तंख़्वाहों के लिए अ़तिय्यात की मद में रक़्म नहीं है, अगर आप इजाज़त दें तो ज़कात फ़ंड से क़र्ज़ लेकर उस्ताज़ों को तंख़्वाहें दे दी जायें और जब अ़तिय्यात के फ़ंड में रक़्म आयेगी तो ज़कात फ़ंड का क़र्ज़ अदा कर दिया जाएगा। हज़रत शैख़ ने बड़ी सख़्ती के साथ मना फ़रमा दिया कि मैं उस्ताज़ों के आराम की ख़ातिर ख़ुद को दोज़ख़ का ईंधन नहीं बनाना चाहता। उन्हें सब्र के साथ अ़तिय्यात फ़ंड में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भेजी जाने वाली रक़्म का इन्तिज़ार करना चाहिए और अगर सब्र न कर सकते हों तो उन्हें इस बात की छूट है कि वह मद्रसा छोड़ कर किसी दूसरी जगह तशरीफ़ ले जायें"।

(बीस मर्दाने हक़, अब्दुर रशीद अर्शद 2/312)

मौलाना बिन्नौरी ने जिस मद्रसे के लिए ये उसूल बनाये थे, वह आज पाकिस्तान का निहायत मेअ़्यारी बा-फ़ैज़ मद्रसा है। और साथ ही में हर क़िस्म के माद्दी वसाइल से भी मालामाल है। अस्हाब-ए-ख़ैर इस इदारे की मदद करना अपने लिए ख़ुश नसीबी समझते हैं।

ग़ौर फ़रमायें क्या ऐसी दूसरी मिसालें क़ाइम नहीं की जा सकतीं? वाक़िआ़ यह है कि अगर हम अल्लाह से शर्म व हया का हक़ अदा करने वाले बन जायें

तो हमारी हर मुश्किल आसान हो सकती है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे और हमारी मदद फ़रमाये। आमीन

कमीशन पर चन्दा

माली बे-एहतियातियों का यह आलम है कि आज बहुत से दीनी इदारों में बे-ख़ौफ़ व ख़तर कमीशन पर चन्दे का रिवाज पड़ गया है। हालांकि इस ज़माने के सभी मोअ्तबर उलमा और मुफ़्तियान इस तरह कमीशन लेने को ना-जाइज़ क़रार देते हैं और फ़तावा की किताबों में इस सिलसिले में मुदल्लल व मुफ़स्सल फ़त्वे छप भी चुके हैं। मगर ख़ौफ़े ख़ुदा में कमी और तरफ़ैन (दोनों तरफ़) में माल की चाहत ने उन शरअ़ी अह्कामात को पीछे डाल रखा है और चन्दे को एक अच्छा ख़ासा कारोबार बना लिया है। चन्दे पर कमीशन के हराम होने की बहुत सी वजहें हैं।

1. पहली बात तो यह कि यह एक ऐसा इजारा है जिसमें पहले उजरत मालूम नहीं है। इसलिए कि न जाने कितना चन्दा इकट्ठा हो और हो सकता है कि बिल्कुल भी न हो और हासिल करने वाले को कुछ भी हासिल न हो।
2. यह क़फ़ीज़े तहान की तरह है यानी चन्दे की आमदनी ख़ुद चन्दा करने वाले के अ़मल का नतीजा है और उसी नतीजे में से उजरत मुक़र्रर की जा रही है इस तरह उजरत का तै करना ना-जाइज़ है।
3. इजारे की सहत के लिए ख़ुद अजीर का क़ादिर होना शर्त है और यहां चन्दे का अ़मल मुहस्सिल की क़ुद्रत से बाहर है। यानी जब तक चन्दा देने वाला रूपया नहीं देगा यह लेने पर क़ादिर नहीं है और आदमी जिस चीज़ पर क़ादिर नहीं उसको उजरत कैसे बना सकता है।

(देखिए अहसनुल फ़तावा 7/276 फ़तावा महमूदिया 4/274)

हाँ अगर सफ़ीर तंख़्वाह दार हो और उसकी एक तंख़्वाह मुक़र्रर हो यानी चाहे चन्दा हो या न हो उसे अपनी मेह्नत का सिला बहरहाल मिलेगा तो उसको तंख़्वाह लेना जाइज़ है क्योंकि यहां उसकी उजरत का तअ़ल्लुक़ चन्दे की रक़्म से नहीं बल्कि लोगों से मुलाक़ात और इस मक़सद के लिए सफ़र वग़ैरह करने से है। जिसमें अ़मल और उजरत दोनों मुक़र्रर हैं। और ऐसे तंख़्वाह दार सफ़ीर को अगर कोई इदारा उसकी बेह्तरीन मेह्नत पर इम्दादी फ़ंड से (जिसमें

ज़कात सदक़ात-ए-वाजिबा की रक़ूम शामिल न हों) कोई इन्आमी रक़्म दे तो उसके लेने की भी गुन्जाइश है। यह कमीशन में शामिल नहीं है।

बहरहाल दीनी इदारों के ज़िम्मेदारों को सबसे ज़्यादा शरीअ़त के अह्काम का ख़्याल रखना चाहिए। और हर क़िस्म की बे-एहतियातियों से बचने की कोशिश करनी चाहिए। ताकि उनका वक़ार बना रहे और दीनी ख़िद्मात में बरकतें ज़ाहिर हों।

उज्रत पर तरावीह वग़ैरह

अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का तक़ाज़ा यह भी है कि आदमी किसी भी दीनी इबादत को दुनिया के हासिल करने का मक़्सद न बनाये और दुनिया के मामूली नफ़े के लालच में आख़िरत का बहुत सा नफ़ा क़ुरबान न करे। आजकल रमज़ानुल मुबारक में तरावीह सुनाने के बदले में बड़ी आमदनी का रिवाज बढ़ता जा रहा है। बहुत से लोग तो हिफ़्ज़ ही इस मक़्सद से करते हैं कि तरावीह सुनाकर रूपया कमाएंगे। इसके लिए बड़े-बड़े शहरों में अच्छी अच्छी जगहें तलाश की जाती हैं। लम्बे-लम्बे सफ़र किए जाते हैं और अपने मुक़ाम और मर्तबे से घटकर हरकतें की जाती हैं। ये सब बेग़ैरती की बातें हैं। क़ुरआन-ए-करीम ऐसी चीज़ नहीं है कि उसे चन्द कोड़ियों के बदले बेच दिया जाये। सिर्फ़ क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत पर उजूरत तै करना क़ुरआन-ए-करीम की खुली हुई तौहीन और ना-क़द्री है। और इस सिलसिले में जो फ़रज़ी बहाने और हीले अपनाये जाते हैं वे भी नाक़ाबिल-ए-तवज्जोह हैं इसलिए कि हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी क़द्दस सिर्रहू ने लिखा है कि दियानात (अल्लाह और बन्दे के दर्मियान मुआ़मलात) में हीलों का इख़्तियार करना वाक़ई हलाल होने के लिए फ़ायदेमंद नहीं है। (इम्दादुल फ़तावा, हिस्सा 1/485)

बहुत से लोग हाफ़िज़ों की माली परेशानी का ज़िक्र करते हैं कि ख़त्म-ए-क़ुरआन पर उसकी मदद हो जाती है। तो सवाल यह है कि वह पहले से फ़क़ीर था या तरावीह में क़ुरआन ख़त्म करते ही ग़रीब हो गया? अगर पहले ही से परेशान था, जैसा कि वाक़िआ भी यही है तो ख़त्म से पहले उसकी मदद क्यों नहीं की गई? किसी ग़रीब की मदद करना कभी भी मना नहीं है। मना तो यह है कि इसको क़ुरआन की कमाई खिलाई जाये।

कुछ लोग यह बहाना ढूंढते हैं कि अगर उजरत न दी जाये तो मसाजिद में ख़त्म-ए-क़ुरआन का रिवाज ख़त्म हो जायेगा। हालांकि ख़त्म-ए-क़ुरआन कोई ऐसा शरओ़ी वाजिब या लाज़िम नहीं है कि इसके लिए एक नाजाइज़ मुआ़मला किया जाये। फिर यह दावा भी ग़लत है कि इससे ख़त्म-ए-क़ुरआन का सिलसिला बन्द हो जायेगा। इसलिए कि उम्मत में अल्हम्दुलिल्लाह ऐसे हाफ़िज़ों की कमी नहीं है जो ख़ुद अपने क़ुरआन की हिफ़ाज़त के लिए मसाजिद तलाश करने के फ़िक्रमन्द न रहते हों। अगर देने दिलाने का रिवाज बिल्कुल ख़त्म हो जाये तो ख़ुद बख़ुद हाफ़िज़ों के दिल से लालच का ख़ातिमा हो जायेगा। इस लिए शामी (किताब का नाम है) में नक़्ल किया गया है कि उजूरत पर तिलावत के ज़रिये सवाब कमाने पर उजूरत लेने वाला और देना वाला दोनों गुनाहगार हैं। (शामी ज़करिय्या 9/77) क्योंकि देने वाले के इरादे से ही लेने वाले को हौसला मिलता है। अगर इस मुआ़मले में देने वाले शरीअ़त पर अ़मल करते हुए देने से मना कर दें तो लेने वालों को मुतालबे का हौसला हो ही नहीं सकता।

अगर मुख़्लिस हाफ़िज़ न मिले ?

अगर मान लो कि किसी जगह बग़ैर पढ़ाने वाला मुख़्लिस हाफ़िज़ा न मिल सके तो फ़त्वा यह है कि वहां के लोगों को किरायादार हाफ़िज़ से पूरा क़ुरआन सुनने के बजाये "अलम् तरा कय-फ़" से तरावीह पढ़ लेनी चाहिए। हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि तहरीर फ़रमाते हैं:

"जहां फ़ुक़हा ने एक ख़त्म को सुन्नत कहा है जिससे ज़ाहिरन सुन्नते मुअक्कदा मुराद है, वहां यह भी लिखा है कि जहां लोगों पर सक़ील (मुश्किल) हो वहां "अलम् तरा कय-फ़ वग़ैरह से पढ़ दे। फिर जब सक़ील जमाअ़त के ख़त्रे से बचने के लिए उस सुन्नत के छोड़ने की इजाज़त दे दी, तो इबादत पर उजूरत लेने का ख़त्रा उससे बढ़कर है। उससे बचने के लिए क्यों न कहा जायेगा कि "अलम् तरा कय-फ़" से पढ़ले। (इम्दादुल फ़तावा 1/484)

सिर्फ़ तिलावत और दूसरी दीनी ख़िद्मात की उज्रत में फ़र्क़

कुछ हज़रात तरावीह में क़ुरआन पढ़ने पर मुआवज़ा के जाइज़ होने पर यह दलील पेश करते हैं कि जिस तरह इमामत व अज़ान और तालीम-ए-क़ुरआन

पर उजूरत जाइज़ है। उसी तरह तरावीह में क़ुरआन ख़त्म करने का मुआमला भी सही होना चाहिए तो इस सिलसिले में अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि हनफ़िया के असल मज़्हब में ताआत व इबादात पर उजूरत मुतलक़न जाइज़ नहीं। मुतअख़्ख़िरीन (बाद में आने वाले) अह्नाफ़ ने ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के अमल से दलील देते हुए इस मुमानअत से उन इबादात को ज़रूरतन अलग क़रार दिया है जिनको शआइर दीन होने की हैसियत हासिल है। यानी जिनका एहतिमाम ख़त्म होने से दीन की बक़ा व इशाअत को शदीद ख़तरा लाहिक़ हो जाये। जैसे इमामत व अज़ान कि अगर इनपर उजूरत जाइज़ न हो तो मसाजिद में जमाअत व अज़ान का सारा निज़ाम बिगड़ जाये। इसी तरह तालीमे दीन कि अगर इस ग़रज़ से वक़्त ख़ाली न किया जाये तो दीन की इशाअत बन्द हो जाये। लेकिन जो इबादात इस दर्जे की नहीं हैं उन के नाजाइज़ होने का हुक्म पहले की तरह बाक़ी है। तरावीह में ख़त्म-ए-क़ुरआन पाक और ईसाल-ए-सवाब के लिए क़ुरआन ख़्वानी की इबादात इसी तरह की हैं कि उजूरत पर ख़त्म-ए-क़ुरआन की मनाही से दीन को किसी तरह का नुक़सान नहीं है। यही हाल ईसाल-ए-सवाब के लिए तिलावत करने का भी है। अ़ल्लामा शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

قَدْ أَطْبَقَ الْمُتُوْنُ وَالشُّرُوْحُ
وَالْفَتَاوٰى عَلٰى نَقْلِهِمْ بُطْلَانَ
الْاِسْتِيْجَارِ عَلَى الطَّاعَاتِ إِلَّا فِيْمَا
ذُكِرَ وَعَلَّلُوْا ذٰلِكَ بِالضَّرُوْرَةِ
وَهِيَ خَوْفُ ضِيَاعِ الدِّيْنِ وَصَرَّحُوْا
بِذٰلِكَ التَّعْلِيْلِ فَكَيْفَ يَصِحُّ أَنْ
يُقَالَ إِنَّ مَذْهَبَ الْمُتَاَخِّرِيْنَ صِحَّةُ
الْاِسْتِيْجَارِ عَلَى التِّلَاوَةِ الْمُجَرَّدَةِ
مَعَ عَدَمِ الضَّرُوْرَةِ الْمَذْكُوْرَةِ فَإِنَّهُ
لَوْ مَضَى الدَّهْرُ وَلَمْ يَسْتَاْجِرْ أَحَدٌ

तमाम मुतून (अ़रबी लिट्रेचर) शुरूहात और फ़तावा ताआत पर उजूरत के बातिल होने को नक़्ल करने में मुत्तफ़िक़ हैं सिवाए उन ताआत के जो ज़िक्र हुईं। (यानी इमामत व अज़ान वग़ैरह) और मज़्कूरा ताआत के जाइज़ होने की वजह उन्होंने ज़रूरत से की है जो दीन के ख़त्म होने का अन्देशा है और इस वजह की उन्होंने वज़ाहत भी की है तो फिर यह कहना कैसे सही हो सकता है कि बाद के लोगों का मज़्हब सिर्फ़ तिलावत पर उजूरत सही होने का है बावुजूद यह कि मज़्कूरा ज़रूरत न पाई जाये। इसलिए कि अगर ज़माना गुज़र

أحداً على ذلك لم يحصل به ضرر، بل الضرر صار في الاستيجار عليه حيث صار القرآن مكسباً وحرفة يتجر بها. الخ

(شرح عقود رسم المفتى، رسائل ابن عابدين ١٤/١)

जाये और कोई शख़्स किसी को तिलावत के लिए उजूरत पर न ले तो उससे कोई नुक़्सान नहीं आता बल्कि नुक़्सान तो उजूरत पर तिलावत करने में है, इस वजह से कि क़ुरआन-ए-करीम को कमाई का ज़रिया और ऐसा हुनर बना लिया गया है कि जिसकी तिजारत की जाती है।

मतलब यह कि इन वज़ाहतों से मालूम हो गया कि सिर्फ़ तिलावत-ए-क़ुरआन में ख़त्म-ए-क़ुरआन पर उजूरत की आमदनी का जाइज़ होना अल्लाह तआला से शर्म व हया के जज़्बे के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वह ख़ुद अपने को ऐसी आमदनी से बचाये और दूसरे भाइयों को भी उससे बचने की तल्क़ीन करे।

गुनाहों पर मदद की उजूरत

क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला का इर्शाद है।

"وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ص وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ص" (المائده: آيت ٢)

"और आपस में मदद करो नेक काम पर और परहेज़गारी पर और मदद न करो गुनाह पर और ज़ुल्म पर"। इसी वजह से किसी ऐसे तरीक़े पर रूपया कमाना मना है जिसमें किसी गुनाह पर मदद लाज़िम आती हो। आजकल बड़ी तादाद में कमाने के ऐसे तरीक़े चल रहे हैं। जैसे फ़ोटोग्राफ़ी, वीडियोग्राफ़ी, टेलीविज़न की मरम्मत और टेलीविज़न की ख़रीद व फ़रोख़्त वग़ैरह का कारोबार, इसी तरह बाल बनाने वालों का अंग्रेज़ी बाल और दाढ़ियाँ मूंडकर रूपया कमाना। ये सब सूरतें आमदनी को मुश्तबा (जिस के जाइज़ नाजाइज़ होने में शक हो) बना देती हैं। अल्लाह तआला से शर्म व हया का तक़ाज़ा यह है कि मुसलमान इन नाजाइज़ आमाल को छोड़कर अपने पेट की हक़ीक़ी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करे। अल्लाह तआला सब मुसलमानों को ख़ौफ़-ए-ख़ुदा की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाये। आमीन □ □

चौथी फ़स्ल

शर्मगाह की हिफ़ाज़त

अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का अहम तक़ाज़ा और अपने बदन को जहन्नम की हौलनाक आग से बचाने का तक़ाज़ा यह भी है कि इन्सान अपनी शर्मगाह की ना-जाइज़ और हराम जगहों से पूरी तरह हिफ़ाज़त करे। क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया गया:

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى إِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً، وَسَآءَ سَبِيْلًا. (بنی اسرائیل آیت: ۳۲)

और पास न जाओ ज़िना के, वह बे-हयाई और बुरी राह है।

और कई जगह ईमान वाले लोगों की ये सिफ़ात ब्यान की गई कि "वे अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, ज़िना नहीं करते और जाइज़ जगह के अ़लावा शह्वत पूरी नहीं करते। (सूरः मोमिनून, सूरः मआ़रिज वग़ैरह)

और इस्लाम ने ज़िना की ऐसी सख़्त सज़ा मुक़र्रर की है जिसके तसव्वुर से ही रूंगटे खड़े हो जाते हैं यानी अगर साबित हो जाये तो कुंवारे मुज्रिम को 100 कोड़े और शादी शुदा को संगसार करने का हुक्म है। (जबकि इस्लामी हुकूमत हो) और अहादीस-ए-मुबारका में ज़िना के बारे में सख़्त तरीन सज़ाऐं ब्यान हुई हैं।

1. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لَا يَزْنِى الزَّانِيْ حِيْنَ يَزْنِىْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ. (مسلم شریف ۱/۵٦ عن ابی ہریرۃ، الترغیب و الترهیب ۳/۱۸۵)

ज़िनाकार ज़िना करते वक़्त (पूरा) मोमिन नहीं रहता।

गोया कि ऐसे अ़मल का ईमान के साथ कोई जोड़ ही नहीं है, यह सरासर शैतानी काम है।

सबसे ज़्यादा ख़तरे की चीज़

2. और एक हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

يَابَغَايَا الْعَرَبِ، يَابَغَايَا الْعَرَبِ! إِنَّ أَخْوَفَ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمُ الزِّنَا وَالشَّهْوَةُ الْخَفِيَّةُ. (رواه الطبراني بالترغيب والترهيب ٣/١٨٦)

ऐ अरब् के बद्कारो! ऐ अरब के बद्कारो! मुझे तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा डर और ख़त्रा ज़िना और छुपी हुई शह्वत से है।

यानी यह ऐसी नहूसत है कि जिससे मुआशरती निज़ाम तबाह और बर्बाद हो जाता है और घर घर में फ़ित्ना फ़साद और ख़ून ख़राबे की नौबत आ जाती है यहां तक कि नस्लें तक मुश्तबा हो जाती हैं। इसलिए इससे हर तरह बचना लाज़िम है और उसके तमाम रास्तों को बन्द करना ज़रूरी है।

ज़िनाकार की दुआ क़ुबूल नहीं

3. हज़रत उस्मान बिन अबी अल्-आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

تُفْتَحُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ نِصْفَ اللَّيْلِ فَيُنَادِي مُنَادٍ، هَلْ مِنْ دَاعٍ فَيُسْتَجَابُ لَهُ؟ هَلْ مِنْ سَائِلٍ فَيُعْطَى؟ هَلْ مِنْ مَكْرُوبٍ فَيُفَرَّجُ عَنْهُ؟ فَلَا يَبْقَى مُسْلِمٌ يَدْعُوْ بِدَعْوَةٍ إِلَّا اسْتَجَابَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَّا زَانِيَةً تَسْعَى بِفَرْجِهَا أَوْ عَشَّارًا. (رواه الطبراني وأحمد، الترغيب والترهيب ٣/١٨٦)

आधी रात के वक़्त आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और मुनादी आवाज़ लगाता है कि क्या कोई पुकारने वाला है जिसकी दुआ क़ुबूल की जाये? क्या कोई साइल (मांगने वाला) है जिसे नवाज़ा जाये? क्या कोई परेशान हाल ग़म्ज़दा है जिसकी परेशानी दूर की जाये? फिर कोई दुआ मांगने वाला मुसलमान बाक़ी नहीं बचता मगर यह कि अल्लाह तआला उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाता है सिवाये अपनी शर्मगाह को बद्-कारी में लगाने वाली ज़ानिया (ज़िना करने वाली औरत) और ज़ालिमाना टेक्स वुसूल करने वाले के (कि उनकी दुआ ऐसे मक़्बूल वक़्त में भी क़ुबूल नहीं होती)।

और एक हदीस में आया है कि तीन आदमियों से क़ियामत के दिन अल्लाह

तआ़ला न गुफ़्तुगू करेगा और न उन्हें गुनाहों से पाक करेगा। ● बूढ़ा ज़िनाकार, ● झूठा बादशाह, ● बेशर्म मुतकब्बिर। (मुस्लिम 1/71, शुअबुल ईमान 2/360)

ज़िनाकार आग के तन्नूर में

4. जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मामूल था कि हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से अक्सर पूछा करते थे के किसी ने कोई ख़्वाब देखा हो तो ब्यान करे। एक मर्तबा ख़ुद आप ने अपना लम्बा ख़्वाब सुब्ह के वक़्त हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से ब्यान फ़रमाया कि रात सोते वक़्त ख़्वाब में दो शख़्स मेरे पास आये और मुझे अपने साथ ले कर चले। फिर कई ऐसे लोगों पर गुज़र हुआ जिन्हें तरह तरह के अ़ज़ाब दिये जा रहे थे (फिर आपने फ़रमाया):

فَأَتَيْنَا عَلٰى مِثْلِ التَّنُّوْرِ قَالَ وَأَحْسِبُ أَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ فَإِذَا فِيْهِ لَغَطٌ وَأَصْوَاتٌ قَالَ فَاطَّلَعْنَا فِيْهِ فَإِذَا فِيْهِ رِجَالٌ وَنِسَاءٌ عُرَاةٌ فَإِذَا هُمْ يَأْتِيْهِمْ لَهَبٌ مِنْ أَسْفَلَ مِنْهُمْ فَإِذَا أَتَاهُمْ ذٰلِكَ اللَّهَبُ ضَوْضَوْا.

फिर हम तन्नूर जैसी जगह पर आये, रिवायत करने वाला यह भी कहता है कि शायद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि उस तन्नूर के अन्दर से चीख़ व पुकार की आवाज़ें आ रही थीं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब हमने उसमें झांका तो उसमें नंगे मर्द और नंगी औ़रतें थीं और उनके नीचे से आग की लपट आ रही थी तो जब आग की लपट आती थी तो वह शौर मचाते थे।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने साथियों से उन बद-नसीबों के बारे में जानना चाहा तो उन्होंने कह दिया कि अभी और आगे चलें। फिर सब मनाज़िर दिखाने के बाद हर एक के बारे में तआ़रूफ़ कराया और उन तन्नूर वालों के बारे में कहा:

أَمَّا الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ الْعُرَاةُ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ مِثْلِ بِنَاءِ التَّنُّوْرِ فَإِنَّهُمُ الزُّنَاةُ وَالزَّوَانِيْ، الخ (بخاري شريف ٢/١٠٤٤)

और वे नंगे मर्द व औ़रत जो तन्नूर जैसी जगह में थे वे ज़िनाकार मर्द और औ़रतें थीं।

हदीस की शरह लिखने वाले लिखते हैं कि ज़िनाकारों की यह रूस्वा करने वाली और ज़िल्लत नाक सज़ा उनके जुर्म के बिल्कुल मुताबिक़ है इसलिए कि 1. आमतौर पर ज़िनाकार लोगों से छुपकर जुर्म करता है इसका तक़ाज़ा हुआ कि उसे नंगा करके रूस्वा किया जाये। 2. ज़िनाकार जिस्म के निचले हिस्से से गुनाह करता है जिसका तक़ाज़ा हुआ कि तन्नूर में डालकर नीचे से आग दहकाई जाये। (किरमानी, फ़त्हुल बारी, ब-हवाला हाशिया बुख़ारी शरीफ़ हज़रत नानौतवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि 2/1044)

ज़िनाकार, बद्बूदार

5. एक और हदीस में भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लम्बे ख़्वाब का ज़िक्र है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

ثُمَّ انْطُلِقَ بِیْ فَإِذَآ أَنَا بِقَوْمٍ أَشَدُّ شَیْءٍ اِنْتِفَاخًا وَّأَنْتَنَهُ رِیْحًا کَاَنَّ رِیْحَهُمُ الْمَرَاحِیْضُ قُلْتُ مَنْ هٰٓؤُلَآءِ؟ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ الزَّانُوْنَ. (رواه ابن خزيمة وابن حبان فی صحيحيهما، الترغيب والترهيب ١٨٧/٣)

फिर मुझे ले जाया गया तो मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ जो (सड़ने की वजह से) बहुत फूल चुके थे और उनसे बहुत सख़्त बद्बू आ रही थी जैसे पाख़ानों की बद्बू हो, मैंने पूछा कि ये कौन लोग हैं? जवाब मिला कि ये ज़िना करने वाले लोग हैं।

एक रिवायत में हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अ़न्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं कि सातों आसमान और सातों ज़मीनें बूढ़े ज़िनाकार पर लानत करती है और बद्-कार औ़रतों की शर्मगाहों की बद्बू से ख़ुद जहन्नमी भी अज़िय्यत में होंगे। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/190)

और एक हदीस में शराब पीने वालों की सज़ा ब्यान करते हुए फ़रमाया गया कि उन्हें "नह्रे ग़ौता" से पानी पिलाया जाएगा और उस नह्र की हक़ीक़त यह ब्यान की गई:

نَهْرٌ يَجْرِیْ مِنْ فُرُوْجِ الْمُوْمِسَاتِ يُوْذِیْ أَهْلَ النَّارِ رِيْحُ فُرُوْجِهِمْ. (رواه

यह ऐसी नहर है जो ज़िनाकार औ़रतों की शर्मगाहों से निकली है। जिनकी शर्मगाहों की बद्बू ख़ुद अहले जहन्नम

के लिये भी तक्लीफ़ का सबब होगी। (अल्लाह इससे हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये। आमीन)

احمد وغیرہ، الترغیب و الترھیب ۳/۱۷۶

ज़िना अज़ाब का सबब है

6. हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाती हैं कि आप ने फ़रमायाः

لَا تَزَالُ أُمَّتِيْ بِخَيْرٍ مَالَمْ يَفْشُ فِيْهِمْ وَلَدُ الزِّنَا، فَإِذَا فَشَا فِيْهِمْ وَلَدُ الزِّنَا فَأَوْشَكَ أَنْ يَّعُمَّهُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ.

(مسند احمد ٦/٣٣٣)

मेरी उम्मत उस वक़्त तक बराबर ख़ैर में रहेगी, जबतक कि उनमें हराम औलाद की कसरत न हो और जब उनमें हराम औलाद की कसरत हो जाएगी तो जल्दी ही अल्लाह तआला उन्हें उमूमी अज़ाब में मुब्तला कर देगा।

और एक सही रिवायत में यह मज़मून भी आया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब भी किसी क़ौम में ज़िनाकारी या सूदख़ोरी की कसरत होगी वह अपने आपको अज़ाब-ए-ख़ुदावन्दी का मुस्तहिक़ बना लेंगे। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/191)

ज़िना फ़क्र व फ़ाक़े का सबब है

7. हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नक़्ल फ़रमाते हैं:

إِذَا ظَهَرَ الزِّنَا ظَهَرَ الْفَقْرُ وَالْمَسْكَنَةُ. (فيض القدير ٤/١٨٢)

जब ज़िनाकारी की कसरत हो जाएग तो फ़क्र व मुह्ताजगी आम हो जाएगी।

और दूसरी रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَا ظَهَرَتِ الْفَاحِشَةُ فِيْ قَوْمٍ قَطُّ يُعْمَلُ بِهَا فِيْهِمْ عَلَانِيَةً إِلَّا ظَهَرَ فِيْهِمُ

जब भी किसी क़ौम में खुलेआम बे-हयाई और बद-कारी की कसरत होगी तो उन में ताऊन (प्लैग) और ऐसी बीमारियां

اَلطَّاعُوْنُ وَالْاَوْجَاعُ الَّتِيْ لَمْ تَكُنْ فِيْ اَسْلَافِهِمْ ۔ (الترغيب و الترهيب ٣/١١٨)

फैल जाएंगी जो उनसे पहले लोगों में पाई न जाती थीं।

इमाम बैहक़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने शुअ़बुल ईमान में एक हदीस नक़्ल की है जिसमें फ़रमाया गया: "الزنا يورث الفقر" यानी ज़िना फ़क्र व फ़ाक़े का सबब है। (शुअ़बुल ईमान 4/263)

इन अहादीस की हक़ीक़त आज बिल्कुल ज़ाहिर है। बे-हयाइयों और बद-कारियों से भरपूर मग़रिबी और मशरिक़ी मुआ़शरे में ऐसी ख़तरनाक और ला-इलाज बद-तरीन बीमारियाँ पैदा हो रही हैं जिनका नाम भी आज तक कभी सुना नहीं गया था। और फ़क्र व फ़ाक़ा बिल्कुल ज़ाहिर है इसका मतलब सिर्फ़ यही नहीं है कि रोज़ी-रोटी की परेशानी हो, बल्कि फ़क्र का मतलब मोहताजगी है। आज वह बे-हया मुआ़शरा अपने हर काम में पूरी तरह दूसरी चीज़ों का मोहताज बन चुका है। कहीं बिजली की ज़रूरत है, कहीं गैस की ज़रूरत है, कहीं मुलाज़िम की ज़रूरत है, कहीं वसाइल की ज़रूरत है। मतलब यह कि इन्सान अपनी लज़्ज़तों के पीछे खुद अपनी ही ज़रूरतों में फंस कर रह गया है। उम्र, वक़्त और माल व दौलत में बरकत ख़त्म है और बेहतरीन सलाहियतें बेकार और फ़ुज़ूल कामों में बर्बाद हो रही हैं। ☐ ☐

पांचवीं फ़स्ल

हम-जिन्सी• की लानत

(•यानी मर्द का मर्द से और औरत का
औरत से ख़्वाहिश पूरी करने का अमल)

आज का बे-हया मुआशरा शर्म व हया छोड़कर इन्सान होने के बावुजूद अपने आपको रज़ील (कमीना) जानवरों की सफ़ में खड़ा कर चुका है। हम-जिन्सी यानी मर्दों का मर्दों से और औरतों का औरतों से ख़्वाहिशात पूरी करने का अमल वह मन्हूस और बद-तरीन जुर्म है जिसको दुनिया में सबसे पहले क़ौम-ए-लूत ने किया जिसकी वजह से उस क़ौम को दुनिया ही में ऐसा भयानक अज़ाब दिया गया जिसकी मिसाल दुनिया की तारीख़ में कहीं नहीं मिलती, उनकी बस्तियों को उलट कर उन्हें पत्थरों से संगसार किया गया और जिस जगह ये बस्तियाँ उलटी गईं, वहां "बहरे मुरदार" के नाम से ऐसी झील बन गई, जिसमें अबतक भी कोई जानदार चीज़ ज़िन्दा नहीं रहती। (मआरिफ़ुल क़ुरआन)

इस मन्हूस अमल की शरीअत में निहायत सख़्त बुराई बयान हुई है। एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

إِنَّ مِنْ أَخْوَفِ مَا أَخَافُ عَلَى أُمَّتِي أَوْ عَلَى هٰذِهِ الْأُمَّةِ عَمَلَ قَوْمِ لُوْطٍ. (شعب الايمان ٤/٣٥٤)

उन बद-तरीन चीज़ों में जिनका मुझे अपनी उम्मत पर सबसे ज़्यादा ख़त्रा है क़ौमे-ए-लूत का अमल है।

एक रिवायत में है कि जब दो मर्द ऐसा काम करें तो दोनों को क़त्ल कर दियाजाए यानी उन पर ज़िना की हद (सज़ा) लगाई जाए।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि उन्होंने ऐसे शख़्स की सज़ा के बारे में फ़रमाया कि उसे शहर की सबसे ऊंची इमारत से गिराकर पत्थरों से संगसार कर दिया जाये। (शुअबुल ईमान, हिस्सा 4/357)

हज़रत ख़ालिद बिन अल्-वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को लिखा कि उन्होंने अरब के कुछ क़बीलों में एक ऐसा शख़्स देखा है जिसके साथ औरतों की तरह निकाह किया जाता है। (यानी हम-जिन्सी की जाती है) जब यह ख़त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास

पहुंचा तो आप ने हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को जमा किया और मश्वरा किया कि ऐसे शख़्स को क्या सज़ा देनी चाहिए? तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि यह ऐसा जुर्म है जिसको सिर्फ़ एक उम्मत यानी क़ौम-ए-लूत ने किया था तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें ऐसी सज़ा दी जो आप जानते हैं। मेरा मश्वरा यह है कि ऐसे शख़्स को आग में जला दिया जाये। चुनांचे दूसरे सहाबा की राय भी इस से मुत्तफ़िक़ हो गई और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उस शख़्स को जला देने का हुक्म दे दिया।

(शुअ़बुल ईमान 4/357)

हम्माद इब्ने इब्राहीम कहते हैं कि अगर किसी शख़्स को दो मर्तबा संगसार करना मुनासिब होता तो लिवातत (इग़्लाम) करने वाले को दो मर्तबा संगसार किया जाता। (शुअ़बुल ईमान 4/357)

मशहूर मुहद्दिस हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन फ़रमाते हैं कि जानवरों में से भी सिवाये गधे और ख़िन्ज़ीर के कोई जानवर क़ौम-ए-लूत वाला अ़मल नहीं करता। (तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर 3/187)

हज़रत मुजाहिद फ़रमाते हैं कि अगर यह मन्हूस अ़मल करने वाला शख़्स आसमान व ज़मीन के हर क़त्रे से भी नहा ले तो फिर भी (बातिनी तौर पर) नापाक ही रहेगा। (शुअ़बुल ईमान 4/359)

ख़ूबसूरत लड़कों के साथ उठना-बैठना फ़ित्ने का सबब है

हम-जिन्सी से बचने के लिए वे तमाम दरवाज़े बन्द करने ज़रूरी हैं जो इस मन्हूस अ़मल तक पहुंचाते हैं, बे-रीश (जिसकी दाढ़ी मूंछ न हो) नौ-उम्र बच्चों के साथ मिलने जुलने से बचने की हर मुम्किन कोशिश की जाये, कुछ ताबिईन का कहना है कि दीनदार इबादत गुज़ार नौजवानों के लिए फाड़खाने वाले दरिन्दे से भी बड़ा दुश्मन और नुक़्सान देने वाला वह अमूरद (जिसकी दाढ़ी मूंछ न निकली हो) लड़का है जो उसके पास आता जाता है।

हसन बिन ज़क्वान रहमतुल्लाहि अ़लैहि कहते हैं कि मालदारों के बच्चों के साथ ज़्यादा उठा बैठा न करो, इसलिए कि उनकी सूरतें औरतों की तरह होती हैं और उनका फ़ित्ना कुंवारी औरतों से ज़्यादा संगीन है। (शुअ़बुल ईमान 4/358) क्योंकि औरतें तो किसी सूरत में हलाल हो सकती हैं लेकिन लड़कों में हिल्लत

की कोई सूरत नहीं है।

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अ़लैहि फरमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत सुफ़ियान सोरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि हम्माम में दाख़िल हुए तो वहां एक ख़ूबसूरत लड़का भी आ गया तो आप ने फ़रमाया कि इसे बाहर निकालो क्योंकि औ़रत के साथ एक शैतान होता है और लड़कों के साथ दस से ज़्यादा शैतान होते हैं। (शुअ़बुल ईमान 4/360)

इसी वजह से नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हुक्म है कि जब बच्चे समझदार हो जायें तो उन सबके बिस्तर अलग कर देने चाहिएं ताकि शुरू ही से वे बुरी आ़दतों से महफ़ूज़ रह सकें और बच्चों पर नज़र रखनी चाहिए कि वे ज़्यादा वक़्त ख़ास तौर से अकेले में बड़े लड़कों के साथ न रहें। अगर कई बच्चे एक कमरे में रहते हों तो हर एक का बिस्तर और लिहाफ़ अलग होना चाहिए।

इन तमाम तफ़्सीलात से मालूम हो गया कि सिर्फ़ अपनी हलाल बीवियों और हलाल बांदियों से ही शह्वत पूरी करने की इजाज़त है। इसके अ़लावा क़ज़ा-ए-शह्वत का कोई भी तरीक़ा शरीअ़त में हरगिज़ जाइज़ नहीं है और परदे वग़ैरह के या अजनबी औ़रतों मर्दों से इख़्तिलात (मिलने जुलने) की मुमानअ़त के जो भी अह्काम हैं उनका मक़्सद सिर्फ़ यह है कि मुआ़शरे से ग़लत तरीक़े पर क़ज़ा-ए-शह्वत का रिवाज ख़त्म हो जाये। जो शख़्स इन बातों को सामने रखकर अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करेगा और अपनी जवानी को इन ख़्वाहिश से बचा लेगा तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उसे इसका बदला जन्नत की सूरत में अ़ता फ़रमायेगा। इन्शा अल्लाह।

शर्मगाह की हिफ़ाज़त पर इन्आ़म

1. एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स मुझ से छः बात की ज़मानत ले ले मैं उसके लिए जन्नत की ज़मानत लेता हूं। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वे छः बातें क्या हैं? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَــنْ إِذَا حَـدَّثَ صَـدَقَ، وَإِذَا وَعَـدَ

❶ जो जब बात करे तो सच कहे ❷ जब वादा करे तो पूरा करे ❸ जब अमानत

اَنْجَزَ، وَإِذَا ائْتُمِنَ اَدّٰى وَمَنْ غَضَّ بَصَرَهُ، وَحَفِظَ فَرْجَهُ وَكَفَّ يَدَهُ اَوْقَالَ نَفْسَهُ. (شعب الايمان ٤/٣٦٥)

ले तो अदा करे ● जो अपनी निगाह नीची रखे ● जो अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे और ● जो अपने हाथ या अपनी ज़ात को (दूसरों को तक्लीफ़ देने से) रोके रखे।

2. इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

يَا شَبَابَ قُرَيْشٍ! اِحْفَظُوْا فُرُوْجَكُمْ وَلَاتَزْنُوْا! أَلَا! مَنْ حَفِظَ فَرْجَهُ فَلَهُ الْجَنَّةُ. (شعب الايمان ٤/٣٦٥)

ऐ क़ुरैश के जवानो! अपनी शर्मगाहों को मह्फ़ूज़ रखो और ज़िना न करो अच्छी तरह समझ लो कि जो शख़्स अपनी शर्मगाह को मह्फ़ूज़ रख ले उसके लिए जन्नत है।

3. एक और हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

يَا فِتْيَانَ قُرَيْشٍ! لَا تَزْنُوْا فَإِنَّهُ مَنْ سَلِمَ اللّٰهُ لَهُ شَبَابَهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ. (شعب الايمان ٤/٣٦٥)

ऐ क़ुरैश के जवानो! ज़िना न करो, क्योंकि अल्लाह तआ़ला जिसकी जवानी को मह्फ़ूज़ कर दे वह जन्नत में दाख़िल हो गया।

4. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मन्क़ूल है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنْ حَفِظَ مَابَيْنَ لَحْيَيْهِ وَ بَيْنَ رِجْلَيْهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ.

(شعب الايمان ٤/٣٦٠)

जो शख़्स उस चीज़ को मह्फ़ूज़ कर ले जो उसके दो जबड़ों के दर्मियान है (यानी ज़बान) और उस चीज़ को मह्फ़ूज़ कर ले जो दो पैरों के दर्मियान है (यानी शर्मगाह) वह जन्नत में दाख़िल होगा।

इसी तरह एक रिवायत बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत सह्ल बिन सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है जिसमें यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स ऊपर दी गई दो चीज़ों की मुझ से ज़मानत ले ले मैं उसके लिए जन्नत की ज़मानत लेता हूँ।

5. एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सात ऐसे ख़ुशनसीब लोगों का ज़िक्र फ़रमाया है जिन्हें मैदान-ए-मह्शर में अ़र्श-ए-ख़ुदावन्दी के साये में बिठाया जाएगा उनमें से एक वह शख़्स भी है जिसके बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

رَجُـــلٌ دَعَـــتْهُ إِمْــرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصَبٍ وَّجَـــمَالٍ فَــقَالَ إِنِّيْ أَخَــافُ اللّٰهَ. (مسلم شریف ۱/۳۳۱)

ऐसा शख़्स जिसे कोई इज़्ज़तदार और ख़ूबसूरत औरत बद्कारी के लिए बुलाये और वह कह दे कि मुझे अल्लाह से डर लग रहा है।

ज़िना से बचने की एक उम्दा तद्बीर

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक नौजवान ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या आप मुझे ज़िना की इजाज़त दे सकते हैं? उसकी यह हिम्मत देखकर मज्लिस में बैठे लोग शौर मचाने लगे और कहने लगे कि इसे उठाओ, इसे उठाओ (यह क्या बक रहा है) मगर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि नहीं इसे बैठा रहने दो और मुझ से क़रीब करो। जब वह क़रीब हो गया तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पूछा कि क्या यह काम तुम अपनी माँ के साथ अच्छा समझते हो? तो उसने कहा, नहीं। मैं आप पर क़ुर्बान, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः इसी तरह लोग भी अपनी माँ के साथ इसे अच्छा नहीं समझते। फिर आपने पूछा कि अगर कोई तुम्हारी बेटी के साथ ऐसा करे तो क्या तुम्हें अच्छा लगेगा? तो उसने कहा हरगिज़ नहीं या रसूलल्लाह! तो आप ने इर्शाद फ़रमायाः इसी तरह लोग अपनी बेटी के साथ इसे अच्छा नहीं समझते। फिर आपने उसकी बहन, फूफी और ख़ाला वग़ैरह का ज़िक्र करके इसी तरह समझाया तो उसकी समझ में आ गया। और उसने अ़र्ज़ कियाः या रसूलल्लाह! मेरे लिए दुआ़ फ़रमाइये, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसके सर पर हाथ रखकर यह दुआइया कलिमात इर्शाद फ़रमायेः

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ ذَنْبَهُ وَطَهِّرْ قَلْبَهُ

ऐ अल्लाह इसके गुनाह माफ़ फ़रमा, इसका दिल पाक फ़रमा और इसकी

وَحَصِّنْ فَرْجَهُ. शर्मगाह की हिफ़ाज़त फ़रमा।

रावी फ़रमाते हैं कि इसके बाद उस नौजवान का यह हाल हो गया था कि उसकी निगाह किसी बद्-अ़मली की तरफ़ उठती ही न थी। (शुअ़बुल ईमान 4/362)

इस वाक़िये में पैग़म्बर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने बद्-कारी से बचने की एक ऐसी उम्दा तद्बीर उम्मत को बतलाई है कि जो भी बुराई करने वाला एक लम्हे के लिए भी इस बारे में सोच ले तो वह अपने ग़लत इरादे से बाज़ आ सकता है। क्योंकि ज़ाहिर है कि जिस औ़रत से बद्-कारी का इरादा होगा वह किसी की बहन, बेटी या माँ ज़रूर होगी और जिस तरह आदमी ख़ुद अपनी माँ बहनों के साथ यह जुर्म गवारा नहीं करता उसे सोचना चाहिए कि दूसरे लोग उसे क्योंकर गवारा कर लेंगे।

यह क़ियामत के जल्दी आने की अ़लामत है

आज जो हर तरफ़ बे-हयाइयों और नंगेपन का सैलाब आ रहा है, उसके बारे में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पहले ही अपनी उम्मत को आगाह फ़रमा चुके हैं ताकि उम्मत इन बुरे कामों से बचने की फ़िक्र करे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى يَتَسَافَدَ النَّاسُ فِي الطُّرُقِ كَمَا تَتَسَافَدُ الدَّوَابُّ يَسْتَغْنِي الرِّجَالُ بِالرِّجَالِ وَالنِّسَاءُ بِالنِّسَاءِ. (كتاب الفتن للمروزى ٣٩٠)

क़ियामत उस वक़्त तक न आयेगी जब तक कि लोग जानवरों की तरह रास्तों में (खुलेआम) सोह्बत करेंगे और मर्द मर्दों से और औ़रतें औ़रतों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करेंगी।

और एक दूसरी मौक़ूफ़ रिवायत का मज़्मून है:

تَقُوْمُ السَّاعَةُ عَلٰى شِرَارِ النَّاسِ لَا يَأْمُرُوْنَ بِمَعْرُوْفٍ وَّلَا يَنْهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ يَتَهَارَجُوْنَ كَمَا تَهَارَجَ الْحُمُرُ. اَخَذَ رَجُلٌ بِيَدِ امْرَأَةٍ

क़ियामत ऐसे बद्-तरीन ख़लाइक़ लोगों के ज़माने में आयेगी जो न तो अच्छी बात का हुक्म करने वाले होंगे और न बुराई पर रोक टोक करने वाले होंगे वे गधों की तरह (खुलेआम) शह्वत रानी करेंगे। एक आदमी किसी औ़रत का

لَيَخْلُوَنَّ بِهَا فَيَقْضِي حَاجَتَهُ مِنْهَا ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ يَضْحَكُونَ إِلَيْهِ وَيَضْحَكُ إِلَيْهِمْ. (كتاب الفتن ٣٩٥)

हाथ पकड़कर तन्हाई में ले जाएगा और उस से क़ज़ा-ए-शह्वत करके फिर लोगों के सामने लौटेगा जबकि वे उसे देखकर हंसते होंगे। और यह उन्हें देखकर हंसता होगा।

यानी शर्म व हया का बिल्कुल जनाज़ा निकल जायेगा, ज़िनाकारी को बुरा न समझा जाएगा और इस मुआमले में इन्सान और जानवरों में तमीज़ ख़त्म हो जायेगी। आज ये नबवी पैशगोइयाँ हर्फ़-ब-हर्फ़ पूरी होती नज़र आ रही हैं। मग़रिबी मुल्कों का तो कहना ही क्या, मश्रिक़ी अक़्दार (इज़्ज़त) के मुहाफ़िज़ कहलाये जाने वाले मुल्क, यहां तक कि कुछ मुस्लिम मुल्कों में भी ऐसे हयासोज़ नज़ारे अब ख़ूब नज़र आने लगे हैं। अब डिस्को डांस के नाम पर, तहज़ीब व सक़ाफ़त के नाम पर और खेलकूद के नाम पर औरतों से बुराई कराना आम है। टेलीवीज़न के आलमी प्रोग्राम जिन तक पहुंच अब किसी जगह, किसी के लिए भी मुश्किल नहीं रही है, ख़ास तौर से ज़िनाकारी की तालीम व तब्लीग़ में पूरी तरह मश्ग़ूल हैं। अब ज़िनाकारी को बढ़ावा देने के लिए बाक़ायदा आलमी कान्फ्रेन्स हो रही हैं। जिनकी तमाम बातों का नतीजा सिर्फ़ यही नुक्ता है कि कैसे और किस तरह मर्द और औरत के दर्मियान नाजाइज़ ताल्लुक़ात की रूकावटें दूर की जायें। ज़िना कारी की एक बड़ी रूकावट शर्म व हया का फ़ितूरी इन्सानी जज़्बा था उसको तो मग़रिबी तहज़ीब ने बिल्कुल मुर्दा कर ही दिया था, दूसरी बड़ी रूकावट औरत के लिए नाजाइज़ बच्चे की ज़िल्लत है इस रूकावट को दूर करने के लिए आज हमल को गिराने वाली दवाऐं आम कर दी गई हैं और हमल गिराने के इन्तिज़ाम शहर-शहर कर दिये गये हैं। ताकि यह शैतानियत और बहीमियत बे-ख़ौफ़ व ख़तर बढ़ती रहे और ज़िल्लत व रूस्वाई के अंदेशे से बेपरवा होकर जानवरों की तरह इन्सान भी शह्वत रानी करते फिरें। اللهم احفظنا منه. (अल्लाह इससे हमारी हिफाज़त फरमाए)

ऐसे ख़तरे और फ़ित्ने के माहौल में हर मुसलमान की यह ज़िम्मेदारी है कि वह ग़ैरों की देखादेखी अपनी इन्सानियत और शर्म व हया को दाव पर न लगाये। बल्कि उसकी भरपूर हिफ़ाज़त करे और घर के लोगों की हरकत पर पूरी निगाह रखे और शैतानियत के हथियार "टेलीवीज़न" के ज़हरीले जरासीम

से अपने ईमानी माहोल को गन्दा और नापाक न होने दें। इसके बग़ैर अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का जज़्बा और तक़ाज़ा हरगिज़ पूरा नहीं हो सकता। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से हर मुसलमान को अपनी शर्मगाह की कामिल हिफ़ाज़त की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन □ □

तीसरा हिस्सा

दिल की हिफ़ाज़त

दिल की सफ़ाई

हिर्स व बुख़्ल की मज़म्मत

जूद व सख़ा

बुग़ज़ व अदावत

तज़्किया की ज़रूरत

पहली फ़स्ल

दिल की हिफ़ाज़त

पेट और उससे जुड़े दूसरे आज़ा की हिफ़ाज़त के हुक्म से "दिल" की हिफ़ाज़त का हुक्म भी निकलता है। "दिल" इन्सानी जिस्म में बादशाह की हैसियत रखता है। सारे आज़ा दिल के बे-गारी ख़ादिम और उसके मातहत हैं और उसकी बात मानते हैं। लिहाज़ा अगर दिल सही हो तो सारे आज़ा सीधे रास्ते पर रहेंगे और दिल बिगड़ जाये तो तमाम आज़ा ग़लत रास्ते पर चल पड़ेंगे। इसी बिना पर जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

أَلَا وَإِنَّ فِي الْجَسَدِ مُضْغَةً إِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ وَإِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهُ أَلَا! وَهِيَ الْقَلْبُ. (بخاری شریف ۱/۱۳)

ख़बरदार रहो, बदन में एक गौश्त का लोथड़ा है कि अगर वह सही है तो सारा बदन सही रहेगा और अगर वह ख़राब हो जायेगा तो सारा बदन ख़राब हो जायेगा। ख़बरदार! वह (गौश्त का लोथड़ा) यही दिल है।

इसलिए ज़रूरी है कि दिल को शरीअ़त के हुक्म का पबन्द बनाया जाये ताकि दूसरे आज़ा ग़लत और ना-जाइज़ कामों के करने से महफ़ूज़ रहें। क़ुरआन-ए-करीम में दिल की सफ़ाई और तज़्किये को जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बेअ़्सत का अहम तरीन मक़्सद शुमार किया गया है। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ .

(سورة الجمعة آيت: ٢)

वही है जिसने उठाया अनपढ़ों में एक रसूल उन्हीं में का, पढ़कर सुनाता है उनको उसकी आयतें और उनको संवारता है।

चुनांचे नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी इस ज़िम्मेदारी को बहुत अच्छे तरीक़े से पूरा फ़रमाया और अपने जाँ-निसार सहाबा की ऐसी तरबियत फ़रमाई कि उनके दिल मुज़क्का और मुजल्ला (पाक और रौशन) हो गये कि फ़रिश्ते भी उन पर रश्क करने लगे और उन्हें आमाल-ए-ख़ैर और इबादात में लज़्ज़त व हलावत की ऐसी अ़दीमुल मिसाल कैफ़ियत नसीब हुई कि

आज उम्मत का बड़े से बड़ा क़ुतुब या वली भी छोटे से छोटे दर्जे के सहाबी के रुत्बे को नहीं पहुंच सकता। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की यह अ़ज़्मत और उनका यह बुलन्द मर्तबा व मुक़ाम अस्ल में उनके दिलों की सफ़ाई ही का मज़्हर है। इसी दिल की सफ़ाई ने उन्हें सच्चाई और इख़्लास, कमाल-ए-अख़्लाक़ और ईसार व मुआखात (भाईचारा) का वह आ़ला इन्सानी जज़्बा अ़ता फ़रमाया है। जिसकी मिसाल इन्सानी तारीख़ में पेश नहीं की जा सकती।

दिल की बीमारियाँ

दिल की रूहानी बीमारियाँ बहुत ज़्यादा हैं जिनका असर पूरी इन्सानी ज़िन्दगी पर पड़ता है। उनमें कुछ बीमारियाँ बहुत ख़तरनाक हैं। उनमें से हर एक, सिर्फ़ मरज़ नहीं बल्कि सैकड़ों बीमारियों के वुजूद में आने का सबब है। इसलिए हर वह मोमिन जो अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया की सिफ़त अपनाना चाहता है उस पर लाज़िम है कि वह अपने दिल को ख़ास तौर से नीचे दिए गये बुनियादी मरज़ों से महफ़ूज़ रखे।

❶ दुनिया की मुहब्बत, ❷ बुग़्ज़ व अ़दावत, ❸ आख़िरत से ग़फ़लत।

वाक़िआ़ यह है कि अगर इन ज़िक्र की गई बीमारियों से दिल को पाक कर लिया जाये तो इन्शा अल्लाह रूहानी ऐतिबार से दिल पूरी तरह सेहतयाब होगा और पूरा जिस्म-ए-इन्सानी इताअ़त-ए-ख़ुदावन्दी के जज़्बे से सरशार और गुनाहों से महफ़ूज़ हो जायेगा।

दुनिया की मुहब्बत

दुनिया की मुहब्बत इन्सान की तबीअ़त में दाख़िल है। इर्शाद-ए-ख़ुदावन्दी है:

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ.(آل عمران: ١٤)

फ़रेफ़्ता किया है लोगों को मरग़ूब चीज़ों की मुहब्बत ने, जैसे औ़रतें और बेटे और ख़ज़ाने जमा किये हुए सोने और चांदी के और घोड़े निशान लगाये और मवेशी और खेती।

और यह मुहब्बत ज़रूरी भी है इसके बग़ैर दुनिया का निज़ाम क़ाइम नहीं रह सकता। लेकिन अगर यह मुहब्बत इतनी ज़्यादा बढ़ जाये कि इन्सान अपने पैदा होने के मक़्सद से ग़ाफ़िल हो जाये और अल्लाह तआ़ला के हुक्मों और बन्दों के हक़ों को भूल जाये तो फिर यह मुहब्बत ख़तरनाक दिली और रूहानी मरज़ में तब्दील हो जाती है। इसकी मिसाल ऐसी है जैसे इन्सानी बदन के लिए "शूगर" एक ख़ास मिक़्दार में होनी ज़रूरी है। इसके बग़ैर इन्सान ज़िंदा नहीं रह सकता। लेकिन यही शूगर जब हद से ज़्यादा पैदा होने लगती है तो ऐसे ला-इलाज मरज़ में तब्दील हो जाती है जो जिस्म की रगों को खोखला कर देता है। और इन्सान की ज़िन्दगी दूभर हो जाती है। इसी तरह जब दुनिया की मुहब्बत हद से ज़्यादा बढ़ जाती है तो तमाम गुनाहों की जड़ और बुनियाद बन जाती है। हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि के मज़ामीन में यह जुम्ला मशहूर है:

حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ

दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की बुनियाद है।

(فيض القدير ٣/٤٤٨)

अ़ल्लामा मनावी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (शारेह जामेअ़ सग़ीर लिल्सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि) लिखते हैं कि तज्रिबे और मुशाहदे से यह बात मालूम है कि दुनिया की मुहब्बत ही हर बुराई की बुनियाद बनी है। जैसे पुरानी सर्कश क़ौमों ने हज़रात अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की दावत का इसी लिए इन्कार किया कि वे लज़्ज़तों में मुब्तला थे और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की दावत क़ुबूल करने से उनकी लज़्ज़तों और शह्वतों की तक्मील में ख़लल आता था। इसलिए वह अपने रहनुमाओं की मुख़ालफ़त में उतर आये। इस तरह इब्लीस मलऊ़न ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को सज्दा करने से इसीलिए इन्कार किया कि वह हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के वुजूद को अपनी रियासत और बड़ाई में रूकावट समझता था, यही मुआ़मला नमरूद, फ़िरऔ़न, हामान वग़ैरह का था कि ये लोग दुनिया की मुहब्बत के नशे में बद-मस्त होकर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के जानी दुश्मन बन गये थे।

(फ़ैज़ुल क़दीर 3/449)

यह दुनिया की मुहब्बत बड़े-बड़े रूहानी मरज़ों को पैदा करती है उनमें एक बड़ी बीमारी "हिर्स व तमअ़" यानी लालच है।

हिर्स (लालच)

जब आदमी पर दुनिया की मुहब्बत का नशा चढ़ता है तो वह हिर्स का मरीज़ बन जाता है। यानी उसके पास कितना ही माल व दौलत जमा हो जाये फिर भी वह और ज़्यादा का तलबगार रहता है और दौलत की कोई मिक़्दार भी उसके लिए सुकून और क़नाअ़त का सबब नहीं बन पाता। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद हैः

لَوْ أَنَّ ابْنَ آدَمَ أُعْطِيَ وَادِيًا مُلِئَ مِنْ ذَهَبٍ أَحَبَّ إِلَيْهِ ثَانِيًا وَلَوْ أُعْطِيَ ثَانِيًا أَحَبَّ إِلَيْهِ ثَالِثًا وَلَا يَسُدُّ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ تَابَ.

(بخاری شریف ۲/۹۵۳)

अगर आदमी को सोने से भरी हुई एक पूरी वादी भी दे दी जाये तो वह दूसरी वादी को मांगेगा और अगर दूसरी दे दी जाये तो तीसरी को मांगेगा। और आदमी का पेट तो सिर्फ़ मिट्टी ही भर सकती है (यानी मरने के बाद उन चाहतों का सिलसिला ख़त्म होगा) और जो तौबा करे तो अल्लाह तआ़ला उसकी तौबा क़ुबुल फ़रामायेगा।

और एक दूसरी रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

يَكْبُرُ ابْنُ آدَمَ وَيَكْبُرُ مَعَهُ اثْنَانِ حُبُّ الْمَالِ وَطُوْلُ الْعُمُرِ.

(بخاری شریف ۲/۹۵۰)

आदमी बड़ा हो जाता है और साथ में उसकी दो ख़्वाहिशें भी बढ़ती रहती हैं एक माल की मुहब्बत दूसरे लम्बी उम्र की तमन्ना।

और एक कम्ज़ोर हदीस में यह मज़्मून आया है कि "दो शख़्सों की भूख नहीं मिटती एक इल्म का धनी कि उसे किसी इल्म पर क़नाअ़त नहीं होती, दूसरे माल का भूखा कि उसे कितना भी मिल जाये मगर वह ज़्यादा की फ़िक्र में लगा रहता है"। (मिश्कात शरीफ़ 1/112)

हरीस (लालची) शख़्स को कभी भी दिली सुकून नसीब नहीं होता। माल की मदहोशी में उसकी रातों की नींदें उड़ जाती हैं और दिन का सुकून जाता रहता है। हालांकि माल व दौलत अस्ल मक़्सद नहीं बल्कि दिली इत्मीनान ही

असूल मक़सद है। यह अगर थोड़े से माल के साथ भी नसीब हो तो आदमी ग़नी है और अगर माल की ज़्यादती के साथ दिली सुकून न मिले तो वह ग़नी कहलाये जाने के लाएक़ नहीं है। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لَيْسَ الْغِنٰى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ وَلٰكِنَّ الْغِنٰى غِنَى النَّفْسِ. (بخاری شریف ٢/٩٥٤، مسلم شریف ١/٣٣٦، ترمذی ٢/٦٠)

ज़्यादा अस्बाब और सामान होने का नाम गिन (मालदारी) नहीं है बल्कि असली गिना दिल का ग़नी और मुत्मइन होना है।

इस तफ़्सील से मालूम हुआ कि लालच का रोग ऐसा ख़तरनाक है कि इन्सानी ज़िन्दगी की रूह ही ख़त्म कर देता है बल्कि ख़ुद इन्सानी इज़्ज़त के लिये ख़त्रा बन जाता है। इसलिए इस बीमारी का इलाज ज़रूरी है।

हिर्स (लालच) का एक मुजर्रब (तज्रिबा किया हुआ) इलाज

हिर्स के मरज़ को ख़त्म करने के लिए इन अहादीस को पेश-ए-नज़र रखना ज़रूरी है जिनमें दुनिया की बुराई ब्यान हुई है। जैसे एक रिवायत में है कि नबी-ए- करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ. (مسلم شریف عن ابی ھریرۃ ؓ ٢/٤٠٧)

दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लियें जन्नत है।

यानी मोमिन को दुनिया में इस तरह रहना चाहिए जैसे एक क़ैदी क़ैदख़ाने में रहता है कि क़ैदख़ाने की कोई चीज़ उसे अच्छी नहीं लगती बल्कि वह हर क़ीमत पर क़ैद से बाहर आने की कोशिश करता रहता है। इसी तरह मोमिन को दुनिया में रहते हुए यहां कि चीज़ों से मुहब्बत करने और उनकी चाहत के बजाये आख़िरत में जाने का सामान और अस्बाब ढूढंने की कोशिश करनी चाहिए।

इसी तरह एक और रिवायत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

مَنْ اَحَبَّ دُنْيَاهُ اَضَرَّ بِاٰخِرَتِهٖ وَمَنْ

जो अपनी दुनिया से लगाव रखेगा वह अपनी आख़िरत का नुक़सान करेगा

أَحَبَّ آخِرَتَهُ أَضَرَّ دُنْيَاهُ فَآثِرُوْا مَا يَبْقَىٰ عَلَىٰ مَا يَفْنَىٰ.

(مشكوٰة شريف ٢/٤٤١)

और जो अपनी आख़िरत को पसन्द करेगा वह अपनी दुनिया गंवायेगा। इसलिए ख़त्म होने वाली दुनिया के बदले में बाक़ी रहने वाली आख़िरत को तरजीह दो।

दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में समन्दर की एक बूंद के बराबर भी नहीं है। इसलिए अक़्लमंदी और आक़िबत अंदेशी का तक़ाज़ा यह है कि इस चन्द रोज़ा ज़िन्दगी के लिए लालच करके अपनी आख़िरत को बर्बाद न किया जाये।

इसी तरह हिर्स को ख़त्म करने के लिए यह यक़ीन भी बहुत फ़ायदेमंद है। कि अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये जो रिज़्क़ पहले से तै कर दिया है वह हमें हर हाल में मिलकर रहेगा और हमारी मौत उस वक़्त तक नहीं आ सकती जब तक कि हम अपने लिए मुक़द्दर के हर हर लुक़्मे को हासिल न कर लें। बहुत सी हदीसों में इस बारे में मज़्मून आये हैं।

इसके अ़लावा हिर्स को ख़त्म कर के क़नाअ़त का जज़्बा पैदा करने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक निहायत पुर-तासीर नुस्ख़ा तज्वीज़ फ़रमाया है जो नीचे दिए गये इर्शाद-ए-गिरामी में मौजूद है आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

إِذَا نَظَرَ أَحَدُكُمْ إِلَىٰ مَنْ فُضِّلَ عَلَيْهِ فِي الْمَالِ وَالْخَلْقِ فَلْيَنْظُرْ إِلَىٰ مَنْ هُوَ أَسْفَلُ مِنْهُ.

(بخاری شریف ٢/٩٦٠)

जब तुम में से किसी शख़्स की नज़र ऐसे आदमी पर पड़े जिसे माल या सेहत या तंदरुस्ती में उस पर फ़ज़ीलत हासिल हो तो उस शख़्स को चाहिए कि वह अपने से नीचे दर्जे के आदमी पर नज़र करे।

यानी ज़्यादातर माल में हिर्स की बुनियाद यही होती है कि आदमी हमेशा अपने से ऊपर वालों की तरफ़ नज़र करता है। जैसे तीन करोड़ वाला है तो चार करोड़ वाले पर नज़र करेगा। चार वाला है तो पाँच वाले पर नज़र करेगा इस तरह किसी भी हद पर उसे सब्र नसीब नहीं होता। लेकिन अगर आदमी अपने से नीचे वालों को देखने लगे तो शुक्र का जज़्बा भी पैदा होता है और

हिर्स का अस्ली सबब भी ख़त्म हो जाता है। इसलिए कोशिश करनी चाहिए कि इस मरज़ का हमारे दिल से ख़ातिमा और आख़िरत के फ़ायदों को हासिल करने का जज़्बा पैदा हो। □ □

दूसरी फ़स्ल

बुख़्ल (कन्जूसी)

दुनिया की मुहब्बत से जो बीमारियाँ फैलती हैं उनमें एक ख़तरनाक बीमारी "कन्जूसी" है जो इंसान को बहुत से आमाल-ए-ख़ैर करने से रोकने का सबब बनती है। एक हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

صَلاحُ أوَّلِ هٰذِهِ الأُمَّةِ بِالزَّهَادَةِ وَالْيَقِيْنِ وَهَلاكُهَا بِالْبُخْلِ وَالْاَمَلِ.

(الطبرانی فی الاوسط ٣١٦/٨)

इस उम्मत की सबसे पहली सलाह का सबब यक़ीन और ज़ुह्द (के औसाफ़) थे और इसमें बिगाड़ की शुरूआत बुख़्ल और हवस से होगी।

कन्जूस आदमी माल की मुहब्बत में ऐसा मज्बूर हो जाता है कि अक़्ल के तक़ाज़े और शरई वाज़ेह हुक्म के बावुजूद उसे ख़र्च करना बहुत मुश्किल तरीन बोझ मालूम होता है। उसकी इस हालत को नीचे दी गई हदीस में इस तरह वोज़ह फ़रमाया गया हैः

مَثَلُ الْبَخِيْلِ وَالْمُتَصَدِّقِ كَمَثَلِ رَجُلَيْنِ عَلَيْهِمَا جُنَّتَانِ مِنْ حَدِيْدٍ قَدِ اضْطُرَّتْ اَيْدِيْهِمَآ اِلٰى ثُدِيِّهِمَا وَتَرَاقِيْهِمَا فَجَعَلَ الْمُتَصَدِّقُ كُلَّمَا تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ اِنْبَسَطَتْ عَنْهُ وَجَعَلَ الْبَخِيْلُ كُلَّمَاهَمَّ بِصَدَقَةٍ قَلَصَتْ وَاَخَذَتْ كُلُّ حَلْقَةٍ بِمَكَانِهَا. متفق عليه.

(مسلم شريف ٣٢٨/١)

कन्जूस आदमी और सदक़ा ख़ैरात करने वाले आदमी की मिसाल ऐसे दो अदमियों की तरह है जो लोहे की दो ज़िरहें पहने हुए हों जिसकी (तंगी की) वजह से उनके दोनों हाथ उनके सीने और गर्दन से चिमट गये हों। फिर जब वे सदक़ा देने वाला सदक़ा देना शुरू करता है तो उसकी ज़िरह खुलती चली जाती है (और ख़ुशी के साथ अपना इरादा पूरा करता है) और जब कन्जूस कुछ सदक़े का इरादा करता है तो ज़िरह के सब हिस्से मिल जाते हैं और हर हर जोड़ अपनी जगह पकड़ लेता है (जिसकी वजह से कन्जूस के लिए सदक़ा के

इरादे को पूरा करना बड़ा मुश्किल हो जाता है)।

مشکوٰۃ شریف ١٦٤/١

ज़रूरी और वाजिबी जगहों पर ख़र्च करने में कन्जूसी करना क़ुरआन-ए-करीम में काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का काम बताया गया है। ख़ास तौर से ज़कात फ़र्ज़ होने के बावुजूद ज़कात न निकालना बद्-तरीन अ़ज़ाब की वजह है। इर्शाद-ए-ख़ुदावन्दी है:

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ يَوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝

(سورۃ التوبہ : ٣٤-٣٥)

और जो लोग सोना चांदी जमा करके रखते हैं और उनको अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते सो आप उनको एक बड़ी दर्दनाक सज़ा की ख़बर सुना दीजिए। जोकि उस रोज़ वाक़े होगी कि उनको दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा फिर उनसे उन लोगों की पैशानियों और उनकी करवटों और उनकी पुश्तों को दाग़ दिया जायगा (और यह जतलाया जायेगा कि) यह वह है जिसको तुम ने अपने वास्ते जमा कर रखा था, तो अब अपने जमा करने का मज़ा चखो।

एक इब्रतनाक वाक़िआ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में एक शख़्स सअ़्लबा बिन अबी हातिब था।[1] उसने नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरख़्वास्त की कि आप उसके लिए माली वुस्अ़त (गुंजाइश) के लिए दुआ़ फ़रमायें। आप ने फ़रमाया: "ऐ सअ़्लबा थोड़ा माल जिसका तुम शुक्र अदा कर सको वह उस ज़्यादा माल से बेह्तर है जिसका तुम हक़ अदा न कर सको"। उसने फिर वही

1. आ़म मुफ़स्सिरीन ने इसका नाम सअ़्लबा बिन हातिब ज़िक्र किया है जबकि हाफ़िज़ इब्ने हजर अ़स्क़लानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इब्ने मरदविया के हवाले से यह साबित किया कि यह वाक़िआ़ सअ़्लबा बिन हातिब का नहीं बल्कि सअ़्लबा बिन अबी हातिब का है। सअ़्लबा बिन हातिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु बद्री सहाबी हैं। उनसे ऐसे वाक़िये का होना बईद (दूर) है। और सअ़्लबा बिन अबी हातिब मुनाफ़िक़ है। वह इब्ने इस्हाक़ की तश्रीह के मुताबिक़ मस्जिद-एज़िरार के बनाने में भी शरीक था। (अल्-इसाबा 1/216)

दरख़्वास्त दोहराई तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ सअ्लबा! क्या तू अल्लाह के नबी की हालत की तरह अपनाने पर राज़ी नहीं उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर मैं चाहूं कि सोने-चांदी के पहाड़ मेरे साथ चलें तो वे चलने पर तैयार हो जायें (मगर मुझे यह पसन्द नहीं)। यह सुनकर सअ्लबा बोला। उस ज़ात की क़सम जिसने आपको रसूल-ए-बरहक़ बनाकर भेजा है! अगर आपने अल्लाह से दुआ कर दी और मुझे अल्लाह ने माल दे दिया तो मैं ज़रूर हर हक़दार को उसका हक़ अदा करूंगा। तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाईः اللهم ارزق ثعلبة مالا (ऐ अल्लाह सअ्लबा को माल अता फ़रमा) चुनांचे सअ्लबा ने कुछ बकरियाँ पाल लीं तो उनमें कीड़े मकोड़ों की तरह ज़्यादती हुई यहां तक कि मदीने की जगह उनके लिए तंग पड़ गई। चुनांचे वह आबादी से हटकर क़रीब की एक वादी में रहने लगा। और सिर्फ़ दिन की दो नमाज़ें ज़ुहर और अस्र मस्जिदे नबवी में पढ़ता था बाक़ी नमाज़ों में नहीं आता था। फिर बकरियां और ज़्यादा बढ़ गईं कि वह वादी भी तंग पड़ने लगी तो वह और दूर चला गया कि हफ़्ते में सिर्फ़ जुमे की नमाज़ के लिए मदीने आया करता था, यहां तक कि यह मामूल भी छूट गया। अब जो क़ाफ़िले रास्ते से गुज़रते थे उनसे मदीने के हालात मालूम करने को ही काफ़ी समझता था। इसी दौरान एक रोज़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा कि "सअ्लबा कहाँ है?" तो लोगों ने बताया कि उसने बकरियाँ पाल रखी थीं वह इतनी बढ़ीं कि उसके लिए मदीने में रहना मुश्किल हो गया इसलिए वह दूर चला गया है। तो नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन मर्तबा फ़रमायाः يا ويح ثعلبة (हाय सअ्लबा की तबाही) फिर जब सद्क़ात वुसूल करने का हुक्म नाज़िल हुआ तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़बीला-ए-जुहैना और बनू सुलैम के आदमियों को सअ्लबा और एक सलमी शख़्स का सद्क़ा वुसूल करने भेजा वे दोनों सफ़ीर (सद्क़ा वुसूल करने वाले) पहले सअ्लबा के पास पहुंचे और उससे ज़कात का मुतालबा किया और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तहरीर पढ़कर सुनाई। वह बोला यह तो जिज़्या (टैक्स) है, मैं नहीं जानता यह क्या है? और अब तुम जाओ दूसरों से निमट कर मेरे पास आना। वे दोनों उसके बाद सलमी शख़्स के पास गये। उसने उसका जो हक़ बनता था वह ख़ुशी से बेहतर अंदाज़ में अता किया और लोगों से सद्क़ात वुसूल करके वापसी में फिर वे सअ्लबा के पास आये।

उसने अब भी उन्हें टैक्स कह कर टाल दिया और कहा कि जाओ मैं सोचूंगा। वे दोनों आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर हुए और उन्होंने अभी पूरी रू-दाद (दास्तान) सुनाई भी न थी कि पैग़म्बर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने सअ़लबा के बारे में یاویح ثعلبہ (सअ़लबा पर अफ़्सोस है) फ़रमाया और सलमी शख़्स के लिए बरकत की दुआ़ फ़रमाई चूंकि सअ़लबा ने सद्क़ा देने से इन्कार करके अपने उस वादे और मुआ़हदे की ख़िलाफ़ वरज़ी की थी जो उसने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने किया था कि मैं माल का हक़ अदा करूंगा। इसलिए इस मौक़े पर क़ुरआन-ए-करीम की यह आयतें नाज़िल हुईः

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ۝ فَلَمَّآ اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ۝ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ۝

(التوبہ، آیت : ۷۸ ۷۵)

और कुछ उन में से वे हैं कि अ़हद किया था अल्लाह से अगर दे हमको अपने फ़ज़्ल से तो हम ज़रूर ख़ैरात करें और होंगे नेकी वालों में। फिर जब दिया उनको अपने फ़ज़्ल से तो उसमें कन्जूसी की और फिर गये टला कर। फिर उसका असर रख दिया निफ़ाक़ उनके दिलों में जिस दिन तक वे उससे मिलेंगे इस वजह से कि उन्होंने ख़िलाफ़ किया अल्लाह से जो वादा उससे किया था और इस वजह से कि बोलते थे झूठ, क्या वे जान नहीं चुके कि अल्लाह जानता है उनका भेद और उनका मश्वरा और यह कि अल्लाह ख़ूब जानता है सब छुपी बातों को।

जब यह ख़बर सअ़लबा को पहुंची तो वह अपना सद्क़ा लेकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में पहुंचा और उसे क़ुबूल करने की दरख़्वास्त की। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे तेरा सद्क़ा क़ुबूल करने से मना फ़रमा दिया है। तो वह अपने सर पर मिट्टी डालकर अफ़्सोस का इज़्हार करने लगा, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह तेरे बुरे अ़मल की नहूसत है। तूने मेरी बात

11 क्यों नहीं मानी? यह सुनकर वह वापस चला गया। फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद उसने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु, हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के सामने अपना माल पेश किया मगर उन सब हज़रात ने यह कहकर उसका माल लेने से इंकार कर दिया कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुबूल नहीं किया तो हम कैसे क़ुबूल कर सकते हैं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर 622, तबअ़ जदीद दारूस्सलाम, रियाज़)

देखिये! माल की मुहब्बत, हिर्स और कन्जूसी ने उस शख़्स को कैसा रानदा -ए-दरगाह बना दिया। इसलिए लाज़िम है कि जब कोई शरअ़ी माली हक़ अपने ज़िम्मे में वाजिब हो जाये तो निहायत ख़ुशदिली से उसे अदा किया जाये। अगर उसमें कन्जूसी होगी तो यह इस बात की दलील है कि उसका दिल एक मुहलिक (हलाक करने वाली) रूहानी बीमारी में मुब्तला है।

ज़कात की अदायगी में कन्जूसी करने वालों के लिए भयानक सज़ा

इस दौर में ज़कात को एक बड़ा बोझ समझा जाने लगा है। इस्राफ़ और फ़ुज़ूल ख़र्ची तो आ़म है। एक-एक तक़्रीब पर लाखों रूपये पानी की तरह बहा दिये जाते हैं लेकिन हिसाब लगाकर ज़कात निकालना तबीअ़त को बड़ा भारी और दुश्वार गुज़रता है। इसी वजह से अगर कोई मद्रसे का सफ़ीर या मुस्तहिक़ फ़क़ीर किसी मालदार शख़्स के दरवाज़े पर पहुंच जाये तो उसके माथे पर सिलवटें पड़ जाती हैं। मूड ख़राब हो जाता है और कोशिश की जाती है कि जल्द से जल्द यह मांगने वाला उसके सामने से हट जाये कई चक्कर कटवाने के बाद अगर कुछ ज़कात के नाम पर रक़्म दी भी जाती है तो अन्दाज़ ऐसा होता है गोया उसपर बड़ा एहसान किया जा रहा हो। सब तंगज़रफ़ी और आख़िरत से ग़फ़लत की अ़लामतें हैं। अगर ऐसे हज़रात ज़कात के बारे में शरीअ़त के ताकीदी अहकाम और ज़कात न देने के बारे में रूंगटे खड़े करदेने वाली वओ़ीदें अपने सामने रखें (और बहुत से ख़ुश नसीब हज़रात इसका ख़्याल रखते भी हैं) तो वे ज़कात देने से जी न चुरायेंगे और न ज़कात लेने वालों को बुरा समझेंगे। इस वक़्त ऐसी चंद रिवायतें जिनमें ज़कात न देने की सख़्त सज़ाओं का ब्यान है

ज़िक्र की जाती हैं:

(١) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ صَاحِبِ ذَهَبٍ وَّلَا فِضَّةٍ لَايُؤَدِّيْ مِنْهَا حَقَّهَآ إِلَّآ إِذَا كَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صُفِّحَتْ لَهٗ صَفَائِحُ مِنْ نَّارٍ فَأُحْمِيَ عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَيُكْوٰى بِهَا جَنْبُهٗ وَجَبِيْنُهٗ وَظَهْرُهٗ كُلَّمَا رُدَّتْ أُعِيْدَتْ لَهٗ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ أَلْفَ سَنَةٍ حَتّٰى يُقْضٰى بَيْنَ الْعِبَادِ فَيَرٰى سَبِيْلَهٗ إِمَّا إِلَى الْجَنَّةِ وَإِمَّا إِلَى النَّارِ.

(رواہ مسلم ۱/۳۱۸، مشکوٰۃ ۱/۱۵۵)

1. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं कि जो कोई भी सोने और चांदी का मालिक उसका हक़ अदा न करेगा (यानी ज़कात न देगा) मगर यह कि क़ियामत के दिन उसके लिए आग के पत्रे तैयार किये जाएंगे जिन्हें जहन्नम की आग में तपाकर उसके पहलू, पैशानी और पीठ को दागा जायेगा और जब एक पत्रा तपाया जाएगा तो उसकी जगह दोबारा लाया जायेगा ऐसे दिन में जिसकी मिक़दार 50 हज़ार साल होगी (और यह अमल उसके साथ बराबर जारी रहेगा) यहाँ तक कि बन्दों के दर्मियान फ़ैसले की कार्रवाई पूरी हो, फिर उसे मालूम होगा कि उसका ठिकाना जन्नत है या जहन्नम।

यह रिवायत लम्बी है इसमें आगे यह ज़िक्र है कि अगर वह अपने ममलूका जानवरों यानी ऊंट, गाये या बकरी की ज़कात न निकालेगा तो ये जानवर बड़े से बड़े होने की हालत में अपने मालिक को अपने सींगों, पैरों और खुरों से रोंद डालेंगे। اعاذنا الله تعالی منه. (अल्लाह तआला इससे हमें पनाह में रखे)

(٢) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ اٰتَاهُ اللّٰهُ مَالًا فَلَمْ يُؤَدِّ زَكٰوتَهٗ مُثِّلَ لَهٗ مَالُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شُجَاعًا أَقْرَعَ لَهٗ زَبِيْبَتَانِ يُطَوَّقُهٗ يَوْمَ

2. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला माल व दौलत से नवाज़े फिर वह उसका हक़ अदा न करे तो वह माल उसके सामने क़ियामत के दिन एक गंजे नाग की

الْقِيَامَةِ ثُمَّ يَأْخُذُ بِلِهْزِمَتَيْهِ يَعْنِيْ بِشِدْقَيْهِ ثُمَّ يَقُوْلُ أَنَا مَالُكَ! أَنَا مَالُكَ! ثُمَّ تَلاَ : وَلَايَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ الخ.

(رواه البخاري ١٨٨/١)

शक्ल में लाया जायेगा जिसकी आँख के ऊपर दो काले नुक़्ते होंगे (जो उस साँप के शदीद ज़हरीले होने की निशानी है) यह साँप उस मालदार के गले में क़ियामत के दिन तौक़ बन जायेगा। फिर उसका जब्ड़ा पकड़कर कहेगा। मैं हूं तेरा माल, मैं हूं तेरा ख़ज़ाना।

फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत-ए-शरीफ़ा तिलावत फ़रमाई: وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ...الخ जिसका तर्जुमा यह है: और न ख़्याल करें वे लोग जो कन्जूसी करते हैं उस चीज़ पर जो अल्लाह न उनको दी है अपने फ़ज़्ल से कि यह कन्जूसी बेहतर है उनके हक़ में, बल्कि यह बहुत बुरा है उनके हक़ में, तौक़ बनाकर डाला जायेगा उनके गलों में वह माल जिसमें कन्जूसी की थी, क़ियामत के दिन।

(٣) عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا مِنْ يَوْمٍ يُصْبِحُ الْعِبَادُ فِيْهِ إِلَّامَلَكَانِ يَنْزِلَانِ فَيَقُوْلُ أَحَدُهُمَا اَللّٰهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا وَيَقُوْلُ الْآخَرُ اَللّٰهُمَّ أَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا.

(بخاري شريف ١٩٤/١، مسلم شريف مع النووي بيروت، حديث ١٠١٠)

3. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कोई भी दिन जिसमें अल्लाह के बन्दे सुब्ह करते हैं ऐसा नहीं गुज़रता कि उसमें आसमान से दो फ़रिश्ते नाज़िल न होते हों। उनमें से एक यह दुआ़ करता है कि ऐ अल्लाह (नेक काम में) ख़र्च करने वाले को इसका बेह्तरीन बद्ला अ़ता फ़रमा और दूसरा फ़रिश्ता यह दुआ़ करता है। ऐ अल्लाह कन्जूसी करने वाले को माली नुक़्सान से दो-चार फ़रमा।

इस हदीस से मालूम हुआ कि माली हक़ अदा करने से रू-गर्दानी खुद माली ऐतिबार से भी फ़ायदेमन्द नहीं है। हो सकता है कि वक़्ती तौर पर जी ख़ुश हो जाये कि हमने इतना माल बचा लिया। मगर फ़रिश्ते की मक़्बूल बद्-दुआ़ के असर से जब माल की बर्बादी लाज़िम आयेगी तो यह सारी ख़ुशी सेकंडों में ख़त्म हो जायेगी। याद रखिये माल की हिफ़ाज़त और तरक़्क़ी ज़कात व सद्क़ात

के रोकने में नहीं बल्कि उसकी अदायगी में है जैसा कि ऊपर दी गई हदीस से मालूम हुआ कि ख़र्च करने वाले के हक़ में फ़रिश्ते तलाफ़ी की दुआ करते हैं और तज्रिबा भी यह बताता है कि जिस माल की ज़कात हिसाब लगाकर अदा की जाती है वह माल आफ़ात से महफ़ूज़ हो जाता है। और ऐसे भी वाक़िआत हैं कि माल चोरी हो गया। मगर फिर हैरत अंगेज़ तरीक़े पर दोबारा बग़ैर किसी कमी के मिल गया।

हमारे एक करम फ़रमा दोस्त जो माशाअल्लाह पूरे एहतिमाम के साथ ज़कात निकालते हैं। एक मर्तबा उनकी फ़र्म से कई लाख रूपये नक़्द चोरी हो गये। बज़ाहिर नक़्द रूपया मिलने का इम्कान नहीं था क्योंकि उन्हें मिन्टों में कहीं से कहीं भी पहुंचाया जा सकता है। लेकिन दोचार रोज़ के अन्दर ही उनकी पूरी रक़्म ब-हिफ़ाज़त मिल गई। यह ज़कात निकालने की बरकत नहीं तो और क्या है?

मतलब यह कि माली हुक़ूक़ की अदायगी में कन्जूसी से काम लेना एक बद्- तरीन रूहानी मरज़ है जो दुनिया और आख़िरत दोनों जगह ज़िल्लत और रूस्वाई का सबब होता है। हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वजूहहु इर्शाद फ़रमाते हैं: सख़ी शख़्स लोगों का सरदार बन गया और कन्जूस शख़्स ज़लील रूस्वा हो गया। अल्लाह तआ़ला ने मालदारों के माल में फ़क़ीरों की रोटी मुक़र्रर की है। किसी मालदार की कन्जूसी की वजह ही से दुनिया में कोई फ़क़ीर भूखा रहता है। अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन इस बारे में मालदारों से पूछताछ करेगा।

(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़अ़ी, पेज 86)

इसलिए हमें अपने अन्दर से कन्जूसी दूर करने की कोशिश करनी चाहिए और सख़ावत की मुबारक सिफ़त अपने अन्दर पैदा करके दुनिया और आख़िरत की बरकतें हासिल करनी चाहिएं। ❐ ❐

तीसरी फ़स्ल

जूद-व-सख़ा (बख़्शिश)

सख़ावत अल्लाह तआ़ला की निहायत पसन्दीदा सिफ़त है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ. (سورة الحشر آيت: ١٩)

और जो बचाया गया अपने जी के लालच (हिर्स और कन्जूसी) से, तो वही लोग हैं मुराद पाने वाले।

और एक रिवायत में आया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

خُلُقَانِ يُحِبُّهُمَا اللّٰهُ وَخُلُقَانِ يُبْغِضُهُمَا اللّٰهُ، اَمَّا اللَّذَانِ يُحِبُّهُمَا اللّٰهُ فَالسَّخَاءُ وَالسَّمَاحَةُ، وَاَمَّا اللَّذَانِ يُبْغَضَانِ فَسُوْٓءُ الْخُلُقِ وَالْبُخْلُ، فَاِذَا اَرَادَ اللّٰهُ بِعَبْدٍ خَيْرًا اِسْتَعْمَلَهٗ عَلٰى قَضَآءِ حَوَآئِجِ النَّاسِ. (شعب الايمان ٤٣٦/٧)

दो आ़दतें अल्लाह तआ़ला को पसन्द हैं और उसे दो आ़दतें ना-पसन्द हैं। चुनाँचे जो दो आ़दतें पसन्द हैं वे सख़ावत और ख़ुश अख़्लाक़ी हैं और ना- पसन्दीदा आ़दतें बद्-ख़ुल्क़ी और कन्जूसी हैं। चुनांचे जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे लोगों की ज़रूरियात पूरी करने के काम में लगा देता है।

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि से एक मुर्सल रिवायत मरवी है जिसमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह इर्शाद नक़्ल किया गया है:

اِنَّ بُدَلَآءَ اُمَّتِىْ لَمْ يَدْخُلُوا الْجَنَّةَ بِكَثْرَةِ صَلٰوتِهِمْ وَلَاصِيَامِهِمْ وَلٰكِنْ دَخَلُوْهَا بِسَلَامَةِ صُدُوْرِهِمْ وَسَخَاوَةِ اَنْفُسِهِمْ. (شعب الايمان ٤٣٩/٧)

मेरी उम्मत के अब्दाल (नेक लोग) अपनी नमाज़ रोज़े की ज़्यादती से नहीं बल्कि अपने दिलों की सफ़ाई और सिफ़त-ए-सख़ावत की वजह से जन्नत में दाख़िल होंगे।

और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं: दुनिया में लोगों के सरदार सख़ी लोग हैं और आख़िरत में लोगों के सरदार मुत्तक़ी (परहेज़गार) लोग

हैं। (अत्तर्गीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ीई 84)

और हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि "मैंने सिफ़त-ए-सख़ावत पर ग़ौर किया तो इसकी असल यह मालूम हुई कि अल्लाह तआला से यह अच्छा गुमान रखा जाये कि वह अपने वादे की ख़िलाफ़ वरज़ी न करेगा इसलिए कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: وَمَا أَنفَقْتُم مِّن شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ (और जो कुछ ख़र्च करते हो वह उसका बदला देता है और वह बेहतर है रोज़ी देने वाला) इसके बर-ख़िलाफ़ कन्जूसी की असल वजह यह मालूम हुई कि उसका करने वाला "अल्लाह इससे पनाह में रखे," अल्लाह तआला से यह बद्-गुमानी रखता है कि वह अपना वादा पूरा न करेगा। (अत्तर्गीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ीई 85)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सख़ावत

अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा सरवरे काइनात फ़र्ख़े दो-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जहां दूसरे कमालात और औसाफ़-ए-हमीदा से सरफ़राज़ फ़रमाया था वहीं सिफ़त-ए-सख़ावत में भी आप आला तरीन मुक़ाम पर फ़ाइज़ थे। हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे ज़्यादा जूद-व-सख़ा वाले थे और रमज़ान मुबारक में तो तेज़ रफ़्तार हवा की तरह आप से सिफ़त-ए-सख़ावत ज़ाहिर होती थी। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी किसी मांगने वाले को महरूम नहीं फ़रमाया: (बुख़ारी शरीफ़ 2/892, मकारिमुल अख़्लाक़ 244) आप की सख़ावत-ए-मुबारका का कुछ अन्दाज़ा नीचे दिये गये वाक़िआत से लगाया जा सकता है।

अपनी चादर मांगने वाले को दे दी

1. हज़रत सहल बिन सअ्द रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा एक औरत आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक चादर लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! यह चादर मैंने अपने हाथ से बुनी है और इसे मैं आपकी ख़िद्मत में लाई हूँ ताकि आप इसे ज़ेब-ए-तन फ़रमा लें (पहन लें)। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत शौक़ से वह चादर क़ुबूल फ़रमाई। फिर उसी चादर को इज़ार (लुंगी) की जगह पहन कर

सहाबा के पास तशरीफ़ लाये। उसी वक़्त एक सहाबी हज़रत अ़ब्दुर रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दरख़्वासत की कि हज़रत यह चादर मुझको इनायत कर दीजिए, यह तो बहुत उ़मदा है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, बहुत अच्छा। फिर कुछ देर तशरीफ़ रखने के बाद आप अन्दर तशरीफ़ ले गये और दूसरा इज़ार बदल कर वह चादर सवाल करने वाले को भिजवा दी। यह माजरा देखकर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम इन सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर नकीर की कि जब तुम्हें मालूम था कि पैग़म्बर अ़लैहिस्सलाम किसी मांगने वाले को रद्द नहीं फ़रमाते तो तुमने यह चादर मांगकर अच्छा नहीं किया। उन्होंन जवाब दिया कि "मैं ने तो अपने कफ़न में इस्तिमाल करने के लिए यह दरख़्वास्त पेश की थी"। हज़रत सहल रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि वाक़इ ऐसा ही हुआ। जब हज़रत अ़ब्दुर रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु का इन्तिक़ाल हुआ तो आपको इसी चादर में कफ़न दिया गया। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ। (बुख़ारी शरीफ़ 1/170, 381, 2/864, 892 मकारिमल अख़्लाक़, पेज 245)

देहातियों की बे-अदबियों का तहम्मुल (बर्दाशत करना)

2. हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जंगे हुनैन से वापसी के वक़्त देहाती लोगों ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मांगना शुरू किया और आपको घेर लिया। यहां तक कि आप एक बड़े पेड़ के नीचे पहुंच गये और आप की चादर मुबारक उसमें उलझ गई। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन देहातियों से फ़रमाया कि लाओ मेरी चादर वापस करो, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है अगर इन कंकरियों की तादाद के बराबर भी ऊंट होंगे तो मैं उन्हें तुम्हारे दर्मियान बांट दूंगा और तुम मुझे झूठा, बुज़दिल या कन्जूस नहीं पाओगे। (मकारिमुल अख़्लाक़ 246)

3. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग मस्जिद में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इन्तिज़ार में बैठे हुए थे कि आप मस्जिद के दरवाज़े से एक नजूरानी चादर ओढ़े हुए तशरीफ़ लाये अचानक पीछे से एक देहाती ने आप की चादर मुबारक के कोने को पकड़कर अपनी तरफ़ खींचना शुरू किया यहां तक कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस देहाती के सीने के क़रीब हो गये। फिर देहाती आपसे कहने लगा कि "ऐ

मुहम्मद! आपके पास जो माल है उसमें से मुझे देने का हुक्म कीजिए।" यह सुनकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुस्कराये और उसे कुछ माल देने का हुक्म फ़रमाया। (मकारिमुल अख़्लाक़, पेज 247)

4. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मस्जिद में हमारे पास आकर बातें करते थे। एक मर्तबा तशरीफ़ लाये, बातें कीं, फिर आप उठकर हुजूरा-ए-मुबारका में तशरीफ़ ले जाने लगे। आप ने एक सख़्त किनारे वाली चादर ओढ़ रखी थी। इसी दर्मियान एक देहाती शख़्स ने आपकी चादर पकड़ कर इस ज़ोर से खींची कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की गरदन मुबारक चादर की रगड़ से सुर्ख़ हो गयी। फिर कहने लगे कि ऐ महुम्मद! ये मेरे दो ऊंट हैं इनमें से एक पर खजूर और एक पर जौ लादने का हुक्म दीजिए। इसलिए कि आप अपने या अपने वालिद के माल में से न देंगे (बल्कि बैतुल माल में से देंगे) नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तक तुम मेरे साथ की गई हरकत का फ़िद्‌या (जुर्माना) न दोगो मैं तुम्हें कुछ न दूंगा। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हमने जब देहाती का यह गुस्ताख़ाना अ़मल देखा तो हम उसे सज़ा देने के लिए उठ खड़े हुए। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जब यह देखा तो फ़रमाया कि ख़बरदार कोई शख़्स अपनी जगह से न उठे। चुनांचे हम ऐसे रूक गये जैसे कि हमें रस्सियों से बांध दिया गया हो। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि जाओ इस देहाती को एक ऊंट पर खजूर और एक पर जौ भरवा दो। और जो इसने हमारे साथ किया वह हम माफ़ करते हैं। (मकारिमुल अख़्लाक़ पेज 248)

मांगने वाले के लिए क़र्ज़ लेना

5. हज़रत उ़मर बिन अल्-ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कुछ मांगा, आप ने फ़रमाया कि इस वक़्त मेरे पास कुछ नहीं है लेकिन तुम मेरी ज़िम्मेदारी पर कोई चीज़ ख़रीद लो जब मेरे पास गुन्जाइश होगी तो मैं अदा कर दूंगा। यह जवाब सुनकर हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल! आपने इस शख़्स को यह मौक़ा दे दिया हालांकि अल्लाह तआ़ला ने क़ुद्‌रत से ज़्यादा का मुकल्लफ़

नहीं बनाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अच्छी नहीं लगी। फिर एक अन्सारी शख़्स हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि आप तो ख़र्च किये जाइये और अ़र्श के मालिक से कमी का अन्देशा मत कीजिए। अन्सारी की बात सुनकर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुस्करा उठे और आपका चेहरा-ए-अन्वर ख़ुशी से खिल गया। और फ़रमाया कि मुझे इसी का हुक्म दिया गया है। (मकारिमुल अख़्लाक़ 254)

एक कोड़े के बद्ले अस्सी (८०) बकरियाँ

6. अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र कहते हैं कि एक सहाबी जो जंगे हुनैन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ थे उन्होंने ब्यान किया कि मैं अपनी ऊंटनी पर सवार था और मेरे पैर में एक सख़्त जूता था मेरी ऊंटनी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़रीब चल रही थी कि अचानक भीड़ की वजह से इतनी क़रीब पहुंच गई कि मेरे जूते का किनारा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पिंडली में लग गया जिससे आपको तक्लीफ़ हुई, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेरे पैर पर कोड़ा मारा, फ़रमाया कि तुमने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई पीछे हो जाओ वह सहाबी फ़रमाते हैं फिर मैं पीछे चला गया। अगले दिन मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुझे तलाश करवा रहे हैं, तो मेरे दिल में एहसास हुआ कि शायद आपके पैर को तक्लीफ़ पहुंचाने का क़िस्सा है चुनांचे मैं डरते-डरते हाज़िर हुआ तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुमने अपने जूते से मेरे पैर को तक्लीफ़ पहुंचाई थी, जिसकी वजह से मैंने तुम्हारे पैर पर कोड़ा मारा था अब मैं ने तुम्हें इसका बद्ला देने के लिए बुलाया है। चुनांचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुझे उस एक कोड़े के मारने के बद्ले में अस्सी (80) बकरियाँ इनायत फ़रमाईं।

(मकारिमुल अख़्लाक़ 262)

बे-हिसाब बकरियाँ अ़ता की

7. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सबसे ज़्यादा सख़ी थे और जब भी आप से कोई चीज़ मांगी गई तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मना नहीं किया। एक

मर्तबा एक शख़्स मांगने के लिए आया, तो आपने उसे इतनी बकरियाँ देने का हुक्म फ़रमाया जो दो पहाड़ियों के दर्मियान आ जायें तो उस शख़्स ने अपनी क़ौम में जाकर यह कहा कि ऐ लोगो! इस्लाम ले आओ, इसलिए कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ऐसी बख़्शिशें अ़ता फ़रमाते हैं कि जिसके बाद किसी फ़क़्र व फ़ाक़े का कोई अन्देशा नहीं रहता।

(मुस्लिम शरीफ़ 2/253, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ई, पेज 87)

हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम वग़ैरह की सख़ावत (बख़्शिश) के कुछ वाक़िआ़त

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़ावत

1. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कुछ मांगने हाज़िर हुआ तो आपने मुझे मना फ़रमा दिया, मैं फिर हाज़िर हुआ फिर मना फ़रमा दिया, तो मैंने अ़र्ज़ किया कि या तो आप मुझे अ़ता कीजिए या मैं समझूंगा कि आप मुझ से कन्जूसी फ़रमा रहे हैं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि कन्जूसी से बुरी कौन सी बीमारी हो सकती है, बात यह है कि जब तुम मुझसे मांगने आये तो मैंने तुम्हें एक हज़ार देने का इरादा किया था, चुनांचे आपने मुझे तीन हज़ार गिनकर इनायत फ़रमाये। (मकारिमुल अख़्लाक़, पेज 264)

2. हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें सदक़ा देने का हुक्म दिया, उस वक़्त मेरे पास माल था, चुनाँचे मैंने सोचा कि आज तो मैं हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु से आगे हो जाऊंगा, इसलिए मैं आधा माल लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ तो आपने फ़रमाया उ़मर! घर वालों के लिए क्या छोड़ा? मैंने अ़र्ज़ किया, आधा छोड़ कर आया हूँ! हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उसके बाद हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपना सारा माल लेकर हाज़िर हुए और आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पूछने पर जवाब दिया कि मैंने अपने घर वालों के लिए सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ा

है। हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कह दिया कि अब आइंदा मैं आपसे आगे बढ़ने का मुक़ाबला कभी नहीं करूंगा। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ओ़ी, पेज 87)

3. हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब इस्लाम लाये तो चालीस हज़ार दिरहम के मालिक थे। यह सारी रक़्म अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दी। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ओ़ी, पेज 87) और बहुत से गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया जिनमें हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु, हज़रत आ़मिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे जलीलुल क़द्र हज़रात शामिल हैं। (मकारिमुल अख़्लाक़)

4. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मर्तबा इर्शाद फ़रमाया कि किसी के माल ने मुझे इतना नफ़ा नहीं पहुंचाया जितना मुझे अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के माल ने नफ़ा पहुंचाया है। यह सुनकर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु रोने लगे और अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं और मेरा माल तो सिर्फ़ आप ही के लिए है। (असदुल ग़ाबा 3/222)

हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़ावत

5. मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मुझे यह ख़बर मिली है कि एक मर्तबा अमीरूल मौमिनीन सय्यिदना उ़मर बिन अल्-ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु के किसी रिश्तेदार ने उनसे कुछ मांगा। आप ने उसे डांटकर मज्लिस से निकाल दिया। इस वाक़िए पर लोगों में बातें हुईं। और हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा गया कि फ़्लां शख़्स को क्यों निकाल दिया गया? तो हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जवाब दिया कि वह फ़्लां शख़्स अल्लाह के माल के बारे में सवाल करने आया था। इसमें से अगर उसे दे देता तो फिर अल्लाह के दरबार में क़ियामत के दिन ख़ियानत करने वाले हाकिम की सूरत में पेश होकर क्या जवाब देता। अगर उस शख़्स को मांगना था तो मेरे ज़ाती माल में से मांगता। फिर आपने उसे दस हज़ार दिरहम भिजवाये। (मकारिमुल अख़्लाक़ 266)

हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़ावत

6. जंगे तबूक के मौक़े पर सय्यिदना हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने

मिसाली क़ुरबानी का सुबूत देते हुए 300 ऊंट साज़ व सामान के साथ सद्क़ा फ़रमाये। और फिर एक हज़ार अशरफ़ियाँ लेकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर हुए। और उन्हें आपकी गोद में डाल दिया। यह हदीस ब्यान करने वाले कहते हैं कि वे अशरफ़ियाँ आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपने मुबारक हाथों से उलटते पलटते थे और यह फ़रमाते थे कि "مَا ضَرَّ ابْنَ عَفَّانَ مَا فَعَلَ بَعْدَ هٰذَا" (आज के बाद उ़स्मान कुछ भी करते रहें, उनका कुछ न बिगड़ेगा) मतलब यह कि इस सद्क़े की क़ुबूलियत की बरकत से उन्हें कामिल ख़ैर की तौफ़ीक़ नसीब होगी। (मकारिमुल अख़्लाक़, 266)

7. एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा में क़हत साली (अकाल) हुई। सय्यिदना उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़नहु ने शाम के इलाक़े से सौ ऊंट अनाज मंगवाया। जब अनाज से भरे ऊंट मदीना पहुंचे तो शहर के ताजिर हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास आये और दरख़्वास्त की कि ऐ अमीरूल मौमिनीन! जितने दिरहम में आप ने यह अनाज मुल्के शाम से ख़रीदा है उसी के बराबर नफ़ा देकर हम यह अनाज ख़रीदने को तैयार हैं।

हज़रत उ़स्मान ने जवाब दिया कि इससे ज़्यादा क़ीमत लग चुकी है। तो ताजिरों ने कहा कि अच्छा दोगुने नफ़े पर दे दीजिए। हज़रत ने फिर जवाब दिया कि इससे भी ज़्यादा का भाव लग चुका है। ताजिर भी नफ़ा बढ़ाते रहे यहां तक कि पांच गुना तक के नफ़े पर आ गये और हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु फिर भी तैयार न हुए और यही फ़रमाते रहे कि इसकी ज़्यादा क़ीमत लग चुकी है यह सुनकर ताजिरों ने कहा कि आख़िर किसने आप से ज़्यादा क़ीमत लगा दी, मदीने के ताजिर तो हम ही हैं। हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने दस गुना अ़ता करने का फ़ैसला फ़रमाया है। तो क्या तुम लोग इतना या इससे ज़्यादा देने पर राज़ी हो। ताजिरों ने इंकार कर दिया। फिर हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ऐलान किया कि ऐ लोगो! मैं तुम्हें गवाह बनाकर कहता हूं कि यह सारा अनाज मदीने के फ़क़ीरों और मसाकीन पर सद्क़ा है। और वह अनाज सब मुह्ताजों में बटवा दिया। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्‌-याफ़ई़ 87)

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़ावत

8. अबू जाफ़र कहते हैं कि अगरचे इन्तिक़ाल के वक़्त तक हज़रत अ़ली

रज़ियल्लाहु अन्हु की सालाना आमदनी एक लाख दिरहम तक पहुंच गई थी लेकिन शहादत के दिन आप पर सत्तर हज़ार दिरहम क़र्ज़ थे। मैंने लोगों से पूछा कि आख़िर इतना ज़्यादा क़र्ज़ आप पर कैसे हो गया, तो जवाब मिला कि बात यह थी कि आपके वह दोस्त, अह्बाब और रिश्तेदार जिनका माल-ए-ग़नीमत में बा-क़ायदा हिस्सा मुक़र्रर नहीं था आपके पास आकर मांगते तो आप उन्हें देते जाते थे। आपकी वफ़ात के बाद हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपकी जायदाद वग़ैरह बेचकर क़र्ज़ अदा किया और हर साल हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से सौ ग़ुलाम आज़ाद करते थे। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरीक़े को ज़िन्दा रखा, यहां तक कि शहीद हो गये। फिर बाद में यह तरीक़ा जारी न रह सका। (मकारिमुल अख़्लाक़, 270)

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु की सख़ावत

9. हज़रत तल्हा बिन उ़बैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मर्तबा अपनी ज़मीन हज़रत उ़स्मान को सात लाख दिरहम में बेची। जब यह रक़्म आपके पास आयी तो आपको ख़्याल हुआ कि अगर यह माल रात भर रखा रहा और इसी दौरान मौत आ गई तो क्या होगा? इसलिए इसे अपने ख़ादिमों के ज़रिये मदीने के फ़ुक़रा, मसाकीन और बेवा औरतों को रातभर तक़्सीम करते रहे यहां तक कि सुब्ह होने तक उनमें से एक दिरहम भी बाक़ी न बचा। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, 88)

10. ज़ियाद बिन जरीर कहते हैं कि एक बार हज़रत तल्हा बिन उ़बैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ही मज्लिस में एक लाख दिर्हम तक़्सीम फ़रमा दिये। जब कि आप की सादगी का यह हाल था कि अपनी चादर का किनारा ख़ुद ही सी लिया करते थे। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, 89)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सख़ावत

11. एक मर्तबा अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़ाला मुह्तरमा उम्मुल मौमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िद्मत में दो थैलियों में भरकर अस्सी हज़ार दिरहम रवाना किये। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा उस दिन रोज़े से थीं। मगर सुब्ह से थाल में दिरहम रखकर

फ़ुक़रा और मोहताजों को बांटने के लिए तशरीफ़ फ़रमा हुई और शाम तक सारी रक़्म बांट दी। एक दिरहम भी बाक़ी न रहा। शाम को ख़ादिमा इफ़्तार के लिए रोज़ाना की तरह रोटी और तेल लायी और अ़र्ज़ किया कि अम्मा जान! अगर आप इस माल में से एक दिरहम बचाकर उसका गोश्त मंगा लेतीं तो आज उसी से इफ़्तार कर लिया जाता। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया: अगर तुम पहले से याद दिलातीं तो मैं तुम्हारी यह ख़्वाहिश पूरी कर देती। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ई़, 88)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़ावत

12. हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास एक शख़्स ने आकर अल्लाह के वास्ते कुछ मांगा। तो हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने ग़ुलाम से कहा कि इसे पांच सौ दे दो। ग़ुलाम ने पूछा कि हज़रत! दीनार दूं या दिरहम? हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मेरा इरादा तो असल में दिरहम ही देने का था। मगर जब तुमने साइल (मांगने वाला) के सामने दीनार का ज़िक्र कर दिया तो अब पांच सौ दीनार ही दे दो। यह सुनकर मांगने वाला रोने लगा। हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूछा क्यों रोते हो? उसने अ़र्ज़ किया कि मेरे आक़ा! मैं यह सोच रहा हूं कि आप जैसे फ़ज़्ल व करम वाले को ज़मीन अपने अन्दर कैसे समोयगी। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, 89)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़ावत

13. शहर बिन होशब कहते हैं कि एक शख़्स अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास कुछ मांगने आया। उस वक़्त उनकी बांदी उनके सामने किसी ख़िद्मत में लगी थी। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने उस मांगने वाले से कहा कि इस बांदी को पकड़ कर ले जाओ। यह तुम्हारी है। यह सुनकर बांदी बोली, मेरे आक़ा आपने तो मुझे मार डाला। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया, यह कैसे? बांदी ने कहा कि आप ने मुझे ऐसे शख़्स को दे दिया जिसकी तंग-दस्ती ने उसे मांगने पर मजबूर कर दिया है। बांदी की यह बात सुनकर अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उस मांगने वाले से फ़रमाया कि अगर तुम्हारा जी चाहे तो यह बांदी मेरे हाथ बेच दो। उस शख़्स ने कहा

बहुत अच्छा। जिस क़ीमत पर आप चाहें इसे ले लें। तो हज़रत ने फ़रमाया, मैं ने इसे सौ अशरफ़ी में ख़रीदा था अब तुम मुझे दो-सो अशरफ़ी में इसे दे दो। चुनांचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह बांदी वापस ले ली और मांगने वाले को दो-सो अशरफ़ी देकर फ़रमाया जब ये ख़त्म हो जायें तो फिर आ जाना। यह हैरतअंगेज़ माजरा देखकर बांदी ने अ़र्ज़ किया मेरे आक़ा मेरी वजह से आपको बड़ा बोझ उठाना पड़ा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि तेरी इज़्ज़त मेरे नज़्दीक तेरे ऊपर ख़र्च किये गये माल से ज़्यादा है।

(मकारिमुल अख़्लाक़ 273)

14. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपने पड़ौस के चालीस ख़ानदानों पर ख़र्च किया करते थे और ईदैन (दोनों ईद) के मौक़े पर उनके लिए कपड़े वग़ैरह बनाकर भेजते थे। एक मर्तबा आपका गुज़र एक बस्ती पर हुआ। गर्मी से बचने के लिए आप एक खजूर के बाग़ में एक पेड़ के साये में अरामा फ़रमा हुए। उसी दौरान आपने देखा कि एक हब्शी ग़ुलाम बाग़ की निगरानी कर रहा है। उसके लिए दोपहर का खाना लाया गया जिसमें रोटी के चंद टुकड़े थे। जब उस ग़ुलाम ने खाने का इरादा किया तो वहां एक कुत्ता आ पहुंचा। उसने रोटी का एक टुकड़ा कुत्ते के सामने फैंक दिया। जब वह खा चुका तो दूसरा और तीसरा टुकड़ा भी फैंक दिया। अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु यह माजरा देख रहे थे। आपने उस ग़ुलाम से पूछा कि रोज़ाना तुम्हारे खाने का क्या इन्तिज़ाम है? उसने कहा कि यही रोटी के तीन टुकड़े आ जाते हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूछा कि तुमने अपने मुक़ाबले में कुत्ते को क्यों अहमियत दी? तो उस ग़ुलाम ने जवाब दिया, बात यह है कि यह इलाक़ा कुत्तों का नहीं है, यह कुत्ता बहुत दूर से चलकर मेरे पास आया है। मैंने यह पसन्द नहीं किया कि यह बेचारा ख़ाली वापस जाये। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूछा, फिर अब तुम दिन भर क्या करोगे? ग़ुलाम ने जवाब दिया अब मैं अगले दिन तक भूखा रहूंगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने दिल में सोचा कि मुझे सख़ावत पर मलामत (डाँट डपट) की जाती है। हालांकि यह ग़ुलाम तो मुझसे भी बड़ा सख़ी है। फिर ग़ुलाम से पूछा कि इस बाग़ का मालिक कौन है? उसने बताया कि मदीने में रहने वाले फ़्लां शख़्स हैं। चुनांचे अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब मदीना तशरीफ़

लाये तो उस बाग़ के मालिक से पूरा बाग़ ग़ुलाम समेत ख़रीद लिया और फिर ग़ुलाम को बुलाकर फ़रमाया कि तू अल्लाह के लिए आज़ाद है और यह बाग़ तेरी मिल्कियत है। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ओ़ी, 90)

15. अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साहबज़ादे मुआ़विया से पूछा गया कि यह बताइये कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु की सख़ावत कहां तक पहुंची हुई थी? तो उन्होंने जवाब दिया कि वह अपने माल में सब लोगों को बराबर का शरीक समझते थे, जो भी मांगने आता उसे भरपूर अ़ता फ़रमाते। यह न सोचते कि उन्हें ख़ुद ज़रूरत है, इसलिए देने में कमी करें। और न यह ख़्याल करते थे कि वह बाद में मोह्ताज हो जाएंगे इसलिए जमा करके रखें। (शुअ़बुल ईमान 4/437)

सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की सख़ावत

16. एक शख़्स ब्यान करते हैं कि मैं बीस या तीस ऊंट लेकर मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुआ, ताकि लोगों से खजूरों का सवाल करूं तो लोगों ने मुझ से कहा कि अ़म्र बिन उ़स्मान और हुसैन बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा अपने अपने बाग़ों में हैं। उनसे जाकर मांगो। चुनांचे सबसे पहले मैं हज़रत अ़म्र बिन उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास पहुंचा। उन्होंने दो ऊंट भर कर खजूरें अ़ता फ़रमाईं। फिर किसी शख़्स ने मुझे मश्वरा दिया कि तुम हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास जाओ। चुनांचे मैं उनके बाग़ीचे में पहुंचा। मैं उन्हें पहचानता नहीं था, देखा कि एक आदमी ज़मीन पर बेठा है और उसके चारों तरफ़ ग़ुलाम बैठें हैं। बीच में एक बड़ा प्याला है जिसमें मोटी रोटी और गोश्त है और वह सब मिलकर खा रहे हैं। मैंने जाकर सलाम किया और दिल में सोचा कि यह आदमी तो शायद कुछ भी न दे। बहरहाल हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने मुझे बुलाया और अपने साथ खिलाया। फिर पानी की एक छोटी नहर की तरफ़ गये और पानी पिया और हाथ धोये। फिर मुझ से मुख़ातब होकर फ़रमाया, कैसे आना हुआ? मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं अपने कुछ ऊंट लेकर यहां हाज़िर हुआ हूं, मेरा इरादा आप हज़रात से खजूरें लेकर उन्हें भर कर ले जाने का है। हज़रत ने फ़रमाया कि जाओ, अपने ऊंट ले आओ। चुनाँचे मैं ऊंट लेकर हाज़िर हुआ, तो फ़रमाया कि उस कोठरी में चले जाओ उस में खजूरें रखी

हुई हैं, जितना भर सको, भर लो, यह रिवायत ब्यान करने वाले कहते हैं कि मैंने अपनी सारी ऊंटनियाँ खजूरों से भर लीं और चला आया और दिल में सोचने लगा कि वाक़ई यह है सख़ावत। (मकारिमुल अख़्लाक़, पेज 275)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की सख़ावत

17. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु बसरा तशरीफ़ लाये और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मेहमान हुए। आपने अपना मकान हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए ख़ाली फ़रमा दिया और कहा कि जिस तरह आप ने (हिजरत के मौक़े पर) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मुआमला फ़रमाया था अब मैं भी आप के साथ वैसा ही मुआमला करूंगा। फिर पूछा कि आप पर कितना क़र्ज़ है? हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि बीस हज़ार। चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने 40 हज़ार अता फ़रमाये और साथ ही बीस ग़ुलाम देकर फ़रमाया कि घर में जो भी सामान है वह भी आप ही का है। (मकारिमुल अख़्लाक़, पेज 279)

ख़ानवादा-ए-नुबुव्वत की सख़ावत का नमूना

18. हुमैद बिन बिलाल कहते हैं कि बनू हाशिम और बनू उमैया के दो आदमियों में बहस छिड़ गई। एक ने कहा कि मेरा ख़ानदान ज़्यादा सख़ी है और दूसरे ने दावा किया कि हमारा ख़ानदान ज़्यादा सख़ावत करने वाला है। आख़िरकार यह बात तै हुई कि अपने-अपने ख़ानदान वालों से चन्दे का तज्रिबा करके फ़ैसला किया जाये। चुनांचे दोनों शख़्स अपनी अपनी मुहिम पर रवाना हुए। उमवी शख़्स ने अपनी क़ौम के दस आदमियों से सिर्फ़ एक लाख रूपये जमा किये जबकि हाशिमी शख़्स सबसे पहले उबैदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया। उन्होंने एक लाख दिरहम इनायत किये। फिर सय्यिदना हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया उन्होंने एक लाख तीस हज़ार दिरहम दिये फिर सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया उन्होंने भी एक लाख तीस हज़ार दिये। इस तरह सिर्फ़ तीन हज़रात से तीन लाख साठ हज़ार दिरहम जमा हो गए। चुनांचे हाशिमी अपने दावे में उमवी पर

ग़ालिब आ गया। फिर यह तै हुआ कि यह माल जिनसे लिया है उन्हें लोटा दिया जाये। चुनाचें उमवी शख़्स अपना जमा किया हुआ माल लेकर मालिकान के पास गया और पूरी बात बताकर माल वापस कर दिया और उन सबने क़ुबूल भी कर लिया और हाशिमी शख़्स जब माल लोटाने गया तो उन हज़रात ने लेने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि हम देकर वापस नहीं लिया करते।

(मकारिमुल अख़्लाक़, 280)

हज़रत लैस बिन सअ़द रहमतुल्लाहि अ़लैहि की सख़ावत

19. हज़रत लैस बिन सअ़द रहमतुल्लाहि अ़लैहि बड़े मालदार थे। उनकी सालाना आमदनी अस्सी हज़ार अशरफ़ी थी लेकिन कभी भी उन पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं हुई। यह अपना सब माल फ़ुक़रा, दोस्त, अहबाब और रिश्तेदारों पर ख़र्च कर दिया करते थे और साल के ख़त्म होने पर उनके पास इस क़द्र माल बाक़ी नहीं रहता था जिसपर ज़कात वाजिब हो जाए। एक मर्तबा उनके पास एक औ़रत शीशे का प्याला लेकर हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया कि मेरा शौहर बीमार है। उसे शहद की ज़रूरत है। इस प्याले में शहद अ़ता फ़रमा दें। आपने उसे शहद का पूरा बरतन देने का हुक्म फ़रमाया। लोगों ने पूछा कि उसने तो सिर्फ़ एक प्याला मांगा था तो आपने पूरा बरतन दे दिया। तो आपने जवाब दिया कि उसने अपने ऐतिबार से मांगा और हमने अपने ऐतिबार से दिया।

(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिलू-याफ़अ़ी, 89)

क़ुतैबा फ़रमाते हैं कि लैस बिन सअ़द रोज़ाना बहुत से मिसकीनों पर सद्क़ा किया करते थे। और इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अ़लैहि, इब्ने लेहीआ़ और दूसरे उ़लमा को तोहफ़े भेजते थे। (शुअ़बुल ईमान 7/449)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने आ़मिर रहमतुल्लाहि अ़लैहि की सख़ावत

20. अ़ब्दुल्लाह इब्ने आ़मिर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने ख़ालिद बिन उ़क़्बा से एक घर 70 या 80 हज़ार दिरहम में ख़रीदा। जब रात हुई तो महसूस हुआ कि ख़ालिद के घर वाले रो रहे हैं। अ़ब्दुल्लाह बिन आ़मिर ने अपने घर वालों से पूछा कि यह रोने की आवाज़ कैसी है? लोगों ने जवाब दिया कि ख़ालिद के घर वाले अपने घर के बिकने पर ग़म कर रहे थे। यह मालूम होते ही अ़ब्दुल्लाह बिन

आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि ने उसी वक़्त अपने गुलाम को भेजा कि जाओ उन घर वालों से कह दो कि पूरी रक़्म और घर सब तुम्हारी मिल्कियत है। (शुअबुल ईमान 7/438) इसी तरह का वाक़िआ अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ओ़ी में पेज 90 पर भी है।

सुलहा-ए-उम्मत (नेक लोगों) के ये चंद वाक़िआत हमारे लिए इब्रत आमेज़ और नसीहत अंगेज़ होने चाहियें। हमें जाइज़ा लेना चाहिए कि हमारे दिल में अपने माल से कैसा शदीद लगाव पैदा हो गया है। और दूसरों के फ़ायदे के मुक़ाबले में हमें अपना फ़ायदा कितना अ़ज़ीज़ (प्यारा) होता जा रहा है। अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का तक़ाज़ा और अपने दिल को रूहानी मरज़ों से बचाने का तक़ाज़ा यही है कि हम अपने मालों में जहाँ तक हो सके दूसरों का हक़ भी तै करें और ज़रूरत मन्दों की ज़रूरियात का ख़्याल रखें। इसी वजह से हदीस शरीफ़ में इर्शाद फ़रमाया गया है: نِعْمَ الْمَالُ الصَّالِحُ لِلرَّجُلِ الصَّالِحِ.

(मुस्नद अहमद 4/197, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़ओ़ी, पेज 90)

यानी अच्छा माल नेक आदमी के लिए बेहतरीन मददगार है। वह उस को सही जगह ख़र्च करके अपने लिए आख़िरत में बहुत ऊंचे दरजात हासिल कर सकता है। ☐ ☐

चौथी फ़स्ल

मेह्मान नवाज़ी

जूद व सख़ा की सिफ़त का सबसे ज़्यादा मुज़ाहरा ज़ियाफ़त और मेहमान नवाज़ी की सूरत में होता है। इसी वजह से शरीअ़त में मेहमान के साथ अच्छा बर्ताव करने की ताकीद की गई है। बुख़ारी व मुस्लिम में रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهٗ. (بخاری ۸۸۹/۲ عن ابی ہریرۃ)

जिसे अल्लाह और आख़िरत पर यक़ीन हो उसे चाहिए कि अपने मेहमान का इक्राम करे।

एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मर्तबा हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि अल्लाह तआ़ला ने ख़ास तौर पर किस अ़मल की वजह से हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को अपना ख़लील (दोस्त) बनाया तो हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि उनकी खाना खिलाने की सिफ़त की वजह से उन्हें मुक़ाम-ए-ख़ुल्लत अ़ता किया गया।

(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब लिल्-याफ़अ़ी 94)

हज़रत इकरिमा रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम इतने बड़े मेहमान नवाज़ थे कि उनका लक़ब ही "अबुज़् ज़ेफ़ान" (मेह्मानों के बाप) पड़ गया था। आप के दौलतख़ाने के चार दरवाज़े थे ताकि किसी अजनबी शख़्स को आने में दुश्वारी न हो। और हज़रत अ़ता फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम मेह्मान की तलाश में कभी-कभी एक-एक, दो-दो मील चले जाते थे कि उन्हें साथ बिठाकर दोपहर या रात का खाना खिलायें। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 94)

हज़रत मुजाहिद आयत-ए-क़ुरआनी هَلْ اَتَاكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرَاهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ۔ की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का मामूल था कि वह मेहमान की ख़िद्मत ख़ुद अपने हाथों से किया करते थे और उनके साथ निहायत बशाशत और ख़ुशरूई से पेश आते थे। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 94)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की मेहमान नवाज़ी

हमारे आक़ा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आला दरजे के मेहमान नवाज़ थे। असहाब-ए-सुफ़्फ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम तो गोया आप के मुस्तक़िल मेह्मान थे ही। वैसे भी मदीने में जो क़ाफ़िले आते वे सब आप के मेह्मान रहते थे। कभी बहुत ज़्यादा मेह्मान आ जाते तो आप अपने घरों में मालूम कराते जहां से भी खाने का इन्तिज़ाम हो जाता मेह्मान को पेश किया जाता। अगर अज़्वाज-ए-मुतह्हरात में से किसी घर में भी इन्तिज़ाम न हो पाता तो आप उन मेह्मानों को अपने जाँ-निसार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में बांट देते और जिस सहाबी को भी यह सआदत मिलती वह उस का जहाँ तक हो सकता पूरी बशाशत और खुशदिली से हक़ अदा करता। एक मर्तबा इसी तरह का वाक़िआ पेश आया। एक शख़्स आपके यहां मेहमान हुआ। आप ने अज़्वाज-ए-मुतह्हरात के घरों में खाने को मालूम कराया, इत्तिफ़ाक़ से किसी के यहां भी इन्तिज़ाम न था, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मज्लिस में मौजूद सहाबा से फ़रमाया कि मेरे इस मेह्मान की कौन मेज़्बानी करेगा? तो हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! यह सआदत मैं हासिल करूंगा। चुनांचे उस मेह्मान को लेकर हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु घर पहुंचे और अपनी पाक मिजाज़ बीवी हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि खाने का क्या इन्तिज़ाम है? उन्होंने जवाब दिया कि बस हमारे और बच्चों के लिए इन्तिज़ाम है। हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि बच्चों को बह्ला-फुसला कर सुला दो और जब दस्तरख़्वान बिछाओ तो चराग़ बुझा देना और मेह्मान के साथ मैं बैठ जाऊंगा और यह एहसास दिलाउंगा कि मैं भी खा रहा हूं ताकि मेह्मान को बुरा न लगे। चुनांचे बीवी ने ऐसा ही किया। अपना सारा खाना उन दोनों ने मेह्मान को खिला दिया और खुद हालांकि दिन में रोज़े से थे, भूखे ही सो गये। सुब्ह जब नमाज़-ए-फ़ज्र में हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर हुए तो आप ने देखते ही फ़रमायाः अबू तल्हा रात तुम्हारा अपने मेह्मान के साथ मुआमला अल्लाह तआला को बड़ा पसन्द आया और उसने तुम दोनों मियाँ बीवी की शान में यह आयत नाज़िल फ़रमाई हैः وَيُؤْثِرُوْنَ

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ (सूरः हश्र, आयत 9) तर्जुमाः और मुक़द्दम रखते हैं उनको अपनी जान से और अगरचे हो अपने ऊपर फ़ाक़ा।

(बुख़ारी 1/535, वग़ैरह अ़न अबी हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

यह एक ही वाक़िआ़ नहीं बल्कि हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का आ़म मामूल मेहमान के इक्राम का था। जिसकी तफ़्सीलात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की सीरत में मौजूद हैं।

हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि का मेहमान के साथ मुआ़मला

रजा बिन हयात ने एक मर्तबा ख़लीफ़ा-ए-आ़दिल अमीरूल मौमिनीन हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि के साहबज़ादे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ से कहा कि मैंने तुम्हारे वालिद-ए-मुह्तरम से ज़्यादा कामिल अक़्ल वाला शख़्स नहीं देखा। एक रात में उनका मेह्मान हुआ, अभी हम लोग बातें कर रहे थे कि चराग़ बुझ गया। हमारे क़रीब एक ख़ादिम सो रहा था। मैंने अ़र्ज़ किया कि इस ख़ादिम को जगा दीजिए वह चराग़ जलायेगा। तो हज़रत ने फ़रमाया नहीं वह सो गया है। फिर मैंने अ़र्ज़ किया कि अच्छा तो मैं जाकर उसको दुरूस्त कर लाऊं, तो आप ने फ़रमाया कि अपने मेह्मान से ख़िद्मत लेना शराफ़त और मुरव्वत के ख़िलाफ़ है। फिर आप ख़ुद उठे और चराग़ की बत्ती दुरूस्त की और उसमें तेल डालकर जलाकर लाये। फिर फ़रमाया कि मैं जब गया था तो भी उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ था और आया तो भी उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ही रहा। यानी इस चराग़ जलाने से मेरी हैसियत में कोई भी तब्दीली नहीं हुई।

(शुअ़बुल ईमान 7/102)

मालूम हुआ कि मेह्मान किसी भी दर्जे का हो उसका इक्राम यह है कि मेज़बान उससे कोई काम न ले बल्कि हर मुम्किन तरीक़े पर उसे राहत पहुंचाने की कोशिश करे।

इब्ने औ़न फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि और हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि के दौलत ख़ाने (घर) पर ठहरने का इत्तिफ़ाक़ हुआ तो ये दोनों हज़रात ख़ुद खड़े होकर मेरे लिए बिस्तर बिछवाते थे। और हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि को तो मैंने अपने

दस्ते मुबारक (हाथ) से बिस्तर झाड़ते हुए देखा है। (शुअ़बुल ईमान 7/102)

मेहमान के हुक़ूक़

मेहमान के हुक़ूक़ के बारे में हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अश्रफ़ अ़ली थानवी क़द्दस सिर्रहू ने चन्द जामेअ़ (मुकम्मल) बातें इर्शाद फ़रमाई हैं। आप फ़रमाते हैं कि:

1. आने के वक़्त बशाशत (ख़ुशी) ज़ाहिर करना और जाने के वक़्त कम से कम दरवाज़े तक साथ जाना।
2. उसके मामूलात व ज़रूरियात का इन्तिज़ाम करना जिससे उसको राहत पहुंचे।
3. तवाज़ो, इक्राम और मुदारत (ख़ातिर दारी) के साथ पेश आना, बल्कि अपने हाथ से उनकी ख़िद्मत करना।
4. कम से कम एक रोज़ उसके लिए खाने में कोई अच्छी चीज़ (या उसकी पसन्द मालूम करके) बनाना, मगर इतना ही जितना अपने बस में हो और उसको शर्मिंदगी न हो और कम से कम तीन दिन तक उसकी मेह्मान दारी करना। इतना तो उसका ज़रूरी हक़ है। इसके बाद जिस क़द्र वह ठहरे मेज़्बान की तरफ़ से एहसान है। मगर ख़ुद मेह्मान ही को मुनासिब है कि उसको तंग न करे, न ज़्यादा ठहर कर और न बेजा फ़रमाइश करके। न उसके खाने के प्रोग्राम और नशिस्त व ख़िद्मत में दख़्ल दे।

(रिसाला हुक़ूक़ुल इस्लाम दर-इस्लाही निसाब 438)

ये आदाब अहादीस से साबित हैं। एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि "जिसका ईमान अल्लाह तआ़ला और आख़िरत के दिन पर हो तो वह अपने मेह्मान का इक्राम जाइज़ा (इन्आ़म) से करे।

सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! यह जाइज़ा क्या है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक दिन रात (का पुर तकल्लुफ़ एहतिमाम) और मेह्मानी तीन दिन है और जो इस से ज़्यादा खिलायेगा वह उसपर सद्क़ा शुमार होगा। और किसी शख़्स के लिए यह हलाल नहीं है कि

वह किसी के यहां इतने दिन ठहरे कि उसे गुनाहगार कर दे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया यह गुनाहगार करने का क्या मतलब? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यानी मेह्मान ठहरा रहे और मेज़्बान के पास खिलाने को कुछ न हो (जिस का नतीजा यह निकलेगा कि या तो वह बद-अख़्लाक़ी पर मजबूर होगा या उसे खिलाने के लिए सख़्त तक्लीफ़ और परेशानी झेलनी होगी)। (मुस्लिम शरीफ़ बहवाला शुअ्बुल ईमान 7/90)

इस रिवायत से मालूम हुआ कि मेह्मान की ख़ातिर करना अगरचे मेज़्बान की अख़्लाक़ी और दीनी ज़िम्मेदारी है लेकिन मेह्मान को भी चाहिए कि वह अपने अ़मल से मेज़्बान को तक्लीफ़ में मुब्तला न करे।

मेह्मान की ज़िम्मेदारी

आजकल जहां मेह्मान के हुक़ूक़ की अदायगी में कमी आ़म बात है वहीं मेह्मान की तरफ़ से मेज़्बान के आराम और सहूलत के लिए जो ज़िम्मेदारी अदा होनी चाहिए। उसमें भी बहुत ज़्यादा लापरवाही बरती जा रही है। इस सिलसिले में चन्द बातों का ख़्याल रखना निहायत ज़रूरी है:

1. मेज़्बान को अपने आने की ख़बर पहले से दे दी जाये और अगर किसी वजह से प्रोग्राम बदल जाये तो इसकी भी ख़बर ज़रूर दी जाये।
2. अगर पहले से ख़बर न हो तो कोशिश की जाये कि बे-वक़्त (जैसे खाने या आराम के वक़्त) मेज़्बान के यहां न पहुंचना हो (मगर यह कि इस बात का पक्का यक़ीन हो कि मेज़्बान उस वक़्त अचानक आने से नागवारी महसूस न करेगा)।
3. अगर मेज़्बान के यहां खाना खाने का इरादा न हो तो जाते ही उसको ख़बर कर दें कि वह खाने के इन्तिज़ाम में न लगे।
4. अगर कम मिर्च या परहेज़ी खाना खाने का मामूल हो तो पहले से या जाते ही मेज़्बान को ख़बर कर दें, क्योंकि खाना आ जाने के बाद उसके बताने से मेज़्बान को तक्लीफ़ होगी।
5. मेह्मान को चाहिए कि मेज़्बान की इजाज़त के बग़ैर किसी दूसरे शख़्स की दावत क़ुबूल न करे।

6. और अगर अपने किसी काम से किसी जगह जाना हो तो मेज़्बान को बताकर जाये ताकि मेज़्बान खाने के वक़्त परेशान न हो।
7. बेह्तर है कि अपने वापसी के प्रौग्राम को मेज़्बान से बता दे ताकि मेज़्बान की मसरूफ़ियात में भी ख़राबी न आए।
8. मेज़्बान अपनी हैसियत के मुताबिक़ जो चीज़ भी खाने में पेश करे मेह्मान को चाहिए कि उसे ख़ुशदिली से क़ुबूल कर ले। उस में किसी तरह की कमी न निकाले और मेज़्बान से फ़रमाइशें न करे (हाँ अगर मेज़्बान बे-तकल्लुफ़ हो और उसके हालात इसकी इजाज़त दें तो अलग बात है)।

इस तरह के आदाब का मक़्सद असल में यह है कि जिस तरह मेज़बान पर मेह्मान के आराम व सुकून की ज़िम्मेदारी है उसी तरह मेह्मान के लिए भी ज़रूरी है कि वह मेज़्बान के आराम का ख़्याल करे और उसको तक्लीफ़ न पहुंचाये।

फ़क़ीहुल उम्मत हज़रत मौलाना मुफ़्ती मह्मूद हसन रहमतुल्लाहि अ़लैहि के मल्फ़ूज़ात में लिखा है कि एक मर्तबा शैख़ुल इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यिद अहमद मदनी नव्वरल्लाहु मर्क़दहु रात में हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अश्‌रफ़ अ़ली थानवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहु से मुलाक़ात के लिए थाना भवन पहुंचे। देर होने की वजह से ख़ानक़ाह का दरवाज़ा बन्द हो चुका था। इसलिए हज़रत मदनी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने यह सोचकर कि इस वक़्त दरवाज़ा खुलने का क़ानून नहीं है और दस्तक देने से हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि के आराम में ख़लल होगा। इसलिए आप ने हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि के घर के सामने अपना बिस्तर बिछा लिया और रात भर वहीं क़ियाम फ़रमाया। सुब्ह जब रोज़ाना की तरह हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि बाहर तशरीफ़ लाये तो मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया। बाहर रात गुज़ारने पर हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने भी अफ़्सोस का इज़्हार फ़रमाया।

इसी तरह औ़रतें जब किसी जगह जायें तो इसका ख़ास ख़्याल रखें कि उनकी वजह से मेज़्बान घराने के मर्दों को तक्लीफ़ न हो। आजकल रहने के मकान छोटे होते हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि दूसरी औ़रतें घर में मिलने आ जाती हैं और उनकी बातें इतनी लम्बी हो जाती हैं कि घर के मर्दों को बाहर वक़्त गुज़ारना पड़ता है। जो सख़्त तक्लीफ़ का सबब होता है। इसी तरह कभी

ठीक दो-पहर में आराम के वक़्त दूसरों के घर पहुंच जाती हैं जिससे सारे घर वाले परेशान हो जाते हैं, वे अगरचे अपनी शराफ़त या हुस्न-ए-अख़्लाक़ की वजह से ज़बान से कुछ नहीं कहते लेकिन ऐसे मौक़े पर आदमी को ख़ुद अपने बारे में सोचना चाहिए कि अगर हमारे साथ भी ऐसा मुआमला हो तो हमें कैसा लगेगा?

मतलब यह है कि एक दूसरे को आराम पहुंचाने का जज़्बा हर वक़्त मुसलमान के सामने होना चाहिए। ईमान का तक़ाज़ा यही है। अल्लाह तबारक व तआला हमें इन हुक़ूक़ के अदा करने की कामिल तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन ❑ ❑

पांचवीं फ़स्ल

बुग़्ज़ व अ़दावत (दुश्मनी)

दिल को जिन बद्-तरीन मरज़ों से बचाना ज़रूरी है उनमें से एक बड़ी बीमारी किसी से कीना और बुग़्ज़ रखना है। यह ऐसी बीमारी है जिसकी तक्लीफ़ मुसल्सल जारी रहती है और दीनी व दुनियवी हर ऐतिबार से इसकी बुराइयाँ सामने आती रहती हैं। दुनियवी नुक़्सान तो ज़ाहिर है कि इस बुग़्ज़ व अ़दावत की वजह से मुआ़मला कहां से कहां तक पहुंच जाता है और दीनी नुक़्सान यह है कि जब किसी से बुग़्ज़ होता है तो फिर उस पर इल्ज़ामात लगाये जाते हैं, चुग़लियाँ की जाती हैं, साज़िशें रचाई जाती हैं। मतलब यह कि यह एक बीमारी न जाने कितनी बीमारियों का सबब बन जाती है और फिर सबसे बड़ी नहूसत यह कि इसकी वजह से अल्लाह के दरबार में दुआ़एं क़ुबूल नहीं होतीं। चुनाँचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया हैः

تُعْرَضُ أَعْمَالُ النَّاسِ فِيْ كُلِّ جُمُعَةٍ مَرَّتَيْنِ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ وَيَوْمَ الْخَمِيْسِ فَيُغْفَرُ اللّٰهُ لِكُلِّ عَبْدٍ مُؤْمِنٍ إِلَّا عَبْدًا بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَخِيْهِ شَحْنَاءُ فَيُقَالُ اتْرُكُوْا هٰذَيْنِ حَتّٰى يَفِيْئَا.

(عن ابی هريرةؓ كنز العمال ٣/١٨٧)

हर हफ़्ते में दो मर्तबा पीर और जुमेरात के दिन (अल्लाह के दरबार में) लोगों के आमाल पेश किये जाते हैं। तो अल्लाह तआ़ला हर ईमान वाले शख़्स की मग़्फ़िरत फ़रमाता है। ऐसे आदमियों के अ़लावा जिसकी दूसरे से दुश्मनी और बुग़्ज़ हो तो कह दिया जाता है कि इन दोनों को अभी छोड़ दो जब तक कि ये दोनों सुलह कर लें।

और कुछ रिवायात में है कि शाबान की 15 वीं रात को मग़्फ़िरत की जाती है मगर दूसरों से कीना रखने वालों की उस रात भी मग़्फ़िरत नहीं होती।

(कन्ज़ुल उम्माल 3/186)

इसलिए शरीअ़त-ए-इस्लामिया ने बुग़्ज़ व अ़दावत के तक़ाज़ों पर अ़मल करने से निहायत सख़्ती से मना किया है।

बोल-चाल बन्द करना

जैसे आज जहां किसी से कोई ना-गवारी की बात हुई बोल-चाल बन्द कर दी जाती है। ख़ुशी और ग़म में शिरकत करने से भी बचा जाता है, यहां तक कि अगर कहीं दोनों का सामना भी हो जाये तो हर एक मुँह मोड़कर अलग रास्ता अपना लेता है। यह तरीक़ा सही नहीं है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है:

لَايَحِلُّ لِلرَّجُلِ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ يَلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هٰذَا وَيُعْرِضُ هٰذَا، وَخَيْرُهُمَا الَّذِي يَبْدَءُ بِالسَّلَامِ. متفق عليه

(مشكوٰة شريف ٤٢٧/٢)

किसी शख़्स के लिए हलाल नहीं है कि वह अपने भाई से तीन रातों से ज़्यादा बोल चाल जानबूझ कर बन्द करे, दोनों इस हाल में मिलें कि हर एक दूसरे से बचता हो, उनमें बेहतर वह शख़्स है जो सलाम से पहल करे।

हदीस में तीन दिन की क़ैद इसलिए लगाई गई कि अगर तबअ़ी तक़ाज़े की वजह से ना-गवारी हो जाये तो उसका असर तीन दिन पूरे होने पर जाता रहता है। अब आगे अगर जान बूझकर बोल चाल बन्द हो रही है तो यह तबअ़ी तक़ाज़े का असर नहीं बल्कि दिल के कीने और बुग़्ज़ का असर है जिसको मिटाने की ज़रूरत है। ग़ौर करने से यह बात सामने आती है कि झगड़े के दौरान फ़रीक़ैन (दोनों) में बातचीत बन्द होना, झगड़े को बढ़ाने में सबसे ज़्यादा असर पैदा करता है। क्योंकि अगर बातचीत का सिलसिला क़ाइम हो तो कितनी ही बद्-गुमानियाँ तो सिर्फ़ बातों से ख़त्म हो जाती हैं और बातचीत न हो तो झगड़ा बराबर बढ़ता ही चला जाता है और दोनों तरफ़ से खुलकर हक़ों की पामाली की जाती है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक हदीस में झगड़े की सभी बातों को ख़त्म करने की तल्क़ीन फ़रमाई है। आप ने फ़रमाया:

إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ وَلَاتَجَسَّسُوا وَلَا تَحَسَّسُوا وَلَاتَنَاجَشُوا وَلَا تَحَاسَدُوا وَلَا تَبَاغَضُوا وَلَا تَدَابَرُوا

बद्-गुमानी से बचते रहो, इसलिए कि बद्-गुमानी सबसे झूठी बात है और किसी की टोह में मत रहो और न जासूसी करो और न भाव बढ़ाओ और न आपस में हसद करो और न बुग़्ज़

وَكُوْنُوْا عِبَادَ اللّٰهِ إِخْوَانًا. متفق عليه
(مشكوٰة شريف ٢/٤٢٧)

करो और न पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई करो और सब अल्लाह तआला के बन्दे भाई-भाई बन जाओ।

और एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ هَجَرَ اَخَاهُ سَنَةً فَهُوَ كَسَفْكِ دَمِهٖ. (الترغيب والترهيب للمنذرى ٣/٣٠٦)

जिस शख़्स ने अपने मुसलमान भाई से एक साल बोलचाल बन्द रखी उसने गोया उसका ख़ून बहा दिया।

कभी कभी यह देखा गया है कि दो आदमियों में ना-चाक़ी होती है और उनमें से एक सुलह करना चाहता है, दूसरा सुलह पर आमादा नहीं होता, तो यह देखना चाहिए कि वह सुलह पर आमादा क्यों नहीं हो रहा है अगर उसका कोई हक़ बनता है जिसका वह मुतालबा कर रहा है तो उसका हक़ अदा किया जाये और अगर वह ख़्वाह मख़्वाह सुलह से इंकार करता है तो लड़ाई और झगड़े का गुनाह सुलह चाहने वाले पर न होगा बल्कि सिर्फ़ उसी शख़्स पर होगा जो सुलह से इंकार कर रहा है। चुनांचे एक रिवायत में है:

لَا تَحِلُّ الْهِجْرَةُ فَوْقَ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فَاِنْ الْتَقَيَا فَسَلَّمَ اَحَدُهُمَا فَرَدَّ الْاٰخَرُ اِشْتَرَكَا فِى الْاَجْرِ وَاِنْ لَّمْ يَرُدَّ بَرِئَ هٰذَا مِنَ الْاِثْمِ وَبَاءَ بِهِ الْاٰخَرُ.
(رواه الطبرانى، الترغيب و الترهيب ٣/٣٠٥)

तीन दिन से ज़्यादा बोल-चाल बन्द करना जाइज़ नहीं है फिर अगर दोनों की मुलाक़ात हो और एक ने सलाम किया तो अगर दूसरा जवाब दे दे तो दोनों सवाब में शरीक हो जाएंगे और अगर दूसरा जवाब न दे तो यह (सलाम करने वाला) गुनाह से बरी हो जायेगा और दूसरा (जवाब न देने वाला) गुनाहगार रहेगा।

मतलब यह है कि हर मोमिन को दूसरे की तरफ़ से दिल साफ़ रखना ज़रूरी है। और अगर इत्तिफ़ाक़ से कोई बात नागवारी की पेश आ जाये तो जल्द से जल्द उसे ख़त्म करने की कोशिश करनी चाहिए। इस बारे में कौताही और ला-परवाही से बड़ी ख़राबियाँ पैदा होती हैं और बाद में उनका रोकना बहुत मुश्किल हो जाता है।

बुग़्ज़ की कुछ ख़राबियाँ

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने लिखा है कि बुग़्ज़ व अ़दावत की वजह से आठ ख़राबियाँ सामने आती हैं।

1. हसदः यानी तमन्ना होती है कि दूसरे के पास से नेअ़्मत जाती रहे और उसको नेअ़्मत मिलने पर दिल में कुढ़ता है और उसकी मुसीबत पर ख़ुश होता है। यह मुनाफ़िक़ीन की आ़दत है और दीन का सत्यानास करने वाली सिफ़त है।

2. शमाततः यानी दूसरे की मुसीबत पर दिल ही दिल में ख़ूब ख़ुशी महसूस करे।

3. तर्क-ए-तअ़ल्लुक़ातः यानी दिली कीने की वजह से बोलचाल, आना जाना सब बन्द कर देता है।

4. दूसरे को हक़ीर (ज़लील) समझनाः अक्सर कीने की वजह से दूसरे को ज़लील व हक़ीर समझता है।

5. ज़बान दराज़ीः जब किसी से बुग़्ज़ होता है तो उसके बारे मे ग़ीबत, चुग़ली, बुहतान तराज़ी, मतलब यह कि किसी भी बुराई से बचाव नहीं किया जा सकता।

6. मज़ाक़ उड़ानाः यानी कीने की वजह से दूसरे का मज़ाक़ उड़ाता है और बे-इज़्ज़ती करता है।

7. मारपीटः यानी कभी कभी कीने की वजह से आदमी मारपीट करने पर भी तैयार हो जाता है।

8. पुराने तअ़ल्लुक़ात में कमीः यानी अगर कुछ और न भी हो तो बुग़्ज़ का एक छोटा सा असर यह तो होता ही है कि उस शख़्स से पहले जो तअ़ल्लुक़ात और बशाशत रही होती है वह ख़त्म हो जाती है।

(मज़ाक़ुल आ़रिफ़ीन 3/199)

बुग़्ज़ का सबब

उ़लमा-ए-नफ़्सियात के नज़्दीक कीना और अ़दावत की पहल ग़ुस्से से होती है। यानी जब आदमी किसी वजह से ग़ुस्से के तक़ाज़े पर अ़मल नहीं कर पाता

तो यह ही गुस्सा कीने में बदल जाता है। जैसे किसी बड़े आदमी की तरफ़ से कोई तबीअ़त के ख़िलाफ़ बात सामने आई, तो उस पर गुस्सा बहुत आता है। लेकिन उस आदमी की बड़ाई की वजह से आदमी उस से बदला नहीं ले पाता तो यही बात उस से कीने और बुग़्ज़ का सबब बन जाती है। इसलिए ज़रूरी है कि बुग़्ज़ के इस सबब को मिटाने की कोशिश की जाये। पहले तो कोशिश करें कि गुस्सा ही न आये। इसीलिए पैग़म्बर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने नसीहत चाहने वाले बहुत से सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को भी यही एक नसीहत फ़रमाई कि वह गुस्सा न हुआ करें। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/299)

क्योंकि ये सारी ख़राबियों की जड़ है और गुस्से का सबसे बड़ा सबब तकब्बुर और ख़ुद-नुमाई है। जो शख़्स तकब्बुर से जितना भी दूर होगा उतना ही वह गुस्से से भी पाक होगा। आप तज्रिबा करके देख लें अक्सर गुस्सा इसीलिए आता है कि उसने हमारी बे-इज़्ज़ती की है। उसने भरी मज्लिस में हमारी राये के ख़िलाफ़ राये दी। उसने हमारे मश्वरे को क़ुबूल नहीं किया। उसने हमारे मुक़ाम और मर्तबे का ख़्याल नहीं रखा वग़ैरह वग़ैरह और अगर आदमी तवाज़ो इख़्तियार कर ले तो ये सब झमेले ख़ुद ब ख़ुद ख़त्म हो जायेंगे और कैफ़ियत यह हो जायेगी कि किसी लअ़्न तअ़्न करने वाले की बेहूदा बातों पर भी नफ़्स में कुछ हरकत न पैदा होगी और जब गुस्सा नहीं आयेगा तो बुग़्ज़ का सवाल ही पैदा नहीं होगा।

अगर गुस्सा आ जाये तो क्या करें?

लेकिन गुस्सा एक फ़ित्री चीज़ भी है। लिहाज़ा अगर किसी बात पर गुस्सा आ ही जाये तो हुक्म यह है कि उसके तक़ाज़े पर अ़मल करने के बजाये पहली फ़ुरसत में उसे ख़त्म करने की कोशिश करें। सबसे अच्छा आदमी वह है जिसका गुस्सा जल्द जाता रहा। चुनाँचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक लम्बी हदीस में इस पर रौशनी डालते हुए इर्शाद फ़रमायाः

إِنَّ الْغَضَبَ جَمْرَةٌ تَتَوَقَّدُ فِيْ جَوْفِ ابْنِ آدَمَ أَلَمْ تَرَوْا إِلَى حُمْرَةِ عَيْنَيْهِ وَانْتِفَاخِ أَوْدَاجِهِ فَإِذَا وَجَدَ أَحَدُكُمْ

गुस्सा एक अंगारा है जो आदमी के अन्दर दहकता है क्या तुम (गुस्सा करने वाले की) आँख की सुर्ख़ी और उसकी रगों का फूलना नहीं देखते। लिहाज़ा तुम

مِنْ ذٰلِکَ شَیْئًا فَلْیَلْزَقْ بِالْأَرْضِ، اَلَا إِنَّ خَیْرَ الرِّجَالِ مَنْ کَانَ بَطِیْءَ الْغَضَبِ سَرِیْعَ الْفَیْءِ وَشَرُّ الرِّجَالِ مَنْ کَانَ بَطِیْءَ الْفَیْءِ سَرِیْعَ الْغَضَبِ فَإِذَا کَانَ الرَّجُلُ سَرِیْعَ الْغَضَبِ سَرِیْعَ الْفَیْءِ فَإِنَّهَا بِهَا وَإِذَا کَانَ بَطِیْءَ الْغَضَبِ بَطِیْءَ الْفَیْءِ فَإِنَّهَا بِهَا الخ (رواه البیهقی فی شعب الإیمان ٦/٣٠١)

में से जब कोई गुस्सा महसूस करे तो ज़मीन से चिमट जाये। अच्छी तरह याद रखो। सबसे अच्छा आदमी वह है जिसे गुस्सा देर से आये और जल्दी उतर जाये और सबसे बद्तर आदमी वह है जिसे गुस्सा जल्दी आये और देर से उतरे और अगर ऐसा आदमी हो जिसे गुस्सा जल्दी आकर जल्दी उतर जाये तो उसका मुआमला बराबर सराबर है और अगर देर से आकर देर में जाये तो भी बराबर सराबर है।

और दूसरी हदीसों में गुस्से को ख़त्म करने के तरीक़े बताये गये। मुलाहज़ा फ़रमाइयेः

1. अऊज़ु बिल्लाहि पढ़ेंः एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक शख़्स को सख़्त गुस्से में देखा तो आप ने फ़रमाया कि "मैं ऐसा कलिमा जानता हूँ कि अगर वह पढ़ ले तो उसका गुस्सा जाता रहे"। फिर पूछने पर फ़रमाया वह कलिमा اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ है।
(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/303)

2. वुज़ू करेंः एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि गुस्सा शैतान के असर से होता है और शैतान को आग से पैदा किया गया है और आग पानी से बुझायी जाती है। इसलिए जब किसी को गुस्सा आये तो वुज़ू कर लिया करे। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/304)

3. बैठ जायें या लेट जायेंः एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब किसी को गुस्सा आये तो उसे चाहिए कि अगर खड़ा हो तो बैठ जाये और बैठने से भी गुस्सा न जाये तो लेट जाये।
(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 3/302)

इसके अ़लावा जब किसी शख़्स पर गुस्सा आये तो बेहतर है कि उसके सामने से हट जाये। ख़ासकर घरवालों से या बीवी से गुस्सा हो तो सामने से हटकर कमरे में चला जाये या घर से बाहर आ जाये। इसलिए कि अगर वहीं

खड़ा रहेगा तो बात आगे भी बढ़ सकती है। आजकल अक्सर तलाक़ की नौबत इसीलिए पैश आती है कि गुस्सा आने के बाद उसको ख़त्म करने की कोशिश नहीं की जाती और जब शैतान गुस्से के ज़रिए अपना काम पूरा कर देता है तो अफ़्सोस करते हैं और मुफ़्तियों के दामन में पनाह ढूंढते हैं और जो क़ाबू करने का मौक़ा होता है उसे गुस्से के जोश में बर्बाद कर देते हैं। اللّٰهم احفظنا منه.

सबसे बड़ा पहलवान

ज़ाती मुआ़मलात में गुस्से के तक़ाज़े पर अ़मल करने से रूक जाना बड़ी फ़ज़ीलत और सआ़दत की बात है। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की सिफ़ात बयान करते हुए फ़रमाया गया है: وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ (और जो गुस्से को पीने वाले और लोगों को माफ़ करने वाले हैं) और एक रिवायत में आया है कि एक मर्तबा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से पूछा कि तुम सबसे बड़ा पहलवान किसे समझते हो? सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने जवाब दिया कि हम उसे सबसे बड़ा पहलवान समझते हैं जिसको कुश्ती में कोई पछाड़ न सके। इस पर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لَيْسَ بِذَالِكَ وَلٰكِنَّهُ الَّذِيْ يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ (مسلم شریف ۲/۳۲٦)

वह पहलवान नहीं है, बल्कि असल ताक़तवर वह शख़्स है जो गुस्से के वक़्त अपने ऊपर क़ाबू रखे।

गुस्सा पीने का अज्र व सवाब

एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنْ كَظَمَ غَيْظًا وَّهُوَ قَادِرٌ عَلٰى اَنْ يُّنْفِذَهُ دَعَاهُ اللّٰهُ عَلٰى رُؤُسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُخَيِّرَهُ مِنْ اَيِّ حُوْرٍ شَاءَ.

(شعب الإيمان ٦/٣١٣)

जो शख़्स बावुजूद गुस्से के तक़ाज़े पर अ़मल करने की क़ुदरत के, गुस्से को पी जाये तो अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात के सामने बुलायेगा और उसे इख़्तियार देगा कि जन्नत की जिस हूर को चाहे पसन्द कर ले।

और एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَا جَرَعَ عَبْدٌ جَرْعَةً أَعْظَمَ أَجْرًا عِنْدَ اللّٰهِ مِنْ جَرْعَةِ غَيْظٍ كَظَمَهَا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ. (شعب الايمان ٦/٣١٤)

अल्लाह के नज़्दीक अज्र व सवाब के ऐतिबार से सबसे ज़्यादा अज़ीमत वाला घूंट वह गुस्से का घूंट है जिसे सिर्फ़ रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी की निय्यत से इंसान पी जाये।

हक़ीक़त यह है कि गुस्से को पी जाना और मुख़ातब को माफ़ कर देना आला दर्जे का कमाल है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अल्लाह के नज़्दीक इन्तिहाई पसन्दीदा आमाल में से ये तीन आमाल हैं: 1. क़ुद्रत के बावुजूद माफ़ कर देना, 2. तेज़ी और शिद्दत के वक़्त गुस्से को क़ाबू में रखना और 3. अल्लाह के बन्दों के साथ नर्मी इख़्तियार करना। (शुअ़बुल ईमान 6/318)

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रहमतुल्लाहि अलैहि का वाक़िआ

ख़ानवादा-ए-नुबुव्वत के चश्म व चराग़ हज़रत ज़ैनुल आबिदीन अली बिन अल्- हुसैन रहमतुल्लाहि अलैहि को एक मर्तबा उनकी बांदी वुज़ू करा रही थी। इत्तिफ़ाक़ से उसके हाथ से लोटा छूटकर इस तरह गिरा कि हज़रत के चेहरे पर कुछ ज़ख़्म लग गया। अभी आपने सर उठाकर देखा ही था कि बांदी बोली وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ. हज़रत ने फ़रमाया कि मैंने अपना गुस्सा पी लिया। फिर उस बांदी ने आयत का अगला हिस्सा पढ़ा وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ तो हज़रत ने फ़रमाया कि जा तुझे मैंने माफ़ कर दिया और अल्लाह तआला भी तुझे माफ़ फ़रमाये फिर बांदी ने आयत का आख़िरी हिस्सा पढ़ा وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ. यह सुनकर हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया जा तू आज़ाद है।

(शुअ़बुल ईमान 6/317)

इस वाक़िए को सामने रखकर हमें अपने मुलाज़िमों और ख़ादिमों के साथ अपने अमल का जाइज़ा लेना चाहिए। आज सूरतेहाल यह है कि किसी ख़ादिम या मुलाज़िम से बिला इरादा भी अगर कोई ग़लती हो जाती है तो न सिर्फ़ यह कि उसको उसी वक़्त सख़्त सज़ा भुगतनी पड़ती है बल्कि लम्बी मुद्दत तक उसे बात बात पर ताने भी सुनने पड़ते हैं। यह चीज़ इन्सानियत और मुरव्वत के

ख़िलाफ़ है। ईमान का तक़ाज़ा यह है कि ऐसे मौक़े पर जज़्बा-ए-इन्तिक़ाम के बजाये मआफ़ी और बख़्शिश से काम लेना चाहिए और दुनिया के नुक़्सान पर आख़िरत के सवाब का उम्मीदवार रहना चाहिए।

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स इस बात को चाहता हो कि आख़िरत में उसके लिए बुलन्द व ऊंचा महल बनाया जाये और उसके दर्जात ऊंचे किये जायें तो उसे चाहिए कि अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले को माफ़ कर दे और अपने महरूम करने वाले को अता करे और तअल्लुक़ तोड़ने वाले से तअल्लुक़ बनाने की कोशिश करे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, पेज 266, आयत 134)

हज़रत सिर्री सक़ती रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि तीन आदतें जिस शख़्स में पाई जाएंगी वह अपने ईमान का मुकम्मल करने वाला होगा। 1. वह शख़्स कि जब उसे ग़ुस्सा आये तो उसका ग़ुस्स उसे हक़ के दाइरे से निकाले। 2. जब वह किसी से राज़ी हो तो यह रज़ामन्दी नाहक़ की तरफ़ न ले जाये। 3. जब उसे अपना हक़ वुसूल करने पर क़ुदरत मिले तो अपने हक़ से ज़्यादा वुसूल न करे। (शुअ़बुल ईमान 6/320)

बहरहाल क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस-ए-तय्यिबा की हिदायात के मुताबिक़ अपने ज़ाती मुआमलात में जहाँ तक मुम्किन हो ग़ुस्से के तक़ाज़े पर अमल करने से बचा जाये। इसके ख़िलाफ़ करने से मुआमलात बिगड़ जाते हैं। ख़ासकर मियाँ-बीवी के झगड़ों में तलाक़ तक की नौबत आ जाती है और फिर बाद में हस्रत व अफ़्सोस कुछ काम नहीं देता। इसलिए बेहतर यही है कि शुरू में ही समझदारी से काम लेना चाहिए।

ग़ुस्सा कहां पसन्दीदा है

ऊपर दी गई तफ़्सीलात से यह ग़लतफ़हमी न होनी चाहिए कि ग़ुस्सा कहीं भी जाइज़ और पसन्दीदा नहीं है बल्कि यह वज़ाहत सामने रखनी चाहिए कि ग़ुस्सा बर्दाश्त करने का हुक्म वहीं है जहां मुआमला सिर्फ़ अपनी ज़ात तक ही हो। हाँ अगर किसी दीनी या शरई मुआमले में या आम मुसलमानों के नुक़्सान के मुआमले में ग़ुस्सा करना ईमान का तक़ाज़ा है। जब शरीअत के किसी हुक्म को पामाल किया जाये, सुन्नत की बे-हुरमती की जाये। इस्लाम के साथ मज़ाक़

किया जाये या मुसलमानों के शआइर (मज़्हबी अलामात) और उनके मफ़ाद को नुक़्सान पहुंचाया जाये तो ऐसे मौक़ों पर ग़ुस्सा न आना और ख़ौफ़ मेह्सूस करते हुए मस्लहत इख़्तियार करना ईमानी तक़ाज़े के ख़िलाफ़ है। उस वक़्त ग़ुस्सा आना ही अज्र व सवाब का सबब और क़ाबिले तारीफ़ है क्योंकि यह ग़ुस्सा अपने ज़ाती फ़ायदों के लिए नहीं आ रहा है। बल्कि ईमान की मुहब्बत में आ रहा है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के शमाइल व अख़्लाक़-ए- मुक़द्दसा के बारे में हज़रत हिन्द इब्ने अबी हाला रज़ियल्लाहु अ़न्हु की लम्बी रिवायत में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाक सिफ़त बयान की गई है कि:

وَلَا يُقَامُ لِغَضَبِهٖ إِذَا تَعَرَّضَ لِلْحَقِّ بِشَيْءٍ حَتّٰى يَنْتَصِرَ لَهٗ وَلَا يَغْضَبُ لِنَفْسِهٖ وَلَا يَنْتَصِرُ لَهَا.

(شمائل الرسول، ابن كثير ٥٩)

और जब किसी अम्र-ए-हक़ (सही बात) की कोई मुख़ालफ़त होती तो उस वक़्त आपके ग़ुस्से की कोई ताब न ला सकता था जबतक कि आप हक़ को ग़ालिब न फ़रमा देते और आप अपनी ज़ात के लिए न तो ग़ुस्सा होते और न इन्तिक़ाम लेते थे।

चुनांचे अहादीस के ज़ख़ीरे में बहुत से ऐसे वाक़िआत मौजूद हैं कि आपने हुक्म-ए-शरीअ़त की ख़िलाफ़वर्ज़ी या दीनी मुआमले में ला-परवाही पर सख़्त ग़ुस्से का इज़्हार फ़रमाया। एक मर्तबा हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने एक कलिमा पढ़ने वाले को मुनाफ़िक़ समझ कर क़त्ल कर दिया था। हज़रत नबी-ए- अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जब यह वाक़िआ मालूम हुआ तो इन्तिहाई नाराज़गी ज़ाहिर फ़रमाई और आप बार बार फ़रमाते रहे: أَفَلَا شَقَقْتَ عَنْ قَلْبِهٖ (क्या तुमने उसका दिल चीर कर देखा था) हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इस क़द्र ख़फ़ा हुए कि मैं तमन्ना करने लगा कि काश मैं आज से पहले मुसलमान ही न होता। और आज ही इस्लाम लाता (ताकि यह गुनाह इस्लाम लाने से माफ़ हो जाता)। (मुस्लिम शरीफ़ 1/68)

इसी तरह एक मर्तबा हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने मुहल्ले में इशा की नमाज़ ज़रूरत से ज़्यादा लम्बी पढ़ा दी थी। जिससे कुछ मुक़्तदियों को बजा तौर पर एतिराज़ हुआ, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम ने इस बात पर हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को सख़्त तम्बीह फ़रमाई।

मतलब यह कि जब कोई दीनी क़ौताही का मस्अला सामने आता तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस पर ग़ुस्सा और ना-गवारी का इज़्हार फ़रमाते थे। इसलिए ऐसे मौक़ों पर ग़ुस्सा और सख़्ती करना सुन्नत है जिसपर हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम मज़बूती से पूरी ज़िन्दगी क़ाइम रहे। हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ज़िन्दगी में "ग़ज़ब फ़िल्लाहि" का पहलू बहुत खुला हुआ है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम हर तरह का नुक़्सान बर्दाश्त कर सकते थे। मगर दीनी नुक़्सान को देखकर ख़ामोश रहना उनकी फ़ित्रत के ख़िलाफ़ था। उनमें का हर शख़्स "اَيَنْقُصُ الدِّيْنُ وَاَنَا حَيٌّ" (क्या दीन बर्बाद हो और मैं ज़िन्दा रहूं) के ऐलान का अ़मली नमूना था। जब मुआ़मला दीन का होता तो फिर रिश्तेदारी या तअ़ल्लुक़ को बालाये ताक़ रखकर (छोड़कर) वे सिर्फ़ दीनी तक़ाज़ों को पूरा फ़रमाते और मुदाहनत (निफ़ाक़) का शाइबा (शक व शुब्ह) भी अपने पास न आने देते थे।

दीनी ज़रूरत से ताल्लुक़ तोड़ना भी जाइज़ है

मुन्करात (गुनाहों) पर नकीर करने में यहां तक हुक्म है कि अगर नाफ़रमानी करने वाले से तअ़ल्लुक़ तोड़ने और बाईकाट करने में किसी दीनी नफ़े (यानी ख़ुद उसकी हिदायत या दूसरों के लिए इब्रत व नसीहत) की उम्मीद हो तो उस से तअ़ल्लुक़ ख़त्म करने की भी इजाज़त है। चुनांचे हज़रत नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दौर में उन तीन मुख़्लिस सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का 50 दिन तक मुक़ातआ़ (समाजी बाईकाट) किया गया जो जंगे तबूक में बग़ैर किसी शरई उ़ज़्र के शरीक नहीं हुए थे जिनके नाम क़अ़ब बिन मालिक, मुरारा बिन रबीअ़ और हिलाल बिन उमैया रज़ियल्लाहु अ़न्हुम हैं। इन हज़रात के बाईकाट का वाक़िआ़ इस्लामी तारीख़ का एक अहम वाक़िआ़ है। जिसमें अनगिनत नसीहतें और इब्रतें मौजूद हैं। इमाम नववी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने शरह-ए-मुस्लिम शरीफ़ में इस वाक़िए से 37 फ़ायदे निकाले हैं।

(मुस्लिम शरीफ़ मअ़न् नववी 2/224)

लिहाज़ा अगर कोई ऐसी सूरत सामने आये कि बाईकाट किये बग़ैर कोई चारा न रहे और उस बाईकाट से कोई दूसरा बड़ा फ़ित्ना खड़ा न हो तो उसकी

शरीअत में इजाज़त दी गई है। मगर इस फ़ित्ना अंगेज़ दौर में बाईकाट करने से पहले हर पहलू पर अच्छी तरह ग़ौर व फ़िक्र करने की ज़रूरत होगी। ऐसा न हो कि अपनी ज़ाती ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए शरीअत को आड़ बनाकर तअल्लुक़ तोड़ा जाये। अल्लाह तआला ज़ाहिर व बातिन को जानने वाला है। अगर नफ़्सियात की बुनियाद पर तअल्लुक़ तोड़ा जाएगा तो वह शरअ़ी ऐतिबार से हरगिज़ दुरूस्त नहीं है। इससे बचना ज़रूरी है।

दिल को साफ़ रखने का मुजर्रब (तज्रिबा किया हुआ) अ़मल

पिछले सफ़्हात में बताया गया है कि दिल को कीना कपट से पाक रखना अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का एक अहम तक़ाज़ा है। अब सवाल है कि दूसरों की तरफ़ से मुस्तक़िल दिल साफ़ कैसे रखा जाये इसलिए कि जब कुछ लोग साथ रहते हैं तो कोई न कोई बात अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो ही जाती है, जो कभी कमी बढ़ते-बढ़ते बुग्ज़ तक पहुंच जाती है, तो इस ख़त्रे से बचने के लिए दो चीज़ें इन्तिहाई नफ़ा बख़्श और कामियाब हैं। उज़्र (मजबूरी) तलाश करना, नज़र अन्दाज़ करना।

उज़्र (मजबूरी) तलाश करना

पहली बात यह है कि जब किसी शख़्स की तरफ़ से कोई बात अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो तो कोशिश करनी चाहिए कि उस शख़्स की तरफ़ से कोई बहाना तलाश किया जाये कि शायद वह शख़्स किसी वजह से इस अ़मल को कर रहा है। उसके इस काम को अच्छा समझने पर इन्शा अल्लाह उसकी तरफ़ से दिल में बुग्ज़ पैदा न होगा। इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि और अबू क़लाबा रहमतुल्लाहि अ़लैहि से नक़्ल किया गया है कि उन्होंने फ़रमाया:

إِذَا بَلَغَكَ عَنْ أَخِيكَ شَيْءٌ تَجِدُ عَلَيْهِ فِيهِ فَاطْلُبْ لَهُ الْعُذْرَ بِجُهْدِكَ فَإِنْ أَعْيَاكَ فَقُلْ لَعَلَّ عِنْدَهُ أَمْرًا لَمْ يَبْلُغْهُ

जब तुम्हें अपने किसी भाई की तरफ़ से कोई नागवारी की बात मालूम हो तो जहाँ तक मुम्किन हो उसकी तरफ़ से उज़्र तलाश करो। अगर कोई उज़्र न मिले तो यह कह दो कि शायद उसके

عِلْمِیْ. (شعب الایمان ۳۲۱/۶)

पास इसकी कोई मस्लहत होगी जिसका मुझे इल्म न होगा।

जैसे आजकल अख़्बारात में उलमा और क़ाइदीन के बारे में बढ़ा चढ़ाकर रूस्वाकुन रिपोर्टें छपती रहती हैं। इन तहरीरों को पढ़कर पहली बात तो यह है कि उनका यक़ीन न करना चाहिए और दूसरी बात यह है कि उनके आमाल व बातों को बेहतर मआनी पर महमूल करना चाहिए। ताकि उनका बुग्ज़ दिल में न जम जाये जो इन्तिहाई नुक़्सान का सबब है।

ग़लती को नज़र अन्दाज़ करना

दिल को साफ़ रखने के लिए ज़रूरी है कि इंसान दूसरे लोगों की टोह में न रहे। बल्कि ज़्यादा तर अपने काम से काम रखे। हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

مَنْ یَّتْبَعْ نَفْسَہٗ کُلَّ مَایَرٰی فِی النَّاسِ یَطُوْلُ حُزْنُہٗ وَلَمْ یَشْفِ غَیْظُہٗ

(شعب الایمان ۳۲۱/۶)

जो शख़्स लोगों में दिखाई पड़ने वाली हर बात की टोह और खोज में रहता है तो उसका ग़म लम्बा हो जाता है और उसका गुस्सा ठन्डा नहीं पड़ता।

यानी पहली बात तो यह कि दूसरों के ऐबों को जानने की कोशिश न करे और अगर मालूम भी हो जाये तो उनकी तह्क़ीक़ व तफ़्तीश में न पड़े और कोशिश करे कि उसे नज़र अन्दाज़ कर दे। अगर ऐसा नहीं किया जायेगा तो ख़्वाह मख़्वाह ख़ुद एक ग़म में मुब्तला हो जायेगा। आप तज्रिबा करके देख लें कि दुनिया में आफ़ियत (सुकून) से वही लोग रहते हैं जो दूसरों के ऐबों को नज़र अन्दाज़ करते हैं और ग़फ़्लत से काम लेते हैं। हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि का इर्शाद है:

اَلْکَیِّسُ الْعَاقِلُ ھُوَ الْفَطِنُ الْمُتَغَافِلُ.

(شعب الایمان ۳۲۱/۶)

समझदार अक़्लमन्द वह शख़्स है जो ज़हीन हो और लोगों के ऐबों से ग़फ़्लत बरतने वाला हो।

मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ख़ुज़ाई फ़रमाते हैं कि मैंने उ़स्मान बिन अबी ज़ाइदा को यह फ़रमाते हुए सुना कि आफ़ियत के दस हिस्से हैं जिनमें से 9

हिस्से तग़ाफ़ुल (नज़र अंदाज़ करने) में पाये जाते हैं। मुहम्मद कहते हैं कि मैंने उस्मान बिन अबी ज़ाइदा की यह बात जब इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अ़लैहि को सुनाई तो आप ने फ़रमाया कि आफ़ियत के 10 हिस्से हैं और ये दस के दस हिस्से नज़र अंदाज़ करने में पाये जाते हैं।

(शुअ़बुल ईमान 6/220)

वाक़िआ भी यही है कि ये "नज़र अंदाज़" करना आफ़ियत की बुनियाद है। क्योंकि दुनिया में कोई बे-ऐब नहीं है। अगर हर आदमी ऐब उछालने में लग जाए तो कोई आदमी बे-ऐब नहीं रह सकता। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि "जो शख़्स ऐसा दोस्त चाहे जो बिल्कुल बे-ऐब हो तो उसे ज़िन्दगी दोस्त के बग़ैर ही गुज़ारनी पड़ेगी।" (इसलिए कि बे-ऐब दोस्त कहीं भी नहीं मिल सकेगा)। (शुअ़बुल ईमान 6/330)

मुख़ातब की इज़्ज़त-ए-नफ़्स का ख़्याल

इसी तरह बात करने के दार्मियान ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार न करना चाहिए जिससे मुख़ातब की इज़्ज़त कम हो या उसे नागवारी हो। इस सिलसिले की बे-एहतियाती भी दिल में नफ़्रत पैदा करने का बाइस बनती है। हर आदमी चाहे वह कितना ही छोटा हो अपनी एक इज़्ज़त रखता है। उससे तहज़ीब से गिरी हुई बातें करना ख़ुद अपनी तौहीन के बराबर है। जो बात भी कही जाये उसके लिए अच्छी ताबीर इख़्तियार की जाये और बहस के दौरान कभी अपनी बात पर ज़िद न की जाये। जो शख़्स इसका ख़्याल नहीं रखता वह चाहे कितना ही बड़ा शख़्स हो दूसरों की नज़रों में ज़लील हो जाता है। और लोग उससे बहस करने से कतराने लगते हैं। हज़रत बिलाल बिन सअ़्द रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

إِذَا رَأَيْتَ الرَّجُلَ لَجُوجاً مُمَارِياً مُعْجِباً بِرَأْيِهِ فَقَدْ تَمَّتْ خَسَارَتُهُ.

(شعب الإيمان ٦/٣٤١)

जब तुम किसी आदमी को ज़िद करने वाला, झगड़ालू और अपनी राये को अच्छा समझने वाला देखो तो (समझ लो) कि उसका नुक़्सान अपनी इन्तिहा को पहुंच चुका है।

इसलिए इज्तिमाई ज़िन्दगी में इस पहलू का ख़्याल रखना बेहद ज़रूरी है कि मुआमलात में दूसरों की इज़्ज़त पर कोई हर्फ़ न आने पाये। अपनी राये दूसरों पर थोपने की कोशिश न की जाये। बात मश्वरे के अन्दाज़ में पेश कर दी जाये। अगर सबको क़ुबूल हो तो ठीक, वरना क़ुबूल न होने से रंज न हो और न ही बाद में यह कहा जाये कि अगर मेरी बात मान ली जाती तो यह फ़ायदा होता वग़ैरह वग़ैरह। इस तरह की बातें इज्तिमाई ज़िन्दगी में बहस और लड़ाई का सबब हैं। जिनसे एहतियात करना ज़रूरी है। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से हमें एक दूसरे की क़द्र करने की और दिलों को परेशानी से पाक और साफ़ रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन □ □

छठी फ़स्ल

तज़्किया[1] की ज़रूरत

([1] अच्छे अख़्लाक़ इख़्तियार करना और बुरे अख़्लाक़ से दूर रहना)

दिल को हर तरह की अख़्लाक़ी बीमारियों और रूहानी मरज़ों से पाक रखने के लिए तज़्किये की ज़रूरत होती है। जिसका हासिल यह है कि दिल को इतना साफ़ सुथरा कर दिया जाये कि वह बुरे अख़्लाक़ से ख़ुद ब ख़ुद नफ़रत करने लगे और अच्छे अख़्लाक़ का शौक़ीन बन जाये। जब आदमी का दिल मुज़क्का और मुजल्ला (पाक साफ़) होता है, तो उसके लिए रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी का रास्ता आसान हो जाता है। इसी वजह से क़ुरआन-ए-करीम में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़िम्मेदारियाँ बताते हुए बतौर-ए-ख़ास وَيُزَكِّيهِمْ (और वह उनकी सफ़ाई करता है) को ज़िक्र किया गया और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस सिलसिले में हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम पर पूरा ध्यान रखा। यहां तक कि आपकी सोह्बत और शानदार तर्बिय्यत की वजह से वे सहाबा उम्मत के तमाम बाद में आने वाले औलिया और मशाइख़ और उ़लमा से अफ़ज़ल क़रार पाये और उनको ज़बान-ए-नुबुव्वत से "नुजूम-ए- हिदायत" का लक़ब अ़ता हुआ। तज़्किये के बाद उनकी सिफ़ात-ए-आ़लिया क्या थीं? उनका ज़िक्र हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाते हैं:

مَنْ كَانَ مُسْتَنًّا فَلْيَسْتَنَّ بِمَنْ قَدْ مَاتَ فَإِنَّ الْحَيَّ لَا تُؤْمَنُ عَلَيْهِ الْفِتْنَةُ، أُولٰئِكَ أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانُوْا أَفْضَلَ هٰذِهِ الْأُمَّةِ أَبَرَّهَا قُلُوْبًا وَأَعْمَقَهَا عِلْمًا، وَأَقَلَّهَا تَكَلُّفًا، اِخْتَارَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى لِصُحْبَةِ نَبِيِّهٖ وَلِإِقَامَةِ دِيْنِهٖ، فَاعْرِفُوْا لَهُمْ فَضْلَهُمْ وَاتَّبِعُوْهُمْ عَلٰى أَثَرِهِمْ

जिसे पैरवी करनी है वह मरने वालों की पैरवी करे इसलिए कि ज़िन्दा लोग फ़ित्ने से मह्फ़ूज़ नहीं हैं। वे हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सहाबा हैं जो इस उम्मत में सबसे अफ़्ज़ल थे, जिनके दिल सबसे ज़्यादा नेक थे जो इल्म के ऐतिबार से सबसे गहरे और तकल्लुफ़ात में कम्तर थे। अल्लाह तआ़ला ने जिनको अपने नबी की रफ़ाक़त और अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए चुन लिया था, लिहाज़ा

وَتَمَسَّكُوْا بِمَا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ أَخْلَاقِهِمْ وَسِيَرِهِمْ فَإِنَّهُمْ كَانُوْا عَلَى الْهُدَى الْمُسْتَقِيْمِ.
(مشكوٰة شريف ۱/۳۲، مظاهر حق ۱/۹۳)

उनकी फ़ज़ीलत पहचानो और उनके नक़्शे क़दम (बताई हुई बातों) पर चलो और जहां तक हो सके उनके अख़्लाक़ और सीरत पर मज़बूती से क़ाइम रहो क्योंकि वे सीधे रास्ते पर चलने वाले थे।

ग़रज़ दिल को क़सावत (बेरहमी) से महफ़ूज़ करके साफ़ सुथरा करना और नेकियों का आदी बनाना हर मोमिन की ज़िम्मेदारी है इसके लिए मेहनत और हिम्मत बुलन्द करनी चाहिए। जो शख़्स जितना ज़्यादा तज़्किये में आगे बढ़ेगा उतना ही अल्लाह तआला के नज़्दीक बढ़ता चला जायेगा और रहमत-ए-ख़ुदावन्दी से मालामाल हो जायेगा।

दिल की बीमारियों का इलाज

अब सवाल यह है कि दिल का तज़्किया कैसे किया जाये और उसको रूहानी बुराइयों से महफ़ूज़ रखने की क्या तद्‌बीरें इख़्तियार की जायें? इस सिलसिले में रहनुमाई फ़रमाते हुए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

إِنَّ لِكُلِّ شَيْءٍ صَقَالَةً وَصَقَالَةُ الْقُلُوْبِ ذِكْرُ اللّٰهِ، وَمَا شَيْءٌ أَنْجَى مِنْ عَذَابِ اللّٰهِ مِنْ ذِكْرِ اللّٰهِ.
(بيهقي في شعب الإيمان ۱/۳۹۶، كنز العمال ۱/۲۱۲)

हर चीज़ को साफ़ करने और मांझने का आला होता है और दिल की सफ़ाई का ज़रिया अल्लाह तआला का ज़िक्र है और अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा कोई चीज़ अल्लाह तआला के अज़ाब से बचाने वाली नहीं है।

एक दूसरी रिवायत में इर्शाद हैः

ذِكْرُ اللّٰهِ شِفَاءُ الْقُلُوْبِ. (كنز العمال ۱/۲۱۲)

अल्लाह का ज़िक्र दिलों (के मरज़ों) के लिए शिफ़ा है।

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हू फ़रमाते हैं कि "दिलों को पाकीज़ा करने के ज़रिया अल्लाह तआला का ज़िक्र-ए-मुबारक है।" (शुअ़बुल ईमान 1/396)

यानी जितना ज़्यादा ज़िक्र-ए-ख़ुदावन्दी में अपने को लगायेंगे उतना ही दिल साफ़ होगा। ख़ैर की तौफ़ीक़ अ़ता की जायेगी। और दिल की बीमारियाँ दूर होंगी जिसकी वजह से दिल को सुकून और इत्मीनान की दौलत नसीब होगी। क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाया गया:

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ۝ (الرعد آیت: ۲۸)

जो लोग ईमान लाये और उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से इत्मीनान पाते हैं। सुन लो अल्लाह के ज़िक्र ही से दिलों को इत्मीनान नसीब होता है।

ज़ाहिर है कि आदमी मुत्मइन उसी वक़्त हो सकता है जबकि उसे आने वाली ज़िन्दगी में कोई ख़त्रा न पेश आए और जो शख़्स गुनाह करने वाला है वह मुत्मइन हो ही नहीं सकता। इसलिए कि उसे आइंदा अपनी बद्-अ़मलियों की सज़ा का ख़तरा हमेशा लगा रहेगा। जो उसकी ज़िन्दगी को मुकद्दर (ख़राब) करता रहेगा। इससे मालूम हो गया कि दुनिया और आख़िरत में वही लोग इत्मीनान और आ़फ़ियत में रह सकते हैं जो ज़िक्र-ए-ख़ुदावन्दी में अपने को मशग़ूल रखें और गुनाहों से बचते रहें।

इस्तिग़्फ़ार की कस्रत से दिल की सफ़ाई

ज़िक्र-ए-ख़ुदावन्दी के साथ इस्तिग़्फ़ार को भी ख़ास तौर से अहादीस-ए-तय्यिबा में दिल की सफ़ाई और पाकीज़गी का सबब बताया गया है। एक रिवायत में इर्शाद-ए-नबवी है:

إِنَّ لِلْقُلُوْبِ صَدَأً كَصَدَإِ النُّحَاسِ وَجَلَاؤُهَا الْاِسْتِغْفَارُ. (کتاب الدعاء للطبرانی ۵۰۶)

दिलों में भी तांबे की तरह ज़ंग लगता है जिसकी सफ़ाई का तरीक़ा इस्तिग़्फ़ार है।

एक दूसरी रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं:

إِنِّيْ لَيُغَانُ عَلٰى قَلْبِيْ وَإِنِّيْ لَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ كُلَّ يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ. (کتاب الدعاء ۵۱۰، مسلم شریف ۳۴۶/۲)

मेरे दिल पर ग़ुबार सा आ जाता है इसलिए मैं हर दिन 100 मर्तबा इस्तिग़्फ़ार करता हूँ।

दूसरी हदीसों में भी कसरत से इस्तिग़फ़ार करने की ताकीद आई है। इसके ज़रिये दिल की सफ़ाई की असल वजह यह है कि गुनाहों पर शर्मिन्दगी के साथ जब आदमी इस्तिग़फ़ार करेगा तो शर्मिन्दगी की वजह से ख़ुद ब ख़ुद दिल में नर्मी पैदा हो जायेगी। और रब्बुल इज़्ज़त की बड़ाई और अपनी आजिज़ी का एहसास पैदा होगा। और यह एहसास दिल के तज़्किये की सबसे ज़्यादा कामियाब तद्बीर है।

सालिहीन (यानी नेक लोगों) की सोह्बत

दिल की सफ़ाई के लिए अल्लाह वालों की सोहबत भी बे-मिसाल असर रखती है। क़ुरआन-ए-करीम में "وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ" (और झुको, झुकने वालों के साथ) और "كُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ" (और रहो सच्चो के साथ) जैसी हिदायत देकर इस तरफ़ रहनुमाई फ़रमाई है कि नेक आमाल का शौक़ और बुरी बातों से बे-रग़्बती का मलका हासिल करने के लिए अल्लाह तआला के मुक़र्रब बन्दों की सोह्बत में वक़्त लगाना और उनके दामन-ए-फ़ैज़ से जुड़ा रहना भी इन्तिहाई असरदार और मुफ़ीद ज़रिया है। रमज़ानुल मुबारक में ऐतिकाफ़ की इबादत भी इसी मक़्सद से शरीअ़त में रखी गई है कि आदमी को ऐसा माहौल मिले जहां रहकर वह यक्सूई के साथ इबादत व इताअ़त में वक़्त लगा सके और गुनाहों की जगहों से मह्फ़ूज़ रहे।

शैख़-ए-कामिल से तअ़ल्लुक़

तज्रिबा यह बताता है कि दिलों का तज़्किया सिर्फ़ किताबें पढ़लेने और मालूमात के ख़ज़ाने जमा कर लेने से हरगिज़ नहीं हो सकता। बल्कि इस मक़्सद को हासिल करने के लिए अस्हाब-ए-मारिफ़त औलिया अल्लाह से तअ़ल्लुक़ और उनकी हिदायात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की ज़रूरत पड़ती है। इसलिए ज़रूरी है कि जिस तरह आदमी जिस्मानी बीमारी के इलाज के लिए बेहतरीन और क़ाबिल डाक्टर को तलाश करके अपने को उसके हवाले कर देता है और उसके बताये हुए नुस्ख़े पर अ़मल करके और परहेज़ का एहतिमाम करके शिफ़ा हासिल करता है। इसी तरह अपनी रूहानी बीमारियों के इलाज के लिए भी माहिर रूहानी डाक्टर तलाश करना चाहिए। दिल की छुपी हुई बीमारियों

का आदमी (चाहे कितना ही बड़ा हो) ख़ुद अपना इलाज नहीं कर सकता। नफ़्स के मकाइद (फ़रेब) इतने ख़तरनाक हैं और शैतान के फ़रैब इतने गहरे और बारीक हैं कि उनका इल्म ख़ुद आदमी को नहीं हो सकता। बल्कि ज़्यादातर ऐसा होता है कि जिस चीज़ को आदमी बिल्कुल इबादत समझता रहता है वही उसके लिए तरक़्क़ी में सबसे बड़ी रूकावट और ज़हरनाक होती है। इस तरह की बीमारी का इलाज शैख़-ए-कामिल ही कर सकता है।

शैख़-ए-कामिल की पहचान

अब यह कैसे पता चले कि कौन शैख़-ए-कामिल है और कौन नाक़िस। तो इस सिलसिले में मुजद्दिद-ए-मिल्लत हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी क़द्दस सिर्रहू ने नीचे दी गई 10 अ़लामतें बतायीं हैं जिनको देखकर शैख़-ए-कामिल को पहचाना जा सकता है। हज़रत रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

"शैख़-ए-कामिल वह है जिसमें ये अ़लामतें हों: 1. बक़द्रे ज़रूरत इल्मे दीन रखता हो। 2. अक़ाइद व आमाल व अख़्लाक़ में शरअ़ का पाबन्द हो। 3. दुनिया का लालच न रखता हो। कमाल का दावा न करता हो कि यह भी दुनिया का हिस्सा है। 4. किसी शैख़-ए-कामिल की सोह्बत में कुछ दिन रहा हो। 5. उस ज़माने के मुन्सिफ़ उ़लमा व मशाइख़ उसको अच्छा समझते हों। 6. ब-निस्बत अ़वाम के ख़्वास यानी समझदार दीनदार लोग उसकी तरफ़ ज़्यादा माइल हों। 7. जो लोग उसके मुरीद हैं उनमें अक्सर की हालत बा-एतिबार इत्तिबा-ए-शरअ़ व क़िल्लत-ए-हिर्स-ए-दुनिया के अच्छी हो। यानी शरअ़ के पाबन्द हों और दुनिया की तरफ़ लगाव कम हो। 8. वह शैख़ तालीम व तल्क़ीन में अपने मुरीदों के हाल पर शफ़्क़त रखता हो और उनकी कोई बुरी बात सुनकर या देखकर उनको रोक-टोक करता हो, यह न हो कि हर एक को उसकी मर्ज़ी पर छोड़ दे। 9. उसकी सोह्बत में चन्द बार बैठने से दुनिया की मुहब्बत में कमी और हक़ तआ़ला की मुहब्बत में तरक़्क़ी महसूस होती हो। 10. ख़ुद भी वह ज़ाकिर व शाग़िल हो कि बग़ैर अ़मल या बग़ैर अ़मल के इरादे के तालीम में बरकत नहीं होती।

जिस शख़्स में ये अ़लामत हों फिर यह न देखे कि उससे कोई करामत (अ़जीब बात) भी सादिर होती है या नहीं या उसको कश्फ़ भी होता है या

नहीं, या यह जो दुआ करता है वह क़ुबूल भी हो जाती है या नहीं, या यह साहिब -ए-तसर्रूफ़ात है या नहीं। क्योंकि ये उमूर शैख़ या वली में पाये जाने ज़रूरी नहीं।”

(क़सदुस्सबील दर इस्लाही निसाब 518)

कोई ज़माना ब-फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी ऐसा नहीं गुज़रा जिसमें ऐसे औलियाअल्लाह न हों जिनमें ये ज़िक्र की गई 10 सिफ़ात न हों। यानी हर ज़माने में ऐसे औलिया अल्लाह रहे हैं। अल्हम्दुलिल्लाह आज भी ऐसे अकाबिर मौजूद हैं जिनसे तअ़ल्लुक़ पैदा करके हज़ारों हज़ार लोग दिलों के तज़्किये पर मेहनतें कर रहे हैं।

तसव्वुफ़ (तज़्किया-ए-नफ़्स का तरीक़ा) की मेहनतों का मक़्सद

इन औलिया अल्लाह के ज़रिये मख़्सूस आमाल व वज़ाइफ़ की जो मश्क़ कराई जाती है उसका अस्ल मक़्सद यह है कि सालिकीन व तालिबीन में सिफ़त-ए-एहसानी का ज़ुहूर हो जाये। यानी दिलों से ग़फ़लत का परदा उठे और वह ईमानी नूर उभर कर आये जिसकी रोशनी से चलते फिरते उठते बैठते हर वक़्त ज़ात-ए-ख़ुदावन्दी का इस्तिह्ज़ार जिसे मलका-ए- याद्दाशत कहा जाता है मिल जाये और “اَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ فَاِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهُ يَرَاكَ” (मुस्लिम शरीफ़ 1/27) (यानी अल्लाह की इबादत इस तरह करो जैसे उसे देख रहे हो, अगर यह न हो सके तो कम से कम यह तसव्वुर करो कि वह तुम्हें देख रहा है) का मुक़ाम हासिल हो जाये। तसव्वुफ़ और सुलूक की सारी मेहनतों का ख़ुलासा और मक़्सद यही है। बाक़ी जो ज़िक्र के तरीक़े हैं या ख़ास आदाद के साथ अज़्कार की तालीम हैं। वे तरीक़े उन ख़ास सूरतों के साथ अस्ल मक़्सद नहीं हैं और न उनको शरअ़ी ऐतिबार से वुजूब या फ़र्ज़ियत का दर्जा हासिल है। बल्कि हक़ीक़त में ये ख़ास तरीक़े अम्राज़-ए-रूहानिया के इलाज और उनको दूर करने की तद्बीरें हैं। जिन्हें शैख़-ए-कामिल सालिक के हालात और ज़रूरियात का जाइज़ा लेकर तज्वीज़ करता है। अब अगर कोई इन्हीं तद्बीरों को अस्ल समझ बैठे और मुन्तहा-ए-मक़्सूद यानी सिफ़त-ए-एहसानी के हुसूल से नज़र फैर ले तो वह यक़ीनन ग़लती पर है और तसव्वुफ़ व सुलूक की हक़ीक़त को बिल्कुल नहीं जानता।

आरिफ़ बिल्लाह हज़रत रायपूरी रहमतुल्लाहि अलैहि का इर्शाद

इसकी वज़ाहत करते हुए अपने ज़माने के साहिब-ए-मारिफ़त और राह-ए-सुलूक के रम्ज़ (इशारा) को पहचानने वाले बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहिब रायपूरी रहमतुल्लाहि अलैहि इर्शाद फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला की मुहब्बत और हर वक़्त उसका और उसकी रज़ा का ध्यान व फ़िक्र करना और उसकी तरफ़ से किसी वक़्त भी ग़ाफ़िल न होना, ये कैफ़ियतें दीन में मत्लूब हैं और क़ुरआन और हदीस से मालूम होता है कि उनके बग़ैर ईमान और इस्लाम कामिल नहीं होता। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में दीन की तालीम व तर्बियत की तरह ये ईमानी हालतें भी आपकी सोहबत ही से हासिल हो जाती थीं। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ान-ए-सोहबत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की सोहबतों में भी यह तासीर थी लेकिन बाद में माहौल के ज़्यादा बिगड़ जाने और इस्तिदादों के नाक़िस हो जाने की वजह से इस मक़्सद के लिए कामिलीन की सोहबत भी काफ़ी नहीं रही, तो दीन के इस हिस्से के इमामों ने इन कैफ़ियात के हासिल करने के लिए सोहबत के साथ "ज़िक्र व फ़िक्र की कस्रत" का इज़ाफ़ा किया और तज्रिबे से यह तजूवीज़ सही साबित हुई। इसी तरह कुछ मशाइख़ ने अपने ज़माने के लोगों के अह्वाल का तज्रिबा करके उनके नफ़्स को तोड़ने और शह्वतों को मग़्लूब करने और तबीअत में नर्मी पैदा करने के लिए उनके वास्ते ख़ास क़िस्म की रियाज़तें और मुजाहदे तज्वीज़ किये। इसी तरह ज़िक्र की तासीर बढ़ाने के लिए और तबीअत में नर्मी और यक्सूई पैदा करने के लिए ज़रब (सूफ़ियों का किसी इस्म या कलिमे को ख़ास ज़ौर और झटके के साथ पढ़ना जिससे दिल पर असर हो) का तरीक़ा निकाला गया, तो उनमें से किसी चीज़ को मक़्सद और ज़रूरी नहीं समझा जाता। बल्कि यह सब कुछ इलाज और तद्बीर के तौर पर किया जाता है और इसी लिए मक़्सद हासिल हो जाने के बाद ये सब चीज़ें छुड़ा दी जाती हैं और यही वजह है कि अइम्मा-ए-तरीक़ अपने अपने ज़माने के हालात और अपने तज्रिबे के मुताबिक़ उन चीज़ों में रद्दो-बदल और कमी ज़्यादती भी करते रहे हैं और अब भी करते रहते हैं। बल्कि एक ही शैख़ कभी कभी अलग अलग तालिबों के लिए उनके ख़ास हालात और उनकी ताक़त के मुताबिक़ अलग अलग आमाल व अश्ग़ाल तज्वीज़ कर देता है और कुछ ऐसे आला इस्तिदाद वाले भी होते हैं जिन्हें इस

14

तरह का ज़िक्र व शुग़्ल कराने की ज़रूरत ही नहीं होती और अल्लाह तआला उनको यूंहि नसीब फ़रमा देता है। इससे हर शख़्स समझ सकता है कि इन सब चीज़ों को सिर्फ़ इलाज और तद्बीर के तौर पर ज़रूरत के लिए कराया जाता है। (बीस बड़े मुसलमान, पेज 998, मज़्मून मौलाना मंज़ूर अहमद नौमानी रहमतुल्लाहि अलैहि)

इस तफ़्सील से मालूम हो गया कि तसव्वुफ़ और राहे सुलूक की महनतें दीन से अलग कोई चीज़ नहीं बल्कि शरीअत की रूह को इंसान की रग व पट्ठे में बसाने का नाम ही अस्ल में तसव्वुफ़ है और यही वह तसव्वुफ़ है जिसके अकाबिर औलिया अल्लाह इमाम रहे हैं और इस राह से उनके हाथों पर हज़ारों मारिफ़त चाहने वाले लोगों ने इरफ़ान व मुहब्बत से सेराबी हासिल की है।

तसव्वुफ़ की राह से दीनी ख़िद्मत में जिला पैदा होती है

तसव्वुफ़ दीनी ख़िद्मात और मस्रूफ़ियात में आड़े नहीं आता बल्कि उन ख़िद्मतों की जान और रूह की हैसियत रखता है। इसीलिए उलमा ने लिखा है कि वही शख़्स ख़ल्के ख़ुदा के लिए इफ़ादा-ए-ज़ाहिरी (पढ़ाई लिखाई) और इफ़ादा-ए-बातिनी (सुलूक और तरबियत) का हक़दार है जो निस्बते बातिनी से आरास्ता व पैरास्ता हो। यह दीन ऐसे ही अस्हाबे निस्बत ख़ुद्दाम के ज़रिये दुनिया में फैला है। सिर्फ़ इल्म से फ़ैज़ नहीं पहुंचता, जबतक कि उस के साथ निस्बत की चाश्नी न हो और निस्बत-ए-बातिनी की वज़ाहत करते हुए हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी क़द्दस सिर्रहू फ़रमाते हैं:

"और निस्बत-ए-बातिनी के हासिल होने की अलामत दो अम्र हैं। एक तो यह कि ज़िक्र और याद्दाश्त का ऐसा मलका हो जाये कि किसी वक़्त ग़फ़्लत न हो और उसमें ज़्यादा तकल्लुफ़ न करना पड़े दूसरे यह कि इताअते हक़ यानी इत्तिबाअ्-ए-अह्काम-ए-शरइय्या की इबादतन व मुआमलतन व ख़ल्क़न और क़ौलन व अफ़्आलन इस को ऐसी रग़्बत और मन्हिय्यात व मुख़ालफ़ात (जो चीज़ें शरअ् के ख़िलाफ़ हों) से ऐसी नफ़रत हो जाये जैस मरग़ूबात व मक्रूहात तबीअत की होती है। और दुनिया का लालच दिल से निकल जाये। كان خلقه القرآن उसकी शान बन जाये। अलबत्ता कस्ल आरिज़ी (सुस्ती) या वस्वसा जिसके तक़ाज़े पर अमल न हो उस रग़्बत व नफ़रत के मनाफ़ी नहीं"

(क़स्दुस् सबील दर इस्लाही निसाब 532)

ज़ाहिर है कि ऐसे साहिबे निस्बत की ख़िदमत से और इफ़ादा-ए-अवाम व ख़वास से जो नफ़ा ख़ल्क़े ख़ुदा को पहुंच सकता है वह ग़ैर निस्बत वाले शख़्स से हरगिज़ नहीं पहुंच सकता। इसलिए ख़ासकर मदारिस के फ़ुज़ला को चाहिए कि वे उ़लूम-ए-ज़ाहिरी को पूरा करने के साथ निस्बत के हासिल करने के लिए किसी शैख़-ए-कामिल की सोहबत व मुताबअ़त से फ़ायदा उठायें। ताकि जब वे ख़िदमत के मैदान में क़दम रखें तो उनके ज़रिये से हिदायत की किरनें चारों तरफ़ पूरी दुनिया में फूटने लगें और उनका साफ़ सुथरा किर्दार और शानदार अ़मल उनके इल्म-ए-नाफ़े का मज़्हर बन जाये।

नक्क़ालों से होशियार!

यहां यह बताना भी ज़रूरी है कि चलता हुआ काम देखकर बहुत से दुनियादार और इज़्ज़त और शौहरत के लालची लोग पीर व मुर्शिद का लिबादा औढ़कर तसव्वुफ़ के नाम पर शिर्क व बिदआ़त की दुकान चलाने में लगे हुए हैं और उन्होंने तसव्वुफ़ के शरीअ़त से अलग होने का ढोंग रचाकर ज़लालत और गुमराही का जाल बिछा रखा है। इस तरह की दुकानें मज़ारात पर सज्जादा नशीनों के ज़रिये ख़ूब चल रही हैं और ख़ूब फल फूल रही हैं। तो अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जो तसव्वुफ़ शरीअ़त के ख़िलाफ़ कोई हुक्म देता हो वह तसव्वुफ़ नहीं है। शैतानियत है, इसलिए ऐसे बनावटी पीरों की जालसाज़ियों (मक्कारियों) से जहाँ अपने को बचाना ज़रूरी है वहीं उन बनावटी पीरों को देखकर असली और सच्चे अह्ले तसव्वुफ़ से दिल में बद्-गुमानी न पैदा करना भी ज़रूरी है। क्योंकि कुछ लोगों की ग़लतियों की वजह से पूरे काम को ग़लत क़रार देना अक़्लमन्दों का काम नहीं है।

बहरहाल गुफ़्तुगू का ख़ुलासा यह है कि दिलों के तज़्किये (पाकी) के लिए मौतबर औलिया अल्लाह के दामन से तअ़ल्लुक़ इख़्तियार करना चाहिए ताकि हमारे लिए इताअ़त व इबादत की राह आसान हो, हमें अल्लाह की रज़ा मिल जाए और हम सच्चे दिल से अपने ख़ुदा से शर्म व हया करने वाले बन जायें। وما ذلک علی اللہ بعزیز (और अल्लाह तआ़ला के लिए यह कोई मुश्किल काम नहीं है)

चौथा हिस्सा

मौत की याद

तज़्कीर-ए-मौत

मौत की हक़ीक़त

अल्लाह अंजाम बख़ैर करे

हुस्ने ख़ातिमा

नज़अ़ का आ़लम

वल्-यज़्कुरिल मौ-त वल्-बिला

ज़ेरे बहस हदीस (اِسْتَحْيُوْا مِنَ اللّٰهِ...الخ) में अल्लाह तआला से शर्माने का हक़ अदा करने की तीसरी अहम तरीन अलामत यह बयान फ़रमाई गई कि आदमी अपनी मौत और उसके बाद पेश आने वाले बर्ज़ख़ी और उख़रवी हालात और आसार और मनाज़िर का हर वक़्त इस्तिहज़ार रखे। वाक़िआ यह है कि मौत के इस्तिहज़ार से इबादत की तरफ़ रग़बत, गुनाहों से हर तरह बचने का जज़्बा और दुनिया की ज़िन्दगी से बे-रग़बती जैसी आला सिफ़ात वुजूद में आती हैं। मौत एक ऐसी हक़ीक़त है जिससे इंकार किसी के लिए भी मुम्किन नहीं। दुनिया में हर नज़रिये के मुताल्लिक़ इख़्तिलाफ़ मौजूद है यहाँ तक कि ख़ुदा और रसूल और निज़ाम-ए-काइनात के बारे में अलग-अलग मज़ाहिब की अलग-अलग रायें पाई जाती हैं। मगर मौत वह अटल हक़ीक़त है जिसके बारे में दुनिया में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं पाया जाता। हर शख़्स यह जानता और मानता है कि एक दिन उसकी दुनियवी ज़िन्दगी का सिलसिला यक़ीनन ख़तम होकर रहेगा और जब उसका वक़्त आयेगा तो दुनिया की कोई ताक़त और आला से आला साइंसी अस्बाब व वसाइल मौत के मुँह से न बचा सकेंगे। क़ुरआन-ए-करीम में कई जगह इर्शाद फ़रमाया गयाः

فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝

(الاعراف آیت: ٣٤، ع ٤)

सो जिस वक़्त उनकी मीआद-ए-मुअय्यन (तैशुदा वक़्त) आ जायेगी उस वक़्त एक साअत (सेकेन्ड) न पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे।

और एक जगह इर्शाद फ़रमायाः

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِىْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ

(سورۃ نساء آیت: ٧٨)

तुम चाहे कहीं भी हो वहां ही मौत तुमको आ दबायेगी अगरचे तुम क़लई चूने (सिमेन्टेड) के क़िले ही में क्यों न हो।

लेकिन उसके बिल्कुल बर ख़िलाफ़ यह भी एक अजीब हक़ीक़त है कि मौत

जितनी ज़्यादा यक़ीनी है उतनी ही लोगों में इससे ग़फ़्लत और बे-तवज्जोही पाई जाती है। यहां तक कि मज्लिसों में मौत का ज़िक्र तक ना-पसन्द किया जाता है, ख़ास कर ख़ुशी की महफ़िलों में अगर मौत का ज़िक्र कर दिया जाये तो नाक-भौं चढ़ जाती हैं, जैसे किसी अन-होनी बात को छेड़ दिया गया हो। यह ग़फ़्लत, ईमानी तक़ाज़े के बिल्कुल बर-ख़िलाफ़ है। मोमिन को तो कस्रत से मौत को याद रखना चाहिए। क़ुरआन-ए-करीम की सैकड़ों आयतों में मौत, हश्र व नश्र और जन्नत व जहन्नम का तफ़्सील से ज़िक्र किया गया है और हज़रात अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की बेअ्सत का अहम तरीन मक़्सद यह है कि इंसान को उसके "असली और दाइमी (हमेशा रहने वाला) वतन" से आगाह करके वहाँ की हमेशा रहने वाली नेअ्मतों का उसे मुस्तहिक़ बना दिया जाये।

पहली फ़स्ल

मौत की याद का हुक्म

इसी वजह से आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को कस्रत से मौत को सामने रखने का हुक्म दिया है।

1. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اَكْثِرُوْا ذِكْرَهَا ذِمِ اللَّذَّاتِ فَإِنَّهُ مَاذَكَرَهُ أَحَدٌ فِي ضِيْقٍ مِنَ الْعَيْشِ إِلَّاوَسَّعَهُ عَلَيْهِ وَلَا فِيْ سَعَةٍ إِلَّاضَيَّقَهُ عَلَيْهِ.

(رواه البزار، شرح الصدور للسيوطي ٤٧)

लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ यानी मौत को कस्रत से याद किया करो। इसलिए कि जो भी उसे तंगी के ज़माने में याद करेगा तो उस पर वुस्अ़त होगी (यानी उसको तबूअ़ी सुकून हासिल होगा कि मौत की सख़्ती के मुक़ाबले में हर सख़्ती आसान है) और अगर आ़फ़ियत और ख़ुशहाली में मौत को याद करेगा तो यह उस पर तंगी का सबब होगा। (यानी मौत की याद की वजह से वह ख़ुशी के ज़माने में आख़िरत से ग़ाफ़िल होकर गुनाह करने से बचा रहेगा)

इस हदीस से मालूम हुआ कि मौत की याद हर हाल में नफ़ा बख़्श है। मुसीबत के वक़्त उसको याद करने से हर मुसीबत आसान हो जाती है। इसीलिए क़ुरआन-ए-करीम में सब्र करने वालों को बशारत देते हुए फ़रमाया गया कि "ये वे लोग हैं कि जब इनको कोई मुसीबत पहुंचती है तो कहते हैं कि इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न" यानी हम अल्लाह ही के लिए हैं और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। इसी तरह जब ख़ुशहाली और आ़फ़ियत के वक़्त मौत को याद किया जाता है तो इसकी वजह से आदमी बहुत से उन गुनाहों से बच जाता है जिनकी ख़्वाहिश आ़म तौर से ख़ुशहाली के ज़माने में क़ुव्वत के साथ उभरती है। इसी लिए ऊपर दी हुई हदीस में मौत को लज़्ज़त तोड़ने वाली चीज़ क़रार दिया गया है।

2. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि ईमान वालों में कौन सा शख़्स सबसे ज़्यादा अ़क्लमंद है? आप ने फ़रमायाः

أَكْثَرُهُمْ لِلْمَوْتِ ذِكْرًا وَأَحْسَنُهُمْ لِمَا بَعْدَهُ اسْتِعْدَادًا أُولٰئِكَ الْأَكْيَاسُ. (رواه ابن ماجه ٤٣٢٤، شرح الصدور ٤٣)

उनमें जो सबसे ज़्यादा मौत को याद करने वाला हो और मौत के बाद के लिए जो सबसे उम्दा तैयारी करने वाला हो, ऐसे ही लोग सबसे ज़्यादा अ़क्लमंद हैं।

3. हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَلْكَيِّسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَاجِزُ مَنْ اَتْبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهُ وَتَمَنّٰى عَلَى اللّٰهِ.

(رواه الترمذی ٢/٧٢)

अ़क्लमंद आदमी वह है जो अपने नफ़्स का मुहासबा करता रहे और मरने के बाद के लिए अ़मल करे जबकि आ़जिज़ और दर-मान्दा आदमी वह है जो अपने आप को अपनी ख़्वाहिश का पाबन्द बना ले और फिर अल्लाह तआ़ला से उम्मीदें बांधे।

आजकल अ़क्लमन्द उसे समझा जाता है जो दुनिया कमाने और कारोबार करने में आगे बढ़ जाये चाहे उसके पास आख़िरत के लिए कोई भी अ़मल न हो और जो शख़्स अपनी ज़िन्दगी आख़िरत की तैयारी में लगाये, माल के हासिल करने में हलाल और हराम की तमीज़ रखे और हर हर काम में शरीअ़त को मल्हूज़ रखे तो लोग उसे बेचारा और आ़जिज़ क़रार देते हैं। ऐसे शख़्स को तरह-तरह के ताने सुनने पड़ते हैं लेकिन ऊपर दी हुई हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अ़क्लमंदी का जो पैमाना बताया है वह लोगों के नज़रिये से बिल्कुल अलग है। हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नज़र में तारीफ़ के क़ाबिल शख़्स वही है जो मौत को याद करने वाला और उसके लिए तैयारी करने वाला हो। चुनांचे एक हदीस में आया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने किसी शख़्स की तारीफ़ ब्यान की गई तो आप ने लोगों से पूछा कि मौत को याद करने में उस का हाल क्या है? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि हमनें उससे मौत का ज़्यादा ज़िक्र नहीं सुना।

फिर आप ने पूछा कि वह अपनी ख़्वाहिशात को छोड़ता है या नहीं? इस पर लोगों ने अ़र्ज़ किया कि वह दुनिया से ख़्वाहिशात के मुताबिक़ फ़ायदा उठाता है। यह सुनकर जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह आदमी इस तारीफ़ के लाइक़ नहीं है जो तुम उस के बारे में कर रहे हो।

(किताबुज़् ज़ुह्द लि इब्निल मुबारक, पेज 90)

बहरहाल दानिशमंद, दूर-अंदेश और अक़्लमंद वही शख़्स है जो हमेशा दाइमी ज़िन्दगी को बेह्तर बनाने के लिए कोशिश करता रहे और इस चंद रोज़ा ज़िन्दगी में पड़कर हमेशा के अ़ज़ाब को मौल न ले।

4. हज़रत वज़ीन इब्ने अ़ता रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब लोगों में मौत से ग़फ़्लत का एहसास फ़रमाते तो आप हुजरा-ए-मुबारका के दरवाज़े पर खड़े होकर तीन मर्तबा पुकार कर नीचे दिए गये कलिमात इर्शाद फ़रमाते थे:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ! يَا أَهْلَ الْإِسْلَامِ! أَتَتْكُمُ الْمَوْتُ رَاتِبَةً لَازِمَةً جَاءَ الْمَوْتُ بِمَا جَاءَ بِهِ، جَاءَ بِالرُّوحِ وَالرَّاحَةِ وَالْكَرَّةِ الْمُبَارَكَةِ لِأَوْلِيَاءِ الرَّحْمٰنِ مِنْ أَهْلِ دَارِ الْخُلُودِ الَّذِيْنَ كَانَ سَعْيُهُمْ وَرَغْبَتُهُمْ لَهَا. أَلَا! إِنَّ لِكُلِّ سَاعٍ غَايَةً وَغَايَةُ كُلِّ سَاعٍ الْمَوْتُ سَابِقٌ وَمَسْبُوقٌ.

(رواه البيهقي، شرح الصدور ٤٤)

ऐ लोगो! ऐ अह्ले इस्लाम! तुम्हारे पास ज़रूर बा-ज़रूर मुक़र्ररा वक़्त में मौत आने वाली है, मौत अपने साथ उन चीज़ों को लाएगी जिनको वह लाती है, वह रहमान के मुक़र्रब बन्दों के लिए जो जन्नती हैं और जिन्होंने उसके लिए कोशिश और उसकी चाहत की है, आ़फ़ियत, राहत और बहुत सी मुबारक नेअ़्मतें लेकर आयगी, ख़बरदार हो जाओ! हर मेह्नत करने वाले की एक इन्तिहा (हद) है और वह इन्तिहा मौत है। पहले आये या बाद में।

इस हदीस से मालूम हुआ कि मौमिन के लिए मौत को याद करना कोई तबीअ़त के ख़िलाफ़ नहीं है क्योंकि उसे यक़ीन है कि उसके आमाल-ए- सालिहा की बदौलत उसे आख़िरत में बेह्तरीन दाइमी नेअ़्मतों से सरफ़राज़ किया जायेगा। मौत से तो वह पह्लूतही करे (टाल मटोल करना) जिसे आख़िरत में अपनी तही दामनी (दामन छुड़ाने) का यक़ीन हो। क़ुरआन-ए-करीम में कई

जगह ज़िक्र किया गया है कि अहले किताब अपने को अल्लाह का मुक़र्रब और जन्नत का सबसे पहले मुस्तहिक़ क़रार देते थे। क़ुरआन-ए-करीम ने उनके दावे को झुठलाते हुए फ़रमाया है कि अगर तुम्हारा दावा सच्चा है तो तुम्हें जल्द से जल्द मौत की तमन्ना करनी चाहिए। ताकि तुम अपने असल ठिकाने पर पहुंचकर नेअ्मतों से फ़ायदा उठाओ। लेकिन अहले किताब ने न कभी तमन्ना की, न करेंगे और हमेशा मौत से बचने की कोशिश करते रहेंगे। जो इस बात की दलील है कि उन्हें आख़िरत में अपनी महरूमी का पूरा यक़ीन है। सच्चे मौमिन की शान उनसे बिल्कुल अलग है। उसके लिए तो मौत का ज़िक्र महबूब से मुलाक़ात की लज़्ज़त अता करता है।

चुनांचे हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मर्तबा सहाबा से इर्शाद फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें यह न बतलाऊं कि क़ियामत में अल्लाह तआला ईमान वालों से सबसे पहले क्या बात करेगा और तुम उसको क्या जवाब दोगे? हमने अर्ज़ किया कि जी हाँ या रसूलल्लाह ज़रूर बतलाइये। तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला मौमिनीन से फ़रमायेगा कि क्या तुम्हें मुझसे मुलाक़ात पसन्द थी, मौमिन लोग अर्ज़ करेंगे कि हाँ हमारे रब! तो अल्लाह तआला पूछेगा कि क्यों? तो अहले ईमान अर्ज़ करेंगे कि हमें आपकी मग़्फ़िरत और माफ़ी की उम्मीद थी, तो अल्लाह तआला फ़रमायेगा, मेरी मग़्फ़िरत तुम्हारे लिए वाजिब हो गई।

(किताबुज़ ज़ुहद, 93)

मौत के बारे में अस्हाबे मारिफ़त के अक़्वाल व अहवाल

○ हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मौत नसीहत का इन्तिहाई बाअसर (ज़रिआ) है लेकिन इससे ग़फ़लत भी बहुत ज़्यादा है। मौत नसीहत के लिए काफ़ी है और ज़माना लोगों में जुदाई पैदा करने के लिए तैयार है। आज जो लोग घरों में हैं वे कल क़ब्रों में होंगे।

○ रजा बिन हयात रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मौत को कसरत से याद करेगा उसके दिल से हसद और इतराहट निकल जायेगी। यानी न तो वह किसी दुनियवी नेअ्मत की बिना पर ज़हनी उलझन में मुब्तला होगा और न ही ख़ुशी व मुसर्रत में मस्त होकर गुनाहों का इर्तिकाब करेगा।

❍ औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स के दिल में मौत की याद जम जाती है वह अगले दिन तक भी अपनी ज़िन्दगी के रहने का यक़ीन नहीं रखता। क्योंकि कितने ऐसे दिन तक पहुंचने वाले हैं कि वे मौत की वजह से दिन भी पूरा नहीं कर पाते और कितने लोग कल की उम्मीद रखने वाले हैं मगर कल तक नहीं पहुंच पाते। अगर तुम मौत और उसके आने को देख लो तो आरज़ू और उसके धोके को ना-पसन्द करोगे और औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह ही से मरवी है कि फ़रामते थे कि आदमी जिस अ़मल की वजह से मौत को ना-पसन्द करता है (यानी गुनाह और नाफ़रमानी) उसे फ़ौरन छोड़ दे फिर कोई मुश्किल नहीं जब चाहे मर जाये।

❍ हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि से मरवी है कि आप फ़रमाते थे कि मौत की याद जिसके दिल में जगह बना ले तो वह अपने क़ब्ज़े के माल को हमेशा ज़्यादा ही समझेगा। (यानी ज़यादा माल बढ़ाने की फ़िक्र न करेगा)।

❍ हज़रत मजूमअ़ तैमी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मौत की याद एक तरह की मालदारी है।

❍ कअ़्ब-ए-अहबार रहमतुल्लाहि अ़लैहि से मरवी है कि जो शख़्स मौत को पहचान ले उसके लिए दुनिया की तमाम मुसीबतें और रंज और ग़म हल्के हो जायेंगे।

❍ एक दानिशमंद का क़ौल है कि दिलों में अ़मल की ज़िन्दगी पैदा करने के लिए मौत की याद सबसे ज़्यादा बाअसर है।

❍ एक औ़रत ने हज़रत आ़ईशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो आप ने नसीहत फ़रमाई कि तुम मौत को कसरत से याद किया करो तुम्हारा दिल नर्म हो जायेगा।

❍ हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से नक़्ल किया गया है कि आप फ़रमाते थे कि क़ब्र अ़मल का सन्दूक़ है और मौत के बाद उसकी ख़बर मिलेगी।

(शर्हुस सुदूर, पेज 46-48)

❍ सालिहीन (नेक लोगों) में से एक शख़्स रोज़ाना शहर की दीवार पर खड़े होकर रात में यह आवाज़ लगाता था "चलो क़ाफ़िले के चलने का वक़्त आ गया है"। जब उसका इन्तिक़ाल हो गया तो शहर के हाकिम को यह

आवाज़ नहीं सुनाई दी, मालूम करने पर पता चला कि उसकी वफ़ात हो गई है तो अमीर ने यह अश्आर पढ़े:

مَا زَالَ يَلْهَجُ بِالرَّحِيْلِ وَذِكْرِهٖ حَتّٰى أَنَاخَ بِبَابِهِ الْجَمَّالُ

فَأَصَابَهُ مُتَيَقِّظًا مُتَشَمِّرًا ذَا أُهْبَةٍ لَمْ تُلْهِهِ الْآمَالُ

तर्जुमाः (वह बराबर कूच की आवाज़ और उसके तज़्किरे से दिलचस्पी लेता रहा यहाँ तक कि ख़ुद उसके दरवाज़े पर ऊंट बान (मौत के फ़रिश्ते की तरफ़ इशारा है) ने पड़ाव डाला। चुनांचे उसे बैदार (जागा हुआ), मुस्तइद और तैयार पाया। खोटी आरज़ुएं उसे ग़ाफ़िल न कर सकीं)।

(अत्-तज़्किरा फ़ी अह्वालिल-मौता वल-आख़िरतिः 10)

○ अ़ल्लामा तैमी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि दो चीज़ों ने मुझसे दुनिया की लज़्ज़त छीन ली है, एक मौत की याद, दूसरे मैदान-ए-मह्शर में अल्लाह रब्बुल आ़लमीन के सामने हाज़िरी का इस्तिह्ज़ार। (अत्-तज़्किरा, 10)

○ हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि का मामूल था कि वह उ़लमा को जमा फ़रमाकर मौत, क़ियामत और आख़िरत का मुज़ाकरा किया करते थे और फिर उन अह्वाल से मुतास्सिर होकर सब ऐसे फूट- फूटकर रोते थे जैसे कि उनके सामने कोई जनाज़ा रखा हुआ है। (अत्-तज़्किरा, 10)

मौत को याद करने के कुछ फ़ायदे

अ़ल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि लिखते हैं कि कुछ उ़लमा से मन्क़ूल है कि जो शख़्स मौत को कस्रत से याद रखे उसको अल्लाह तबारक व तआ़ला तीन बातों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है:

1. **तअ़्जीलुत्तौबाः** यानी अगर उससे कोई गुनाह हो जाये तो वह जल्द से जल्द तौबा करके गुनाह माफ़ कराने की कोशिश करता है कि कहीं तौबा के बग़ैर मौत न आ जाये।
2. **क़नाअ़तुल क़ल्बः** यानी मौत को याद रखने वाला लालच में मुब्तला नहीं होता बल्कि जो कुछ भी उसे मिल जाता है उसी पर राज़ी रहता है और यह क़नाअ़त उसे तब्अ़ी सुकून और दिली राहत अ़ता करती है। वह यह सोचता है कि थोड़ी बहुत ज़िन्दगी है जिस तरह भी गुज़र जाए गुज़ार लेंगे। ज़्यादा की फ़िक्र करने से कोई फ़ायदा नहीं।
3. **निशातुल इबादतः** यानी मौत का इस्तिह्ज़ार रखने वाला शख़्स जब

इबादत करता है तो पूरी दिल-जमूअी और यक्सूई की कोशिश करता है। इस दिल-जमूअी की दो वजह होती हैं। पहली तो यह कि उसे ख़तरा रहता है कि पता नहीं आगे उसको इबादत का मौक़ा मिले कि न मिले, इसलिए उसे जितना अच्छा बना लें, ग़नीमत ही ग़नीमत है। दूसरे यह कि आख़िरत की याद की वजह से उसे इबादत पर मिलने वाले अज़ीम उख़्रवी बदले का कामिल यक़ीन होता है। जिसकी वजह से उसे इबादत में वह कैफ़ व सुरूर नसीब होता है। जो अल्फ़ाज़ में ब्यान नहीं किया जा सकता।

मौत को भूल जाने के नुक्सानात

इसके बर-ख़िलाफ़ जो शख़्स मौत को याद नहीं रखता और आख़िरत से ग़ाफ़िल रहता है वह तीन तरह की महरूमियों में मुब्तला कर दिया जाता है।

1. **तस्वीफ़ुत् तौबाः** यानी अगर उससे कोई गुनाह हो जाये तो तौबा करने में टाल मटोल करता रहता है और इस्तिग़्फ़ार में जल्दी नहीं करता और कभी कभी इसी हालत में उसकी मौत आ जाती है।
2. **तर्कुर्रिज़ा बिल-कफ़ाफ़ः** जब मौत की याद नहीं रहती तो आदमी की हवस बढ़ जाती है और वह ज़रूरत के मुताबिक़ रोज़ी पर राज़ी नहीं रहता, बल्कि هل من مزيد (और ज़्यादा चाहिए) की बीमारी का शिकार हो जाता है, मौत से ग़फ़्लत की वजह से मन्सूबों पर मन्सूबे बनाये चला जाता है जिसका अन्जाम यह निकलता है कि आरज़ुएं रह जाती हैं और मौत आकर ज़िन्दगी का सिलसिला ख़त्म कर देती है।
3. **अत्तकासुल फ़िल इबादतः** जब आदमी मौत से ग़ाफ़िल रहता है तो इबादत करने में क़ुद्रती तौर पर सुस्ती ज़ाहिर होती है और निशात काफ़ूर हो जाता है, पहली बात तो यह कि इबादत करता ही नहीं और करता भी है तो वह तबीअ़त पर निहायत बोझ महसूस होती है यह गिरानी सिर्फ़ इस वजह से है कि आदमी को यह इस्तिहज़ार नहीं रहता कि हमसे मरने के बाद इन ज़िम्मेदारियों के बारे में सवाल किया जायेगा और अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता वहां रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी के मुताबिक़ जवाब न हुआ तो ऐसी रूस्वाई होगी जिसके मुक़ाबले में दुनिया की सारी रूस्वाइयाँ और बे-इज़्ज़तियाँ हेच हैं यानी कुछ भी नहीं हैं।

(शर्हुस् सुदूर, 45)

मौत को याद करने के कुछ ज़राए

अहादीस-ए-तय्यिबा में जहां मौत को याद रखने की तलक़ीन फ़रमाई गई है वहीं कुछ ऐसे आमाल की तर्ग़ीब भी आई है जो मौत को याद रखने में कामियाब और मददगार होते हैं। उनमें सबसे अहम अ़मल यह है कि कभी कभी आम क़ब्रिस्तान जाकर क़ब्र की ज़िन्दगी और क़ब्र वालों के हालात के बारे में ग़ौर किया जाये। चुनांचे एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः "زُوْرُوا الْقُبُوْرَ فَإِنَّهَا تُذَكِّرُ الْمَوْتَ" (मुस्लिम शरीफ़) क़ब्रों की ज़ियारत किया करो इसलिए कि वे मौत की याद दिलाती हैं।

और एक रिवायत में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ. أَلَا! فَزُوْرُوْهَا فَإِنَّهَا تُرِقُّ الْقَلْبَ وَتُدْمِعُ الْعَيْنَ وَتُذَكِّرُ الْآخِرَةَ وَلَا تَقُوْلُوْا هُجْرًا. (رواه الحاكم، شرح الصدور ٤٩)

मैं तुम्हें पहले क़ब्रों पर जाने से मना करता था मगर अब सुनो! तुम लोग क़ब्रों पर जाया करो क्योंकि वे दिलों को नर्म करती हैं, आंख से आंसू जारी करती हैं और आख़िरत की याद दिलाती हैं और कोई बुरी बात मत कहा करो।

इस तरह की अहादीस में क़ब्रिस्तान को इब्रत का सामान क़रार दिया गया है और साथ में क़ब्रिस्तान जाने का अस्ल मक़सद भी बताया दिया गया कि वहां सिर्फ़ तफ़रीह और तमाशे की ग़रज़ से न जाये बल्कि अस्ल निय्यत मौत को याद करने और आख़िरत के इस्तिह्ज़ार की होनी चाहिए, मगर अफ़्सोस का मुक़ाम है कि आज हमारे दिलों पर ग़फ़्लतों के ऐसे गहरे पर्दे पड़ चुके हैं और क़सावत (दिल की सख़्ती) का ऐसा मुहलिक ज़ंग लग चुका है कि अब क़ब्रिस्तानों को खेलकूद और तमाशों की जगह बना लिया गया है, उ़र्स के नाम से औलिया अल्लाह की क़ब्रों पर वह तुफ़ाने बद्-तमीज़ी होता है कि الامان الحفيظ। और इस पर तअ़ज्जुब यह कि इन सब कामों को बहुत बड़े अज्र व सवाब के आमाल में शामिल करने की शर्मनाक कोशिश की जाती है, इसी तरह आज जो क़ब्रिस्तान आबादियों के बीच में आ चुके हैं, वे मुहल्ले के आवारा फिरने वाले नौजवानों के लिए खेलकूद के मैदान बनते जा रहे हैं और इन क़ब्रिस्तानों में जुवारियों और सट्टा बाज़ों के रहने की जगहें भी नज़र आती हैं, क़ब्रों के सामने

रहते हुए इस तरह की हरकतें सख़्त आख़िरत और क़सावते क़ल्बी की दलील हैं।

मुर्दों को नहलाना और जनाज़ों में शिरकत करना

इसी तरह मौत को याद करने के लिए दो अहम और कामियाब असबाब कुछ रिवायात में ब्यान किये गये हैं:

1. एक यह कि मुर्दों के नहलाने में शिरकत की जाये, 2. दूसरे यह कि नमाज़े जनाज़ा में कस्रत से शरीक हुआ जाये। हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

زُرِ الْقُبُوْرَ تَذْكُرْبِهَا الْاٰخِرَةَ وَاغْسِلِ الْمَوْتٰى فَاِنَّ مُعَالَجَةَ جَسَدٍ خَاوٍ مَوْعِظَةٌ بَلِيْغَةٌ وَّصَلِّ عَلَى الْجَنَآئِزِ لَعَلَّ ذٰلِكَ اَنْ يُّحْزِنَكَ فَاِنَّ الْحَزِيْنَ فِيْ ظِلِّ اللّٰهِ يَتَعَرَّضُ لِكُلِّ خَيْرٍ.

(رواه الحاكم، شرح الصدور ٥٠)

क़ब्रों की ज़ियारत किया करो उनके ज़रिये से तुम आख़िरत को याद रखोगे और मुर्दों को नहलाया करो इसलिए कि बेजान जिस्म में ग़ौर व फ़िक्र ख़ुद एक बाअसर नसीहत है और जनाज़ों पर नमाज़ पढ़ा करो, हो सकता है कि इस वजह से तुम्हारा दिल ग़मगीन हो जाये क्योंकि ग़मगीन आदमी अल्लाह के साये में रहता है और हर ख़ैर (भलाई) का उससे सामना होता है।

इस हदीस में तीन बातें इर्शाद फ़रमाई गई हैं: अव्वल क़ब्रिस्तान जाना, जिसका ज़िक्र पहले आ चुका है। दूसरे मुर्दों को नहलाना, यह एक अहम नसीहत है और मोजूदा मुआशरे के लिए इन्तिहाई क़ाबिल-ए-तवज्जोह है आजकल ग़ैर मुस्लिमों के रीत रिवाज और तौर तरीक़ों से मुतास्सिर होकर मुस्लिम मआशरे में भी मय्यित की लाश से एक तरह की वहशत का इज़्हार किया जाने लगा है, घर वाले भी क़रीब जाना नहीं चाहते, जब ग़ुस्ल देने का मौक़ा आता है तो भी दूसरों पर छोड़ देते हैं, हालांकि यह बुअ़्द और दूरी मरने वाले के साथ एक तहर की ज़्यादती है, मय्यित की लाश इस्लाम की नज़र में निहायत क़ाबिले एहतिराम है, उसके साथ इक्राम का मुआमला करना ज़रूरी है। इसलिए बेह्तर यह है कि मसाइल मालूम करके मय्यित के क़रीबी रिश्तेदार ही उसे ग़ुस्ल दें

और अगर पूरा तरीक़ा मालूम न हो तो कम से कम ग़ुसुल कराने वाले के साथ पानी वग़ैरह डलवाने में मदद करते रहें। मुर्दों के साथ इस तरह के ताल्लुक़ से अपनी मौत का मंज़र भी सामने आ जायेगा और फ़ितरी तौर पर आदमी अपने मुस्तक़्बिल के बारे में ग़ौर करने पर मजबूर हो जायेगा।

ऊपर दी हुई हदीस में तीसरी हिदायत यह है दी गई कि नमाज़े जनाज़ा में कसरत से शिरकत की जाये। मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः कि जो शख़्स किसी मुसलमान की नमाज़-ए-जनाज़ा में शरीक हो उसको एक क़ीरात सवाब मिलता है जिसकी कम से कम वुस्अ़त उहुद पहाड़ के बराबर है और जो शख़्स जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तक भी जाये उसको दो क़ीरात सवाब से नवाज़ा जाता है।

(मुस्लिम शरीफ़ 1/307)

इसलिए कोशिश करनी चाहिए कि जब भी मौक़ा मिले जनाज़े की नमाज़ न छोड़ी जाये, नमाज़े जनाज़ा में क्योंकि मरने वाले के ग़मगीन रिश्तेदार शामिल होते हैं उनके रंज व ग़म की वजह से पूरा माहौल ग़मगीन बन जाता है और फिर आदमी यह सोच कर जाता है कि एक दिन तुम्हारा जनाज़ा भी वैसे ही उठेगा और लोग इसी अन्दाज़ में रंज व ग़म का इज़्हार करेंगे।

एक अ़रबी शाइर कहता है:

يَا صَاحِبِيْ لَا تَغْتَرِرْ بِتَنَعُّمٍ ☆ فَالْعُمْرُ يَنْفَدُ وَالنَّعِيْمُ يَزُوْلُ

وَإِذَا حَمَلْتَ إِلَى الْقُبُوْرِ جَنَازَةً ☆ فَاعْلَمْ بِأَنَّكَ بَعْدَهَا مَحْمُوْلُ

तर्जुमाः मेरे दोस्त दुनिया के आराम व राहत से धोखे में मत पड़ना इसलिए कि उम्र ख़त्म हो जायेगी और ऐश जाता रहेगा और जब तुम किसी जनाज़े को उठाकर क़ब्रिस्तान ले जाओ तो यह यक़ीन कर लेना कि उसके बाद तुम्हें भी ऐसे ही उठाकर ले जाया जाएगा।

ऊपर दी हुई हदीस में यह इशारा भी फ़रमाया गया कि जब जनाज़े को देखकर दिल ग़मगीन होगा तो क़ुद्रती तौर पर इनाबत इलल्लाहि (अल्लाह की तरफ़ रूजूअ़ करना) की कैफ़ियत पैदा होगी। पिछले गुनाहों पर नदामत और शर्मिंदगी का एह्सास जागेगा और इस हाल में वह शख़्स जो भी तमन्ना करेगा रह्मते ख़ुदावन्दी उसको पूरा करने के लिए तैयार होगी। इन्शाअल्लाह तआ़ला।

□ □

दूसरी फ़स्ल

मौत की हक़ीक़त

आम तौर पर लोगों का यह ख़्याल है कि मौत फ़ना का नाम है। हालांकि यह बात हक़ीक़त की सही ताबीर नहीं। अस्ल वाक़िआ यह है कि इंसान की मौत सिर्फ़ एक हालत के तग़य्युर से ताबीर है। इंसान इस जिस्म और आज़ा का नाम नहीं बल्कि असल इंसान वह जान और रूह है जो इस जिस्मे उन्सरी में मिलकर आज़ा व जवारेह से काम लेती है। यह जिस्म रूह के लिए सवारी की हैसियत रखता है जब इस सवारी का सवार यानी रूह और जान जिस्म से जुदा हो जाती है तो यह सवारी यानी बदन बेकार हो जाता है। और उसे अब "लाश" के लफ़्ज़ से ताबीर करते हैं। जो "ला शै-अ" (कुछ नहीं) का मुख़फ़्फ़फ़ (घटाया गया) है। देखिये यहां बदन पूरा मौजूद है, हाथ, पैर, कान, नाक वग़ैरह सारे आज़ा सही सालिम हैं मगर जब जान निकल गई तो कहा जाता है कि "आदमी चला गया" इसलिए कि रूह चली गई और जान अपनी जगह से मुन्तक़िल हो गई। अगर इसी बदन का नाम इंसान होता तो बदन के रहते हुए कभी यह न कहा जाता कि आदमी चला गया और फ़्लां का इन्तिक़ाल हो गया।

बहरहाल मौत का एक ज़ाहिरी असर तो यह सामने आता है कि इंसान का बदन कामिल तरीक़े पर अपाहिज हो जाता है और रूह की हुक्मरानी और तसल्लुत से आज़ाद हो जाता है। हालांकि रूह के ऐतिबार से उसपर दो तरह के तग़य्युरात मुरत्तब होते हैं।

1. पहली बात तो यह कि रूह से उसका मुजव्वज़ा बदन और आज़ा, इसी तरह उसके घर वाले, रिश्तेदार और उसका माल व दौलत सब छीन लिया जाता है। जिससे फ़ित्री तौर पर रूह को तक्लीफ़ होती है, बल्कि जिस रूह को उन दुनियवी मशाग़िल से जितना ज़यादा प्यार और ताल्लुक़ होता है और आख़िरत से ग़फ़लत होती है उतना ही उस रूह को इन्तिक़ाल से तक्लीफ़ का एहसास होता है और अगर वह रूह दुनियवी अस्बाब के बजाये ज़िक्रे ख़ुदावन्दी से मानूस होती है तो यह इन्तिक़ाल उसके लिए ख़ुशी सुरूर और मुसर्रत और बशाशत का सामान बन जाता है।

2. इस इन्तिक़ाले रूहानी से दूसरा तग़य्युर यह सामने आता है कि इसके लिए वे हालात सामने आ जाते हैं जो जसदे उन्सुरी के साथ वाली ज़िन्दगी में सामने नहीं आते। जैसा कि कोई सोता हुआ शख़्स नींद से जाग जाये तो उसको सामने दिखाई देने वाली चीज़ें दीखने लगती हैं इसी तरह गोया कि सब इंसान नींद में हैं मौत यानी रूह के इन्तिक़ाल पर वे सब बैदारी के आलम में आ जाएंगे और सबसे पहले उन पर यह बात ज़ाहिर होगी कि उनकी नेकियाँ उनके लिए कितनी नफ़ा बख़्श हैं और बुराइयों से क्या नुक़्सानात हैं। (मुलख़्ख़स इह्याउल उ़लूम 4/309)

मौत की शिद्दत

मौत के वक़्त की शिद्दत और सख़्ती ना-क़ाबिले ब्यान है, उसकी अस्ल हालत वही जान सकता है जो उस हाल से गुज़रता है, क़ुरआन-ए-करीम में ग़ाफ़िल इंसानों को झंझोड़ते हुए फ़रमाया गयाः

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ (سورہ ق، آیت ۱۹)

और मौत की सख़्ती हक़ीक़तन क़रीब आ पहुंची, यह वह चीज़ है जिससे तू बिदकता है।

दूसरों का तो क्या कहना खुद आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर भी मौत की यह शिद्दत तारी हुई, बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है कि वफ़ात के क़रीब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सामने रखे हुए एक बरतन में से पानी लेकर अपने चेहरा-ए-अनूवर पर छिड़कते थे ताकि तक्लीफ़ की शिद्दत में कुछ कमी हो और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान-ए- मुबारक पर ये अल्फ़ाज़ थेः

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، اِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ۔ (بخاری شریف ۲/۶۴۰، حدیث ۴۴۴۹)

"अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, सच्ची बात है कि मौत की सख़्तियाँ बरहक़ हैं" और हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा इर्शाद फ़रमाती हैं किः वफ़ात के वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शिद्दते तक्लीफ़ अपनी आँखों से देख कर अब मैं किसी मरने वाले की तक्लीफ़ को ना-पसन्द नहीं करती। (बुख़ारी शरीफ़ किताबुल मग़ाज़ी 2/639 हदीस 4446) तो मालूम हुआ कि

मौत के वक़्त की शिद्दत का मुआमला आम है, यह हालत मौमिन पर भी तारी होती है और काफ़िर पर भी तारी होती है। अलबत्ता उसके असरात अलग-अलग मुरत्तब होते हैं कि मोमिन के लिए यह शिद्दत दरजात की बुलन्दी का सबब होती है जबकि काफ़िर और फ़ाजिर के लिए अज़ाब की शुरूआत होती है, कुछ रिवायात से मालूम होता है कि अल्लाह तआला मोमिन की गलतियों को माफ़ करने के लिए उसे दुनियवी तक्लीफ़ में मुब्तला फ़रमाता है और अगर कोई कसूर रह जाती है तो मौत के वक़्त की शिद्दत से उसकी तलाफ़ी (नुक़्सान का बदल) की जाती है। जबकि फ़ाजिर अगर कोई नेकी वाला अमल करता है तो उसका बदला उसे दुनिया ही में दे दिया जाता है यहां तक कि इस अमल की वजह से कभी मौत से आसानी भी उसे नसीब हो जाती है। (शर्हुस सुदूर, 58)

इसलिए किसी काफ़िर की आसान मौत देखकर यह न समझना चाहिए कि आख़िरत में भी उसके साथ आसानी का मुआमला होगा और मोमिन की शिद्दत को देखकर हरगिज़ यह ख़्याल न करें कि आख़िरत में भी उसके साथ शिद्दत होगी, अलबत्ता यह ज़रूरी है कि अपनी कमज़ोरी और नातवानी का ख़्याल करते हुए हर मोमिन को यह दुआ करनी चाहिए कि उसे मौत के वक़्त आसानी नसीब हो। चुनांचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी मौत की आसानी की दुआ मांगना साबित है।

मौत के वक़्त कैसा महसूस होता है

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु इन्तिहाई अक़्लमंद, मुदब्बिर और ज़की व फ़हीम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में से हैं। आपके हालात में लिखा है कि जब आप पर नज़अ (दम निकलना) की कैफ़ियत शुरू हुई तो आपके साहबज़ादे ने फ़रमाया कि अब्बा जान! आप फ़रमाया करते थे कि काश मुझे ऐसा समझदार आदमी मिलता जो मौत के वक़्त के हालात मुझे बता देता और आप कहते थे कि ताज्जुब है कि आदमी होश में रहने के बावुजूद मौत के वक़्त अपने ऊपर गुज़रने वाली हालत नहीं बता पाता। अब्बा जान! अब आप उसी हालत में पहुंच चुके हैं। लिहाज़ा आप ही हमें बताइये कि आप मौत के वक़्त के हालात किस तरह महसूस फ़रमा रहे हैं। साहबज़ादे की बात सुनकर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि बेटे! हक़ीक़त यह है कि मौत

की हालत को ब्यान करना अल्फ़ाज़ की गिरफ़्त (पकड़) से बाहर है लेकिन फिर भी मैं कुछ इशारात समझाता हूँ, मैं इस वक़्त ऐसा महसूस कर रहा हूँ कि जैसे मेरी गरदन पर रिज़्वा नामी पहाड़ रख दिया गया है और मुझे ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरे पेट में कांटे की शाख़ है (जिसे खींचा जा रहा है) और मुझे सांस लेने में इतनी तंगी और तक्लीफ़ है कि जैसे मेरी जान सूई के सुराख़ में से होकर निकल रही है। (शर्हुस् सुदूर 63)

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मौत का मंज़र दुनिया और आख़िरत में इन्तिहाई हौलनाक मंज़र है, और मौत की तक्लीफ़ आरों से चीरे जाने, क़ैंचियों से काटे जाने और देगचियों में पकाये जाने से भी ज़्यादा सख़्त और तक्लीफ़ देने वाली है और अगर कोई मुर्दा क़ब्र से निकल कर दुनिया के ज़िंदा लोगों को सिर्फ़ मौत की शिद्दत ही से बा-ख़बर कर दे तो लोग ऐश व आराम को भूल जायें और उनकी रातों की नींदें उड़ जायें। (शर्हुस् सुदूर 64)

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने एक मर्तबा हज़रत कअ़्ब-ए-अहबार रहमतुल्लाहि अ़लैहि से पूछा कि ज़रा मौत के बारे में बताइये? तो उन्होंने जवाब दिया कि ऐ अमीरुल-मोमिनीन इसे यूं समझये कि कोई इन्तिहाई कांटेदार टहनी आदमी के पेट में डाल दी जाये और उसके कांटे हर हर रग और जोड़ में फंस जायें और फिर कोई निहायत ताक़तवर आदमी उस टहनी को पकड़कर सख़्ती से खींच ले तो ऐसा करने से जितनी तक्लीफ़ होगी उससे कहीं ज़्यादा तक्लीफ़ मौत के वक़्त होती है। (शर्हुस् सुदूर 64)

हज़रत अ़ता बिन यसार रहमतुल्लाहि अ़लैहि से मरवी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः कि मौत का फ़रिश्ता जब रूह निकालता है तो उसकी तक्लीफ़ तलवार के एक हज़ार बार मारने से भी ज़्यादा होती है और मौत के वक़्त मोमिन की रग-रग में तक्लीफ़ का एहसास होता है और उस वक़्त शैतान भी उसके निहायत क़रीब होता है (ताकि उसे आख़िरी वक़्त में बहका सके)। (शर्हुस् सुदूर 65)

मरवी है कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की रूह अल्लाह तआ़ला के दरबार में पहुंची तो उनसे अल्लाह तआ़ला ने पूछा कि आपने मौत को कैसा पाया? तो आप ने जवाब दिया कि मैंने ऐसा महसूस किया जैसे कि किसी ज़िंदा चिड़या को अंगीठी पर भूना जाये कि न तो वह मरे ही और न छोड़ी जाये कि

उड़कर बच जाये और एक रिवायत में है कि आपने फ़रमाया कि मैंने ऐसा महसूस किया जैसे कि किसी ज़िंदा बक्री की खाल उतारी जा रही हो।

(अत्-तज़्किरा फ़ी अह्वालिल् मौता वल्-आख़िरति 21)

मौत के वक़्त शैतान की आख़िरी कोशिश

इंसान का सबसे बड़ा यानी शैतान आख़िर वक़्त तक अपनी इस कोशिश में कोई कसूर नहीं रखता कि आदमी को किसी तरह ईमान से महरूम करके हमेशा के अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ बना दे। चुनांचे रिवायात में आता है कि नज़अ़ (दम निकलने) के वक़्त शैतान सामने आकर खड़ा हो जाता है। और मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से बहकाने की कोशिश करता है। एक रिवायत में आया है:

اُحْضُرُوْا مَوْتَاكُمْ وَلَقِّنُوْهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَبَشِّرُوْهُمْ بِالْجَنَّةِ فَاِنَّ الْحَلِيْمَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ يَتَحَيَّرُ عِنْدَ ذٰلِكَ الْمَصْرَعِ وَاِنَّ الشَّيْطَانَ اَقْرَبُ مَا يَكُوْنُ مِنِ ابْنِ اٰدَمَ عِنْدَ ذٰلِكَ الْمَصْرَعِ. (كنز العمال بيروت١٠/٢٣٧)

जो मुसलमान मौत के वक़्त क़रीब हों उनके पास रहो और उनको "कलिमा-ए-तय्यिबा" की तल्क़ीन करो और जन्नत की बशारत सुनाओ इसलिए कि उस हौलनाक वक़्त में बड़े-बड़े अक़्लमंद मर्द और औ़रत हवास बाख़्ता हो जाते हैं यानी घबरा जाते हैं और शैतान उस वक़्त इंसान के सबसे ज़्यादा क़रीब होता है।

इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अ़लैहि की वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो उनके साहबज़ादे अ़ब्दुल्लाह आपका जब्ड़ा बांधने के लिए सामने कपड़ा लिए हुए खड़े थे। इधर आपका यह हाल था कि कभी होश में आ जाते कभी बे-ख़ुदी की कैफ़ियत हो जाती, जब होश में आते तो हाथ से इशारा करके फ़रमाते لا بعد. لا بعد (अभी नहीं, अभी नहीं) जब कई मर्तबा यह हालत हुई तो साहबज़ादे ने पूछा कि अब्बा जान! आप यह क्या फ़रमा रहे हैं? तो आपने जवाब दिया कि शैतान मेरे सामने खड़ा है और दांतों में उंगलियाँ दबाकर कह रहा है कि "अफ़्सोस! अहमद तुम मेरे हाथ से छूट गये।" मैं उसके जवाब में कहता हूँ: لا بعد. لا بعد यानी अभी तक तेरे फ़रेब से अम्न नहीं है जब तक कि ईमान-ए-कामिल पर मौत न आ जाये। (अत्-तज़्किरा 39)

इमाम अबू जाफ़र क़रतबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो उनसे कहा गया कि لا اله الا الله पढ़िये तो वह बराबर لا لا यानी इंकार का कलिमा फ़रमाते रहे। कुछ देर में जब आप को कुछ इफ़ाक़ा हुआ तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि कलिमा-ए-तय्यिबा की तल्क़ीन के जवाब में आप لا. फ़रमाते रहे। यह क्या क़िस्सा है? तो आप ने जवाब दिया कि मैं तुम्हारी तल्क़ीन के मुक़ाबले में यह कलिमा नहीं कह रहा था। बल्कि दो शैतान मेरे सामने खड़े थे एक कहता था कि नसारा (ईसाइयों) के मज़्हब पर मरना दूसरा कह रहा था कि यहूदियों के मज़्हब पर मरना। उनके जवाब में मैं لا .لا (नहीं, नहीं) कह रहा था।

(अत्-तज़्किरा 39)

मौलाना मुहम्मद नईम साहब देवबंदी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की वफ़ात का अ़जीब व ग़रीब वाक़िआ

देवबंद में हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के एक क़रीबी अ़ज़ीज़ मौलाना मुहम्मद नईम साहब देवबंदी रहमतुल्लाहि अ़लैहि थे, बड़े होनहार और साहिब-ए-इल्म व फ़ाज़िल-ए- दारूल उ़लूम थे, मगर कम उ़म्री ही में सेहत ख़राब हो गई और हालत नाज़ुक होती चली गई उनका नज़अ़ के आ़लम में काफ़ी देर तक शैतान मर्दूद से मुनाज़रा होता रहा और वह अपनी ईमानी क़ुव्वत के ज़रिये उसके फ़रेब का जवाब देते रहे। इस इबरतनाक और हैरतनाक मंज़र का ख़ुद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी आँखों से मुशाहदा फ़रमाया और मरहूम की वफ़ात के बाद "अन्-नईमुल मुक़ीम" के नाम से एक छोटे से रिसाले में उनके हालात तहरीर फ़रमा दिए। इस क़िस्से की तफ़्सील बताते हुए हज़रत मुफ़्ती साहब रहमतुल्लाहि अ़लैहि लिखते हैं:

अ़स्र के क़रीब बार-बार मतली होने लगी कि इतनी फ़ुरसत न मिलती थी जिसमें नमाज़ अदा कर लें, मुझे बुलाकर मस्अला पूछा कि मैं इस वक़्त माज़ूरों के हुक्म में दाख़िल हूँ या नहीं? मैंने इत्मीनान दिलाया कि तुम माज़ूर हो इसी हालत में नमाज़ पढ़ सकते हो उस वक़्त तक वह उस आ़लम-ए-मुशाहदे में थे और इरादा किया कि मतली से कुछ सुकून हो तो नमाज़ अदा करूं। लेकिन इतनी ही देर में दूसरे आ़लम का मुशाहदा होने लगा। मग़रिब की नमाज़ के

बाद जब अह्क़र पहुंचा तो हाज़िरीन ने ब्यान किया कि कुछ देर से बेहोश है और हिज़्यान (ग़लत सलत) की बातें कर रहे हैं। लेकिन अह्क़र दाख़िल हुआ तो अच्छी तरह पहचान कर मुसर्रत का इज़्हार किया और फ़रमाया कि मेरे सर पर हाथ रख दो और दुआ पढ़ दो और हज़रत मियाँ साहब (सय्यिदी व सनदी हज़रत मौलाना सय्यिद असग़र हुसैन साहब दामत बरकातुहुम मुहद्दिस दारूल उलूम देवबंद) से मेरा सलाम कह दीजिए इसके बाद ही शैतान मदूर्द से मुनाज़रा शुरू हुआ और तक़रीबन ढेड़ घन्टे तक इस का सिलसिला अह्क़र की मौजूदगी में जारी रहा इस सिलसिले में मुझे ख़िताब करके कहा कि यह मर्दूद मुझे अ़स्र के वक़्त से तंग कर रहा है।

अब मालूम हुआ कि हाज़िरीन जिसे हिज़्यान समझ रहे थे वह भी उस मर्दूद के साथ ख़िताब था। मर्हूम की बहन पास मौजूद थीं और दूसरे बहुत से मर्द और औ़रतें जो पास थीं उनका ब्यान है कि मग़रिब से कुछ देर पहले (जो जुमे) के रोज़ बहुत सी रिवायात व आसार के ऐतिबार से दुआ़ की क़ुबूलियत की घड़ी है। अव्वल छोटी सी वसिय्यत अपनी दो दिन की छूटी हुई नमाज़ों के बारे में की और फिर बहुत गिड़गिड़ा कर हक़ तआ़ला से दुआ़ शुरू की कि "ऐ मेरे परवरदिगार मैं बहुत बद्- अ़मल और रू-सियाह हूँ सारी उ़म्र मआ़सी व ग़फ़्लतों में गुज़ारी है मैं तुझे किस तरह मुँह दिखाऊं लेकिन तेरा ही इर्शाद है: "سَبَقَتْ رَحْمَتِيْ عَلٰى غَضَبِيْ" यानी मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर सब्क़त (आगे बढ़ना) ले जाती है इसलिए मैं तेरी रहमत का उम्मीदवार हूँ" यह गिड़गिड़ा कर दुआ़ इस शान से हुई कि आ़म हाज़िरीन पर रिक़्क़त (दिल भर आना) पैदा थी।

दुआ़ का सिलसिला ख़त्म न हुआ था कि ब-आवाज़ बुलंद कहा कि मैं तयम्मुम करूंगा, बहन ने मिट्टी का ढेला सामने कर दिया, तयम्मुम करते ही कहना शुरू किया कि मर्दूद तुझे बतलाऊंगा तू मुझे हक़ तआ़ला की रह्मत से मायूस करना चाहता है मैं कभी मायूस नहीं हूं मुझे उसकी रह्मत से बहुत बड़ी उम्मीदें हैं, उसकी रह्मत के भरोसे पर कहता हूँ कि मैं ज़रूर जन्नत में जाऊंगा।

तू एक मोटी सी किताब लेकर इस वक़्त मुझे बहकाने आया है, ख़बीस तुझे इस लिए यह जुर्अत हुई कि मैं 17 रोज़ से मस्जिद में नहीं गया। मगर मेरी यह ग़ैर- हाज़िरी ख़ुदा के हुक्म से थी।

इसके बाद आयत-ए-करीमा: "لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّیْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ" तक पढ़ी और आगे وَكَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ पढ़ना चाहते थे कि ज़बान को लुकनत् हुई तो फिर बहुत ज़ोर से बार-बार पढ़ा وَكَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ और शैतान से ख़िताब करके कहा कि मर्दूद तू यह भुलाना चाहता है मैं उसको नहीं भूल सकता यह आयत मुझे हज़रत मियाँ साहब सल्लमहु ने बतलाई है और मौलवी मुहम्मद शफ़ी ने बतलाई है और फिर बार बार बुलंद आवाज़ से इस जुम्ले: وَكَذٰلِكَ نُنْجِی الْمُؤْمِنِیْنَ को पढ़ा कि कमरा गूंज उठा, ये बातें मेरे पहुंचने से पहले हो चुकी थीं जिनको वहाँ मौजूद लोगों ने इख़्तिलाल-ए-हवास (बेहोशी) समझा था मगर मेरे पहुंचने पर अच्छी तरह पहचान कर ख़ुश हुए और दुआ की दरख़्वासत करने और हज़रत मियाँ साहब मद्दज़िल्लुहुम को सलाम अर्ज़ करने की वसिय्यत वग़ैरह से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि उस वक़्त भी इख़्तिलाल-ए-हवास न था बल्कि अल्लाह के दुश्मन इब्लीस मर्दूद को देखकर इससे मुक़ाबला कर रहे थे चुनांचे मेरे हाज़िर होने के बाद मुझसे कहा यह मर्दूद मुझे अस्र के वक़्त से तंग कर रहा है। मैंने لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ की तल्क़ीन की तो बुलंद आवाज़ से उसको पढ़ा और कहा कि ख़बीस अब तुझे बतलाऊंगा तू मुझे बहकाने आया है لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ मेरे दिल में गड़ा हुआ है। اللّٰه اللّٰه मेरी रग-रग में बसा हुआ है। हाज़िरीन में से किसी ने لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ पढ़ा तो उसको पढ़कर कहा कि आगे क्यों नहीं कहते कि مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (ﷺ)

मुँह से ख़ून की क़ै (उल्टी) जारी थी और जब उससे ज़रा फ़ुरसत मिलती तो कभी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (ﷺ) पूरा-पूरा ब-आवाज़ पढ़ते थे और कभी لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ और कभी आयत لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ और कभी शैतान से ख़िताब करके कहते कि ख़बीस तू गया नहीं कभी मुझे से ख़िताब करके कहते कि उसको मारो, उसको निकाल दो।

उस वक़्त उस छः माह के मुद्दत के मरीज़ की यह हालत थी कि मालूम होता था कि अब कुश्ती लड़ने को खड़ा हो जायेगा एक मर्तबा कहा कि तूने समझा होगा कि यह नाज़ुक वक़्त है इस वक़्त बहका दूं देख अब मेरे बदन में हरारत आ गई है मैं अब तुझे बतलाऊंगा।

उसके बाद कहा कि ये बहुत से आदमी खड़े हैं (वहां सामने खड़े होने वाले

सिर्फ़ दो थे) ऐसा मालूम होता है कि फ़रिश्ते नज़र आ रहे थे (शायद फ़रिश्तों से ख़िताब करके) कहा कि बस अब तो अल्लाह मियाँ के यहां ले चलो।

ग़रज़ कि इस क़िस्म की गुफ़्तगू का सिलसिला इशा के बाद तक जारी रहा जिसमें बार-बार पूरा कलिमा तय्यिबा पढ़ते रहे आख़िरकार साढ़े नौ बजे रात को उस मुसाफ़िरे आख़िरत ने अपनी मन्ज़िल पूरी कर ली। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०

(मुलख़्ख़स रिसाला "अन्-नईमुल मुक़ीम)

तीसरी फ़स्ल

अल्लाह अंजाम अच्छा करे

आदमी को अपने ज़ाहिरी आमाल पर कभी इत्मीनान न करना चाहिए, बल्कि हमेशा डरता रहे कि न जाने आख़िर में अंजाम क्या हो? उलमा ने लिखा है कि इंसान पर ज़िन्दगी में ख़ुदा के डर का ग़लबा रहना चाहिए और मरते वक़्त रहमते ख़ुदावन्दी की तरफ़ ध्यान रहना चाहिए। अस्ल ऐतिबार आख़िरी अंजाम का है। इसीलिए जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ الزَّمَانَ الطَّوِيْلَ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ ثُمَّ يُخْتَمُ لَهُ عَمَلُهُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ الزَّمَانَ الطَّوِيْلَ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ ثُمَّ يُخْتَمُ لَهُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ. (مسلم شریف ۲/۳۳٤)

आदमी एक लम्बे ज़माने तक अहले जन्नत वाले आमाल करता रहता है मगर उसकी अ़मली ज़िन्दगी का ख़ातिमा जहन्नमियों वाले आमाल पर होता है। और कभी आदमी लम्बे ज़माने तक जहन्नमियों जैसे अ़मल में मुब्तला रहता है मगर उसका ख़ातिमा अहले जन्नत वाले आमाल पर होता है।

और बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि وَإِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْمِ. (بخاری شریف ۲/۹۸۷) यानी आमाल की क़ुबूलियत का मदार अंजाम पर है। इसलिए हमेशा कोशिश की जाये और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ मांगी जाये कि उसके फ़ज़्ल और तौफ़ीक़ से ख़ातिमा बख़ैर हो और ईमान और अ़मले सालेह के ऐतिबार से सबसे अच्छे वक़्त में अल्लाह की बारगाह में हाज़िरी की दौलत नसीब हो। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कसरत से यह दुआ़ मांगा करते थे कि "ऐ दिलों के पलटने वाले रब! मेरे दिल को अपनी इताअ़त पर साबित क़दम फ़रमा दे", तो मैंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आप कसरत से यह दुआ़ क्यों मांगते हैं क्या आपको किसी बात का ख़तरा है? इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब दिया कि "आइशा! मुझे अपने ऊपर कैसे इत्मीनान हो सकता है जबकि तमाम इंसानों के दिल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की दो उंगलियों के दर्मियान हैं वह जब

चाहे अपने जिस बन्दे के दिल को चाहे फेर सकने पर क़ादिर है"।

(अत्-तज़्किरा फी अह्वालिल् मौता वल्-आख़िरति 44)

बुरे ख़ातिमे से डरते रहें

कोई बड़े से बड़ा इबादत गुज़ार भी हत्मी तौर पर यह ज़मानत नहीं दे सकता कि मरते वक़्त उसका अंजाम क्या होगा। दुनिया में ऐसे इब्रत-नाक वाक़िआत ब-कसरत पाये गये हैं कि आदमी पूरी ज़िन्दगी अच्छे आमाल करता रहा मगर आख़िरी वक़्त में उसके हालता बिगड़ गये। अल्लाह तआला हम सबको बद्-अंजामी से महफ़ूज़ रखे। आमीन

नीचे ऐसे ही कुछ इब्रत-नाक वाक़िआत नक़्ल किये जाते हैं:

बद्-नज़री का अंजाम

1. मिस्र में एक शख़्स बराबर मस्जिद में रहता था, पाबन्दी से अज़ान देता और जमाअत में शिरकत करता, चेहरे पर इबादत और इताअत की रौनक़ भी थी, इत्तिफ़ाक़ से एक दिन जब अज़ान देने के लिए मस्जिद के मीनारे पर चढ़ा तो क़रीब में एक ईसाई शख़्स की ख़ूबसूरत लड़की पर नज़र पड़ी जिसे देखकर वह उस पर दिल व जान से आशिक़ हो गया और अज़ान छोड़कर वहीं से सीधे उस मकान में पहुंचा, लड़की ने उसे देखकर पूछा क्या बात है? मेरे घर पर क्यों आया? उसने जवाब दिया मैं तुझे अपना बनाने आया हूँ इसलिए कि तेरे हुस्न व जमाल ने मेरी अक़्ल को बेकार कर दिया है। लड़की ने जवाब दिया कि मैं कोई तोह्मत वाला काम नहीं करना चाहती हूँ तो उसने पेशकश की मैं तुझसे निकाह करूंगा। लड़की ने कहा कि तू मुसलमान और मैं ईसाई हूँ, मेरा बाप इस रिश्ते पर तैयार न होगा तो उस शख़्स ने कहा कि मैं ख़ुद ही ईसाइ बन जाता हूँ चुनांचे उस ने सिर्फ़ उस लड़की से निकाह की ख़ातिर ईसाई मज़्हब क़ुबूल कर लिया (हम ऐसे काम से अल्लाह की पनाह चाहते हैं) लेकिन अभी वह दिन भी पूरा न हुआ था कि वह शख़्स उस घर में रहते हुए किसी काम के लिए छत पर चढ़ा और किसी तरह वहां से गिर पड़ा जिससे उसकी मौत हो गई यानी दीन भी गया और लड़की भी हाथ न आई।

(अत्-तज़्किरा 43)

हज़रात शैख़ेन☆ रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर तबर्रा (लअ्न-तअ्न) करने की सज़ा

(☆ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा)

2. मशहूर मुसन्निफ़ अल्लामा इब्ने अबिद्दुनया ने अपने मारकतुल आरा रिसाले "من عاش بعد الموت" में कई ऐसे लोगों के वाक़िआत लिखे हैं कि मरते वक़्त उन्होंने आग आग चिल्लाना शुरू कर दिया और जब उनको कलिमा पढ़ने के लिए कहा गया तो उन्होंने जवाब दिया कि हम कलिमा नहीं पढ़ सकते इसलिए कि हम ऐसी जमाअत से मुतास्सिर थे जो हज़रात शैख़ेन सय्यिदना अबू बक्र और फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुरा भला कहते थे।

(मौसूअतुर्रसाइल लि-इब्ने अबिद्दुनया 23)

इस तरह के इब्रतनाक वाक़िआत तारीख़ की किताबों में कस्रत से मौजूद हैं जिनसे अंदाज़ा होता है कि हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से बुग़्ज़ व अदावत बद-अन्जामी का बड़ा सबब है। कुछ वाक़िआत इस तरह के भी हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से बुग़्ज़ रखने वालों की सूरतें ज़लील जानवरों में तब्दील कर दी गईं। (ऐसे काम से अल्लाह तआला हमें पनाह में रखे)

(मुजाबिद्-दावत 4/58)

शराब पीना — बुरे अन्जाम का सबब

3. माबद जुह्नी रहमतुल्लाहि अलैहि का ब्यान है कि मुल्क-ए-शाम में एक शराबी शख़्स को मरते वक़्त कलिमा पढ़ने को कहा गया तो उसने जवाब में कलिमा पढ़ने के बजाये ये अल्फ़ाज़ कहने शुरू किये "इश्रब वस्क़िनी" (ख़ुद पी और मुझे भी पिला) यानी उसके दिमाग़ पर शराब पीना ही छाया रहा।

(अत्-तज़्किरा फ़ी अह्वालिल मौता 40)

इस वाक़िए से मालूम हुआ कि शराब पीने से भी आदमी अक्सर बद-अंजामी से दोचार होता है यह गुनाह तमाम तर गुनाहों की जड़ और बुनियाद है और बुरे ख़ातिमे का बड़ा सबब है।

दुनिया से हद से ज़्यादा लगाव का अंजाम

4. शहर-ए-अह्वाज़ में एक शख़्स को मरते वक़्त कलिमा पढ़ने को कहा

गया तो वह कलिमा पढ़ने के बजाये यही कहता रहा "ग्यारह, बारह तेरह" यह शख़्स हिसाब जानने वाला था और उसकी पूरी ज़िन्दगी हिसाब-व- किताब में गुज़री थी, दीन से कुछ रग़्बत न थी इसलिए मरते वक़्त कलिमा पढ़ने के बजाये हिसाब ही लगाता रहा।

इसी तरह एक शख़्स को मरते वक़्त कलिमा पढ़ने को कहा गया तो वह कहने लगा कि मेरे फ़्लां घर के अन्दर फ़्लां चीज़ ठीक कर दो और मेरे फ़्लां बाग़ को इस तरह ठीक कर दो, यानी मरते वक़्त भी उसका दिल मकान और बाग़ में अटका रहा।

5. एक शख़्स ने पीले रंग की गाय पाल रखी थी और वह उससे बहुत मुहब्बत करता था जब मरते वक़्त उससे कलिमा पढ़ने को कहा गया तो उसकी ज़बान पर ज़र्द गाय, ज़र्द गाय की गर्दान (रट) ही रही। (अत्-तज़्किरा 40-41)

अल्लाह वालों को तक्लीफ़ देने का अंजाम

6. मशहूर आलिम अल्लामा इब्ने हजर हैसमी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़तावा "हदीसया" में नक़्ल किया है कि इब्नुस्सक़ा नाम का एक शख़्स जिसने उलूमे इस्लामिया में ज़बरदस्त महारत हासिल करके बातिल फ़िर्क़ों से बहस व मुनाज़रे का मलका हासिल कर लिया था अपनी इल्मी सलाहियत की वजह से उसको ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन का तक़र्रुब हासिल हुआ और ख़लीफ़ा ने उसपर भरोसा करते हुए बादशाह-ए-रूम के दरबार में उसे अपनी हुकूमत का सफ़ीर बनाकर भेज दिया। रूमी बादशाह ने उसके एज़ाज़ में बड़े-बड़े मालदार लोग और ईसाइयों के मज़्हबी पैशवाओं और पादरियों की एक अज़ीम मज्लिस मुनअक़िद की जिसमें अक़ाइद पर बहस के दौरान इब्नुस्सक़ा ने ऐसी मुदल्लल गुफ़्तुगू की कि सारे हाज़िरीन पर सन्नाटा छा गया और किसी से उसका जवाब न बन पड़ा। ईसाइ बादशाह को मज्लिस का यह रंग देखकर सख़्त नागवारी हुई और उसने इब्नुस्सक़ा को शीशे में उतारने के लिए अकेले में उसके सामने अपनी हसीन व जमील बेटी को पेश किया। इब्नुस्सक़ा ने उसके हुस्न और जमाल पर आशिक़ होकर बादशाह से उससे निकाह की दरख़्वास्त की। बादशाह ने यह शर्त पेश की कि अगर तू ईसवी मज़्हब क़ुबूल कर ले तो निकाह मुम्किन है। चुनाँचे वही इब्नुस्सक़ा जिसने बादशाही मज्लिस में ईसवी मज़्हब की बातों को

रद्द करके ईसाइयों को ला-जवाब कर दिया था सिर्फ़ एक लड़की के इश्क़ में गिरफ़्तार होकर ईसवी मज़्हब क़ुबूल करके मुर्तद हो गया और इसी इर्तिदादी हालत में जहन्नम रसीद हुआ। (اعاذنا الله منه) कहते हैं कि इब्नुस्सक़ा ने शुरू तालिब-ए-इल्मी के ज़माने में एक बड़े बुज़ुर्ग की शान में गुस्ताख़ी करने और उन्हें रुस्वा करने का इरादा किया था और उन बुज़ुर्ग ने उसी वक़्त कह दिया था कि मैं तुझ को जहन्नम में जलता हुआ देख रहा हूँ। (फ़तावा हदीसया 415)

सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को तीर मारने वाले का बहुत बुरा अंजाम

7. एक शख़्स जिसका नाम ज़रआ था उसने मैदाने करबला में रीहानतुर्रसूल सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु को तीर मार कर पानी की तरफ़ जाने से रोक दिया था और अपने तीर से आपकी गरदन को ज़ख़्मी कर दिया था, उसके इस अ़मल पर सय्यिदना हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ज़बान से यह बद्-दुआ़ निकली कि "ऐ अल्लाह इसे प्यासा कर दे, ऐ अल्लाह इसे प्यासा कर दे"। रावी कहता है कि मुझ से उस शख़्स ने ब्यान किया जो ज़रआ़ के मरज़ुल मौत में उसके पास हाज़िर था कि उसका इब्रतनाक हाल यह था कि वह एक ही वक़्त में पेट की तरफ़ सख़्त गरमी और पीठ की तरफ़ सख़्त सर्दी महसूस कर के चीख़ रहा था। उसके सामने लोग पंखा झल रहे थे जबकि उसकी पीठ की तरफ़ अंगीठी रखी हुई थी और वह कहे जा रहा था कि "मुझे पानी पिलाओ प्यास से मरा जा रहा हूँ"। तो एक बहुत बड़ा टप लाया गया जिसमें सत्तू या दूध था, वह इतना ज़्यादा था कि पांच आदमी मिलकर भी न पी पाते, मगर वह सब अकेला ही पी गया और फिर भी प्यास प्यास पुकारता रहा। उसका पेट ऊंट के पेट की तरह बड़ा हो गया था।

اللّٰهم احفظنا منه، نعوذ بالله من ذٰلک. (مجابی الدعوة ٥١)

सय्यिदना हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर झूठा दावा करने वाली औरत का अंजाम

8. हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु का शुमार उन दस ख़ुश-नसीब सहाबा में होता है जिनको जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने

दुनिया ही में जन्नत की बशारत अता फ़रमाई है। एक औरत अरवा बिन्ते उवैस ने आप पर दावा किया कि आपने उसके मकान के कुछ हिस्से पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा कर लिया है। मुआमला मरवान बिन हकम तक पहुंचा जो उस वक़्त मदीने के गवर्नर थे। हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को अदालत में बुलाया गया आप ने इर्शाद फ़रमाया कि भला मैं कैसे किसी की ज़मीन दबा सकता हूँ जबकि मैंने खुद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि जो शख़्स किसी की एक बालिश्त ज़मीन भी ज़बरदस्ती ले ले तो उसके नीचे की सातों ज़मीन की मिट्टी उसके गले में क़ियामत के दिन तौक़ बनाकर डाल दी जाएगी। मर्वान ने यह जवाब सुनकर कहा कि उसके बाद आप से और कुछ सुबूत मांगने की ज़रूरत नहीं है। इसके बाद हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हु ने औरत को बद्-दुआ फ़रमाई कि "ऐ अल्लाह अगर यह औरत अपने दावे में झूठी है तो ❶ मेरे दावे की सच्चाई लोगों पर ज़ाहिर फ़रमा, ❷ इस औरत की बीनाई छीन ले, ❸ और उसकी क़ब्र उसी के घर में बना दे"। रावी कहता है कि इस वाक़िए के कुछ रोज़ के बाद ही मदीने में ऐसा सैलाब आया कि उससे मकान की असल बुनियादें ज़ाहिर हो गईं और हज़रत सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की सच्चाई ज़ाहिर हो गई। कुछ दिनों बाद औरत की बीनाई जाती रही और फिर एक दिन वह अपने घर में टटोल-टटोल कर चल रही थी कि घर ही के एक कुंए में गिरकर मर गई। (मुस्लिम शरीफ़ 2/33, अल्-इसाबा 3/88, असदुल ग़ाबा 2/236)

हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु पर तोह्मत लगाने वाले का अंजाम

9. हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े मुस्तजाबुद् दअ्वात यानी जिन लोगों की दुआऐं क़ुबूल की जाती हैं सहाबा में हैं। हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में कूफ़ा के गवर्नर थे। कूफ़ा के रहने वालों में से कुछ लोगों ने उनके बारे में शिकायतें हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुंचाईं जिनमें यह शिकायत भी थी कि वह नमाज़ भी अच्छी तरह नहीं पढ़ाते, हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें मदीना मुनव्वरा बुलाकर तह्क़ीक़ फ़रमाई तो आप ने जवाब दिया कि मैं तो उन्हें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ाता हूँ यानी इशा की नमाज़ की इब्तिदाई (पहली) दो रक्अतें लम्बी पढ़ाता हूँ और आख़िरी दो रक्अतें छोटी पढ़ाता हूँ, हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि सच्ची बात है आप से यही उम्मीद थी,

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ लोगों को और ज़्यादा तह्क़ीक़ के लिए कूफ़ा भेजा कि वे मस्जिद मस्जिद जाकर मालूम करें। कूफ़ा वालों का हज़रत सअ्द रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में क्या नज़रिया है? चुनांचे उन लोगों ने जिस मस्जिद में भी पूछा तो वहां के लोगों ने हज़रत सअ्द रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ की। मगर जब ये लोग "बनी अबस" की मस्जिद में पहुंचे तो वहां एक शख़्स जिसका नाम उसामा और कुन्नियत अबू सअ्दतः थी खड़ा हुआ और कहने लगा कि जब आप अल्लाह का वास्ता देकर तह्क़ीक़ करते हैं तो सुनिए! कि सअ्द न तो जिहाद में जाते हैं और न ग़नीमत को बांटने में बराबरी करते हैं और न फ़ैसलों में इंसाफ़ से काम लेते हैं। उसके ये इल्ज़ामात सुनकर हज़रत सअ्द रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम अब मैं तीन बद्-दुआएं करता हूं। ऐ अल्लाह अगर यह तेरा बन्दा अपने दावे में झूठा हो और सिर्फ़ रियाकारी और शौहरत के लिए उसने ये झूठे इल्ज़ाम लगाये हों तो ● इसकी उम्र लम्बी फ़रमा, ● और इसके फ़क्र व फ़ाक़े को लम्बा कर दे, ● और इसे फ़ित्नों में मुब्तला कर दे। इस रिवायत के रावी अ़ब्दुल मलिक कहते हैं कि उसके बाद मैंने उस शख़्स को इस हाल में देखा कि इन्तिहाई बुढ़ापे की वजह से उसकी भवें तक उसकी आँखों पर लटक आई थीं लेकिन वह रास्ता चलती लड़कियों से छेड़ छाड़ करने से भी बाज़ न आता था और जब उससे उसका हाल पूछा जाता तो जवाब देता कि شيخ مفتون اصابتني دعوة سعد यानी फ़ित्ने में मुब्तला बूढ़ा हूं, मुझे हज़रत सअ्द रज़ियल्लाहु अन्हु की बद्-दुआ लग गई है। اللهم احفظنا منه (बुख़ारी शरीफ़ 1/104, मुजाबिद्-दअ्वत 35)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर तअ्न व तश्नीअ करने वाले पर हज़रत सअ्द रज़ियल्लाहु अन्हु की बद्-दुआ

आमिर बिन सअ्द रहमतुल्लाहि अ़लैहि कहते हैं कि मेरे वालिद हज़रत सअ्द इब्ने अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु एक ऐसी जमाअ़त के पास से गुज़रे जिससे सब लोग किसी शख़्स की बातें ग़ौर से सर झुकाकर सुनने में मश्ग़ूल थे। आप ने भी सूरत-ए-हाल मालूम करने के लिए उसकी बातें सुनीं तो सुना कि वह हज़रत अ़ली, हज़रत तल्हा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम पर तअ्न-तअ्न (बुराइयाँ) कर रहा था, हज़रत सअ्द ने उसे इस हरकत से मना किया,

मगर वह बाज़ न आया तो आपने फ़रमाया कि देखो! मैं तुझ पर बद्-दुआ कर दूंगा, उसने कहा कि आप तो ऐसे धमकी दे रहे हैं जैसे कि आप नबी हों? उसके बाद हज़रत सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु घर तश्रीफ़ ले गये, वुज़ू फ़रमाया, दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, उसके बाद हाथ उठाकर इन अल्फ़ाज़ में बद्-दुआ की कि "ऐ अल्लाह! अगर तुझे मालूम है कि यह शख़्स ऐसे लोगों को बुरा भला कह रहा है जिनके नेक आमाल तेरे दरबार में पहुंच चुके हैं, और इसने उन्हें बुरा भला कह कर तेरा गुस्सा मौल लिया है। तो उसे तू आज ही इब्रतनाक निशानी बना दे। अब आ़मिर बिन सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि बद्-दुआ मांगते ही एक बिदका हुआ बख़्ती ऊंट सामने से निकलकर भीड़ को चीरता फाड़ता सीधे उस शख़्स तक पहुंचा, लोग डर कर दूर भाग गये और उस बिदूके हुए ऊंट ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की शान में ज़बान दराज़ी करने वाले शख़्स को अपने पैरों और मुंह से उसके आज़ा चबा-चबाकर सबके सामने मार डाला। यह इब्रतनाक मंज़र देखकर लोग दोड़ते हुए हज़रत सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास पहुंचे और उन्हें ख़बर सुनाई कि ऐ अबू इस्हाक़ (हज़रत सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु की कुन्नियत है) अल्लाह तआ़ला ने आपकी बद्-दुआ की क़ुबूलियत ज़ाहिर कर दी है। (अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/470)

ये चंद वाक़िआ़त हमारी आँखें खोलने के लिए काफी हैं, वर्ना तो तारीख़ के हर दौर में ऐसे वाक़िआ़त पाये गये हैं कि जिन बद्-नसीबों ने भी अल्लाह के नेक बन्दों को सताया है उनका हश्र बुरा हुआ है। बुरे ख़ातिमे के बहुत से अस्बाब में से एक बड़ा सबब औलिया अल्लाह से बुग़्ज़ और उनकी शान में बेहूदा गुफ़्तुगू करना भी है। हदीस-ए-क़ुद्सी में आया है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है: مَنْ عَادٰی لِیْ وَلِیًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ. (बुख़ारी शरीफ़ 2/963)

यानी जो शख़्स मेरे किसी वली से दुश्मनी रखे मैं उसके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग कर देता हूँ, इसलिए हर मुसलमान को किसी भी अल्लाह वाले की शान में गुस्ताख़ी और ज़बान दराज़ी से पूरी तरह बचना ज़रूरी है। ताकि वह हुस्ने ख़ातिमा की दौलत से महरूम न हो। अल्लाह तआ़ला हम सबको बुरे अंजाम से महफ़ूज़ रखे। आमीन ☐ ☐

चौथी फ़स्ल

हुस्ने ख़ातिमा! अज़ीम दौलत

जिस शख़्स को ईमान-ए-कामिल और आमाले सालिहा के साथ दुनिया से जाना नसीब हो जाये तो यह ऐसी अज़ीम दौलत है जिसके मुक़ाबले में काइनात की हर दौलत कुछ भी नहीं है। इसलिए उन तमाम बातों को इख़्तियार करने की ज़रूरत है जो हुस्ने ख़ातिमा का ज़रिया बनती हैं। इस सिलसिले में सबसे ज़्यादा नफ़ा बख़्श और मुफ़ीद चीज़ उलमा और औलिया अल्लाह से ताल्लुक़ और मुहब्बत है। जो शख़्स अल्लाह के नेक बंदों से जितना ज़्यादा ताल्लुक़ रखेगा इन्शा अल्लाह आख़िरत में वह उतना ही कामियाब व कामरान होगा, जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद-ए-गिरामी है। اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ. (तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/64) यानी आदमी का हश्र अपने महबूब के साथ होगा, तो अगर हमारी मुहब्बत औलिया अल्लाह के साथ होगी तो इन्शाअल्लाह हमारा हश्र भी उन्हीं के साथ होगा। हज़रत यज़ीद बिन शजरह रहमतुल्लाहि अ़लैहि इर्शाद फ़रमाते हैं कि मरते वक़्त आदमी के सामने उसके अहले मज्लिस पेश किए जाते हैं अगर वह बेहूदा सुसाइटी में पड़ा रहा तो वही लोग पेश होते हैं और अगर अहले ख़ैर के साथ ताल्लुक़ रखता तो उन्हीं को पेश किया जाता है।

(शर्हुस सुदूर 121)

बहरहाल नेक लोगों और औलिया अल्लाह से अ़क़ीदत और मुहब्बत हुस्ने ख़ातिमा का बेहतरीन और कामियाब ज़रिया है इसके हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए।

अल्लाह वालों की रेह्लत (मौत) के कुछ क़ाबिले रश्क और बशारत आमेज़ हालात

हुस्ने ख़ातिमा से मरने वाले की सिर्फ़ ज़ाहिरी हालत मुराद नहीं है। क्योंकि कभी कभी ऐसा होता है कि बड़े से बड़ा नेक और बुज़ुर्ग आदमी ख़तरनाक हादिसे से दौचार हो कर अचानक वफ़ात पा जाता है और कभी कोई बद्-अ़मल शख़्स बड़ी आसानी और अच्छी हालत में मरता है। बल्कि हुस्ने ख़ातिमा का

मतलब यह है कि आदमी कामिल ईमान, इनाबत इलल्लाह और रहमते खुदावन्दी का उम्मीदवार होकर अल्लाह तआला की बारगाह में पहुंचे, इन हालात के साथ ज़ाहिरी तौर पर उसे कितनी ही तक्लीफ़ें पहुँचें तो कोई फ़िक्र की बात नहीं है और अगर ये कैफ़ियत न हों तो फिर सिर्फ़ आसानी की मौत से आख़िरत में कोई फ़ायदा हासिल न होगा। एक हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला जब किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसे मिठास अ़ता फ़रमा देता है। हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया कि मिठास अ़ता करने का क्या मतलब है? तो आप ने फ़रमाया कि मतलब यह है कि उसे मरने से पहले ऐसे आमाले ख़ैर की तौफ़ीक़ अ़ता करता है कि उसके पास पड़ौस में रहने वाले उससे खुश होते हैं और बाद में उसकी तारीफ़ करते हैं। (अज़्-ज़वाजिर अ़न इब्ने हब्बान 2/395)

इसी तरह एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स का मरते वक़्त आख़िरी कलाम कलिमा-ए- शहादत और कलिमा-ए-तय्यिबा हो और दिल के कामिल यक़ीन के साथ वह उसे पढ़े तो इन्शा अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िला नसीब होगा। आगे आने वाले सफ़्हात में हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और कुछ हज़रात-ए-सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और औलिया अल्लाह रहमतुल्लाहि अ़लैहिम की वफ़ात के हालात पेश किये जाते हैं ताकि शौक़ व ज़ौक़ के साथ-साथ उन हज़रात की अ़ज़्मत और मुहब्बत से भी हमारे सीने भर जायें।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हादिसा-ए-वफ़ात

उम्मते मुहम्मदिया के लिए सबसे बड़ा हादिसा जिसके तसव्वुर से आज भी रौंगटे खड़े हो जाते हैं, हमारे आक़ा व सरदार, सरवरे काइनात फ़ख़्र-ए- मौजूदात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इस दुनिया से परदा फ़रमाना है। यह ऐसा अलमनाक लम्हा था कि बड़े-बड़े जलीलुल क़द्र सहाबा भी होश में न रह सके और उनकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया, सय्यिदना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु जैसे जरी यानी बहादुर शख़्स भी तलवार लेकर मस्जिद नबवी में खड़े हो गये कि जो शख़्स यह कहेगा कि हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम परदा फ़रमा चुके हैं तो इसी तलवार से उसकी गरदन मार दी जायेगी। उस वक़्त अमीरूल मोमिनीन सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूरी अ़क़्लमंदी का सुबूत देते हुए यह ऐलान फ़रमायाः

مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّداً فَإِنَّ مُحَمَّداً قَدْمَاتَ. وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَّايَمُوْتُ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ الخ

(بخاری شریف ۲/ ٦٤٠)

तुम में से जो शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इबादत किया करता था तो वह समझ ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अब इस दुनिया से तशरीफ़ ले जा चुके हैं और जो शख़्स तुममें से अल्लाह की इबादत करता था तो यक़ीन कर ले कि अल्लाह तआ़ला हमेशा से ज़िंदा है उसको कभी मौत न आयगी फिर आप ने ये आयतें पढ़ीं: وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُوْلٌ...الخ

हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मालूम होता था कि ये आयतें आज ही नाज़िल हो रही हैं, जब मुझे आपकी मौत का यक़ीन हो गया तो मेरी हालत यह हो गई कि मेरे क़दम मेरा बोझ उठाने के क़ाबिल न रह पाये और मैं बे-इख़्तियार ज़मीन पर गिर गया। (बुख़ारी शरीफ़ 2/640)

शदीद मरज़ुल वफ़ात में जब आप जमाअ़त से नमाज़ पढ़ाने के लिए मस्जिद तशरीफ़ न ला सके तो आपने ताकीद करके सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाया, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आपकी हयात में 17 नमाज़ें अदा करायीं, उस दौरान नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मत को अल्लाह की किताब (क़ुरआन) को मज़बूती से थामे रखने, ग़ुलाम, बांदियों और औ़रतों के हुक़ूक़ की रिआ़यत करने और नमाज़ का एहतिमाम करने की ताकीद और वसिय्यत फ़रमाई, इसी शिद्दत के आ़लम में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी क़ब्र-ए-मुबारक को सज्दागाह बनाने से सख़्ती से मना फ़रमाया और इस सिलसिले में यहूदियों की बद्-अ़मली पर नकीर करते हुए फ़रमायाः

لَعَنَ اللّٰهُ الْيَهُوْدَ، اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ

अल्लाह तआ़ला की लानत हो यहूदियों पर कि उन्होंने अपने अम्बिया-ए-किराम

अ़लैहिमुस्सलाम की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया। — أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ (بخاری شریف ۲/۶۳۹)

मौत की शिद्दत और तक्लीफ़ पर ज़्यादती और बेचैनी से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक पर यह दुआ़ जारी रहीः

ऐ अल्लाह! मौत की सख़्तियों पर मेरी मदद फ़रमा। — اَللّٰهُمَّ أَعِنِّيْ عَلٰى سَكَرَاتِ الْمَوْتِ. (شمائل ترمذی /۲۶)

हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं अक्सर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह बात सुना करती थी कि किसी नबी की वफ़ात उस वक़्त तक नहीं होती जबतक कि ख़ुद उसे दुनिया या आख़िरत में रहने के बारे में उसकी राय मालूम न कर ली जाये। चुनांचे जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया जबकि आपका सर-ए-मुबारक मेरी गोद में था तो आपका सांस तेज़ चलने लगा और आपने फ़रमायाः مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّيْنَ (यानी मैंने उन लोगों के साथ रहना पसन्द कर लिया है जिनपर अल्लाह तआ़ला ने इन्आ़म फ़रमाया है यानी अम्बिया के साथ) तो मैं समझ गयी कि अब आपने आख़िरत को इख़्तियार फ़रमा लिया है। (बुख़ारी शरीफ़ 2/638)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुनियवी ज़िन्दगी में सबसे आख़िरी अ़मल जो अंजाम दिया वह मिस्वाक के ज़रिए पाकीज़गी हासिल करना था. चुनांचे हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मरज़ुल वफ़ात में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेरी गोद में सर रखकर आराम फ़रमा थे, इसी दर्मियान में मेरे भाई अ़ब्दुर रहमान इब्ने अबी बक्र इस हाल में आये कि उनके हाथ में एक ताज़ा मिस्वाक थी, जिससे वह मिस्वाक कर रहे थे, आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस मिस्वाक को नज़र जमाकर देखा (जिससे मुझे अंदाज़ा हो गया कि आप मिस्वाक करना चाहते हैं) इसलिए मैंने वह मिस्वाक उनसे लेकर अच्छी तरह चबाकर मुलायम करके आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में पेश की। चुनांचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने निहायत उ़म्दा तरीक़े पर मिस्वाक फ़रमाई और अभी आप उससे फ़ारिग़ ही हुए थे आपने अपना मुबारक हाथ या उंगली आसमान की तरफ़ फ़रमाई और तीन मर्तबा ये अल्फ़ाज़ दोहरायेः في الرفيق الاعلى फिर मेरी गोद ही

में इन्तिक़ाल फ़रमा गये। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ (बुख़ारी शरीफ़ 2/638)

एक और रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफ़ात के वक़्त यह दुआ फ़रमाई:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَالْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى۔(بخاری شریف۲/۶۳۹)

ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ फ़रमा और मुझ पर रहम फ़रमा और आला दर्जे के रफ़ीक़ (साथी) के साथ मुझे लाहिक़ फ़रमा।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात की ख़बर से मदीने में कोहराम मच गया। सच्चे जाँ-निसारों का आसरा चला गया, मुहिब्बाने नुबुव्वत का सबसे बड़ा महबूब ख़ुद अपने महबूब यानी रब्बुल आलमीन से मिलने की सआदत से बहरावर हो गया, मदीने में हर तरफ़ सिसकियाँ और आहें थीं। जिनका इज़्हार ज़बान से कम आँखों से बहने वाले गर्म-गर्म आँसुओं के लगातार बहने से ज़्यादा हो रहा था, मस्जिदे नबवी में मौजूद हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की हालत अजीब थी, कोई भी इस अलमनाक हादिसे पर अपने होश में मालूम न होता था, किसी की ज़बान गुंग थी, तो कोई अपने आँसुओं के सैलाब में तस्वीरे ग़म बना हुआ था। लोग हैरान थे कि अब क्या होगा? नज़रें इस नाज़ुक मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सबसे क़रीबी साथी सय्यिदना हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को ढूंढ रही थीं कुछ देर बाद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अनहु भी निढाल क़दमों से तशरीफ़ लाये, पहले सीधे हुजूरा-ए- मुबारका में तशरीफ़ ले गये जहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जसदे ख़ाकी यमूनी चादर में ढका हुआ रखा था, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने चादर हटाई और रोते हुए पैशानी को चूम लिया और फ़रमाया: "मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान! अल्लाह तआला आप पर दो मौतों को जमा नहीं फ़रमायेगा। और जो मौत आपके लिए मुक़द्दर थी वह आ चुकी"। (यानी अब दोबारा आप तशरीफ़ नहीं लाएंगे कि फिर मौत आये)।

(बुख़ारी शरीफ़, हाशिया के साथ 2/640)

और एक रिवायत में है कि सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने पैशानी-ए-मुबारक को चूमने के बाद आपको इन अल्फ़ाज़ में ख़िराजे अक़ीदत पेश किया:

"हुज़ूर! मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान, आपकी ज़िन्दगी भी पाकीज़ा थी और मौत भी पाकीज़ा हुई और आपकी वफ़ात हसरते-आयात से नुबुव्वत का वह सिलसिला ख़त्म हो गया जो आप से पहले किसी नबी की वफ़ात से ख़त्म न हुआ था, आपकी शान नाक़ाबिले ब्यान है और आपकी ज़ात रोने से बालातर है, आप ने उम्मत से वह ख़ुसूसी बर्ताव किया कि आप की ज़ात सरापा तसल्लीगाह बन गई और आप ने रहमत को इस क़द्र आम किया कि हम सब आपकी नज़र में बराबर क़रार पाये, आपकी मौत अगर इख़्तियारी होती तो हम आपकी वफ़ात के बदले कितनी ही जानें लुटा देते और अगर आप ने रोने से मना न फ़रमाया होता तो हम आपकी याद में अपनी आँखों के आँसू ख़ुश्क कर डालते मगर एक चीज़ हमारे क़ाबू से बाहर है वह दिल की कुढ़न और आपकी जुदाई पर ज़ह्नी तक्लीफ़ है जो बराबर बाक़ी रहेगी कभी ख़त्म न होगी। ऐ अल्लाह! हमारे ये जज़्बात हमारे हुज़ूर तक पहुंचा दे और ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आप अपने परवरदिगार के दरबार में हमें याद रखिए और अपने दिल में हमें बसाये रखिए और यक़ीन जानिए कि अगर आप ने हमें सब्र और सुकून की तालीम न दी होती तो हम इस वह्शत असर हादिसे को हरगिज़ बर्दाश्त न कर पाते। ऐ अल्लाह! हमारा यह पैग़ाम हमारे नबी तक पहुंचा दे और हमारे बारे में इसे मह्फ़ूज़ फ़रमा"।

इसके बाद आप   मस्जिद में तशरीफ़ लाये और तसल्ली देने वाला ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया जिससे लोगों के कुछ होश ठीक हुए और ख़िलाफ़त, नमाज़े जनाज़ा और तद्फ़ीन के मराहिल अंजाम दिये गये।

(अर्-रौज़ुल अनफ़ 4/445)

12 रबीउ़ल अव्वल सनः 11 हिज्री पीर के दिन चाश्त के वक़्त आपकी वफ़ात हुई। पीर का बाक़ी दिन और मंगल की रात ख़िलाफ़त के क़ियाम और बेअ़त की तक्मील में ख़त्म हुई, मंगल की सुब्ह को आपको ग़ुस्ल दिया गया, फिर इन्फ़िरादी (अकेले-अकेले) तौर पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का सिलसिला शुरू हुआ जो पूरा दिन गुज़ारकर रात तक जारी रहा, फिर उस रात ही में आपकी तद्फ़ीन अ़मल में आई: صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ أَلْفَ أَلْفَ مَرَّةٍ

(अर्-रौज़ुल अनफ़ 4/454, अल्-बिदाया वन्-निहाया 5/384, दलाइलुन् नुबुव्वत वग़ैरह)

बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के शिद्दते मरज़ के ज़माने में आपकी सबसे लाडली साहबज़ादी, अह्ले

जन्नत औरतों की सरदार, सय्यिदा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा (जिनको आप ने पहले ही अपनी वफ़ात की और फिर अह्ले बेअूत में से सबसे पहले उनके इन्तिक़ाल की ख़बर दे दी थी) हाज़िरे ख़िद्मत हुईं और आप की शदीद तक्लीफ़ देखकर फ़रमाया: وَاكَرْبَ اَبَاهُ (हाये मेरे वालिद की तक्लीफ़) तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बेटी! आज के बाद फिर कभी तुम्हारे बाप पर कोई तक्लीफ़ न होगी। फिर जब आपकी वफ़ात हो गई तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा आख़िरी दीदार के लिए तश्रीफ़ लाईं और आपके जिस्मे मुबारक के सामने खड़े होकर इर्शाद फ़रमाया:

يَا اَبَتَاهُ، اَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ، يَا اَبَتَاهُ مَنْ جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ، يَـآاَبَتَـاهُ اِلٰى جِبْرَئِيْلَ نَنْعَاهُ.

(بخاری شریف ۲/۱٤۱)

हाये मेरे प्यारे अब्बा जान! जिन्होंने अपने रब की दावत क़ुबूल कर ली, मेरे मुशफ़िक़ और अज़ीज़ वालिद! जिनका ठिकाना जन्नतुल फ़िर्दौस है। ऐ वालिद-ए-नामदार! जिनकी वफ़ात पर हम हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के सामने गिरया व ज़ारी कर रहे हैं।

फिर जब आप को दफ़्न कर दिया गया तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने शिद्दते तास्सुर में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया:

يَـآ اَنَسُ ! اَطَابَتْ اَنْفُسُكُمْ اَنْ تَحْثُوْا عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ التُّرَابَ.

(بخاری شریف ۲/٦٤١)

ऐ अनस! तुमने यह कैसे गवारा कर लिया कि तुम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जसदे अक़्दस पर अपने हाथों से मिट्टी डालो।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ज़बाने हाल से जवाब दे रहे थे कि सच्ची बात तो यह है कि दिल तो न चाहता था मगर हुक्मे नबवी की तामील में मजबूरन यह काम अंजाम देना पड़ा। (फ़तहुल बारी 8/149)

एक रिवायत में यह भी है कि उसके बाद सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने क़ब्र-ए-मुबारक से मिट्टी उठाकर अपनी पैशानी पर रखी और उसे सूंघा फिर यह अश्आर पढ़े: مَـاذَا عَـلٰى مَنْ شَمَّ تُرْبَةَ اَحْمَدَ ☆ اَنْ لَّايَشُمَّ مَدَى الزَّمَانِ غَوَالِيَا

صُبَّتْ عَلَىَّ مَصَائِبُ لَوْ اَنَّهَا ☆ صُبَّتْ عَلَى الْاَيَّامِ عُدْنَ لَيَالِيَا

तर्जुमाः मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ की मिट्टी सूंघने वाला अगर मदहोश होकर फिर उम्र भर कुछ सूंघने के क़ाबिल न रहे तो इसमें हैरत और ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि इस हादिसे से मेरे ऊपर मुसीबतों के वे पहाड़ टूटे हैं कि ऐसी मुसीबत अगर दिनों पर नाज़िल हो जाती तो वे अंधेरी रातों में बदल जाते। (अशरफुल वसाइल 587)

मदीने वालों का यह तरीक़ा था कि जब किसी मुसीबत में फंसे आदमी को तसल्ली देनी होती तो नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हादिसा-ए-वफ़ात उसे याद दिलाया जाता, जिसके तसव्वुर के बाद अपनी हर मुसीबत और तक्लीफ़ आसान मालूम होने लगती। अल्लाह तआला आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरजात बुलंद फ़रमाये और पूरी उम्मत की तरफ़ से आपको बेहतरीन बदला अता फ़रमाये। आमीन या रब्बल आलमीन व सल्लल्लाहु अला सय्यिदिल मुरसलीन सय्यिदना व मौलाना मुहम्मदिंव् व अला आलिही व असहाबिही अजमईन।

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात

उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अफ़ज़ल तरीन शख़्सियत और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुहिब्ब व महबूब रफ़ीक़, ख़लीफ़ा अव्वल, अमीरूल मोमिनीन सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के सबब के बारे में बहुत से हज़रात ने लिखा है कि दर-असल आप को सरवरे काइनात, फ़ख़्र-ए-मौजूदात, सय्यिदना व मौलाना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात का इस क़द्र सदमा हुआ था कि आप अंदर ही अंदर घुटते रहे, और बराबर लाग़र व नहीफ़ और कमज़ोर होते चले गये और यही अंदरूनी कुढ़न और तक्लीफ़ आपकी वफ़ात का सबब बना। आपने मरज़ुलवफ़ात में अकाबिर असहाबुर राये सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के मश्वरे से अपने बाद सय्यिदना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया और इसपर बेअत ली और जब यह काम बख़ैर व ख़ूबी पूरा हो गया तो आपने अल्लाह ताला की बारगाह में यह दुआ फ़रमाईः

"ऐ अल्लाह! मैंने जो काम किया है उससे मेरा मक़सद सिर्फ़ मुसलमानों की

इस्लाह है। मैंने फ़ित्ने के डर से जो कुछ किया उसको आप अच्छी तरह जानते हैं, मैंने इस मुआमले में अपनी राये से इज्तिहाद किया है और अपनी समझ में मुसलमानों में सबसे बेहतर, ताक़तवर और नेकी चाहने वाले शख़्स को इन पर हाकिम बनाया है। मैं आपके हुक्म से इस ख़त्म होने वाली दुनिया को छोड़ रहा हूँ, आप इनमें मेरी तरह के ख़ैरख़्वाह लोग पैदा फ़रमाइये, मुसलमानों के हुक्काम को सलाहियत से नवाज़ दीजिए और उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन में दाख़िल फ़रमाइये और इनकी रिआ़या की इस्लाह फ़रमाइये"।

आपकी साहबज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा अपने मुश्फ़िक़ वालिद माजिद की मायूस करने वाली बीमारी से सख़्त परेशान थीं जब इयादत के लिए तश्रीफ़ लातीं तो आपकी तक्लीफ़ देखकर बे-क़रारी वाले अश्आ़र पढ़ा करतीं। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु यह जवाब देते कि बेटी! यह अश्आ़र मत पढ़ो बल्कि यह आयत पढ़ोः

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ، ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ. (سورة ق ١٩)

और वह आई मौत की बेहोशी, तहक़ीक़ यह वह है जिससे तू टलता रहता था।

एक रिवायत में है कि आप ने वफ़ात से पहले हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि बेटी! मुझे मेरे इन पहने हुए कपड़ों ही में कफ़न देना और आज पीर का दिन है अगर मेरा रात तक इन्तिक़ाल हो जाये तो मेरे दफ़न में कल का इन्तिज़ार न करना क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में जितनी जल्दी पहुंच जाऊं उतना ही बेहतर है।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा 102-106)

और यह भी मश्हूर है कि वफ़ात के वक़्त आपकी ज़बान-ए-मुबारक पर यह दुआ़ जारी थीः

تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّأَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ. (يوسف آيت/١٠١)

मौत दे मुझ को इस्लाम पर, और मिला मुझ को नेक बख़्तों में।

इस दुआ़ के बाद आप का इन्तिक़ाल हो गया। (मशाहीर के आख़िरी कलिमात 12)

رضی اللہ عنہ وارضاہ. رحمهُ الله تعالٰی رحمةً واسعةً.

हज़रत सईद बिन मुसय्यिदब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि जब सय्यिदना

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हम देख रहे हैं कि आपकी हालत ठीक नहीं है इसलिए हमें किसी नसीहत से सरफ़राज़ फ़रमाइये तो आपने फ़रमाया कि "जो शख़्स (नीचे दी हुई) ये दुआएं पढ़ेगा और फिर उसे मौत आ जायेगी तो अल्लाह तआला उस को उफ़ुक़-ए-मुबीन में जगह अ़ता करेगा।" लोगों ने पूछा कि उफ़ुक़-ए-मुबीन क्या है? तो आप ने फ़रमाया कि वह अ़र्शे ख़ुदावन्दी के सामने एक मैदान है जिसमें बाग़ीचे, नहरें और पेड़ हैं। वे कलिमाते दुआ़इया ये हैं:

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप ही ने सब मख़्लूक़ात को पैदा फ़रमाया जबकि आप को उनकी पैदाइश की बिल्कुल ज़रूरत न थी, फिर आप ने मख़्लूक़ात के दो हिस्से फ़रमाये एक हिस्सा जन्नती और एक हिस्सा जहन्नमी है। इसलिए मुझे जन्नती बनाइये, जहन्नमी न बनाइये।

ऐ अल्लाह! आप ने मख़्लूक़ की पैदाइश से पहले ही उन्हें शक़ी (बद्-बख़्त) या सईद बनाने का फ़ैसला फ़रमाया है, लिहाज़ा मेरी बद्-आमालियों से शक़ी मत बनाइये।

ऐ अल्लाह! आप पैदाइश से पहले ही से जानते हैं कि कौन क्या करेगा, तो मुझे उन लोगों में शामिल फ़रमा लीजिए जिनको आपने अपनी इताअ़त में लगे रहने का फ़ैसला फ़रमाया है।

ऐ अल्लाह! कोई शख़्स कुछ नहीं चाह सकता जबतक कि आप न चाहें, तो मेरी चाहत सिर्फ़ यह बना दीजिए कि मैं वही चाहूं जो मुझको आप का क़ुर्ब (नज़दीकी) अ़ता कर दे।

ऐ अल्लाह! बन्दों की हर हरकत आपकी इजाज़त की मोहताज है तो मेरी नक़्ल व हरकत अपने तक़्वे के मुताबिक़ कर दीजिए।

ऐ अल्लाह! आप ने ख़ैर व शर को पैदा करके हर एक के आ़मिल अलग-अलग मुक़र्रर किये हैं। लिहाज़ा मुझे ख़ैर की तौफ़ीक़ वाले लोगों में शामिल कर दीजिए।

ऐ अल्लाह! आपने जन्नत और जहन्नम को बनाकर हर एक को अलग अलग बसाने वाले लोग चुने हैं, मुझे जन्नत में रहने वालों में शामिल फ़रमा दीजिए।

ऐ अल्लाह! आप ने कुछ लोगों के लिए ज़लालत और गुमराही मुक़र्रर कर रखी है जिनको इस्लाम पर शर्ह-ए-सद्र नसीब नहीं। लिहाज़ा मुझे इस्लाम और ईमान पर शर्ह-ए-सद्र अ़ता फ़रमाइये और उसको मेरे दिल में मुज़य्यन फ़रमा दीजिए।

ऐ अल्लाह! आप ही निज़ामे काइनात के मुदब्बिर (समझने वाले) हैं। लिहाज़ा मुझे ऐसी बेहतरीन ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाइये जो आपके तक़र्रुब से मालामाल हो।

ऐ अल्लाह! बहुत से ऐसे लोग हैं कि सुब्ह शाम उनको आपके अ़लावा पर भरोसा है, मगर मेरे मुकम्मल ऐतिमाद, उम्मीद और हर तरह की नुसरत सिर्फ़ और सिर्फ़ आपकी ज़ात ही से जुड़ी हुई है।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि ये सब बातें अल्लाह की किताब से ली गई हैं। (और जो ये जज़्बात रखेगा उसको उफ़ुक़े मुबीन से नवाज़ा जायेगा)। (किताबुल आ़क़िबतः लिलू-अश्बीली 63)

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वफ़ात के वक़्त होशमन्दी

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चहीते और मुँहमांगे सहाबी-ए-जलील (बुज़ुर्ग), इस्लाम के अज़ीम तरीन सुतून और तारीख़े इस्लामी के रोशन सितारे अमीरूल मोमिनीन सय्यिदना हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने वफ़ात से पहले जिस होशमन्दी और उम्मत के लिए फ़िक्रमंदी की तारीख़ रक़्म फ़रमाई है वह बजाये ख़ुद तारीख़ का एक सुनहरा हिस्सा है। आपको एक मजूसी ग़ुलाम "अबू लूलू" ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाते हुए नेज़े से शदीद ज़ख़्मी कर दिया था, आप को उठाकर घर लाया गया, मदीने में खलबली मच गई, लोगों की शदीद ख़्वाहिश थी कि आप सेहतयाब हो जायें लेकिन जब आपको दूध और नबीज़ पिलायी गई और वह पेट के ज़ख़्म से बाहर निकल गई तो यह यक़ीन हो गया कि अब आप ज़िन्दा न बच सकेंगे। चुनांचे लोग आपकी इयादत के लिए आते और आपकी शानदार ख़िदमात पर ख़िराजे अ़क़ीदत पेश करते। इसी दौरान एक नौजवान शख़्स ने भी आकर आपसे यह ख़िताब किया:

"अमीरूल मोमिनीन ख़ुशख़बरी क़ुबूल फ़रमाइये कि अल्लाह तआ़ला ने आपको आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सोहबत का शरफ़ अ़ता किया। फिर इस्लाम में सबक़त से नवाज़ा, फिर जब आप ख़लीफ़ा बनाये गये तो आपने अ़दूल व इंसाफ़ के साथ यह ज़िम्मेदारी निभाई, और अब आप शहादत के मर्तबे से नवाज़े जा रहे हैं"।

यह सुनकर सय्यिदना हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमायाः "मैं तो यह चाहता हूँ कि इन सब नेअ़मतों के साथ भी हिसाब किताब बराबर सराबर हो जाये तो बस ग़नीमत है"। अभी वह नौजवान वापसी के लिए मुड़ा ही था कि हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की नज़र उसके तह्बंद पर पड़ी जो टख़्ने के नीचे लटक रहा था आप ने फ़ौरन उसे वापस बुलाया और कहा कि "प्यारे! अपना कपड़ा ऊपर रखा करो यह तुम्हारे कपड़े के लिए सफ़ाई का सबब है और तुम्हारे परवरदिगार से तक़्वे का ज़रिया है"। यह है होशमन्दी! कि उस तक्लीफ़ और अज़िय्यत की हालत में भी نهی عن المنکر का काम जारी है। इसके बाद आप ने अपने साहबज़ादे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से फ़रमाया कि "देखो मेरे ऊपर कितना क़र्ज़ है?" चुनांचे हिसाब लगाने से पता चला कि लगभग 86 हज़ार दिर्हम क़र्ज़ है। तो आप ने फ़रमाया कि पहले तो मेरे अहले ख़ानदान से लेकर यह रक़्म अदा की जाये, अगर पूरी न हो तो मेरे क़बीले बनी अ़दी से वुसूल की जाये और अगर उनसे भी न पूरी हो तो क़ुरैश से सवाल किया जाये और उनके अ़लावा किसी से न मांगा जाये। फिर आप ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से फ़रमाया कि "उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास जाकर मेरा सलाम अ़र्ज़ करो और यह मत कहना कि अमीरूल मोमिनीन ने सलाम अ़र्ज़ किया है बल्कि यह कहना कि उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सलाम कहा है (ताकि कोई जबूर न हो) और कहना कि उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु आपसे इस बात की इजाज़त तलब करता है कि वह आप के हुजूरे में अपने साथियों (आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु) के साथ दफ़्न किया जाये। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने हुक्म के मुताबिक़ यह पैग़ाम उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अ़न्हा तक पहुंचा दिया। उन्होंने जवाब दिया कि अगरचे मैं ख़ुद यहां दफ़्न होना चाहती थी लेकिन अब मैं अपने ऊपर हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को तर्जीह देती हूँ, यानी उनको

दफ़न की इजाज़त है। हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु जवाब के मुन्तज़िर थे। जब हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु वापस आये तो फ़रमाया कि "क्या ख़बर लाये?" हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया कि हज़रत आपकी मुराद पूरी हुई, हज़रत उम्मुल मोमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने इजाज़त दे दी है। यह ख़ुशख़ब्री सुनकर हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ज़बान से बे-साख़्ता हम्द व सना के कलिमात सादिर हुए और फ़रमाया कि "इससे ज़्यादा अहम और कोई चीज़ मेरे लिए नहीं थी" फिर फ़रमाया कि जब मेरी वफ़ात हो जाये तो मुझे उठाकर आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के हुजूरे तक ले जाना और फिर मेरा नाम लेकर इजाज़त तलब करना, अगर इजाज़त दे दें तो वहां दफ़न करना वर्ना मुझे आ़म क़ब्रिस्तान में दफ़न कर देना। इसके बाद आपने अपने बाद ख़िलाफ़त के इन्तिख़ाब के लिए सात अकाबिर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को बुलाकर एक मज्लिस मश्वरा करने के लिए बनाई जिनमें आपके साहबज़ादे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा भी शामिल थे मगर उनके बारे में आपने वज़ाहत कर दी थी कि इन्हें अमीरूल मोमिनीन नहीं बनाया जा सकता। इसके बाद आपने अपने जाँ-नशीन को नीचे दी गई वसिय्यतें फ़रमाईं।

1. मुहाजिरीन-ए-अव्वलीन के हुक़ूक़ की ज़मानत और उनकी इ़ज़्ज़त व हुर्मत का ख़्याल रखा जाये, 2. अन्सार-ए-मदीना के साथ ख़ैर- ख़्वाही की जाये, उनके नेक अ़मल लोगों की हौसला अफ्ज़ाई हो और बद्-अ़मल अफ़्राद से दर-गुज़र का मुआ़मला किया जाये, 3. दूसरी शहरी आबादियों के साथ भी भलाई का बर्ताव किया जाये इसलिए कि वे इस्लाम के मददगार, माल के जमा करने वाले और दुश्मनों के ग़ैज़ व ग़ज़ब की वजह हैं (क्योंकि उनकी तादाद से दुश्मन ख़ौफ़ खाता है) उन लोगों से उनकी रज़ामन्दी से सिर्फ़ ज़रूरत से ज़्यादा माल ही लिया जाये, 4. और मम्लुकत (हुकुमत) के देहात में रहने वालों के साथ भी ख़ैरख़्वाही की जाये, इसलिए कि वे अ़रब की अस्ल और इस्लाम की बुनियाद हैं, उनसे उनका ज़रूरत से ज़्यादा माल लेकर उनके ही ग़रीबों में बांट दिया जाये और 5. ज़िम्मियों के साथ भी रिआ़यत का मुआ़मला किया जाये, उनके अ़हद की पासदारी की जाये उनके दुश्मनों से जंग की जाये और उनकी वुस्अ़त से ज़्यादा का उन्हें मुकल्लफ़ न बनाया जाये" (यानी ताक़त से ज़्यादा न वुसूल किया जाये)। इन हिदायात के बाद आपने जान जाँ-आफ़रीं के हवाले कर दी।

(बुख़ारी शरीफ़ 1/533-534)

अल्लाहु अक्बर! होशमन्दी की क्या शान है? कि आख़िर तक उम्मत की फ़िक्र है और एक-एक हिस्से पर निगाह है और एक-एक हिदायत पैश-ए-नज़र है। बेशक आपने ख़िलाफ़ते नुबुव्वत का हक़ अदा कर दिया, बुख़ारी शरीफ़ ही की एक दूसरी रिवायत है कि जब ज़ख़्म से आपकी तक्लीफ़ ज़्यादा बढ़ी तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ख़िद्मत में हाज़िर हुए और तसल्ली देते हुए अर्ज़ किया, कि अल्हम्दु लिल्लाह! आपको जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हुस्ने रफ़ाक़त नसीब हुई और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गये तो वह आप से राज़ी थे, इसी तरह ख़लीफ़ा-ए-अव्वल हज़रत सिद्दीक़-ए-अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके बाद दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का साथ भी आप को नसीब रहा और आप ने सबका हक़ अदा कर दिया अब अगर आप दुनिया से तशरीफ़ ले जायें तो वे सब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम आपसे राज़ी होंगे (यह आपके लिए बड़ी सआदत की बात है) यह सुनकर सय्यिदना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बोले कि "आप ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत सिद्दीक़-ए-अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु की जिस रफ़ाक़त (दोस्ती) का ज़िक्र किया है वह तो सिर्फ़ फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी है ज़ो मुझ पर हुआ। आज जो आप मुझे तक्लीफ़ में देख रहे हैं वह दरअस्ल आप और आपके बाद आने वाले लोगों के बारे में है (कि मेरी वफ़ात से फ़ित्नों का दरवाज़ा टूट जायेगा जैसा कि दूसरी हदीस में आया है) और अल्लाह की क़सम! अगर मेरे पास ज़मीन के फैलाव के बराबर भी सोना होता तो मैं आज उसे अल्लाह के अज़ाब से बचने के लिए फ़िद्ये में दे देता।

(बुख़ारी शरीफ़ 1/521)

यानी अपने आमाल पर भरोसा नहीं है बल्कि सब कुछ करने के बावुजूद भी अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और डर ग़ालिब है।

और एक रिवायत में है कि वफ़ात के वक़्त आपका सर-ए-मुबारक आपके साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अपनी गोद में रख लिया तो आपने इस्रार करके उसे ज़मीन पर रखवाया और अपने रूख़्सारों को मिट्टी से रगड़ते हुए फ़रमायाः "उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और उसकी माँ की बड़ी ख़राबी है, अगर उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की मग़फ़िरत न हो" फिर साहबज़ादे से फ़रमाया कि जब मेरी वफ़ात हो जाये तो कफ़न दफ़न में जल्दी

करना। (किताबुल आक़िबतः 64)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की मुबारक नअ़्श (लाश) चारपाई पर रखी थी और मैं वहीं क़रीब में खड़ा था कि एक शख़्स ने अपनी कोहनी मेरे कंधे पर रखकर हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की तरफ़ रूख़ करके यह कहना शुरू किया:

"ऐ उ़मर! अल्लाह तुम पर मेहरबान हो, मुझे पूरी उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारा हश्र भी तुम्हारे दोनों साथियों (हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सिद्दीक़-ए-अक्बर रज़ियल्लाहु अ़न्हु) के साथ फ़रमायेगा। इसलिए कि मैं बहुत ज़्यादा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़बान-ए-अक़्दस से ये कलिमात सुना करता था कि मैं (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) अबू बक्र व उ़मर वहाँ थे और मैंने, अबू बक्र और उ़मर ने फ़्लां काम किया और मैं, अबू बक्र और उ़मर फ़्लां जगह गये। इसलिए मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला अब भी आपको उन्हीं दोनों साथियों के साथ रखेगा"।

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने जो मुड़कर देखा तो ये ख़िराजे अ़क़ीदत पेश करने वाले शख़्स सय्यिदना हज़रत अ़ली कर्मल्लाहु वजहहु थे। (बुख़ारी शरीफ़ 1/519)

सच्ची बात है कि कितना शानदार ख़िराजे अ़क़ीदत और कैसा लतीफ़ और बशाशत अंगेज़ इस्तिदलाल है। ऐसी मौत पर बिलाशुबा हज़ारों हज़ार ज़िन्दगियाँ क़ुरबान हैं। رحمة الله تعالى رحمة واسعة

अमीरूल मोमिनीन हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की मज़्लूमाना शहादत

पैकरे हिल्म व हया ज़ुन्नूरैन सय्यिदना हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब शर-पसन्द बाग़ियों ने अपने मकान में बंद कर दिया और उन बाग़ियों को हटाने की हर मुम्किन कोशिशें नाकाम हो गईं जिससे हौसला पाकर यह शक़ीयुल क़ल्ब (सख़्त दिल) बाग़ी आपके मकान का दरवाज़ा जलाकर अन्दर दाख़िल हो गये तो उस ख़तरनाक मन्ज़र को देखकर सय्यिदना हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने नमाज़ की निय्यत बांध ली और सूरः ता-हा पढ़नी शुरू

कर दी आप के घर पर बाग़ी हमला करते रहे और आप पूरे सब्र व सुकून के साथ नमाज़ में मश्गूल रहे और नमाज़ से फ़ारिग़ होकर क़ुरआन-ए- करीम खोलकर तिलावत फ़रमाने लगे उस वक़्त आपकी ज़बान-ए-मुबारक पर यह आयत जारी थीः

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ. (آل عمران آیت : ١٧٣)

जिनको कहा लोगों ने कि मक्का वाले आदमियों ने जमा किया है सामान तुम्हारे मुक़ाबले के लिए तो तुम उनसे डरो तो और ज़्यादा हुआ उनका ईमान और बोले काफ़ी है हमको अल्लाह और क्या ख़ूब कारसाज़ है।

इस दौरान एक शख़्स ने आप पर हमला किया और इस क़द्र शिद्दत से आपका गला घोंटा कि आप पर ग़शी तारी हो गई और सांस लेने में तक्लीफ़ महसूस होने लगी अभी उसने छोड़ा ही था कि दूसरा और तीसरा आदमी आगे बढ़ा और उसने तलवार से आप पर वार किया आप ने अपने हाथ से उसे रोकने की कोशिश की जिससे हाथ कट गया और ख़ून का सबसे पहला क़तरा क़ुरआन-ए-करीम की इस आयत पर पड़ाः فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

(सूरः बक़राः 137)

तर्जुमाः (सो अब काफ़ी है तेरी तरफ़ से उनको अल्लाह और वही है सुनने वाला, जानने वाला) अपने हाथ को कटता देखकर आपकी ज़बाने मुबारक से ये अल्फ़ाज़ निकले कि यही वह हाथ है जिसने सबसे पहले क़ुरआन-ए-करीम की मुफ़स्सल सूरतें लिखीं। फिर एक और शख़्स जिसका नाम सौदान बिन हमरान था नंगी तलवार लहराता हुआ सामने आया और उस ख़बीस ने तलवार आपके पेट में उतार दी और आप उसी हाल में सुर्ख़-रू होकर अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर हो गये। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

(अल्-बिदाया वन्-निहाया, 7/201)

जब आप ख़ून में लहूलहान थे तो आप की ज़बान-ए-मुबारक पर ये अल्फ़ाज़ जारी थेः لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَعِيْنُكَ عَلٰى اَمْرِيْ وَاَسْئَلُكَ الصَّبْرَ عَلٰى بَلَائِيْ. (तेरे अ़लावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, तू हर ऐब से पाक है, मैं कोताही करने वालों में से हूँ। ऐ अल्लाह! मैं अपने मुआ़मले में

तुझ से मदद का तलबगार हूँ और अपनी मुसीबत पर सब्र की दरख़्वास्त करता हूँ।

(किताबुल आक़िबतः 64)

कुछ पहले लोगों से मन्क़ूल है कि जो लोग भी हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के क़त्ल में शरीक थे वे सब बाद में मक़्तूल हुए और कुछ ने यह फ़रमाया कि क़ातिलों में से हर शख़्स पागल होकर मरा। نعوذ باللہ من ذلک

(अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/202)

शहादत के वक़्त अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहु की होशमन्दी

शेरे ख़ुदा, फ़ातेह-ए-ख़ैबर अमीरूल मोमिनीन सय्यिदना हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहु को जब ख़बीस इब्ने मुल्जिम ने शदीद ज़ख़्मी कर दिया और आपका चेहरा ख़ून से लहूलहान हो गया, फिर आपको क़ियामगाह पर लाया गया और ज़ख़्म की शिद्दत की वजह से ज़िन्दगी से ना-उम्मीदी हो गई तो आपने अपने साहबज़ादगान जवानाने अह्ले जन्नत के सरदार, सय्यिदना हज़रत हसन और सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को बुलाकर ख़ास तौर पर वसिय्यत फ़रमाई। वसिय्यत के कुछ अहम हिस्से ये थे:

1. मैं अपने तमाम साहबज़ादगान और जिन तक भी मेरी तहरीर पहुंचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से डरने और ईमान और इस्लाम ही की हालत पर मरते दम तक क़ाइम रहने की वसिय्यत करता हूँ।
2. तुम सब मिलकर मज़्बूती से अल्लाह की रस्सी को पकड़े रहना और आपस में इख़्तिलाफ़ न करना इसलिए कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि दो झगड़ने वालों के दर्मियान सुलह कराना नमाज़, रोज़ा जैसी इबादात से भी अफ़्ज़ल है।
3. अपने रिश्तेदारों का ख़्याल रखो और उनपर सिला रहमी करो, ताकि अल्लाह तआ़ला तुम पर हिसाब किताब आसान फ़रमाये।
4. यतीमों के बारे में अल्लाह से ख़ूब डरते रहना तुम्हारी मौजूदगी में उनके चेहरों पर उदासी न हो और तुम्हारे रहते हुए वे बर्बाद न होने पायें।
5. पड़ोसियों के बारे में भी अल्लाह से डरते रहना क्योंकि उनके हुक़ूक़ के बारे

में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमें इस क़द्र ताकीद फ़रमाते रहे, कि हमें यह गुमान होने लगा कि आप पड़ोसियों को हमारी विरासत में शरीक क़रार दे देंगे।

6. और क़ुरआन-ए-पाक के बारे में भी अल्लाह से डरते रहना। ख़बरदार! उस पर अ़मल करने में कोई दूसरा तुमसे आगे न बढ़ जाए।
7. हज्ज-ए-बैतुल्लाह, रमज़ान के महीने के रोज़े और ज़कात का एहतिमाम रखना और अल्लाह के रास्ते में जान व माल से जिहाद करते रहना।
8. हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के बारे में अल्लाह से डरते रहना इसलिए कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनका लिहाज़ करने की वसिय्यत फ़रमाई।
9. फ़ुक़रा और मसाकीन को देते दिलाते रहना और औ़रतों और बांदियों का ख़्याल रखना।
10. दीनी मुआ़मले में किसी के तअ़्ने की परवाह मत करना इन्शाअल्लाह तुम्हारा बुरा चाहने वालों की तरफ़ से अल्लाह तआ़ला किफ़ायत फ़रमायेगा।
11. लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आना और امر بالمعروف और نهى عن المنكر। मत छोड़ना वर्ना तो बद्-तरीन लोग तुम पर हाकिम हो जायेंगे फिर तुम्हारी दुआ़एं भी क़ुबूल न होंगी।
12. अच्छी बातों पर एक दूसरे की मदद करना और ज़ुल्म व शर्कशी के कामों में शरीक न रहना और अल्लाह से बराबर डरते रहना। वग़ैरह वग़ैरह

इसके बाद आप बराबर क़लिमा-ए-तय्यिबा का विर्द फ़रमाते रहे और उसी हालत में वफ़ात पाई और कुछ हज़रात का कहना यह है कि आप की ज़बान-ए-मुबारक पर सबसे आख़िर में ये आयतें जारी थीं: "فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ" (सूर: ज़िल्ज़ाल: आयत 7-8) तर्जुमा: (सो जिसने की ज़र्रा भर भलाई वह देख लेगा उसे और जिसने की ज़र्रा भर बुराई वह देख लेगा उसे)। (अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/350:351) रज़ियल्लाहु अ़न्हु व कर्रमल्लाहु वजूहहु।

सय्यिदना हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु

6. रीहानतुर्रसूल सय्यिदना हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को जब ख़तरनाक क़िस्म का ज़हर पिलाया गया और आपकी हालत ग़ैर होने लगी तो आपने फ़रमाया कि मुझे बाहर सहन में ले चलो, मैं अल्लाह की क़ुद्रत में ग़ौर करना चाहता हूँ, चुनांचे हाज़िरीन ने आपका बिस्तर बाहर बिछा दिया, तो आपने आसमान की तरफ़ नज़र उठायी और फ़रमाया कि "ऐ अल्लाह! मैं अपनी इस जान को तेरे नज़्दीक सवाब का मुस्तहिक़ समझता हूँ, मेरे पास इससे ज़्यादा क़ीमती चीज़ कोई नहीं है" (अल्लाह ने आख़िर वक़्त में आपको अपनी पाकीज़ा ज़िन्दगी पर रहमते ख़ुदावन्दी की भरपूर उम्मीद की नेअ्मत अता कर दी थी) और एक दूसरी रिवायत में है कि जब आप की तक्लीफ़ शदीद हुई और आप इसका इज़्हार करने लगे तो आपके छोटे भाई सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने तशरीफ़ लाकर तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि भाई जान इस तक्लीफ़ की क्या हैसियत है? बस आपके जिस्म से रूह निकलने की देर है कि अभी आप अपने वालिदैन माजिदैन हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा और अपने नाना जान हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अपनी नानी हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा और अपने चचा हज़रत हम्ज़ा और हज़रत जाफ़र और अपने मामू हज़रत क़ासिम, हज़रत तय्यिब, मुतहहिर और इब्राहीम और अपनी ख़ालाओं हज़रत रुक़य्या, हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत ज़ैनब से मुलाक़ात करने वाले हैं, तसल्ली के ये अल्फ़ाज़ सुनकर हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का तक्लीफ़ का एहसास कम हो गया और आपने फ़रमाया कि प्यारे भाई, बात यह है कि मैं इस वक़्त उस मरहले में दाख़िल हो रहा हूँ जिसका पहले कभी तज्रिबा नहीं हुआ और मैं अपनी आँखों से अल्लाह की ऐसी मख़्लूक़ देख रहा हूँ जिनको आज तक कभी नहीं देखा यह सुनकर हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु रोने लगे। رضی اللہ عنہ وارضاہ

(अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/433)

सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की दर्दनाक शहादत

सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने शहादत से पहले ज़ालिम हम्ला

करने वालों की फ़ौज से ख़िताब करते हुए फ़रमाया "क्या तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो? अल्लाह की क़सम तुम मेरे बाद अल्लाह के किसी ऐसे बन्दे को क़त्ल न कर सकोगे जिसका क़त्ल मेरे मुक़ाबले में अल्लाह के नज़्दीक मुझसे ज़्यादा अज़ाब का सबब हो, अल्लाह की क़सम मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला तुम्हें ज़लील (रुसूवा) करके मुझे इज़्ज़त अता करेगा फिर मेरी तरफ़ से तुमसे इस तरह इन्तिक़ाम लेगा कि तुम्हें एहसास भी न हो पायेगा, ख़ुदा की क़सम! अगर तुमने मुझे मार डाला तो अल्लाह तआला इसका सख़्त अज़ाब तुम्हारे ऊपर नाज़िल करेगा और उसके बदले में ख़ूँ -रेज़ी आम होगी फिर उस वक़्त तक अल्लाह तुमसे राज़ी न होगा जब तक कि तुम्हें बद्-तरीन दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला न कर दे"।

आपकी इस पुर-असर तक़रीर के बाद आपके ख़ानदान के 23 लोग शहादत की ज़ीनत से सज-संवरकर अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर हो चुके थे लेकिन कोई मुख़ालिफ़ फ़ौजी आप पर हमला करने की जसारत (हिम्मत) न कर पाता था, यहां तक कि बद्-बख़्त कमांडर शिम्र बिन ज़िल-जौशन के ललकारने पर ज़ुर्आ बिन शुरैक और सिनान बिन अनस नाम के दो शक़ीयुल क़ल्ब (सख़्त दिल) ज़ालिमों ने इन्तिहाई मज़्लूमाना हालत में आपको शहीद करके अपनी ज़िल्लत पर मुहर लगा ली। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ (अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/585)

हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात

8. हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साहबज़ादे मुस्अ़ब बिन सअ़्द फ़रमाते हैं कि जब मेरे वालिद मोह्तरम (हज़रत सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु) की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आपका सर-ए-मुबारक मेरी गोद में था, मैं बे-इख़्तियार रोने लगा तो आपने फ़रमाया बेटे क्यों रो रहे हो? अल्लाह की क़सम मुझे मेरा रब कभी अ़ज़ाब न देगा, मैं जन्नती लोगों में हूँ (इसलिए कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आपको दुनिया ही में जन्नत की बशारत (ख़ुश-ख़बरी) दे दी थी और अ़श्रा-ए-मुबश्शरा में आप सबसे बाद में वफ़ात पाने वाले हैं)। बेशक अल्लाह तआ़ला अहले ईमान को उनकी नेकियों का ख़ुद बदला अ़ता फ़रमायेगा जबकि कुफ़्फ़ार की नेकियों के बदले उनका अ़ज़ाब कुछ हल्का कर देगा और जब नेकियाँ बाक़ी न बचेंगी तो उनसे कहा

जायेगा कि अब अपने आमाल के सवाब का मुतालबा उन माबूदाने बातिला (झूठे खुदाओं) से करो जिनके लिए तुम इबादतें किया करते थे।

(अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/471)

वफ़ात के वक़्त हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु का हाल

9. सय्यिदना हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो आप रोने लगे तो आप से पूछा गया कि आप क्यों रो रहे हैं? तो फ़रमाया कि तौशे की कमी और लम्बे सफ़र की शिद्दत से और मैं एक घाटी के अन्दर उतरने के क़रीब हूँ जो या तो जन्नत जायेगी या जहन्नम तक और मुझे अभी यह मालूम नहीं कि मेरा अंजाम क्या होगा। (किताबुल आख़िरत 65)

और एक दूसरी रिवायत में है कि मदीने के गवर्नर मर्वान बिन हकम मरज़ुल मौत में आपकी इयादत को गये और कहा कि अबू हुरैरह अल्लाह तआला आपको शिफ़ा अता करे? तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब में यह दुआ मांगीः اللّٰھم انی احب لقاءک فاحب لقائی (ऐ अल्लाह! मैं तेरी मुलाक़ात पसन्द करता हूँ इसलिए तू भी मेरी मुलाक़ात पसन्द फ़रमा)। रावी कहता है कि अभी मर्वान मुड़कर बाज़ार तक भी न पहुंचे थे कि ख़बर मिली कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हो गई। رضی اللہ عنہ وارضاہ

(अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/509, अल्-इसाबा 7/361)

फ़क़ीह-ए-उम्मत ख़ादिमे रसूल हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु

10. एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मदीना मुनव्वरा में मुलाक़ात की और कहा कि मैंने आज रात ख़्वाब में देखा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक सफ़ेद मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं और आप उनके नीचे हैं और हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपसे फ़रमा रहे हैं कि इब्ने मस्ऊद! मेरे पास आ जाओ क्योंकि मेरे बाद तुम्हारे साथ ज़ुल्म किया गया है, हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस शख़्स से ख़्वाब की तस्दीक़ की और फ़रमाया कि तुमसे वादा है कि मेरी नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़े बग़ैर मदीना मुनव्वरा से मत जाना। चुनांचे कुछ ही दिन के बाद

आपकी वफ़ात का हादिसा पेश आ गया।

मौत के मरज़ में अमीरुल मोमिनीन सय्यिदना हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु आपकी इयादत के लिए तशरीफ़ लाए और पूछा कि आपको क्या मरज़ है? आपने जवाब दिया कि मेरे गुनाहों का। फिर पूछा कि किस चीज़ की ख़्वाहिश है? आपने फ़रमाया कि अपने रब की शफ़क़त और रहमत की। फिर हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाह अन्हु ने फ़रमाया कि क्या हम आपके लिए वज़ीफ़ा जारी कर दें? तो आप ने फ़रमाया कि मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि आपकी बेटियों के लिए काफ़ी होगा, आपने जवाब दिया कि आपको मेरी बच्चियों के फ़क्र व फ़ाक़े का क्या ख़तरा है, मैंने अपनी बच्चियों से ताकीद कर रखी है कि वे रोज़ाना रात में सूरः वाक़िआ पढ़ा करें। इसलिए कि मैंने हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि जो शख़्स हर रात सूरः वाक़िआ पढ़ने का मामूल बना ले तो कभी भी वह फ़क्र व फ़ाक़े का शिकार न होगा। (असदुल ग़ाबा 3/255-286)

सिपह सालार-ए-आज़म हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु

11. मशहूर इस्लामी सिपह सालार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद सैफ़ुल्लाह की वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो बड़ी हसरत से फ़रमाया कि मैं मैदाने जंग में कई बार शहादत तलाश करता रहा मगर मेरी यह आरज़ू पूरी न हो सकी। अब मैं अपने बिस्तर पर सफ़रे आख़िरत के लिए जाने को तैयार हूँ और मेरे पास कलिमा-ए-तय्यिबा لا إله إلا الله के बाद सबसे मक़्बूल और पुर उम्मीद अमले ख़ैर मैदाने जंग की वह अंधेरी रात है जब मैं हथियार बांधकर तेज़ बारिश के अंदर सुब्ह तक खड़ा रहा और सुब्ह के वक़्त कुफ़्फ़ार पर अचानक हमला कर दिया फिर फ़रमाया कि जब मेरी वफ़ात हो जाये तो मेरे हाथियार और मेरा घोड़ा सब अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ कर देना। رضی الله عنه وارضاه

(अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/124)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को वफ़ात के वक़्त जन्नत की बशारत

12. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के एक साहबज़ादे का

ताऊन-ए-अम्वास के ज़माने में इन्तिक़ाल हो गया जिसपर आपने मुकम्मल सब्र किया फिर आप खुद ताऊन (प्लैग) में मुब्तला हो गये जिसपर आपने फ़रमाया कि दोस्त फ़क्र व फ़ाक़ा के ज़माने में आया है जो नादिम है वही कामियाब है, (यानी अपनी आजिज़ी का इज़्हार किया) रावी कहते हैं कि उस वक़्त मैंने पूछा कि हज़रत आप क्या देख रहे हैं? तो आप ने जवाब दिया कि मेरे रब ने मेरी बेहतरीन ताज़ियत का इन्तिज़ाम किया है, मेरे पास मेरे बेटे की रूह आई है और उसने मुझे खुशख़बरी सुनाई है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मलाइका-ए-मुक़र्रबीन, शुहदा व सालिहीन की 100 सफ़ों के साथ मेरी रूह के लिए दुआए रह्मत कर रहे हैं और मुझे जन्नत की तरफ़ ले जा रहे हैं फिर आप पर बेहोशी छा गई तो सबने देखा कि जैसे आप लोगों से हाथ मिला रहे हैं और कह रहे हैं मुबारक हो, मुबारक हो मैं अभी तुम्हारे पास आया हूँ, फिर आप दुनिया से रूख़्सत हो गये। رضی اللہ عنہ وارضاہ. (शर्हुस् सुदूर 120)

मुअज़्ज़िन-ए-रसूल हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु का वफ़ात के वक़्त ज़ौक़ व शौक़

13. मुअज़्ज़िन-ए-रसूल सय्यिदना हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वफ़ात के वक़्त उनकी बीवी ने अफ़्सोस का इज़्हार करते हुए कहा कि وَاحُزْنَاهُ (हाय अफ़्सोस आप जा रहे हैं) तो आप ने जवाब दिया: وَاطَرَبَاهُ غَدًا نَلْقَى الْأَحِبَّةَ مُحَمَّدًا وَحِزْبَهُ (कितने सुरूर की बात है कल हम अपने दोस्तों यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आप के साथियों से मिलने वाले हैं, رضی اللہ عنہ وارضاہ. (किताबुल आक़िबत 64, मशाहीर के आख़िरी कलिमात 33)

हज़रत अबू सअ्लबा खुशनी रज़ियल्लाहु अन्हु की सज्दे की हालत में वफ़ात

14. हज़रत अबू सअ़्लबा खुशनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु बड़े मशहूर सहाबी हैं वह फ़रमाया करते थे कि मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि मुझे मरते वक़्त इस तरह की शिद्दत न पेश आयेगी जैसे आम लोगों को पेश आती है, चुनाँचे उनकी दुआ इस तरह क़ुबूल हुई कि वह एक दिन दर्मियान रात में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने

में मशग़ूल थे, नमाज़ के दौरान ही सज्दे की हालत में आपकी वफ़ात हो गई, उसी वक़्त आपकी एक साहबज़ादी ने ख़्वाब देखा कि आप वफ़ात पा चुके हैं वह घबरा कर उठी और दोड़ी हुई आपके मुसल्ले तक आई, उसने आपको आवाज़ दी लेकिन जवाब न दिया, जाकर देखा तो सज्दे की हालत में आपकी रूह क़ब्ज़ हो चुकी थी। رضی اللہ عنہ وارضاہ۔ (इसाबा, 7/51)

हज़रत अबू शैबा ख़ुद्री रज़ियल्लाहु अन्हु का आख़िरी कलाम

15. सहाबी-ए-रसूल हज़रत अबू शैबा ख़ुद्री रज़ियल्लाहु अन्हु उस फ़ौज में शामिल थे जिसने क़ुस्तुन्तुनिया को घेर रखा था एक दिन आप ने लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिए आवाज़ दी तो बड़ी तादाद में लोग आपके चारों तरफ़ जमा हो गये उस वक़्त आपने अपने चेहरे पर परदा डाल रखा था और आप यह फ़रमा रहे थे कि मुझे जो न जानता हो वह जान ले कि मैं अबू शैबा ख़ुद्री हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सहाबी हूँ और मैंने ख़ुद जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह इर्शाद सुना है कि "जो शख़्स भी अल्लाह के एक होने की इख़्लास के साथ गवाही दे वह जन्नत में दाख़िल होगा लिहाज़ा आमाले सालिहा करते रहो और भरोसा करके न बैठो"। यह हदीस सुनाकर आप वहीं वफ़ात पा गये। رضی اللہ عنہ وارضاہ۔

(अल्-इसाबा 7/171)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु रब्बे वाहिद के हुज़ूर में

16. मश्हूर इस्लामी सिपह सालार और सहाबी-ए-जलील (बुज़ुर्ग) हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने वफ़ात के वक़्त अल्लाह तआला की बारगाह में दोनों हाथ उठाकर आजिज़ी के साथ ये कलिमात इर्शाद फ़रमाये: "ऐ अल्लाह तूने हुक्म दिया और हमने हुक्म न माना, ऐ अल्लाह! तूने मना किया और हमने नाफ़रमानी की, रब्बे करीम! मैं बेक़ुसूर नहीं हूँ कि माफ़ी मांगू और ताक़तवर नहीं हूँ कि ग़ालिब आ जाऊं, अगर तेरी रह्मत शामिले हाल न होगी

तो हलाक हो जाऊंगा"। इसके बाद आपने तीन मर्तबा कलिमा-ए-तय्यिबा لا إله إلا الله पढ़ा और जान जाँ-आफ़रीं के सुपुर्द कर दी। رضی اللہ عنہ وارضاہ.

(मशाहीर के आख़िरी कलिमात 78)

और एक रिवायत में है कि इन्तिक़ाल के वक़्त आपने अपने लश्कर के कमांडरों और मुहाफ़िज़ों को बुलाया और उनसे कहा कि क्या तुम सब मिलके मुझे अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा सकते हो? सबने कहा "नहीं" तो आपने फ़रमाया कि सब वापस चले जाओ। फिर आपने पानी मंगाकर वुज़ू फ़रमाया और क़िब्ला रूख़ होकर ऊपर ज़िक्र की हुई दुआ़ मांगी और आख़िर में आयते करीमाः لا إله إلا أنت سبحانك إني كنت من الظالمين पढ़ते हुए वफ़ात पाई।

(किताबुल आ़क़िबत 64)

वफ़ात के वक़्त हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु अन्हु की असर अंगेज़ दुआ़

17. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बिरादरे निस्बती उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के सगे भाई कातिबे वही, इस्लाम के नामवर फ़ातेह और अ़ज़ीमुल मर्तबत अमीर, सय्यिदना हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु का वफ़ात के वक़्त यह हाल था कि रोते हुए अपने रूख़्सारों को ज़मीन पर उलटते पुलटते थे और ज़बान पर आ़जिज़ी के साथ ये कलिमात जारी थे कि "ऐ अल्लाह! आपने अपनी किताब में यह ऐलान फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला शिर्क को तो माफ़ नहीं करता लेकिन इसके अ़लावा दूसरे गुनाहों को अगर चाहे तो माफ़ कर देता है इसलिए ऐ रब्बे करीम! मुझे उन लोगों में शामिल फ़रमा जिन लोगों की मग़्फ़िरत का तूने इरादा किया है"।

फिर यूं इर्शाद फ़रमाया कि "ऐ अल्लाह! ग़लती से दर्-गुज़र फ़रमा, कौताही से नज़र फेर ले और अपनी सिफ़ते हिल्म की बदौलत उस शख़्स की जहालत को माफ़ फ़रमा जो तेरे अ़लावा किसी से उम्मीद नहीं रखता, बेशक तू बड़ा मग़्फ़िरत वाला है, किसी भी ग़लतकार के लिए तेरे अ़लावा कोई आ़फ़ियत की जगह नहीं है"। फिर आप वफ़ात पा गये। رضی اللہ عنہ وارضاہ.

(अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/538)

सय्यिदना हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की अलमनाक शहादत

सय्यिदना हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को जब हज्जाज की ज़ालिम फ़ौज ने मक्का मुअज़्ज़मा में चारों तरफ़ से घेर लिया और मक्का में रहने वाले ज़्यादा तर लोगों ने आपका साथ छोड़कर और आजिज़ आकर हज्जाज के दामन में पनाह ले ली, यहां तक कि आपके दो साहबज़ादों ने भी हज्जाज की अमान में जाना क़ुबूल कर लिया तो इन मायूसी वाले हालात को देखकर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी वालिदा-ए-मोहतरमा हज़रत असमा बिन्ते अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए जो उस वक़्त बुढ़ापे की वजह से नाबीना हो चुकी थीं, आपने वालिदा से अर्ज़ किया कि लोग उन्हें छोड़कर जा चुके हैं, यहां तक कि अपनी सगी औलाद भीं इस नाज़ुक वक़्त में अलग हो चुकी है और बहुत ही थोड़े से लोग इस वक़्त उनके साथ बचे हैं जिनको शदीद घिराव की वजह से कुछ देर सब्र करना भी मुश्किल है। दूसरी तरफ़ हज्जाज के लोग मुझे दुनिया का लालच देकर मुक़ाबला करने से हटने को कह रहे हैं तो अम्मां जान! इस बारे में आपकी क्या राये है? कोई और माँ होती तो बेटे को जान बख़्शी की राह अपनाने का मश्वरा देती लेकिन उस बूढ़ी माँ की क़ुव्वते ईमानी की दाद दीजिए कि उन्होंने अपने मुजाहिद बेटे को इस तरह ख़िताब किया "बेटे तुम अपने बारे में ज़्यादा जानते हो अगर तुम्हें यह यक़ीन है कि तुम हक़ पर हो और हक़ ही की दावत देने आये हो तो अपनी इस बात पर साबित क़दम रहो, जिस पर तुम्हारे साथियों ने शहादत का जाम पी लिया है और तुम अपने आपको हज्जाज के अमान में देकर अपने को बनी उमैया के बच्चों के हाथ खिलोना मत बनाओ और अगर तुम यह जानते हो कि तुमने सिर्फ़ दुनिया के लिए यह सब कुछ मेहनत की है तो तुमसे बुरा आदमी कोई नहीं तुमने न सिर्फ़ अपने को हलाकत में डाला बल्कि अपने साथियों को भी हलाक कर डाला। बहरहाल अगर तुम हक़ पर हो तो डरने की क्या बात है तुम्हें दुनिया में रहना ही कितने दिन है? शहीद हो जाना बेहतर है"।

बूढ़ी माँ की इन हौसला देने वाली बातों पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस क़द्र ख़ुशी हुई कि बढ़कर अपनी माँ की पेशानी चूम ली और फ़रमाया कि अम्मां जान! ख़ुदा की क़सम! यही मेरी भी राय है मैं न

दुनिया की तरफ़ माइल हूँ न मुझे दुनिया की ज़िन्दगी महबूब है मैंने तो सिर्फ़ अह्कामे ख़ुदावन्दी के लिए और दीन की पामाली पर इज़्हारे ग़ज़ब के मक़्सद से मुक़ाबले का इरादा किया था और मैं आपके पास सिर्फ़ आपकी राये जानने आया था चुनाँचे आपने मेरी बसीरत में और ज़्यादा इज़ाफ़ा किया इसलिए अम्मा जान! सुन लीजिए मैं शायद आज ही शहीद हो जाऊंगा इसलिए आप ज़्यादा ग़म मत कीजिएगा और अल्लाह के हुक्म के सामने सर-ए-तस्लीम ख़म कर दीजिएगा इसलिए कि आपके बेटे ने कभी जानबूझ कर गुनाह नहीं किया और न कभी कोई बे-हयाई का काम किया और न ही अल्लाह तआ़ला के किसी हुक्म में जसारत का इरादा किया था और न किसी को अमान देकर बे-वफ़ाई की और न इसने जान-बूझ कर किसी मुसलमान या ज़िम्मी के साथ ना-इंसाफ़ी का मआ़मला किया और न ही मैं अपने किसी मुक़र्रर किये हुए गवर्नर के किसी ज़ुल्म पर राज़ी हुआ बल्कि मैंने उस पर नकीर की और मेरे नज़्दीक कोई चीज़ रज़ाये ख़ुदावन्दी से ज़्यादा क़ाबिल-ए-तर्जीह नहीं रही। ऐ अल्लाह! मैं यह बात अपने तज़्किये के लिए नहीं कह रहा हूँ, ऐ अल्लाह तुझे मेरी और मेरे अ़लावा की हर हालत का इल्म है मैंने यह तफ़्सील सिर्फ़ अपनी माँ की तसल्ली के लिए बयान की है फिर आपकी वालिदा माजिदा ने कमाल-ए-सब्र का सुबूत देते हुए आपको दुआ़एं दीं और जब चलते हुए सीने से चिपटाकर अल्-विदाअ़ कहने लगीं तो उन्हें महसूस हुआ कि अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु लोहे की ज़िरह पहने हुए हैं तो फ़रमाया बेटे शाहादत के चाहने वालों का यह लिबास नहीं हुआ करता। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अ़र्ज़ किया कि अम्मां जान यह मैंने सिर्फ़ आपकी ख़ातिरदारी और दिल की तसल्ली के लिए पहनी थी। माँ ने फ़रमाया कि अच्छा अब उसे उतार दो, तो आपने ज़िरह उतार दी और वालिदा से आख़िरी सलाम लेकर मस्जिदे हराम में तशरीफ़ लाये पूरी शुजाअ़त और बहादुरी के साथ मस्जिदे हराम के दरवाज़ों पर भीड़ लगाये हुए दुश्मन के फ़ौजियों को बार बार भगाते रहे। हज्जाज की तरफ़ से लगाई गई तौपों के गोले बराबर आपके आस-पास गिरते रहे लेकिन आप अपने बचे हुए साथियों को लेकर पूरी इस्तिक़ामत के साथ उस जगह डटे रहे। जुमादल ऊला 73 हिजूरी की 17 तारीख़ की पूरी रात आपने नमाज़ में गुज़ार दी फिर कुछ देर आराम करके फ़ज्र के लिए जाग गये और फ़ज्र की नमाज़ में पूरी तरतील के साथ सूरः नून् की तिलावत फ़रमाई फिर आप ने मुख़्तसर तर्ग़ीबी ख़ुत्बा दिया

और आख़िरी मुक़ाबले के लिए निकल पड़े और इस ज़ोर से दुश्मनों पर हमला किया कि वह हजून नाम की जगह तक वापस लोटने पर मजबूर हो गये इस दौरान एक ईंट आपके चेहरे पर आकर लगी जिससे पूरा चेहरा ख़ून में तर-बतर हो गया और आप ज़ख़्म की तक्लीफ़ बर्दाश्त न कर पाए और ज़मीन पर गिर पड़े यह देखकर घेरे हुए फ़ौजी जल्दी से आपकी तरफ़ लपके और आपको शहीद कर डाला। إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ. رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ. وَأَرْضَاهُ.

(अल्-बिदाया अन्-निहाया 8/734-736)

शहादत के बाद हज्जाज बिन यूसुफ़ ने आपका मुबारक सर काटकर अ़ब्दुल मलिक बिन मर्वान के पास दारूल ख़िलाफ़ा दमिश्क़ रवाना कर दिया और बाक़ी हिस्सा फाँसी के तौर पर मुक़ाम-ए-हजून में लटका दिया, वालिदा माजिदा हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा निढाल क़दमों से अपने शहीद बेटे की लाश देखने आईं, मगर इस हाल में भी सब्र का दामन नहीं छोड़ा काफ़ी देर तक बेटे के लिए दुआएं करती रहीं, और आँखों से एक क़तरा भी आँसू का न निकला, मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि हज्जाज बिन यूसुफ़ ने हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को अपने दरबार में बुलाने की बहुत कोशिश की मगर आपने साफ़ मना कर दिया, फिर मजबूर होकर हज्जाज ख़ुद ही आपके पास आया और कहने लगा कि देखा मैंने अल्लाह के दुश्मन के साथ क्या मुआ़मला किया? तो हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूरी हाज़िर दिमाग़ी से जवाब दिया कि मेरा ख़्याल है कि तूने अगरचे मेरे बेटे की दुनिया ख़राब कर दी लेकिन उसने तो तेरी आख़िरत तबाह व बर्बाद कर दी है। फिर फ़रमाया कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि बनू सक़ीफ़ में दो शख़्स पैदा होंगे उनमें से एक बड़ा झूठा होगा और दूसरा सख़्त ख़ूँ-रेज़ी करने वाला होगा, तो झूठे (मुख़्तार बिन उ़बैद) को हमने देख लिया और ख़ूँ-रेज़ी करने वाला मेरे ख़्याल में तू ही है। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की ये बातें सुनकर हज्जाज से कुछ जवाब न बन पड़ा और वापस लौट आया।

(मुलख़्ख़स, मुस्लिम शरीफ़ 2/312, अल्-बिदाया वन्-निहाया 8/445)

सय्यिदना हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु का वफ़ात के वक़्त हाल

सय्यिदना हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु वफ़ात के वक़्त रोने

लगे। पूछा गया कि रोने की वजह क्या है? तो आप ने फ़रमायाः ख़ुदा की क़सम मैं मौत के डर या दुनिया की रग़्बत की वजह से नहीं रो रहा, बल्कि बात यह है कि हमसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह अ़हद लिया था कि "दुनिया से तुम्हारा ताल्लुक़ बस इतना होना चाहिए जो एक मुसाफ़िर को तौशे से होता है"। (अब यह डर है कि कहीं इस अ़हद की पासदारी में कोई कौताही न हो गई हो) मगर जब आप का तर्का (छोड़ा हुआ सामान) देखा गया तो कुल 30 दिर्हम निकले जबकि आप उस वक़्त शहर-ए-मदाइन के गवर्नर थे।

(किताबुल आ़क़िबत 64)

हज़रत उबादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का आख़िरी दम तक हदीसे नबवी में इश्तिग़ाल

हज़रत उ़बादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वफ़ात के वक़्त उनके पास बैठा हुआ एक शागिर्द रोने लगा, तो आप ने रोने से मना फ़रमाया और कहा कि "मैं अल्लाह के फ़ैसले पर दिल व जान से राज़ी हूँ"। फिर फ़रमाया कि "जितनी हदीसें मुझे मालूम थीं सब ब्यान कर दीं बस एक रह गई है" चुनांचे वह हदीस भी ब्यान फ़रमा दी, (जिसका मज़्मून यह है कि हर कलिमा पढ़ने वाला जन्नत में जाएगा) उसके बाद रूह क़फ़स-ए-उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। انا لله وانا اليه راجعون. رضى الله عنه وارضاه.

(मशाहीर के आख़िरी कलिमात)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर हालते रजा का ग़लबा

सहाबी-ए-जलील (बुज़ुर्ग), ख़ादिमे रसूल सय्यिदना हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने वफ़ात के वक़्त हाज़िरीन से इर्शाद फ़रमायाः "कल मैदाने हश्र में लोग अल्लाह तआ़ला की वुस्अ़ते रह्मत के ऐसे नज़ारे देखेंगे जो किसी इंसान के ख़्वाब व ख़्याल में भी न आये होंगे"।

यानी आप दुनिया से जाते वक़्त अल्लाह की रहमत से ऐसे पुर-उम्मीद थे जैसे आप अपनी आँखों से रह्मत का मुशाहदा फ़रमा रहे थे।

(किताबुल आ़क़िबत 66)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को वफ़ात के वक़्त बशारत

मुफ़स्सिरे क़ुरआन सय्यिदना हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को वफ़ात के बाद जब दफ़न किया जाने लगा तो एक निहायत हसीन व जमील और बे-मिसाल सफ़ेद परिन्दे जैसी कोई चीज़ आकर आपके कफ़न के अन्दर चली गई और फिर वापस न निकली, अफ़्फ़ान कहते हैं कि लोगों का ख़्याल यह था कि यह परिन्दा आपके इ़ल्म और अ़मल की सूरते मिसालिया थी और जब आपको क़ब्र में रखा गया तो किसी अन्जान शख़्स ने बुलन्द आवाज़ से यह आयत पढ़ी और एक रिवायत में है कि क़ब्र से यह आवाज़ आई: يَـٰٓأَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِيٓ إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝ فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝ وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝

(सूरः अल्-फ़ज्र, आयत 27-30)

तर्जुमाः ऐ इत्मीनान वाली रूह! तू अपने परवरदिगार के जवारे रहमत की तरफ़ चल, इस तरह से कि तू उस से ख़ुश और वह तुझ से ख़ुश, फिर उधर चल कर तू मेरे ख़ास बंदों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।

(अल्-बिदाया वन्-निहाया 7/708)

ख़लीफ़ा-ए-राशिद सय्यिदना हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि बारगाहे ज़ुल्जलाल में

ख़लीफ़ा-ए-राशिद सय्यिदना हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि को आप ही के एक आज़ाद किए हुए ग़ुलाम ने एक हज़ार दीनार के लालच में आकर ज़हर दे दिया। आपको जब एहसास हुआ तो उस ग़ुलाम को बुलाया और उस से वे दीनार लेकर बैतुल-माल में दाख़िल फ़रमा दिये, फिर कहा कि बस अब तू जहां चाहे भाग जा, इसलिए कि अगर पकड़ा गया तो लोग तुझे न छोड़ेंगे। फिर आप से कहा गया कि अपनी औलाद (जिनकी तादाद 12 थी) के लिए कुछ वसिय्यत फ़रमा दीजिए (कि उनकी ज़िन्दगी वुस्अ़त और आ़फ़ियत में गुज़रे) तो आप ने फ़रमाया किः मेरा निगरां वह ख़ुदा है जिसने किताब नाज़िल फ़रमाई और वही नेक लोगों का निगहबान है" और मैं इन बच्चों को किसी दूसरे का हक़ हरगिज़ न दूंगा, क्योंकि वह दो-हाल से ख़ाली नहीं। अगर नेक सालेह हैं तो अल्लाह उनका कारसाज़ है और अगर बुरे हैं तो

मैं उन्हें माल देकर अल्लाह की नाफ़रमानी में ख़ुद शरीक नहीं होना चाहता। इसके बाद आपने बस अपने बच्चों को बुलाकर उनसे भी ख़ुद यही बात कही और उनसे तसल्ली के कलिमात फ़रमाये। मरज़ुल मौत में कुछ हज़रात ने आपको राय दी कि आप मदीना मुनव्वरा तश्रीफ़ ले जायें ताकि वफ़ात के बाद आपकी तदफ़ीन आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रौज़ा-ए-अक़्दस में ख़ाली जगह हो तो आपने साफ़ फ़रमा दिया कि मैं अपने को हरगिज़ उस जगह का अह्ल नहीं समझता।

फिर जब वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो फ़रमाया कि मुझे बिठा दो, लोगों ने बिठा दिया तो आपने तीन मर्तबा यह दुआ़ फ़रमाईः "ऐ अल्लाह! मैं ही वह हूँ जिसको तूने हुक्म दिया और मैंने हुक्म की तामील में कौताही की और तूने मुझे (बहुत सी बातों से) मना फ़रमाया मगर मैं उनको कर गुज़रा, लेकिन لا إله إلا الله तेरे सिवा कोई माबूद नहीं"। फिर सर उठाकर एक तरफ़ तेज़ नज़रों से घूरकर देखा, लोगों के पूछने पर बताया कि मैं ऐसे लोगों को अपने सामने देख रहा हूँ जो न तो जिन्नात हैं और न ही इंसान हैं, फिर कुछ ही देर में आपकी वफ़ात हो गई। انا لله وانا اليه راجعون (अल्-बिदाया वन्-निहाया मुलख़्ख़स 9/246)

इमामे आज़म हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि की सज्दे की हालत में वफ़ात

ख़लीफ़ा-ए-अबू जाफ़र मन्सूर अ़ब्बासी ने इमामे आज़म, आ़रिफ़ बिल्लाह, हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लहि को कूफ़े से बग़दाद बुलाया और क़ाज़ी बनने की पैशकश की। आपके इंकार करने पर उसने क़ैदख़ाने में डलवा दिया और हर दिन आपको बाहर निकाल कर बे-दर्दी से कोड़े लगाये जाते जिससे आप लहू-लहान हो जाते। दस दिन तक बराबर यही अ़मल होता रहा। फिर आपको ज़बरदस्ती ज़हर पीने पर मज्बूर किया गया, चुनाँचे अभी क़ैदख़ाने में रहते हुए कुल पन्द्रह दिन ही हुए थे कि आप सख़्तियों को बर्दाश्त न करके और ज़हर के असर से सख़्त मुतास्सिर होकर 70 साल की उम्र में मज़्लूमाना हालत में अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हाज़िर हो गये। انا لله وانا اليه راجعون अबू हस्सान ज़ियादी कहते हैं कि जब हज़रत इमाम ने अपना आख़िरी वक़्त महसूस फ़रमाया तो सज्दे में चले गये और उसी हालत में आपकी रूह परवाज़

हुई। رحمه الله تعالى رحمة واسعة

जनाज़ा क़ैदख़ाने से बाहर लाया गया, बग़दाद के क़ाज़ी हसन बिन अ़म्मारा ने ग़ुस्ल दिया, अबू रजा जो ग़ुस्ल देने में शरीक थे, कहते हैं कि ग़ुस्ल के वक़्त मैंने आपका बदन देखा जो इन्तिहाई कमज़ोर था, इबादत ने उसे पिघलाकर रख दिया था, अभी लोग ग़ुस्ल से फ़ारिग़ हुए ही थे कि हज़ारों लोग आपकी ज़ियारत के लिए जमा हो गये, तक़रीबन 50 हज़ार लोगों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, लोगों के हुजूम की वजह से 6 मर्तबा नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई गई और अ़स्र से पहले आपकी तद्फ़ीन मुम्किन न हो सकी। (उ़क़ूदुल जमान 360-361)

हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अ़लैहि की वफ़ात

इमाम दारूल हिजरह मालिक बिन अनस रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो मदीना मुनव्वरा में वफ़ात के इस क़द्र चाहने वाले थे कि उ़म्र के आख़िरी दिनों में मदीने से बाहर जाने को बिल्कुल छोड़ दिया था कि कहीं और जगह वफ़ात न हो जाये, चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने आपकी आरज़ू पूरी फ़रमाई और मदीना मुनव्वरा में इन्तिक़ाल हुआ और जन्नतुल बक़ीअ़ (क़ब्रिस्तान का नाम) में दफ़न की सआ़दत मिली, इन्तिक़ाल से पहले शहादत का कलिमा पढ़ा, फिर यह आयत पढ़ते रहेः لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ (हुक्म अल्लाह ही का है पहले भी और बाद में भी) फिर उसी रात वफ़ात पा गये, उस वक़्त आपकी उ़म्र 85 साल थी। (अल्-बिदाया वन्-निहाया 9/603)

वफ़ात के वक़्त हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि का हाल

इमाम मुज़्नी कहते हैं कि मैं मरज़ुल मौत में हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और पूछा किः आपने सुब्ह कैसे की? तो हज़रत ने फ़रमाया कि मेरी सुब्ह इस हाल में हुई कि "मैं दुनिया से रेहलत (कूच करना) को तैयार हूँ, दोस्तों और अह्बाब से जुदाई का वक़्त है, अपने बुरे आमाल से मुलाक़ात होने वाली है, मौत का प्याला पीने के क़रीब हूँ और अपने परवरदिगार की ख़िद्मत में हाज़िर होने वाला हूँ, अब मुझे मालूम नहीं कि मेरी रूह जन्नत की तरफ़ जायेगी कि मैं उसे मुबारकबाद दूँ या जहन्नम की तरफ़ जायेगी कि मैं उसकी तअज़ियत करूं"। (किताबुल आ़क़िबत 90)

फिर आपने कुछ अश्‌आर पढ़े, एक शेर यह था:

تعاظمنی ذنبی فلما قرنته بعفوک ربی کان عفوک اعظما

"मैं अपने गुनाह को बहुत अज़ीम समझता हूँ, मगर जब ऐ परवरदिगार! उसका मुक़ाबला तेरी माफ़ी से करता हूँ तो तेरी माफ़ी यक़ीनन मेरे गुनाहों से कहीं ज़्यादा अज़ीम है।" (मशाहीर के आख़िरी कलिमात 62)

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि की सुर्ख़-रूई

"फ़ित्ना-ए-ख़ल्क़े क़ुरआन" के मौक़े पर ईमानी जुर्अत और इस्लामी हम्मियत की ताबनाक मिसाल क़ाइम करने वाली इस्लामी तारीख़ की अज़ीम शख़्सियत हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैहि ने वफ़ात से पहले एक वसिय्यत लिखी जिस में अपने वारिसीन को बहुत अहम नसीहतें फ़रमाईं, फिर बच्चों को बुलाकर प्यार किया और उसके बाद बराबर अल्लाह तआला की हम्द व सना में मश्ग़ूल रहे, मरज़ की शिद्दत के दौरान एक मर्तबा आपकी ज़बान से ये कलिमात निकले لا بعد لا بعد (अभी नहीं, अभी नहीं) तो साहबज़ादे ने पूछा कि हज़रत यह आप किससे फ़रमा रहे हैं? तो आपने जवाब दिया कि घर के एक कोने में शैतान उंगलियाँ दांतों में दबाये खड़ा है और कह रहा है: فتنی یا احمد यानी ऐ अहमद! तुम मेरे हाथ से निकल गये, तो मैं उसको जवाब दे रहा था कि अभी नहीं निकला जबतक कि इस्लाम पर वफ़ात न हो जाये।

वफ़ात से कुछ देर पहले आपने घर वालों से कहा कि वुज़ू करायें, चुनाँचे आप को वुज़ू कराया गया, आप ज़िक्र व दुआ में मश्ग़ूल रहे और वुज़ू की हर-हर सुन्नत का ख़्याल फ़रमाते रहे यहां तक कि उंगलियों में ख़िलाल भी करवाया फ़िर जैसे ही वुज़ू पूरा हुआ आपकी रूह परवाज़ कर गई। انا للہ وانا الیہ راجعون जुमे के दिन सुब्ह के वक़्त आपका विसाल हुआ, आपकी वफ़ात की ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई, लोग ग़म से निढाल होकर सड़कों पर निकल आये, जब जनाज़ा बाहर आया तो बग़्दाद के गली कूचों में जहां तक नज़र जाती आदमी ही आदमी नज़र आते थे, लाखों लोगों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और ज़बरदस्त भीड़ की वजह से अस्र के बाद आपकी तद्फ़ीन अमल में

आ सकी। (अल्-बिदाया वन्-निहाया 10/792)

तारीख़ का सबसे बड़ा जनाज़ा

हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि हमारे और अहले बिद्अ़त (क़ाइलीन-ए-ख़ल्क़े क़ुरआन) के दर्मियान फ़ैसला हमारे जनाज़े देखकर होगा, तो यह फ़ैसला इस तरह हुआ कि आपके मुख़ालिफ़ीन के जनाज़ा में तो बस गिनती के चन्द लोग शरीक हुए, किसी ने उनका कोई ग़म न मनाया, जबकि हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अ़लैहि के जनाज़े को देखकर तारीख़ लिखने वाले दंग रह गये, ख़लीफ़ा मुतवक्किल ने जब उस जगह को नापने का हुक्म दिया जहाँ इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अ़लैहि के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी गई थी तो अंदाज़ा लगाया गया कि 25 लाख लोगों ने आपकी नमाज़े जनाज़ा में शिरकत की, अ़ब्दुल वह्हाब वराक़ कहते हैं कि ज़माना-ए-जाहिलियत में या तारीख़े इस्लाम में उससे बड़े किसी जनाज़े का सुबूत कोई नहीं मिलता, उस दिन इस अ़ज़ीम भीड़ को देखकर 20 हज़ार के क़रीब ग़ैर-मुस्लिम दौलते इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए (मुसलमान हुए)।

(अल्-बिदाया वन्-निहाया 10/793)

अल्लाहु अक्बर! यह है अल्लाह वालों का हाल कि वह जब दुनिया से उठते हैं तो न जाने कितने दिलों की आहों और सिस्कियों के साथ उनको दिल की गहराइयों से ख़िराजे अ़क़ीदत पेश किया जाता है, जबकि ज़्यादा तर दुनियादार जब दुनिया से जाते हैं तो कुछ लोगों पर ही उन की जुदाई का ग़म होता है, और बस!

कुछ सालिहीन की वफ़ात के हालात

1. अ़ज़ीम मुहद्दिस और उस्ताज़-ए-ताबीर इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अ़लैहि वफ़ात के वक़्त रो रहे थे और फ़रमा रहे थे कि "मुझे पिछली ज़िन्दगी की कौताहियों और जन्नत में जाने वाले आमाल में कमी और जहन्नम से बचाने वाले आमाल की कमी पर रोना आ रहा है"।

(किताबुल आख़िबत 69)

2. मशहूर फ़क़ीह और मुहद्दिस इब्राहीम नख़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि वफ़ात के

वक़्त रोते हुए फ़रमा रहे थेः "मैं अपने रब के क़ासिद का इन्तिज़ार कर रहा हूँ, पता नहीं वह मुझे जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनायेगा या जहन्नम की (बुरी ख़बर)"?

(किताबुल आ़क़िबत 70)

3. हज़रत अबू अ़तिय्या अल्-मज़्बूह मौत के वक़्त घबराने लगे तो लोगों ने कहा कि क्या मौत से घबराते हो? फ़रमायाः मैं क्यों न घबराऊं, यह तो ऐसा वक़्त है कि मुझे पता नहीं कि मुझे कहाँ ले जाया जाये (जन्नत में या जहन्नम में)।

(किताबुल आ़क़िबत 70)

4. हज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि पर वफ़ात के वक़्त ग़शी तारी हुई, फिर जब होश आया तो फ़रमायाः "हाय अफ़सोस! सफ़र दूर का है और तौशा बहुत कम है"।

(किताबुल आ़क़िबत 70)

5. हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इन्तिक़ाल से कुछ पहले ही क़ुरआन-ए-पाक तिलावत करके ख़त्म फ़रमाया। हाज़िरीन ने कहा कि ऐसी शिद्दत के वक़्त में भी आप ने तिलावत नहीं छोड़ी? तो आप ने फ़रमायाः "इस वक़्त से ज़्यादा मेरे लिए पढ़ने का कौन सा वक़्त होगा, इस वक़्त मेरे आमाल नामे लपेटे जा रहे हैं, फिर आप ने तक्बीर पढ़ी और जान जाँ आफ़रीं के सुपुर्द कर दी।

और आप को वफ़ात से पहले जब कलिमा-ए-तय्यिबा की तल्क़ीन की गई तो फ़रमाया किः "यह कलिमा में भूला ही कब हूँ जो मुझे याद दिलाया जाये" यानी आपको ज़िक्र-ए-ख़ुदावन्दी का मलका-ए-याददाश्त हासिल था जो तसव्वुफ़ व सुलूक का मुन्तहाये मक़्सूद है।

(किताबुल आ़क़िबत 88)

6. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने वफ़ात के वक़्त आसमान की तरफ़ नज़र उठाई फिर मुस्कराये और फ़रमायाः لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ। (ऐसे ही वक़्त के लिए आ़मिलीन (अ़मल करने वाले) अ़मल करते हैं)

(किताबुल आ़क़िबत 89)

पांचवीं फ़स्ल

नज़अ (दम निकलने) की हालत में तीमारदार क्या पढ़ें ?

जब आदमी पर नज़अ का आलम तारी हो और मौत की शिद्दत शुरू हो जाये, तो उस वक़्त वहाँ मौजूद लोगों को सूरः यासीन शरीफ़ की तिलावत करनी चाहिए। इससे रूह निकलने में सहूलत होती है। कुछ कमज़ोर रिवायतों में भी यह मज़मून आया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَا مِنْ مَيِّتٍ يُقْرَأُ عِنْدَ رَاسِهٖ يٰسٓ إِلَّا هَوَّنَ اللّٰهُ عَلَيْهِ. (شرح الصدور ٦٩)

जिस मरने वाले के सर के क़रीब सूरः यासीन शरीफ़ पढ़ी जाये तो अल्लाह तआ़ला उस पर मुआ़मला आसान फ़रमा देता है।

और हज़रत जाबिर बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सूरः रअ़्द पढ़ने से भी मरने वाले को सहूलत और आसानी नसीब होती है।

(इब्ने अबी शैबा 3/445)

और मुस्तहब है कि नज़अ के वक़्त मय्यित का रूख़ क़िब्ला की तरफ़ कर दिया जाये और उसके सामने कलिमा तय्यिब لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ बुलन्द आवाज़ से पढ़ा जाये। मगर उसे बाक़ायदा पढ़ने का हुक्म न दिया जाये कि कहीं वह झुंझला कर इंकार न कर दे और जब वह एक मर्तबा पढ़ दे तो बार-बार पढ़ने पर भी ज़ोर न डालें। (दुर्रे मुख़्तार 2/78-80) और जब रूह परवाज़ कर जाये तो उसके जबड़ों को किसी पट्टी वग़ैरह से बांध दें और उसकी आँखें बन्द कर दें, और आँख बंद करने वाला यह दुआ पढ़ेः بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ. (शर्हुस सुदूर 74) फिर मय्यित के पास ख़ुश्बू का इन्तिज़ाम किया जाये और नापाक लोग जुनुबी और हाइज़ा औरतें वग़ैरह उसके पास से हट जायें और रिश्तेदारों को उसकी मौत की ख़बर दे दी जाये और कफ़नाने-दफ़नाने में जहाँ तक हो सके जल्दी की जाये। (दुर्रे मुख़्तार 2/83) और मय्यित को जब तक ग़ुस्ल न दे दिया जाये उस वक़्त तक उसके क़रीब बैठकर क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत न करें। ग़ुस्ल के

बाद कर सकते हैं, इसी तरह घर के दूसरे कमरे में भी कर सकते हैं।

(शामी 3/85)

दफ़नाने में जल्दी करें

जहां तक मुम्किन हो मय्यित को दफ़नाने में जल्दी करनी चाहिए, बिला वजह इन्तिज़ार में वक़्त न ख़राब किया जाये। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

أَسْرِعُوْا بِالْجَنَازَةِ فَإِنْ تَكُ صَالِحَةً فَخَيْرٌ تُقَدِّمُوْنَهَا إِلَيْهِ وَإِنْ تَكُ غَيْرَ ذٰلِكَ فَشَرٌّ تَضَعُوْنَهُ عَنْ رِقَابِكُمْ.

(مسلم شريف ١/٣٠٦)

जनाज़े को ले जाने में जल्दी करो, इसलिए कि अगर वह अच्छा आदमी है तो तुम उसको बेहतर ठिकाने तक जल्दी पहुंचाओगे और अगर वह अच्छा नहीं है तो तुम अपने कांधों से बुराई का बोझ दूर करोगे (यानी हर सूरत में जल्दी बेहतर है)।

और एक रिवायत में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मय्यित की तजहीज़ व तद्फ़ीन में जल्दी करने की ताकीद करते हुए फ़रमाया:

وَعَجِّلُوْا بِهِ فَإِنَّهُ لَا يَنْبَغِي لِجِيفَةِ مُسْلِمٍ أَنْ تُحْبَسَ بَيْنَ ظَهْرَانَي أَهْلِهِ

(ابوداؤد شريف ٢/٤٥٠، شامی ٣/٨٣)

और उसकी तैयारी में जल्दी करो क्योंकि किसी मुसलमान की लाश का उसके घर वालों के दर्मियान पड़े रहना मुनासिब नहीं है।

इस जल्दी की अहमियत का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि हज़रात फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि अगर किसी शख़्स का जुमे के दिन सुब्ह के वक़्त इन्तिक़ाल हो जाये तो सिर्फ़ इस वजह से जुमे की नमाज़ तक जनाज़े में देर करना मक्रूह है कि उसकी नमाज़ में ज़्यादा लोग शरीक हो जायेंगे बल्कि जैसे ही तैयारी मुकम्मल हो नमाज़े जनाज़ा पढ़कर दफ़्न कर देना चाहिए।

(दुर्रे मुख़्तार 3/136)

नमाज़-ए-जनाज़ा और दफ़नाने में शिरकत का सवाब

मुसलमान की नमाज़-ए-जनाज़ा और दफ़्नाने में शिरकत का बड़ा अज़ीम

सवाब अहादीसे तय्यिबा में आया है। एक मर्तबा हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को यह मालूम हुआ कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा में शरीक हो फिर दफ़नाने तक शामिल रहे तो उसको दो क़ीरात के बराबर सवाब मिलता है और हर क़ीरात की मिक़्दार उहुद पहाड़ के बराबर होती है। यह अ़ज़ीम अज्र व सवाब सुनकर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा को यक़ीन नहीं आया और उन्होंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से उसकी तस्दीक़ कराई, जब उन्होंने इसकी तस्दीक़ फ़रमा दी तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने अफ़सोस के साथ फ़रमाया कि हमने बहुत से क़ीरात मुफ़्त में बर्बाद कर दिये, क्योंकि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा अक्सर नमाज़े जनाज़ा में शिरकत करके वापस आ जाते थे। दफ़न में शरीक न होते थे। (मुस्लिम शरीफ़ 1/307)

और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि मोमिन को सबसे पहला बदला यह दिया जाता है कि उसपर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की मग़्फ़िरत कर दी जाती है। (नवादिरूल उसूल 1/382)

इस रिवायत से मालूम हुआ कि कस्रत के साथ जनाज़े की नमाज़ों और तद्फ़ीन में शिरकत करके अपने को ज़्यादा से ज़्यादा अज्र और सवाब का मुस्तहिक़ बनाने की कोशिश करनी चाहिए। यह अ़मल, ख़ास कर अपनी मौत को याद दिलाने का बेहतरीन और कामियाब ज़रिया है। दूसरें का जनाज़ा देखकर अपना जनाज़ा और अपनी मौत बेइख़्तियार याद आ जाती है और दिल बेइख़्तियार बोल उठता है कि आज उसकी बारी है कल हमारी बारी होगी।

जनाज़ा क़ब्रिस्तान में

जब जनाज़ा क़ब्रिस्तान पहुंचे तो साथ चलने वालों में से कोई शख़्स उस वक़्त तक बैठने की कोशिश न करे जब तक जनाज़े की चारपाई कंधों से उतार कर नीचे ज़मीन पर न रख दी जाये (मुस्लिम शरीफ़ 1/310) इसके बाद मय्यित को क़ब्र में उतारने की तैयारी की जाये और क़ब्र में उतारने वाले हज़रात मय्यित को रखते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ (अल्लाह के नाम से तुझे रखते हैं

और अल्लाह के रसूल के दीन पर तुझे अल्लाह के हवाले करते हैं) का विर्द करें और फिर मय्यित को करवट से दाएं तरफ़ क़िब्ला रुख़ करके लिटा दें।(दु. र. मुख़्तार 3/141)

उसके बाद क़ब्र बराबर करके उस पर मिट्टी डाली जाये। हर शख़्स का तीन मुट्ठी मिट्टी डालना सुन्नत है। और बेहतर है कि पहली मुट्ठी डालते वक़्त مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ (इसी मिट्टी से हमने तुमको पैदा किया है) दूसरी मुट्ठी डालते वक़्त وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ (और इसी में हम तुम्हें दोबारा लोटा रहे हैं) और तीसरी मुट्ठी डालते वक़्त وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرٰى (और इसी में से हम (क़ियामत में) तुम्हें दोबारा निकालेंगे) पढ़ें। (शामी 3/143)

और दफ़न के फ़ौरन बाद हाज़िरीन को लोटना नहीं चाहिए बल्कि कुछ देर क़ब्रिस्तान में रहकर दुआ और ईसाले सवाब में मश्ग़ूल रहना मसनून है। क्योंकि उन लोगों के क़ब्रिस्तान में मौजूद रहने से मरने वाले को उनसियत और तसल्ली नसीब होती है। एक रिवायत में है:

كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا فَرَغَ مِنْ دَفْنِ الْمَيِّتِ وَقَفَ عَلٰى قَبْرِهٖ وَقَالَ: إِسْتَغْفِرُوا لِأَخِيكُمْ وَاسْئَلُوا اللّٰهَ لَهُ التَّثْبِيتَ فَإِنَّهُ الْآنَ يُسْأَلُ.

(أبوداؤد شريف ٢/٤٥٩، شامي ٢/١٤٣)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मय्यित के दफ़न से फ़ारिग़ होते तो उसकी क़ब्र पर वुक़ूफ़ फ़रमाते (थोड़ी देर ठहरते) और इर्शाद फ़रमाते कि अपने भाई के लिए इस्तिग़फ़ार करो और उसके लिए साबित क़दमी की दरख़्वास्त करो क्योंकि अभी उससे सवाल किया जाने वाला है।

और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि दफ़न के बाद क़ब्र पर सूरः बक़रा की शुरू और आख़िर की आयतें पढ़ना मुस्तहब है। (शामी 3/143) और हज़रत अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि उन्होंने इन्तिक़ाल के वक़्त घर वालों को वसिय्यत फ़रमाते हुए कहा कि: जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाये तो मेरे जनाज़े के साथ न तो कोई रोने वाली औ़रत जाये और न आग साथ ले जाइ जाये। (क्योंकि ये ज़माना-ए-जाहिलियत की निशानियाँ थीं) फिर जब तुम मुझे दफ़न कर चुको तो मेरी क़ब्र पर कुछ पानी का छिड़काव कर देना, फिर जितने वक़्त में एक ऊंट को ज़िब्ह करके उसके

गोश्त को तक़सीम किया जाता है उतने वक़्त तक तुम लोग मेरी क़ब्र के पास ही रहना ताकि मैं तुमसे उनसियत हासिल कर सकूं और यह देखूं कि मैं अपने रब के क़ासिदों को क्या जवाब देता हूँ। (मुस्लिम शरीफ़ 1/76)

क़ब्रों को पक्का बनाना या उनकी बे-हुरमती करना मना है

क़ब्रों के बारे में शरीअ़ते इस्लामिया ने इन्तिहाई ऐतिदाल का रास्ता अपनाया है। शरीअ़त न तो इसकी इजाज़त देती है कि क़ब्रों को पक्का बनाकर उनकी हद से ज़्यादा ताज़ीम की जाये और न ही इसकी इजाज़त देती है कि क़ब्रों की किसी तरह बे-हुरमती की जाये या उस पर पैर रखा जाये और उसको बैठने की जगह क़रार दिया जाये। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु इर्शाद फ़रमाते हैं:

نَهَى رَسُولُ ﷺ اَن يُجَصَّصَ الْقَبْرُ وَاَن يُقْعَدَ عَلَيْهِ وَاَن يُبْنَىٰ عَلَيْهِ.

(مسلم شریف ۱/۳۱۲، ترمذی شریف ۱/۲۰۳)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ब्रों को पक्का बनाने और उसपर बैठने और उसके ऊपर तामीर (यानी कोई मकान वग़ैरह बनाने) से मना फ़रमाया है।

और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं:

لَاَنْ يَجْلِسَ اَحَدُكُم عَلٰى جَمْرَةٍ فَتُحْرِقَ ثِيَابَهٗ فَتَخْلُصَ اِلٰى جِلْدِهٖ خَيْرٌلَّهٗ مِنْ اَن يَجْلِسَ عَلٰى قَبْرٍ.

(مسلم شریف ۱/۳۱۲)

तुममें से कोई शख़्स अंगारे पर बैठे जो उसके कपड़े जलाकर खाल तक पहुंच जाये यह उस बात से बहुत बेह्तर है कि वह क़ब्र के ऊपर बैठे। (यानी क़ब्र पर बैठने के मुक़ाबले जल जाना बेह्तर है)।

इसलिए मुसलमानों को इन दोनों बातों का ख़्याल रखना ज़रूरी है। न तो क़ब्रों को पक्का बनाकर शिर्क व बिद्अ़त की जगह बनायें जैसा कि आजकल बुज़ुर्गान-ए-दीन के मज़ारात के साथ किया जा रहा है और न ही क़ब्रों की बे-हुरमती की जाये जैसा कि अक्सर शहरी क़ब्रिस्तानों में यह बे-एहतियाती आ़म है।

औरतों का क़ब्रों पर जाना

क़ब्रिस्तान में हाज़िरी का मक़्सद दरअस्ल मौत की याद है, लेकिन अब

जहालत और बिदअ़त ने क़ब्रिस्तान को अच्छी ख़ासी तफ़रीहगाहों में तब्दील कर दिया है। वहां जाकर मौत को आज कोई याद नहीं करता बल्कि या तो सैर व तफ़रीह के लिए लोग वहां जाते हैं या फिर अपनी दुनियवी ज़रूरतें लेकर जाते हैं और यह समझते हैं कि "पीर साहब" से जो मांग लिया वह तो बस मिलना ही मिलना है। ख़ासकर ख़्वातीन का बद-अक़ीदगी के साथ क़ब्रिस्तानों और बुज़ुर्गों के मज़ारात पर जाना किसी तरह भी सही नहीं।

ज़रा ग़ौर फ़रमाइये! जिन औ़रतों को फ़ित्ने की वजह से मस्जिद में बा-जमाअ़त नमाज़ तक से मना कर दिया गया है उन्हें मज़ारात पर जाकर मन्नतें मानने की कैसे इजाज़त दी जा सकती है? ये जगहें फ़ित्ना ही नहीं बल्कि फ़ित्ना पैदा करने की जगह बनी हुई हैं। (मुस्तफ़ाद शामी 3/141)

बहरहाल हमें ऐतिदाल की राह अपनाने की ज़रूरत है। औलिया अल्लाह से मुहब्बत और उनका एहतिराम भी ज़रूरी है और साथ में शरीअ़त की हुदूद की रिआ़यत भी ज़रूरी है। ऐसा न हो कि हम अकाबिरे उम्मत रहमतुल्लाहि अ़लैहि की मुहब्बत में शरीअ़त को छोड़ बैठें और आख़िरत में वबाल और अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ हो जायें। हमें अल्लाह से शर्म करते हुए हर मुआ़मले में इताअ़त और फ़रमांबरदारी का तरीक़ा अपनाना चाहिए।

अल्लाह तआ़ला पूरी उम्मत को रिवाज में आई हुई ख़ुराफ़ात से महफ़ूज़ फ़रमायें। आमीन ❑ ❑

पांचवां हिस्सा

क़ब्र के हालात

क़ब्र में सवाल व जवाब

यह बदन गल-सड़ जायेगा

क़ब्र में राहत व अज़ाब

पहली फ़स्ल

क़ब्र में सवाल और जवाब

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर-ए-अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक अंसारी शख़्स के जनाज़े में क़ब्रिस्तान में हाज़िर थे। अभी क़ब्र की तैयारी में देर थी इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक जगह तश्रीफ़ फ़रमा हो गये। हम लोग भी आपके आस पास बैठ गये, आपके मुबारक हाथ में एक लकड़ी थी जिससे आप ज़मीन कुरेद रहे थे (जैसा कि कोई ग़मज़दा शख़्स करता है) फिर आपने सर-ए-मुबारक उठाया और हम से मुख़ातब होकर इर्शाद फ़रमायाः

"ऐ लोगो! अल्लाह तआला से अज़ाबे क़ब्र से पनाह चाहो, दो-तीन मर्तबा यही जुमला इर्शाद फ़रमाया, फिर फ़रमाया कि जब मोमिन बन्दे की दुनिया से रवानगी और आख़िरत में हाज़िरी का वक़्त आता है तो उसके पास आसमान से ऐसे फ़रिश्ते उतरते हैं जिनके चेहरे सूरज की तरह चमकदार होते हैं, उनके पास जन्नत का कफ़न और जन्नत की ख़ुश्बू होती है, ये फ़रिश्ते उसके सामने जहां तक नज़र जाती है बैठ जाते हैं, फिर मलकुल-मौत तश्रीफ़ लाते हैं और उसके सर के पास बैठकर फ़रमाते हैं: ऐ मुत्मइन रूह! चल अल्लाह की मग़्फ़िरत और ख़ुश्नूदी की तरफ़। फिर उसकी रूह इस तरह सहूलत से निकल जाती है जैसे मश्कीज़े का बन्द खोलने से उसका पानी आसानी से निकल आता है, चुनाँचे मलकुल-मौत उस रूह को अपने क़ब्ज़े में कर लेते हैं और फ़ौरन ही साथ में आये हुए फ़रिश्ते उसे लेकर जन्नत के कफ़न और हुनूत (ख़ुश्बू) में लपेट देते हैं तो उससे आला तरीन मुश्क की तरह ख़ुश्बू फैल उठती है, फिर वह फ़रिश्ते उस रूह को लेकर चलते हैं तो जब भी फ़रिश्तों की किसी जमाअत के पास से वे गुज़रते हैं तो वे पूछते हैं कि यह किसकी पाकीज़ा रूह है? तो वे फ़रिश्ते उसका नाम और बेहतरीन अंदाज़ में तआरूफ़ कराते हैं। यहां तक कि आसमान के मुक़र्रब फ़रिश्ते ऊपर वाले आसमान तक उस रूह के साथ चलते हैं यहां तक कि उसे सातवें आसमान तक पहुंचा दिया जाता है। तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे इस बन्दे का नाम "इल्लिय्यीन" में लिख दो और इसे दोबारा ज़मीन की तरफ़ ले जाओ, क्योंकि मैंने इसे ज़मीन ही से पैदा किया है और मैं उसी में

इसे लौटा रहा हूँ और इसी से क़ियामत के दिन दोबारा उठाऊंगा। फिर उसकी रूह उसके बदन की तरफ़ लौटा दी जाती है और दो फ़रिश्ते उसके पास हाज़िर होते हैं और उसे बिठाकर उससे सवाल करते हैं مـن ربک؟ (तेरा रब कौन है?) वह जवाब देता है: ربی اللہ! (मेरा रब अल्लाह है), फिर पूछते हैं कि ما دینک؟ (तेरा दीन क्या है?) वह जवाब देता है कि دینی الاسلام (मेरा मज़्हब इस्लाम है)। फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ इशारा करके (उसकी अस्ल सूरत व कैफ़ियत अल्लाह ही को मालूम है) पूछते हैं कि यह कौन हैं? तो वह मोमिन जवाब देता है कि: ھو رسول اللہ ﷺ (यह अल्लाह के सच्चे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं)। फिर फ़रिश्ते पूछते हैं कि तुम्हारा इल्म क्या है? तो मोमिन जवाब देता है कि मैंने क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा है और उस पर ईमान लाया हूँ और उसकी तस्दीक़ की है। इस सवाल व जवाब पर आसमान से आवाज़ आती है कि मेरे बन्दे ने सच कहा, इसलिए इसके लिए जन्नत का फ़र्श बिछा दो और इसे जन्नती लिबास पहना दो और इसकी क़ब्र में जन्नत का दरवाज़ा खोल दो ताकि जन्नत की हवा और ख़ुश्बू इसे हासिल हो सके और इसके लिए इसकी क़ब्र जहां तक नज़र जाये खोल दो। फिर उस मोमिन के पास एक ख़ूबसूरत शख़्स अच्छे कपड़े और ख़ुश्बू के साथ हाज़िर होकर अ़र्ज़ करता है कि बशशत अंगेज़ ख़ुशख़बरी क़ुबूल करो यही वह दिन है जिसका तुम से वादा किया जाता था, वह मोमिन उसे देखकर पूछता है कि तुम कौन हो? तुम्हारा चेहरा तो ख़ैर लाने वाले चेहरे की तरह है। तो वह शख़्स जवाब देता है कि मैं तेरा नेक अ़मल हूँ (क़ब्र का यह आराम देखकर) मोमिन कहता है कि ऐ रब क़ियामत क़ाइम फ़रमा क़ियामत क़ाइम फ़रमा ताकि मैं जल्दी अपने माल व दौलत और घरवालों से मुलाक़ात कर सकूँ।

(मुस्नद अहमद 4/287, रक़म 18443, मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा 3/57, शर्हुस सुदूर 92)

और तिर्मिज़ी शरीफ़ वग़ैरह की रिवायत में है कि जब मोमिन बन्दा मुन्कर नकीर के सवालात का सही जवाब दे देता है तो उसके लिए उसकी क़ब्र 70 हाथ लम्बी चौड़ी कर दी जाती है और उसे रौशन करके उससे कहा जाता है कि सो जा! वह शख़्स मारे ख़ुशी के जवाब देता है कि मुझे मेरे घर वालों के पास तो जाने दो कि मैं उन्हें बता आऊं (कि मैं कितने मज़े में हूँ) तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि:

نَمْ كَنَوْمَةِ الْعَرُوسِ الَّذِي لَا يُوقِظُهُ إِلَّا أَحَبُّ أَهْلِهِ إِلَيْهِ حَتَّى يَبْعَثَهُ اللَّهُ مَضْجَعَهُ ذَلِكَ.

(ترمذی شریف ۲/۵ ۰ ۲، بیہقی فی شعب الایمان، شرح الصدور۱۸۷)

तू उस दुल्हन की तरह सो जा, जिसको सिर्फ़ वही शख़्स जगाता है जो उसके नज़्दीक उसके घर वालों में सबसे पसन्दीदा है (यानी शौहर) और (उस वक़्त तक सोता रहेगा) जबतक कि अल्लाह तआ़ला उसे उसकी क़ियाम-गाह से दोबारा न उठाये।

और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु की एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि "क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि जब मुर्दे को उसकी क़ब्र में रख दिया जात है तो वापस होते हुए लोगों के क़दमों की आवाज़ वह ख़ुद सुनता है तो अगर वह मोमिन होता है तो नमाज़ उसके सर के पास खड़ी हो जाती है और ज़कात दाएं तरफ़ और रोज़ा बाएं तरफ़ और अच्छे काम और लोगों के साथ हुस्ने सुलूक उसके सामने खड़ा हो जाता है तो अगर अ़ज़ाब सर की तरफ़ से आता है तो नमाज़ कहती है मेरी तरफ़ से जाने का रास्ता नहीं है। दाईं तरफ़ से अ़ज़ाब आता है तो ज़कात कहती है कि मेरी तरफ़ से रास्ता बंद है, फिर बाईं तरफ़ से आता है तो रोज़ा उसी तरह का जवाब देता है उसके बाद अ़ज़ाब जब सामने से आता है तो लोगों के साथ हुस्ने सुलूक उसके सामने आ जाता है फिर उससे कहा जाता है कि बैठ जाओ। चुनाँचे वह बैठ जाता है और उसके सामने सूरज इस तरह पेश किया जाता है जैसे वह गुरूब होने वाला हो तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि हम जो सवाल करते हैं उसका जवाब दो, तो वह कहता है कि मुझे छोड़ दो मुझे नमाज़ पढ़ने दो। फ़रिश्ते कहते हैं कि यह भी हो जायेगा पहले हमारी बात का जवाब दो तो वह कहता है क्या है? क्या पूछना चाहते हो? फ़रिश्ते कहते हैं कि उस शख़्स के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है यानी हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बारे में? वह मोमिन जवाब देता है कि मैं गवाही देता हूँ कि वह अल्लाह के सच्चे रसूल हैं जो हमारे पास हमारे रब की तरफ़ से वाज़ेह दलीलें लेकर तश्रीफ़ लाये तो हमने आपकी तस्दीक़ की और आपकी पैरवी की। इस जवाब पर फ़रिश्ते ख़ुशख़बरी सुनाते हैं कि तूने सच कहा तेरी ज़िन्दगी इसी अ़क़ीदे पर गुज़री और इसी पर तेरी मौत आई और इन्शाअल्लाह इसी पर क़ियामत के दिन तुझे उठाया जायेगा इसके बाद उसके

लिए क़ब्र को जहां तक नज़र जाती है खोल दिया जाता है। यही मतलब है अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद काः

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ. (سورۂ ابراھیم آیت : ۲۷)

अल्लाह तआ़ला ईमान वालों के क़ौल-ए-साबित पर साबित क़दमी अ़ता फ़रमाता है दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।

उसके बाद कहा जाता है कि उसके सामने जहन्नम का दरवाज़ा खोलो तो उसके लिए जहन्नम का दरवाज़ा खोलकर उसे बताया जाता है कि देख अगर तू नाफ़रमान होता तो तेरा ठिकाना यह होता जिसकी वजह से उसकी ख़ुशी और मुसर्रत और ज़्यादा बढ़ जाती है। फिर कहा जाता है कि उसके सामने जन्नत का दरवाज़ा खोल दो तो जन्नत का दरवाज़ा खोलकर उसको बताया जाता है कि यह है तुम्हारा ठिकाना और वे नेअ़्मतें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए पहले से तैयार कर रखी हैं। उन्हें देखकर भी उसका दिल बशाशत और मुसर्रत से भर जाता है फिर उसका बदन तो मिट्टी के हवाले कर दिया जाता है और उसकी रूह को पाकीज़ा रूहों में जिनकी जगह जन्नत के पेड़ों में रहने वाले हरे परिन्दों के अन्दर है, शामिल कर दिया जाता है। (رواہ الحاکم وقال صحیح علی شرط مسلم ولم یخرجاہ ووافقہ الذھبی) (इससे आगे मज़्मून और भी है) (हाशिया शर्हुस् सुदूर 189)

मुबश्शिर, बशीर (यानी ख़ुश्ख़ब्री सुनाने वाले)

आम तौर पर रिवायात में क़ब्र में सवाल करने वाले फ़रिश्तों का नाम मुन्कर नकीर आया है, लेकिन कुछ शाफ़ई़ उ़लमा से मन्क़ूल है कि काफ़िर से सवाल करने वाले फ़रिश्तों का नाम मुन्कर नकीर है, जबकि ईमान वाले से सवाल करने वाले फ़रिश्तों का नाम मुबश्शिर, बशीर है (यानी ख़ुश्ख़ब्री सुनाने वाले) और अल्लाह तआ़ला ज़्यादा जानने वाला है। (शर्हुस् सुदूर 200)

क़ब्र में काफ़िर, मुनाफ़िक़ का बद्-तरीन हाल

इसके अ़लावा जो काफ़िर और मुनाफ़िक़ शख़्स मरने के क़रीब होता है तो उसके पास आसमान से काले चेह्रे वाले फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं जिनके हाथ में

(बदबूदार) टाट के टुकड़े होते हैं, वह उसके सामने जहां तक नज़र जाती है बैठ जाते हैं, फिर मलकुल-मौत तशरीफ़ लाकर उसके सिरहाने बैठ जाते हैं और कहते हैं: ऐ ख़बीस जान! अल्लाह के अ़ज़ाब और ग़ुस्से की तरफ़ चल, यह सुनकर उसकी रूह बदन में इधर उधर भागती फिरती है। इसलिए मलकुल-मौत उसकी रूह को जिस्म से इस तरह सख़्ती से निकालते हैं जैसे भीगा हुआ ऊन कबाब भूनने वाली सीख़ पर लपेटा हुआ हो और फिर वह सीख़ ज़ोर से खींच ली जाये। फिर मलकुल-मौत उस रूह को अपने हाथ में लेते हैं और फ़ौरन ही साथ आये हुए फ़रिश्ते उसे लेकर टाटों में लपेट देते हैं और उन टाटों में ऐसी बद्बू होती है जो इस ज़मीन पर पायी जाने वाली बदबूदार मुर्दार लाश से फूटती है। फिर वे फ़रिश्ते उसे लेकर आसमान की तरफ़ चलते हैं तो फ़रिश्तों की जिस जमाअ़त पर से उनका गुज़र होता है वे पूछते हैं कि यह कौन ख़बीस जान है? तो साथ वाले फ़रिश्ते बुरे से बुरे अल्क़ाब और नामों से उसका तआ़रुफ़ कराते हैं। यहां तक कि ये फ़रिश्ते उसे लेकर आसमान के दरवाज़े तक पहुंच जाते हैं और दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं मगर दरवाज़ा उनके लिए खोला नहीं जाता, जैसा कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है:

لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِىْ سَمِّ الْخِيَاطِ.
(الاعراف ٤٠ پ ٨)

न खोले जाएंगे उनके लिए दरवाज़े आसमान के और न दाख़िल होंगे जन्नत में यहां तक कि न घुस जाये ऊंट सूई के नाके में।

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उसका नाम "किताबे सिज्जीन" में लिख दिया जाए जो सबसे निचली ज़मीन में है। तो उसकी रूह वहीं से फेंक दी जाती है उसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह आयत तिलावत फ़रमाई:

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِىْ بِهِ الرِّيْحُ فِىْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ. (الحج ٣١ پ ١٧)

और जिसने शरीक बनाया अल्लाह का तो जैसे गिर पड़ा आसमान से। फिर उचकते हैं उसको उड़ने वाले मुरदारख़ोर या ले जा डाला उसको हवा ने किसी दूर मकान में।

उसके बाद उसकी रूह उसके जिस्म में लोटा दी जाती है। और दो फ़रिश्ते उसके पास आकर उसे बिठाकर पूछते हैं, तेरा रब कौन है? वह कहता है हाय! हाय! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछा जाता है कि तेरा दीन क्या है? वह फिर यही कहता है हाय! हाय! मुझे ख़बर नहीं फिर फ़रिश्ते पूछते हैं कि यह शख़्स कौन है? जो तेरे पास भेजा गया था (यानी हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तो वह जवाब देता है कि हाय! हाय! मुझे इल्म नहीं। इसपर आसमान से आवाज़ आती है कि मेरा यह बंदा झूठा है (उसे सब पता है मगर ला-इल्मी ज़ाहिर कर रहा है) इसलिए उसके नीचे आग के अंगारे बिछा दो और उसके लिए दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो, चुनांचे दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और उसकी सख़्त तपिश और लौ आने लगती है और इस पर क़ब्र इस क़द्र तंग कर दी जाती है कि उसकी पस्लियाँ तक भिंच कर इधर उधर चली जाती हैं और फिर उसके पास एक शख़्स आता है जो इन्तिहाई बद्-सूरत, बद्बूदार और गंदे कपड़ों में होता है, वह शख़्स उस मुनाफ़िक़ से कहता है कि बुरी ख़बर सुन ले यही वह दिन है जिससे तुझे डराया जाता था। वह कहता है कि तू कौन है? तेरी सूरत वाक़िई बुरी ख़बर सुनाने वाले की तरह है। वह जवाब देता है कि मैं तेरा बुरा अ़मल हूँ। यह सुनकर (इस डर से कि क़ियामत में और ज़्यादा अ़ज़ाब होगा) वह काफ़िर यह कहता है कि ऐ रब! क़ियामत क़ाइम न फ़रमा।

(मुस्नद अहमद 4/287, इब्ने अबी शैबा 3/58, शर्हुस् सुदूर 93)

और एक रिवायत में है कि काफ़िर मुनाफ़िक़ के चारो तरफ़ ख़तरनाक ज़हरीले साँप छोड़ दिये जाते हैं जो बराबर उसे काटते और डसते रहते हैं और जब वह चीख़ता है तो लोहे या आग के हथोड़े से उसकी पिटाई की जाती है। اعاذنا الله منه. (अल्लाह तआ़ला इस से हमें पनाह में रखे) (इब्ने अबी शैबा 3/56)

और उस पर छोड़े जाने वाले साँप-बिच्छू इतने ख़तरनाक होते हैं कि अगर उनमें से कोई ज़मीन पर एक फूंक भी मार दे तो क़ियामत तक ज़मीन में कोई सब्ज़ा पैदा न हो सके (मजूमउ़ज़् ज़वाइद 3/54) कुछ रिवायात में इन अज़्दहों (बड़े साँप) की तादाद 99 आई है और इनमें हर अज़्दहा सात सरों वाला है। اللهم احفظنا منه. (अल्लाह तआ़ला हमारी इससे हिफ़ाज़त फ़रमाए)

(मज़मउ़ज़् ज़वाइद 3/55)

क़ब्र में क्या साथ जायेगा?

क़ब्र में सिर्फ़ इंसान का अ़मल साथ जायेगा। दुनियवी राहत और आराम क़ब्र की ज़िन्दगी में काम नहीं आ सकता, जिस तरह आदमी जब दूसरे मुल्क के सफ़र पर जाता है तो वहां की करंसी और वहां चलने वाले नोट और रूपयों का इन्तिज़ाम करना ज़रूरी होता है। इसी तरह आ़लमे बर्ज़ख़ और आ़लमे आख़िरत में जाने से पहले वहां चलने वाली करंसी को हासिल करना लाज़िम है और वहां की करंसी ईमान-ए-कामिल और अ़मले सालेह है अगर यह दौलत मयस्सर है तो सफ़रे आख़िरत के हर मोड़ पर क़ब्र का मरहला हो या बाद का, आराम ही आराम नसीब होगा और अगर ईमान और अ़मले सालेह का सरमाया पास नहीं है तो फिर महरूमी ही महरूमी है इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि सबसे अक़्लमंद आदमी वह है जो अपने नफ़्स का मुहासबा करता रहे और मरने के बाद वाली ज़िन्दगी के लिए अ़मल करता रहे। वाक़िई दानिशमंदी का तक़ाज़ा यही है कि दुनिया की थोड़ी सी और आ़रज़ी ज़िन्दगी में जी लगाने के बजाये आख़िरत की हमेशा वाली ज़िन्दगी को बनाने पर भरपूर मेहनत की जाये। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

يَتْبَعُ الْمَيِّتَ ثَلَاثٌ فَيَرْجِعُ اِثْنَانِ وَيَبْقَىٰ وَاحِدٌ يَتْبَعُهُ اَهْلُهُ وَمَالُهُ وَعَمَلُهُ فَيَرْجِعُ اَهْلُهُ وَمَالُهُ وَيَبْقَىٰ عَمَلُهُ.

(بخاری شریف ۹٦٤/۲، مسلم شریف ٤۰۷/۲، ترمذی شریف ٦۰/۲)

मय्यित के साथ तीन तरह की चीज़ें जाती हैं जिनमें से दो लौट आती हैं और एक साथ रह जाती है, मय्यित के साथ उसके घर वाले और उसका माल और उसका अ़मल जाता है, उसके घर वाले और माल तो लौट आते हैं और अ़मल उसके साथ रह जाता है।

कितना ही क़रीबी अ़ज़ीज़ हो, उसे क़ब्रिस्तान में अकेला छोड़कर आना ही पड़ता है और माल भी क़ब्र में नही रखा जाता और न उससे कोई नफ़ा मिलता है बल्कि आँख बन्द होते ही माल ख़ुद-ब-ख़ुद वारिस की मिल्कियत में चला जाता है। लेकिन अ़मल ऐसा पक्का और वफ़ादार दोस्त है जो दुनिया में भी साथ रहता है, क़ब्र में भी साथ जाता है और मैदाने महशर में भी साथ रहेगा और अपने आ़मिल को असूल ठिकाने (जन्नत या जहन्नम) तक पहुंचाकर दम

लेगा, इसलिए अभी से अच्छे अमल से दोस्ती करनी चाहिए ताकि वह अच्छी जगह तक पहुंचा दे। □ □

दूसरी फ़स्ल

यह बदन गल सड़ जायेगा

इंसान का यह बदन मिट्टी से बना है और मिट्टी ही में मिल जायेगा, क़ब्र में जाकर ख़ूबसूरत आँखें जिन्हें सुरमा और काजल से संवारा जाता है और ये बाल और रूख़्सार जिन्हें हसीन व जमील बनाने की कोशिश की जाती है और यह पेट जिसकी भूक मिटाने के लिए हर तरह के तरीक़े इख़्तियार किये जाते हैं, यही आँखें फूटेंगी और उनका पानी चेहरे के रूख़्सारों पर बह पड़ेगा, बाल खुद-ब- खुद गल कर टूट जायेंगे, पेट बद्बूदार होकर फट पड़ेगा, क़ब्र में कीड़े इस मिट्टी के बदन को अपना ख़ाना बना लेंगे, इस हालत को इंसान दुनिया में भूले रहता है मगर यह हालत पेश आकर रहेगी, इसी तरफ़ ध्यान दिलाने के लिए एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से इर्शाद फ़रमायाः

"रोज़ाना क़ब्र साफ़ सुथरी ज़बान में खुलेआ़म यह ऐलान करती है कि ऐ आदम की औलाद! तू मुझे कैसे भूल गया? क्या तुझे मालूम नहीं कि मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं मुसाफ़रत (घूमना, फिरना) की जगह हूँ, मेरा मुक़ाम वहशतनाक है और मैं कीड़ों का घर हूँ और मैं तंग जगह हूँ सिवाये उस शख़्स के जिस के लिए अल्लाह तआ़ला मुझे कुशादा कर दे। फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्र या तो जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा है या जन्नत की फुलवारियों में से एक फुलवारी है"। (मजूमउ़ज़्ज़वाइद 3/46, शर्हुस् सुदूर 165)

इसलिए अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया का तक़ाज़ा ब्यान करते हुए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि "अपनी मौत और बदन के गलने सड़ने को याद रखें" इससे फ़िक्रे आख़िरत पैदा होगी और गुनाहों से बचने की ख़्वाहिश उभरकर सामने आयेगी।

वे ख़ुशनसीब जिनका बदन महफ़ूज़ रहेगा ?

अल्लाह तआ़ला अपने कुछ नेक बन्दों के एज़ाज़ (इज़्ज़त) में अपनी बे-मिसाल क़ुद्रत का इस तरह भी इज़्हार फ़रमाते हैं कि उन नेक बन्दों के

जिस्मों को बहुत से सालों के गुज़रने के बाद भी ज़मीन में जूं का तूं महफ़ूज़ फ़रमा देते हैं और ज़मीन उन पाकीज़ा बदनों को फ़ना करने से आजिज़ रहती है। उन ख़ुशनसीब बन्दों में सबसे पहला दर्जा हज़रात अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का है। चुनांचे ख़ुद आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद-ए-गिरामी हैः

إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَجْسَامَ الْأَنْبِيَاءِ. (ابوداؤد شریف ۱/۱۵۰)

बेशक अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के अब्दाने-ए-तय्यिबा को हराम कर दिया है।

इस वजह से अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा है कि तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के अज्साम-ए-मुबारका अपनी अपनी क़ब्रों में बिला किसी तब्दीली के वैसे ही मौजूद हैं और उनको एक ख़ास क़िस्म की हयाते बर्ज़ख़ी हासिल है।

और कुछ शुहदा-ए-इस्लाम के बारे में मुशाहदे से यह बात साबित है कि उनके जिस्म भी दफ़न के बहुत से सालों के बाद सही सालिम पाये गये। (अगरचे हर शहीद के साथ ऐसा होना ज़रूरी नहीं, क्योंकि शहीद को जो ख़ास हयाते बर्ज़ख़ी हासिल है उसके लिए यही बदन अपनी अस्ल सूरत की तरह मौजूद होना ज़रूरी नहीं)। (मुस्तफ़ाद रूहुल मआ़नी 2/12)

अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर रहमतुल्लाहि अ़लैहि का वाक़िआ़

पहली उम्मतों में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर रहमतुल्लाहि अ़लैहि जिन्होंने ज़ालिम बादशाहों के सामने हक़ का इज़्हार किया और फिर उन्हें बिस्मिल्लाह पढ़कर तीर मारा गया जिससे वह शहीद हो गये और उनके मानने वालों को बादशाह ने आग की ख़ंदक़ें खुदवाकर उनमें जला डाला, जिसका ज़िक्र सूरः बुरूज में है उनके बारे में तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत में है कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त के दौर में अ़ब्दुल्लाह बिन तामिर रहमतुल्लाहि अ़लैहि की क़ब्र किसी तरह खुल गई तो देखा गया कि उनकी लाश सही सालिम है और उनका हाथ पहले की तरह कनपटी पर उसी तरह रखा हुआ है जेसे शहादत के वक़्त होगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/172)

जंग-ए-उहुद के कुछ शहीदों का हाल

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने अपने वालिद माजिद हज़रत अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु (जो जंग-ए-उहुद में शहीद हो गये थे) की क़ब्र-ए-मुबारक किसी ज़रूरत से 6 महीने के बाद खोलकर आपकी नअ़्श (लाश) वहां से किसी दूसरी जगह ले जाई गई तो उसमें बिल्कुल भी कोई तब्दीली न हुई थी, बस चंद बाल मिट्टी में हो गये थे। (असदुल ग़ाबा 3/244)

जंग-ए-उहुद में शहीद होने वाले दो अंसारी सहाबा हज़रत अ़म्र बिन जमूअ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन हराम रज़ियल्लाहु अ़न्हु को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया था एक मर्तबा 39 साल के बाद मदीना मुनव्वरा में सैलाब आया जिससे इन हज़रात की क़ब्रे मुबारक खुल गई, तो लोगों ने उन दोनों की नअ़्श वहां से दूसरी जगह ले जाने का काम किया तो लोग यह देखकर दंग रह गये कि उनके जिस्म में बिल्कुल भी तब्दीली न आई थी और ऐसा महसूस होता था कि जैसे वह कल ही शहीद हुए हों, उनमें से एक ने अपना हाथ ज़ख़्म की जगह पर रखा हुआ था, जब उसे हटाने की कोशिश की गई, तो वह दोबारा अपनी जगह चला गया जैसा कि पहले था।
رضی اللہ عنہ وارضاہ (असदुल ग़ाबा 3/244, अत्-तज़्किरा 185, शर्हुस् सुदूर 412)

दूसरे शहीदों के साथ इस तरह के वाक़िआ़त साबित हैं, अ़ल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि इब्ने जोज़ी की तारीख़ से नक़्ल करते हैं कि एक मर्तबा बसरा में एक टीले से 7 क़ब्रें ज़ाहिर हो गईं, उनमें 7 लाशें थीं, सबके जिस्म सही सालिम थे और उनके कफ़नों से मुश्क की ख़ुश्बू फूट रही थी उनमें से एक शख़्स जो जवान था जिसके बालों में ज़ुल्फ़ें थीं और उसके होटों पर ऐसी ताज़गी थी जैसे अभी पानी पिया हो और उसकी आँखें सुर्मा लगी हुई थीं और उसकी कोख में ज़ख़्म का निशान था, कुछ लोगों ने उसके बाल उखेड़ने चाहे मगर वह ऐसे ही मज़बूत थे जैसे ज़िन्दा शख़्स के होते हैं। (शर्हुस् सुदूर 268)

क़ब्र पर ख़ुश्बू और रौशनी

अ़ब्दुल्लाह बिन ग़ालिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं उनकी क़ब्र से मुश्क की ख़ुश्बू आती थी, मालिक बिन दीनार कहते हैं कि मैंने उनकी क़ब्र पर जाकर जो मिट्टी उठाकर सूंघी तो वह बिल्कुल मुश्क की तरह थी।

(किताबुल आ़क़िबत 130)

अबू मुहम्मद अ़ब्दुल्लाह अल-बकरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मैं बस्रा में सहाबी-ए-रसूल हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र पर हाज़िर हुआ, तो अचानक मेरे बदन पर गुलाब के अ़र्क़ का छिड़काव हुआ, जिससे मेरे कपड़े तर हो गये। (किताबुल आ़क़िबत 1/130)

यह उन हज़रात की करामत है जो अल्लाह की क़ुद्रत से कुछ भी मुश्किल नहीं।

और हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मरवी है कि जब सालेह बादशाह नज्जाशी का इन्तिक़ाल हो गया तो लोगों में यह बात मश्हूर थी कि उनकी क़ब्र पर रौशनी नज़र आती है। (किताबुल आ़क़िबत 130)

मुअज़्ज़िन-ए-मुहतसिब (शरीअ़त का पाबन्द) को बशारत

आ़म तौर पर लोग मस्जिद के मुअज़्ज़िन को बे-हैसियत ख़्याल करते हैं यहां तक कि बहुत से बे-तौफ़ीक़ लोग तो इस काम ही को हिक़ारत से देखते हैं हालांकि यह काम इतना बुलंद और अ़ज़्मत वाला है कि जो शख़्स सिर्फ़ रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी के लिए पाबंदी से अज़ान कहता है अल्लाह तआ़ला मैदाने महशर में उसका सर और गर्दन सब से बुलन्द फ़रमा देगा और उसका बदन दफ़्न होने के बाद कीड़ों का खाना नहीं बनेगा। हज़रत मुजाहिद अपने वालिद के हवाले से नक़्ल फ़रमाते हैं:

اَلْمُؤَذِّنُوْنَ اَطْوَلُ النَّاسِ اَعْنَاقًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُدَوِّدُوْنَ فِيْ قُبُوْرِهِمْ .

(مصنف عبدالرزاق ١/٤٨٣)

मुअज़्ज़िन हज़रात क़ियामत के दिन सबसे लम्बी गर्दनों वाले होंगे और क़ब्रों में उनके जिस्मों में कीड़े नहीं पड़ेंगे।

और एक दूसरी रिवायत में है:

اَلْمُؤَذِّنُ الْمُحْتَسِبُ كَالشَّهِيْدِ الْمُتَشَحِّطِ فِيْ دَمِهٖ وَاِذَامَاتَ لَمْ يُدَوَّدْ فِيْ قَبْرِهٖ. (مجمع الزوائد ٢/٣، شرح الصدور ٤١٣)

बा-अ़मल मुअज़्ज़िन उस शहीद की तरह है जो अपने ख़ून मे लुथड़ा हुआ हो और जब उसका इन्तिक़ाल हो जाता है तो क़ब्र में उसके बदन में कीड़े नहीं पड़ते।

कुछ कमज़ोर रिवायात में इसी तरह की बशारत क़ुरआन-ए-करीम में ज़्यादा मश्ग़ूल रहने वाले और गुनाहों से पूरी तरह बचने वालों के बारे में भी आई हैं। (शर्हुस् सुदूर 413)

तीसरी फ़स्ल

क़ब्र में राहत और अ़ज़ाब बरहक़ है

मशहूर हदीसों से यह बात पूरी तरह साबित है कि क़ब्र की राहत और अ़ज़ाब बरहक़ है और यह ऐसा ग़ैबी और मावरा-ए-अक़्ल (जहाँ तक अक़्ल नहीं पहुंचती) अ़क़ीदा है जिसपर यक़ीन करने के लिए अ़क़्ल का सहारा लेना बेकार है क्योंकि इस का ताल्लुक़ दुनियवी ज़िन्दगी से है ही नहीं, यह बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी का मुआ़मला है जिसकी अस्ल हक़ीक़त तक हमारी नाक़िस अक़्ल पहुंच नहीं सकती, इसलिए जिस तरह हम क़ुरआन और सुन्नत के बताने से क़ियामत, आख़िरत, जन्नत और जहन्नम पर यक़ीन रखते हैं इसी तरह क़ब्र के हालात के बारे में भी हमें वही-ए-मुक़द्दस की मालूमात पर कामिल यक़ीन रखना चाहिए। जब सही सनदों और मोतबर राविंयों के हवाले से हम तक यक़ीनी इल्म पहुंच गया तो उसे माने बग़ैर कोई चारा नहीं, सिर्फ़ अ़क़्ल दोड़ाने और अपनी नाक़िस अ़क़्ल में न आने की दुहाई देकर किसी साबित शुदा नक़्ली अ़क़ीदे को झुठलाने की कोई वजह नहीं है। उ़लमा ने यह भी वज़ाहत फ़रमाई है कि क़ब्र के अ़ज़ाब व राहत से सिर्फ़ ख़ास क़ब्र की जगह मुराद नहीं बल्कि बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी (मौत से क़ियामत आने तक का फ़ासला) मुराद है। इसलिए अगर कोई शख़्स सूली पर चढ़ाकर छोड़ दिया जायें, या समन्दर में डूब जाये, या उसे परिन्दे और दरिन्दे खा जायें, या उसे जलाकर हवा में उड़ा दिया जाये फिर भी अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाब या राहत अ़ता करने पर क़ादिर है। और ये हालात सिर्फ़ रूह पर ही नहीं बल्कि बदन-ए-मय्यित पर भी त़ारी होते है। तमाम अह्ले सुन्नत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है। (मुस्तफ़ाद शर्हुस् सुदूर लिल्-सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि 247)

कुछ बद-दीन क़िस्म के लोग क़ब्र के हालात पर तरह तरह के इश्कालात करते हैं, जैसे कहते हैं कि अगर हम क़ब्र खोद कर देखें तो हमें तो फ़रिश्ते नज़र नहीं आते और न मोमिन की क़ब्र कुशादा मालूम होती है बल्कि उसकी लम्बाई -चौड़ाई इतनी ही होती है जितनी दफ़न के वक़्त थी वग़ैरह वग़ैरह, इसलिए कैसे सही हो सकता है कि उन पर अ़ज़ाब और राहत का असर ज़ाहिर हो?

इस का जवाब यह है कि अल्लाह की क़ुद्रते कामिला से हरगिज़ बओ़ीद नहीं है कि वह हमारी नज़रों से छुपाकर मय्यित के बदन और रूह को राहत या

अज़ाब में मुब्तला कर दे। उसकी मिसाल ऐसी है जैसे दो सोने वाले शख़्स सोने की हालत में उनमें से एक तक्लीफ़ महसूस करे और दूसरा ख़ुशी वाले ख़्वाब देखे, तो जागने वाले को कुछ पता नहीं चल पाता कि ये सोने वाले किन हालात से गुज़र रहे हैं, इसी तरह मय्यित पर जो हालात तारी होते हैं ज़िन्दा इंसानों को आम तौर पर उनका कुछ पता नहीं चल पाता।

(अत्-तज़्किरा फी अहवालिल मौता वल्-आख़िरत 140)

और यह अल्लाह तआला की अज़ीम हिक्मत है क्योंकि अगर इस तरह ज़िन्दगी में लोगों को क़ब्र का हर अज़ाब दिखा दिया जाता तो लोग अपने मुर्दों को दफ़न करना छोड़ देते, इसी वजह से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः अगर मुझे यह ख़तरा न होता कि तुम लोग दफ़न करना छोड़ दोगे तो में अल्लाह तआला से यह दुआ करता कि वह तुम्हें क़ब्र के हालात के बारे में बता दे। (मुस्लिम शरीफ़ 2/386)

इसी तरह जिन मुर्दों के जिस्म बज़ाहिर मुतफ़र्रिक़ हो चुके जैसे जलाकर राख कर दिये गये या उन्हें परिन्दों और दरिन्दों ने खा लिया उन पर भी अज़ाब व राहत जारी होने में कोई शुब्ह नहीं है इसलिए कि अल्लाह तआला जो उन जिस्मों को क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा करने पर क़ादिर है इसी तरह उसे इस पर भी पूरी क़ुद्रत है कि वह उन जिस्मों के तमाम हिस्से या कुछ हिस्सों को ज़िन्दगी देकर उनको अज़ाब या राहत में मुब्तला कर दे।

(नववी अला मुस्लिम 2/386)

मतलब यह कि अहले क़ब्र के हालात का ताल्लुक़ बर्ज़ख़ की ज़िन्दगी से है, उसे दुनिया की ज़िन्दगी पर क़यास नहीं किया जा सकता और अगर इस बारे में क़ुरआन व सुन्नत की वाज़ेह हिदायात हमारे सामने न होतीं तो हमें उन हालात का कुछ भी इल्म न हो पाता इसलिए आफ़ियत और इंसाफ़ का रास्ता यही है कि सादिक़ व अमीन पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के इर्शादात-ए-आलिया पर कामिल यक़ीन रखते हुए बर्ज़ख़ी हालात पर ईमान लाया जाये और उसके बारे में किसी तरह का शक या शुब्ह ज़हन में न रखा जाये।

अज़ाबे क़ब्र से पनाह

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक यहूदी औरत

ने उनके पास आकर यह दुआ दी कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें क़ब्र के अ़ज़ाब से बचाये। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम घर तशरीफ़ लाये तो मैंने आप से अ़ज़ाबे क़ब्र के बारे में सवाल किया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

نَعَمْ : عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ

जी हाँ, क़ब्र का अ़ज़ाब बरहक़ (सच) है।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि उसके बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब भी नमाज़ पढ़ते तो उसके बाद क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह मांगते थे। (बुख़ारी शरीफ़, 1/183)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह दुआ़ मांगा करते थेः

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ. (بخاری شریف ۱/۱۸٤)

ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह चाहता हूँ और जहन्नम के अ़ज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्ने से और दज्जाल के फ़ित्ने से भी पनाह चाहता हूँ।

एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सवारी पर तशरीफ़ ले जा रहे थे रास्ते में आपका गुज़र मुश्रिकीन की कुछ क़ब्रों पर हुआ, तो आप ने इर्शाद फ़रमायाः

إِنَّ هٰذِهِ الْأُمَّةَ تُبْتَلٰى فِي قُبُورِهَا، فَلَوْلَا أَنْ لَا تَدَافَنُوا لَدَعَوْتُ اللّٰهَ أَنْ يُسْمِعَكُمْ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ الَّذِي أَسْمَعُ مِنْهُ. (مسلم شریف ۲/۳۸٦)

ये लोग अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला हैं, तो अगर यह बात न होती कि तुम लोग दफ़न करना छोड़ दो तो मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करता कि वह तुम्हें भी क़ब्र के अ़ज़ाब की आवाज़ सुना दे जिसे मैं सुन रहा हूँ।

फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और उनको क़ब्र के अ़ज़ाब, जहन्नम के अ़ज़ाब, शुरूर व फ़ितन और दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह मांगने की तल्क़ीन फ़रमाई।

जानवर भी क़ब्र का अज़ाब सुनते हैं

अहादीस व आसार से यह मालूम होता है कि क़ब्र के हालात और अ़ज़ाब वग़ैरह की आवाज़ें अगरचे इंसान और जिन्नात से छुपी हुई रहती हैं लेकिन जानवर उनकी आवाज़ों को सुनते हैं और उन हालात पर बा-ख़बर होते हैं, चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि जब मुनाफ़िक़ और काफ़िर से क़ब्र में सवाल होता है और वह सही जवाब नहीं दे पाता तो फ़रिश्ते उस को लोहे के गुर्ज़ से इतनी ज़ोर से मारते हैं कि वह बे-इख़्तियार चीख़ उठता है और उसकी चीख़ की आवाज़ इंसान और जिन्नात के अ़लावा जो जानदार भी उसके क़रीब होते हैं सब सुनते हैं। इर्शादे नबवी है:

إِنَّ أَهْلَ الْقُبُوْرِ يُعَذَّبُوْنَ فِي قُبُوْرِهِمْ عَذَابًا تَسْمَعُهُ الْبَهَائِمُ۔ (بخاری ۲/۹٤۲)

बेशक क़ब्र वालों को उनकी क़ब्रों में अ़ज़ाब होता है जिसको जानवर सुनते हैं।

अबुल हकम इब्ने बुरख़ान, अशबीला (स्पेन) का एक वाक़िआ़ बयान करते हैं कि लोगों ने वहां के क़ब्रिस्तान में एक मुर्दे को दफ़न किया फिर वहीं क़रीब बैठकर बातें करने लगे, एक जानवर क़रीब ही घास चर रहा था, वह क़ब्र के क़रीब आया और कान खड़े करके कुछ सुनने लगा फिर दूर चला गया कुछ देर के बाद फिर क़ब्र के क़रीब आकर सुनने लगा कई मर्तबा उसने यह हरकत की, अबुल हकम कहते हैं कि यह वाक़िआ़ सुनकर मुझे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह इर्शाद याद आ गया कि क़ब्र के अ़ज़ाब को जानवर तक भी सुनते हैं। (किताबुर्रूह लि इब्निल क़य्यिम उर्दू 110)

किन लोगों से क़ब्र में सवाल व जवाब नहीं होता

सही अहादीस से यह बात भी साबित है कि कुछ हालतों में मरने वाला इंसान क़ब्र के सवाल व जवाब और फ़ितनों से ख़ुद-ब-ख़ुद महफ़ूज़ रहता है, यह सहूलत और रूख़्सत तीन तरह के अस्बाब से मुतअ़ल्लिक़ होती है:

1. कुछ आमाले सालिहा, 2. किसी आफ़त-ए-समावी के साथ मौत, 3. कुछ ख़ास वक़्तों में मौत का आना। हर एक की तफ़्सील नीचे दी जाती है।

पहला सबब:

पहला सबब यानी आमाले सालिहा के बारे में नीचे दिये गये आमाल ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं:

1. शहादत फ़ी सबीलिल्लाह: जो शख़्स अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए पूरी बहादुरी के साथ अपनी जान का नज़राना अल्लाह तआला की बारगाह में पेश कर दे उसको क़ब्र के फ़ितनों से महफ़ूज़ रखा जाता है, एक रिवायत में आया है कि एक शख़्स ने हुज़ूर-ए-अक़्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सवाल किया, कि क्या बात है कि शहीद को छोड़कर बाक़ी ईमान वालों को क़ब्र के फ़ितने में मुब्तला किया जाता है? सवाल का मक़्सद यह था कि शहीद को इस उ़मूम से अलग रखने की वजह क्या है? आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब दिया:

كَفٰى بِبَارِقَةِ السُّيُوْفِ عَلٰى رَأْسِهٖ فِتْنَةً.

(نسائی شریف ۱/۲۸۹)

शहीद के सर पर तलवार की चमक दमक ही फ़ितने के लिए काफ़ी है (यानी इस क़ुर्बानी की बदोलत से उसे क़ब्र के फ़ितने से हिफ़ाज़त नसीब हो गई है)।

2. इस्लामी सरहदों की हिफ़ाज़त करना: इस्लामी सरहदों की हिफ़ाज़त जिसकी वजह से दारूल इस्लाम (इस्लामी मुल्कों) में रहने वालों को अमन व आफ़ियत नसीब होती है अल्लाह की नज़र में बहुत अ़ज़ीमुश् शान अ़मल है। इसलिए जो शख़्स इसी हाल में हिफ़ाज़त करते हुए वफ़ात पा जाये उसको क़ब्र के फ़ितनों से और सवाल व जवाब से महफ़ूज़ कर दिया जाता है, इसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

رِبَاطُ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ خَيْرٌ مِنْ صِيَامِ شَهْرٍ وَقِيَامِهٖ وَإِنْ مَاتَ جَرٰى عَلَيْهِ عَمَلُهُ الَّذِىْ كَانَ يَعْمَلُهٗ وَأُجْرِىَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ وَأَمِنَ الْفَتَّانَ.

एक दिन रात सरहद की हिफ़ाज़त करना पूरे महीने के रोज़े और रात भर इबादत करने के बराबर है और अगर इस हाल में उसकी मौत आ जाये, तो जो अ़मल वह कर रहा था उसका सवाब बराबर जारी रहेगा और उसके लिए बराबर रिज़्क़ का इन्तिज़ाम किया जायेगा और उसे क़ब्र के सवाल करने वाले फ़रिश्तों

से और वहां के फ़ित्नों से महफ़ूज़ रखा जायेगा (مسلم شریف ۲/۱٤۲)

3. सूरः मुल्क और सूरः अलिफ़-लाम-मीम सज्दा का पाबन्दी से पढ़नाः कुछ रिवायतों से यह साबित है कि जो शख़्स सोने से पहले सूरः मुल्क और अलिफ़-लाम-मीम सज्दा पाबन्दी से पढ़े तो उसे भी क़ब्र के सवाल व जवाब से महफ़ूज रखा जाता है। (शर्हुस् सुदूर 207)

दूसरा सबबः

और सवाल से बचने का दूसरा सबब यानी मौत की इल्लत के सिलसिले में एक रिवायत यह मिलती है कि जो शख़्स पेट की किसी बीमारी में इन्तिक़ाल कर जाये तो वह भी क़ब्र के फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहेगा, मगर उसके बारे में मुहद्दिसीन यह फ़रमाते हैं कि उसके रावी को ग़लत फ़हमी हो गई है हदीस अस्ल में मुराबित (सरहद पर हिफ़ाज़त करने वाला) के बारे में है जिसे रावी ने मरीज़ के बारे में कर दिया। (शर्हुस् सुदूर 207)

और हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि ने मरज़े ताऊन (प्लैग) में वफ़ात पाने वाले के बारे में भी यह बात लिखी है कि उसे क़ब्र के फ़ित्ने से महफ़ूज़ रखा जायेगा और वह मुराबित फ़ी सबीलिल्लाह के दर्जे में है कि जिस तरह सरहद पर हिफ़ाज़त करने वाला सब्र व इस्तिक़ामत के साथ अपनी जगह डटा रहता है इसी तरह ताऊन में मुब्तला शख़्स भी तवक्कुल अलल्लाह करता है, इस मुशाबहत की वजह से वह भी फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहेगा। (शर्हुस् सुदूर 208)

जुमे के दिन और रमज़ान के महीने में वफ़ात पाने वालों को बशारत

तीसरे सबब के तौर पर अहादीसे शरीफ़ा से तीन तरह के वक़्त साबित हैं:

1. जो शख़्स जुमे के दिन या रात में इन्तिक़ाल कर जाये उसको भी क़ब्र के फ़ित्नों से महफ़ूज़ रहने की बशारत दी गई है। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

जो मुसलमान शख़्स जुमे के दिन या مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَمُوتُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ أَوْ

لَيْلَةَ الْجُمُعَةِ إِلَّا وَقَاهُ اللّٰهُ فِتْنَةَ الْقَبْرِ. (ترمذی شریف ۱/۲۰۵)

उसकी रात में इन्तिक़ाल कर जाये तो अल्लाह उसको क़ब्र के फ़ितने से महफ़ूज़ रखता है।

2. कुछ कमज़ोर रिवायात से यह भी मालूम होता है कि रमज़ानुल मुबारक में मरने वालों से भी क़ब्र का अज़ाब हटा लिया जाता है। واللہ تعالی اعلم

(शर्हुस् सुदूर अनिल् बैहक़ी 254)

3. और अल्लामा क़ुरतबी रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक रिवायत में इस मज़्मून की नक़्ल फ़रमाई है कि जिस शख़्स की मौत रमज़ान के ख़त्म पर या अरफ़ा के वुक़ूफ़ के बाद या अपनी ज़कात की अदायगी के बाद आये वह जन्नत में दाख़िल होगा। واللہ تعالی اعلم (अत्-तज़्किरा 173)

क़ब्र के अज़ाब से नजात कैसे ?

ख़ास वक़्तों में वफ़ात तो इंसान के इख़्तियार में नहीं लेकिन वह इख़्तियारी आमाल-ए-सालिहा जिनको अहादीस में अज़ाबे क़ब्र से वक़ाया (नजात) क़रार दिया गया है उनको इख़्तियार करने की कोशिश हर मुसलमान को करनी लाज़िम है। दर-हक़ीक़त तमाम ही आमाले सालिहा अपनी अपनी जगह अज़ाबे क़ब्र से बचाने का ज़रिया हैं, बहुत सी रिवायात इस पर दलील हैं कि मरने के बाद इंसान के आमाल-ए-सालिहा उसे चारों तरफ़ से घेर लेते हैं और जिधर से भी अज़ाब आने की कोशिश करता है, तो वे अज़ाब से रूकावट बन जाते हैं और ख़ास तौर पर हर रात सूरः मुल्क का पढ़ना अज़ाबे क़ब्र से बचाने में इन्तिहाई कामियाब तरीन अमल है इसीलिए इस सूरत का नाम ही "मानिआ" और "मुन्जिया" पड़ गया है। हदीस में है कि यह सूरत अपने पढ़ने वालों के लिए अज़ाब से बचाने की सिफ़ारिश करती है और इसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाती है और इसी तरह की फ़ज़ीलत सूरः अलिफ़ लाम मीम सज्दा के बारे में भी आई है और सूरः ज़िलज़ाल जुमे की रात में मग़रिब के बाद दो रकअत नमाज़ में इस तरह पढ़ना कि हर रकअत में 15 मर्तबा यह सूरत पढ़ी जाये इस अमल को भी अज़ाबे क़ब्र से बचने का सबब बताया गया है। (शर्हुस् सुदूर 252-254)

इसके अलावा अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहने के लिए उन तमाम बुरे आमाल और गुनाह के कामों से बचना भी ज़रूरी है, जिनको अहादीसे तय्यिबा में अज़ाबे

क़ब्र के असबाब में शुमार कराया गया है।

क़ब्र के अज़ाब के उमूमी असबाब

अहादीसे शरीफ़ा में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन असबाब और गुनाहों की निशान दही फ़रमा दी है। जिनसे अक्सर इंसान क़ब्र के अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ बन जाता है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का गुज़र दो क़ब्रों पर हुआ जिन्हें देखकर आपने इर्शाद फ़रमाया कि इन दोनों क़ब्र वालों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़े गुनाह में अ़ज़ाब नहीं हो रहा है (यानी जिसे तुम बड़ा समझते हो) उनमें से एक चुग़ली करता था और दूसरा शख़्स पैशाब से नहीं बचता था। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक तरो ताज़ा शाख़ मंगवाई और उसके दो टुकड़े करके एक एक टुकड़ा हर क़ब्र पर गाड़ दिया और इर्शाद फ़रमाया कि उम्मीद है कि इन के ख़ुश्क होने तक उन दोनों से अ़ज़ाब में कमी कर दी जायेगी।

(बुख़ारी शरीफ़ 1/184, मुस्लिम शरीफ़ 1/141)

इस हदीस में क़ब्र के अ़ज़ाब के जो असबाब ब्यान किये गए हैं उनके बारे में सन्जीदगी से ग़ौर और फ़िक्र करने की ज़रूरत है, अफ़्सोस की बात है कि ये दोनों ही असबाब आज कसरत से हमारे मुआशरे में फैले हुए हैं। ग़ीबत, चुग़ली यहां तक कि बोहतान तराशी को गुनाह ही नहीं समझा जाता। इसी तरह नई तहज़ीब के मतवाले पैशाब की बूंदों से पाकी हासिल करना फ़ुज़ूल समझते हैं, खड़े-खड़े पैशाब कर देना और पाकी और इस्तिन्जा के बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारना मायूब ही नहीं रहा। इस मुआमले में नई तहज़ीब ने इंसान को बे-अ़क़्ल जानवरों की सफ़ में ला खड़ा किया है। اللهم احفظنا منه

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का एक इब्रतनाक ख़्वाब

हज़रत समुरा बिन जुन्दुब रज़ियल्लाह अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सुब्ह की नमाज़ पढ़कर हमारी तरफ़ मुतवज्जेह होते और पूछते कि क्या तुममें से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है? तो अगर किसी ने

कोई ख़्वाब देखा होता तो वह ब्यान करता और आप उसकी मुनासिब ताबीर इर्शाद फ़रमाते, एक दिन आप ने इसी तरह सवाल फ़रमाया तो हमने अर्ज़ किया कि हममें से किसी ने कोई ख़्वाब नहीं देखा है, तो इस पर आपने अपना लम्बा ख़्वाब हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को सुनाया कि आपको दो शख़्स हाथ पकड़कर ले गये और उम्मत के गुनाहगारों पर बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी में जो अज़ाब हो रहे हैं उनका तफ़्सील से मुशाहदा कराया जिसकी तफ़्सील नीचे दी गई है:

1. आपने एक शख़्स को देखा कि वह बैठा हुआ है और उसके सामने एक दूसरा शख़्स लौहे का ज़ंबूर लिये हुए खड़ा है और वह उस ज़ंबूर से बैठे हुए शख़्स के एक कल्ले को गुद्दी तक चीर देता है, फिर दूसरे कल्ले के साथ यही मुआमला करता है, इतने में पहला कल्ला सही हो जाता है, बराबर उसके साथ यही बर्ताव किया जा रहा है। बाद में पूछने पर मालूम हुआ कि जिसका कल्ला चीरा जा रहा था वह झूठा शख़्स है जिस पर यक़ीन करते हुए लोग उसकी बात पूरी दुनिया में फैला देते हैं।
2. एक शख़्स को आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने देखा कि वह गुद्दी के बल लेटा हुआ है और एक दूसरा शख़्स उसके सर के पास बड़ा सा पत्थर लिये हुए खड़ा है जिससे वह लेटे हुए शख़्स के सर को कुचल देता है। पत्थर लुढ़क कर कुछ दूर चला जाता है, तो इतनी देर में कि वह उसे उठाकर लाये उसका सर फिर वैसा ही सही सालिम हो जाता है फिर उसको मारता है और यही सिलसिला बराबर जारी रहता है। इसके बारे में पूछने से मालूम हुआ कि यह वह आ़लिमे दीन था जो न तो रात में इल्मी मश्ग़ुलियत में रहता था और न दिन में उस पर अ़मल करता था।
3. उसी ख़्वाब में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक बड़ा गढ्ढा देखा जो आग के तन्नूर की तरह था, जिसका ऊपरी हिस्सा तंग था और निचला हिस्सा बहुत खुला था जिसमें आग दहक रही थी, उसमें नंगे मर्द और औ़रत थे जो जलभुन रहे थे, जब आग की लपटें बुलंद होतीं तो वे ऊपर आकर निकलने के क़रीब हो जाते फिर नीचे तह में चले जाते। उनके बारे में पूछने से मालूम हुआ कि ये हराम कार और ज़िनाकार लोग हैं, क़ियामत तक इनके साथ यही मुआमला होता रहेगा।
4. इसी तरह आपने देखा कि ख़ून की नहर के बीच में एक शख़्स खड़ा है और

उसके किनारे पर दूसरा शख़्स हाथ में पत्थर लिये मौजूद है, जब नहर वाला शख़्स बाहर निकलने की कोशिश करता है तो यह शख़्स पत्थर मारकर उसे अपनी जगह लौटा देता है। इसके बारे में जब आपने पूछा तो बतलाया गया कि यह सूदख़ोर शख़्स है, क़ियामत तक इसे ख़ून की नहर में रहना पड़ेगा। أعاذنا الله منه. (बुख़ारी शरीफ़ 1/185, मुलख़्ख़सन)

नबी का ख़्वाब भी चूंकि वही के दर्जे में होता है इसलिए ख़्वाब में जो हालतें दिखाई गई हैं उनके वाक़िअ़ी होने में किसी शक या शुब्ह का इम्कान नहीं है, ये बर्ज़ख़ के हालात हैं, जो ऊपर बताये गये जुर्मों में मुब्तला लोगों के साथ क़ियामत तक होते रहेंगे। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को इन अस्बाब से महफ़ूज़ रखे। आमीन

ना-जाइज़ मक़सदों से ज़ैब व ज़ीनत करने वालों को अ़ज़ाब

एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने कुछ मर्दों को देखा कि जिनकी खालें क़ैंचियों से काटी जा रही थीं, मैंने पूछा कि ये कौन लोग हैं? तो जवाब मिला कि ये वे मर्द लोग हैं जो हराम (अज्नबी औ़रतों) को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिए सजते संवरते थे। और फ़रमाया कि मैंने एक बद्बूदार कुंवा देखा जिसमें से चीख़ व पुकार की आवाज़ आ रही थी, मैंने पूछा कि यह क्या है? जवाब मिला कि इस में वे औ़रतें हैं जो ऐसे मर्दों को रिझाने के लिए सजती संवरती थीं जो उनके लिए हलाल नहीं थे। (शर्हुस् सुदूर अ़निल ख़तीब व इब्ने अ़साकिर 231)

ग़ौर कीजिए क्या आज यह बुराई हमारे समाज में आ़म नहीं है? नई तह्ज़ीब के मत्वाले माँ-बाप आज़ाद नौजवान लड़के और लड़कियाँ हरामकारी के लिए एक दूसरे पर सब्क़त ले जाने को तैयार हैं, औ़रतें घर में रहते हुए अपने शौहरों के लिए कभी कभी ही सजती संवरती हैं और तक़रीबात यानी शादी मंगनी या इसी तरह के दूसरे प्रोग्राम में या बाज़ारों की तफ़्रीह के लिए पूरा मेकअप करना ज़रूरी समझती हैं। ये सब आख़िरत के अ़ज़ाब से बे फ़िक्री की बातें हैं और अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया के तक़ाज़ों के बिल्कुल ख़िलाफ़ हैं।

नमाज़ बे-वक़्त पढ़ने वाले की सज़ा

इसी ख़्वाब के बारे में कुछ रिवायतों में यह तफ़्सील है कि नबी-ए- अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक शख़्स को देखा जिसकी खोपड़ी को एक बड़े पत्थर से इस ज़ौर से मारा जाता है कि उसका भेजा निकलकर बाहर आ जाता है और पत्थर दूर जा गिरता है। जब आपने उस बद्-नसीब शख़्स के बारे में पूछा तो मालूम हुआ कि यह वह शख़्स है जो इशा की नमाज़ बिल्कुल पढ़ता ही न था और दूसरी नमाज़ें भी बे-वक़्त पढ़ता था, इसलिए क़ियामत तक उसके साथ यही मुआ़मला होता रहेगा। العیاذ باللہ (शर्हुस् सुदूर 232)

चुग़लख़ौर की सज़ा

फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक शख़्स को देखा कि एक बड़ी क़ैंची से उसके कल्ले चीरे जा रहे हैं उसके बारे में पूछा गया तो बताया गया कि यह शख़्स लोगों की चुग़लियाँ करता था जिससे लोगों में फ़ित्ना फ़साद बरपा हो जाता था। (शर्हुस् सुदूर 232)

सूदख़ौर की बद्-तरीन सज़ा

फिर आप ने देखा कि ख़ून की एक नहर है जो इस तरह गर्मी से खौल रही है जैसे आग पर रखी हुई देगची खोलती है। उस नहर में कुछ नंगे लोग हैं और नहर के किनारे पर फ़रिश्ते हैं जिनके हाथों में मिट्टी के ढेले हैं, नहर के लोगों में जब भी कोई बाहर निकलने की कोशिश करता है तो फ़रिश्ते उसके मुँह पर इस ज़ौर से ढेला सख़्ती से मारते हैं कि वह शख़्स फिर नहर में गिर जाता है। उन लोगों के बारे में आपको बताया गया कि ये लोग उम्मत के सूदख़ौर हैं, उनको क़ियामत तक यही अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा। اعاذنا اللہ من ذلک (शर्हुस् सुदूर 232)

मेराज के सफ़र के बारे में कुछ रिवायतों में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ जिनके पेट इतने बड़े-बड़े थे जैसे (इंसान के रहने के) घर होते हैं और उनमें साँप थे जो बाहर से नज़र आ रहे थे मैंने कहा: जिब्राइल अ़लैहिस्सलाम! ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा कि ये सूदख़ाने वाले बद्-नसीब लोग हैं। (मिश्कात शरीफ़ 246)

यह है हराम कमाई का बद्-तरीन वबाल! इसलिए हर मुसलमान को अल्लाह तआ़ला से डरना चाहिए और अपनी आमदनी ख़ालिस हलाल रखने की कोशिश करनी चाहिए।

ज़िनाकारों का अंजाम

और उम्मत के ज़िनाकारों को आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस हाल में देखा कि वे नंगे होने की हालत में आग के बड़े कमरे में बन्द हैं और वहाँ से इतनी सख़्त बद्बू और तअ़फ़्फ़ुन (सड़ांद) उठ रहा है कि पैग़म्बर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को अपनी नाक शदीद बद्बू की वजह से बन्द करनी पड़ी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बताया गया कि ये लोग ज़िनाकार मर्द और औ़रतें हैं और यह शदीद ना-क़ाबिले बर्दाश्त बद्बू उनकी शर्मगाहों से आ रही है। اعاذنا الله منه.

(शर्हुस् सुदूर 233)

और मेराज के सफ़र में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने देखा कि एक तरफ़ एक दस्तरख़्वान में ताज़ा गोश्त रखा है और दूसरी तरफ़ दूसरे तश्त में सड़ा हुआ गोश्त मौजूद है मगर लोग हलाल गोश्त छोड़कर हराम सड़ा हुआ बद्बुदार गोश्त खा रहे हैं, उन लोगों के बारे में पूछने पर मालूम हुआ कि ये वे लोग हैं जो हलाल रास्ते को छोड़कर हराम तरीक़ा इख़्तियार करते हैं (जैसे मर्द के पास हलाल और पाक बीवी मौजूद है मगर वह उसे छोड़कर एक ज़ानिया बद्कार फ़ाहिशा के साथ रात गुज़ारता है या औ़रत के पास हलाल शौहर मौजूद है मगर वह उसके पास न रहकर ग़ैरों के साथ रात गुज़ारती है)।

और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुछ औ़रतों को देखा कि वे अपने पिस्तानों के ज़रिये लटका दी गई हैं और वे चीख़ व पुकार कर के अल्लाह से फ़रियाद कर रही हैं उनके बारे में बताया गया कि ये भी ज़िनाकार औ़रतें हैं। اللهم احفظنا منه.

(दलाइलुन नुबुव्वत लिल्-बैहक़ी 2/392)

लिवातत यानी इग़्लाम बाज़ी करने वालों की बद्-तरीन सज़ा

इसी तरह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने देखा कि एक स्याह टीला है जिस पर कुछ मख़्बूतुल हवास लोग मौजूद हैं उनके पीछे के रास्ते से दहकती हुई

आग डाली जा रही है जो उनके जिस्मों से होकर मुँह, नाक, कान और आँखों के रास्ते से निकल रही है। इस हौलनाक अ़ज़ाब में मुब्तला लोगों के बारे में पूछने पर मालूम हुआ कि ये लिवात़त (यानी मर्द होकर मर्द ही से जिन्सी ख़्वाहिश पूरी करने वाले ग़लीज़) करने वाले लोग हैं, इस काम को करने वाले और कराने वाले दोनों अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हैं। العیاذ باللّٰہ (शर्हुस् सुदूर 232)

बे-अ़मल वाइज़ों का अंजाम

मेराज के सफ़र में आपका गुज़र ऐसे लोगों पर भी हुआ जिनकी ज़बानें और होंट क़ैंचियों से काटे जा रहे थे, कटने के फ़ौरन बाद वे अपनी अस्ली सूरत में आ जाते थे और फिर उन्हें काटा जा रहा था, बराबर यही सिलसिला जारी था, आपने हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि ये कौन लोग हैं? तो जवाब मिला कि ये उम्मत के बे-अ़मल, फ़ित्ने में मुब्तला वाइज़ हैं (जो दूसरों को तो नसीहत करते थे मगर ख़ुद उस पर अ़मल नहीं करते थे)

(दलाइलुन् नुबुव्वत 2/398, मिश्कात शरीफ़ 438)

क़ौमी माल में ख़ियानत करने वालों को क़ब्र का अ़ज़ाब

हज़रत राफ़ेअ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ बक़ीअ़ के क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने "उफ़! उफ़" फ़रमाया, मुझे यह ख़्याल हुआ कि शायद आप मुझ से यह नागवारी का कलिमा फ़रमा रहे हैं, तो मैंने फ़ौरन अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! मुझ से क्या ख़ता हुई? हुज़ूर ने फ़रमायाः कि क्या मतलब? मैंने अ़र्ज़ किया कि आपने मुझे देखकर "उफ़" फ़रमाया तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हें देखकर मैंने यह कलिमा नहीं कहा बल्कि इस क़ब्र वाले फ़्लां शख़्स को मैंने फ़्लां क़बीले की ज़कात वुसूल करने के लिए आ़मिल बनाकर भेजा था। उसने वहां एक कुर्ता ख़ियानत करके छुपा लिया था, अब उसी जैसा आग का एक कुर्ता उसे क़ब्र में पहना दिया गया है। اعاذنا اللّٰہ منہ.

(मुस्नद अहमद 6/392, शर्हुस् सुदूर 228)

यह रिवायत क़ौमी और मिल्ली काम करने वालों के लिए सख़्त ख़तरें का पता देती है अगर माली ज़िम्मेदारी की अदायगी में कोताही बरती जाये तो क़ब्र

में हौलनाक अ़ज़ाब का अंदेशा है। अल्लाह तआ़ला हम सब को अपना ख़ौफ़ व डर अ़ता फ़रमाये। आमीन

क़ब्र के अ़ज़ाब का आम लोगों को मुशाहदा

अगरचे अल्लाह तआ़ला का आ़म दस्तूर यही है कि अ़ज़ाबे क़ब्र का मुशाहदा आ़म जिन्नातों और इंसानों को नहीं होता, लेकिन कभी कभी अल्लाह तआ़ला इब्रत के लिए भी कुछ अह्वाल ज़ाहिर कर देते हैं, चुनाँचे मवाइज़ व इब्रतों की किताबों में ऐसे बहुत से वाक़िआ़त मौजूद हैं जिनमें क़ब्र के हालात के मुशाहदे का ज़िक्र है और क़ुदरते ख़ुदावन्दी से यह बात बओ़द (दूर) भी नहीं है क्योंकि वह कुछ लोगों पर हालात ज़ाहिर करने पर पूरी तरह क़ादिर है। नीचे हम इस तरह के कुछ वाक़िआ़त नक़्ल करते हैं ताकि उनके पढ़ने से इब्रत हासिल हो सके।

धोखेबाज़ को क़ब्र का अ़ज़ाब

1. अ़ब्दुल हमीद इब्ने महमूद मग़्वली कहते हैं कि मैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की मज्लिस में हाज़िर था, कुछ लोग आपकी ख़िद्मत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हम हज के इरादे से निकले हैं, जब हम ज़ातुस्सफ़ाह (एक मुक़ाम का नाम) पहुंचे तो हमारे एक साथी का इन्तिक़ाल हो गया, तो हमने उसके कफ़न की तैयारी की, फिर क़ब्र खोदने का इरादा किया, जब हम क़ब्र खोद चुके तो हमने देखा कि एक बड़े काले नाग ने पूरी क़ब्र को घेर रखा है। उसके बाद हमने दूसरी जगह क़ब्र खोदी तो वहाँ भी वही साँप मौजूद था, अब हम मय्यित को वेसे ही छोड़कर आपकी ख़िद्मत में आये हैं कि अब हम क्या करें? हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा ने फ़रमाया कि यह साँप उसका वह बद्-अ़मल है जिसका वह आ़दी था, जाओ उसे उसी क़ब्र में दफ़न कर दो, अल्लाह की क़सम अगर तुम उसके लिए पूरी ज़मीन खोद डालोगे फिर भी वह साँप उसकी क़ब्र में पाओगे, बहरहाल उसे इसी तरह दफ़न कर दिया गया, सफ़र से वापसी पर लोगों ने उसकी बीवी से उस शख़्स का अ़मल पूछा तो उसने बताया कि उसका यह मामूल था कि वह ग़ल्ला बेचता था और रोज़ाना बोरी में से घर का ख़र्च निकाल कर उसमें उसी मिक़्दार

का भुस मिला देता था (यानी धोखे से भुस को असल ग़ल्ले की क़ीमत पर बेचा करता था)। (बेह्क़ी फी शुअ़बिल ईमान ब-हवाला शर्हुस् सुदूर 239)

गुस्ले जनाबत न करने की सज़ा

2. अबान इब्ने अ़ब्दुल्लाह अल्-बजली कहते हैं कि हमारे एक पड़ौसी का इन्तिक़ाल हो गया, चुनांचे हम उसके ग़ुस्ल और कफ़न की तैयारी में शरीक रहे, मगर जब हम उसे क़ब्रिस्तान लेकर पहुंचे तो उसके लिए जो क़ब्र खोदी गई थी, उसमें बिल्ली जैसा एक जानवर नज़र आया, लोगों ने उसे वहां से निकालने की बहुत कोशिश की मगर वह वहां से नहीं हटा, मजबूर होकर दूसरी क़ब्र खोदी गई तो उसमें भी वही जानवर मौजूद मिला, तीसरी मर्तबा भी यही हुआ, तंग आकर लोगों ने उसी के साथ उस शख़्स को दफ़न कर दिया। अभी क़ब्र बराबर ही की गई थी कि क़ब्र से एक ज़बरदस्त धमाके की आवाज़ सुनी गई, लोगों ने उसकी बीवी के पास आकर उस शख़्स के हालात मालूम किये तो पता चला कि वह जनाबत से ग़ुस्ल नहीं करता था (मतलब यह कि ग़ुस्ल वाजिब होने की हालत में भी ग़ुस्ल नहीं करता था)। (शर्हुस् सुदूर 244)

नमाज़ छोड़ने और जासूसी की सज़ा

3. अ़म्र बिन दीनार कहते हैं कि मदीने में रहने वाले एक शख़्स की बहन का इन्तिक़ाल हो गया, भाई ने कफ़न दफ़न का इन्तिज़ाम किया। फिर उसे याद आया कि दफ़न करते वक़्त उसकी एक थैली क़ब्र में रह गई थी तो वह अपने साथी को लेकर क़ब्रिस्तान गया और क़ब्र खोदकर अपनी थैली निकाली फिर अपने साथी से कहा कि तुम ज़रा हट जाओ मैं बग़ली क़ब्र की ईंट हटाकर अपनी बहन को देखना चाहता हूँ, उसने जैसे ही ईंट हटाई तो देखा कि पूरी क़ब्र आग के शौलों में घिरी हुई है, उसने जल्दी से क़ब्र बन्द की और अपनी माँ के पास आकर बहन का हाल मालूम किया तो माँ ने बताया कि वह नमाज़ देर करके पढ़ती थी और बग़ैर वुज़ू भी टरख़ा लेती थी और जब पड़ौसी कमरों में चले जाते तो वह उनके कमरों के दरवाज़े पर कान लगाकर उनके छुपे हुए राज़ हासिल किया करती थी। (शर्हुस् सुदूर 244)

अबू जहल को अज़ाबे क़ब्र

4. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं बद्र के क़रीब से गुज़र रहा था, मैंने अचानक देखा कि एक शख़्स ज़मीन से निकला जिसकी गर्दन में एक ज़ंजीर है और उसके एक सिरे को एक काले शख़्स ने थाम रखा है, वह निकलने वाला आदमी मुझ से पानी मांगने लगा, मगर काले शख़्स ने फ़ौरन कहा कि उसे पानी मत पिलाना यह काफ़िर है, फिर उसे खींचकर ज़मीन में दाख़िल कर दिया, मैंने हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िद्मत में आकर पूरा क़िस्सा सुनाया तो आप ने फ़रमाया कि क्या वाक़िअ़ी तुमने उसे देखा है, यह अल्लाह का दुश्मन अबू जहल था क़ियामत तक उसको यही अज़ाबे क़ब्र होता रहेगा। (अत्-तज़्किरा 154, शर्हुस् सुदूर)

क़ब्र में जारी नफ़ा बख़्श काम

क़ब्र के ज़माने में नफ़ा पहुंचाने वाले काम दो तरह के हैं, एक तो वे ख़ास आमाले सालिहा हैं जिनका सवाब मरने के बाद भी जारी रहता है। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है:

إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ انْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَلٰثَةٍ إِلَّا مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ أَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهِ أَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُوْلَهُ.

(مسلم شریف ۲/۱٤)

जब इंसान मर जाता है तो उससे अमल का सिलसिला ख़त्म हो जाता है लेकिन तीन तरह के आमाल का सवबा उसके बाद भी जारी रहता है। 1. सद्क़ा-ए-जारिया 2. नफ़ा बख़्श इल्म 3. नेक औलाद जो वालिद के लिए दुआ़ए ख़ैर करे।

इस हदीस में सद्क़ा-ए-जारिया जैसे मस्जिदों और मद्रसों की तामीर और इल्मे नाफ़ेअ़ जिसमें इल्मी तस्नीफ़ात और शागिर्दों के ज़रिये इल्मी फ़ैज़ान की तमाम सूरतें दाख़िल हैं और सालेह औलाद को मुसलसल सवाब का सबब क़रार दिया गया है। जो निहायत अहम बशारत है। हर मुसलमान को कोशिश करनी चाहिए कि वह उन आमाल को इख़्तियार करे ताकि क़ियामत तक उसके लिए सवाब जारी रहने का इन्तिज़ाम हो सके। इसी तरह एक और रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنْ سَنَّ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهُ أَجْرُهَا وَأَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أُجُوْرِهِمْ شَيْئٌ.

(مسلم شريف ١/٣٢٧)

जो शख़्स कोई अच्छा तरीक़ा इख़्तियार करे तो उसको उसका बदला मिलेगा और जो लोग इस दीनी तरीक़े पर अ़मल करेंगे तो उनके सवाब में किसी कमी के बग़ैर उस मूजिद-ए-ख़ैर (ख़ैर के काम को शुरू करने वाला) को भी सवाब मिलता रहेगा।

इसी वजह से आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मत के हर फ़र्द को तल्क़ीन फ़रमाई है कि वह ख़ैर के दरवाज़े को खोलने वाला और शर के दरवाज़े को बन्द करने वाला बन जाये।

ईसाले सवाब

दूसरी चीज़ जो मय्यित को क़ब्र में नफ़ा देती है वह मय्यित को ग़ैरों की तरफ़ से पहुचंने वाला सवाब है। जिस तरह ज़िन्दगी में किसी तोहफ़े तहाइफ़ से आदमी को ख़ुशी और बशाशत हासिल होती है और वह उनसे दुनिया में नफ़ा उठाता है उसी तरह क़ब्र में जब मय्यित के पास रूहानी तोहफ़े अज्र व सवाब की सूरत में पहुंचते हैं तो उसे ख़ुशी हासिल होती है और वह उन तोहफ़ों से ख़ुश होता है। दुआ-ए-ख़ैर, सद्क़ा, ख़ैरात और हज का सवाब मय्यित को पहुंचने पर उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है। (नववी अ़ला मुस्लिम मुक़द्दमा 1/13)

और इस बारे में सही अहादीस में भी आया है, उसी पर क़ियास करते हुए उ़लमा-ए-हनफ़िया और जमहूर अहले सुन्नत वल्-जमाअ़त का यह मानना है कि दूसरी इबादतें नमाज़, रोज़ा और क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत वग़ैरह का सवाब भी मय्यित को पहुंचाया जा सकता है।

(शरह फ़िक़ह-ए-अक्बर लिल मुल्ला अ़ली क़ारी 225-226)

अ़ल्लामा शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अल्-बह्‌रूर-राइक़ और बदाए अस्-सनाए में नक़्ल किया है कि:

مَنْ صَامَ أَوْ صَلّٰى أَوْ تَصَدَّقَ وَجَعَلَ ثَوَابَهُ لِغَيْرِهٖ مِنَ الْأَمْوَاتِ وَالْأَحْيَاءِ

जो शख़्स रोज़ा रखे, या नमाज़ पढ़े, या सद्क़ा दे और उसका सवाब दूसरे मुर्दा या ज़िंदा शख़्स को पहुंचा दे तो यह

جَازَ وَيَصِلُ ثَوَابُهَا إِلَيْهِمْ عِنْدَ أَهْلِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَةِ. (شامی ٣/١٤٢)

जाइज़ है और अह्ल सुन्नत वल्-जमाअ़त के नज़्दीक उन आमाल का सवाब उन लोगों तक पहुंचता है।

बहरहाल मय्यित को सवाब पहुंचाने की फ़िक्र करनी चाहिए, लेकिन इसमें किसी अमल या वक़्त की तख़्सीस न हो, बल्कि जब भी मौक़ा हो और जैसी ज़रूरत हो सवाब की निय्यत कर ली जाये जैसे रिवायत में है कि हज़रत सअ़्द बिन उ़बादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया तो आप ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से आकर अ़र्ज़ किया कि हज़रत मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया है तो उनके लिए कौन सा सद्क़ा अफ़्ज़ल (सबसे अच्छा) रहेगा? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया पानी (यानी उनकी तरफ़ से आ़म मुसलमानों के लिए पानी का इन्तिज़ाम कर दिया जाये), तो हज़रत सअ़्द बिन उ़बादा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने एक कुंवा खुदवाया और फिर ऐलान कर दिया कि इसका सवाब उनकी वालिदा उम्मे सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हा के लिए है। (मुस्नद अहमद 6/7, सुनन अरबआ, शर्हुस सुदूर 398)

इसी तरह जैसी ज़रूरत हो ईसाले सवाब कर दिया जाये, आजकल जो जाहिलों ने ईसाले सवाब और नियाज़ के ख़ास तरीक़ों को अपना रखा है उनका शरअ़न कोई सुबूत नहीं है। रिवाज पाये हुए तीजे, दसवें और चालीसवें वग़ैरह की रस्में यक़ीनन बिद्अ़त हैं, उनको छोड़ना ज़रूरी है। ईसाले सवाब बिला इल्तिज़ाम (किसी बात को लाज़िम कर लेना) और कोई ख़ास दिन मुक़र्रर किए बग़ैर और बग़ैर किसी तख़्सीस के होना चाहिए।

कुछ मशाइख़ और उ़लमा ने क़ब्र पर हाज़िरी के वक़्त कुछ सूरतें जैसे सूरः यासीन, सूर फ़ातिहा, सूरः इख़्लास, सूरः तकासुर वग़ैरह पढ़कर सवाब पहुंचाने की तल्क़ीन फ़रमाई है। लेकिन इन सूरतों का पढ़ना ही ज़रूरी नहीं है बल्कि क़ुरआन में से कुछ भी पढ़कर ईसाले सवाब किया जा सकता है। ☐ ☐

छटा हिस्सा

क़ियामत के अहवाल

क़ियामत ज़रूर आयेगी

दोबारा ज़िन्दगी और मैदाने महशर में इज्तिमाअ़

हौज़-ए-कौसर

शफ़ाअ़त-ए-कुबरा

हिसाब व किताब का आग़ाज़

मीज़ान-ए-अ़मल

रहमत-ए-खुदावन्दी

पहली फ़स्ल

क़ियामत के हालात

क़ियामत ज़रूर आएगी

अल्लाह तआ़ला ने इस दुनिया को ख़ास वक़्त के लिए आबाद किया है, एक दिन वह ज़रूर आने वाला है जब दुनिया की सारी रौनक़ सेकिंडों में ख़त्म हो जायगी और सारा निज़ाम-ए-काइनात लपेट दिया जायेगा, छोटे छोटे ज़र्रों का तो कहना क्या बड़े बड़े पहाड़, रूई के गालों की तरह उड़े उड़े फिरेंगे, सूरज और चाँद और हज़ारों साल से रौशनी देने वाले सितारे बे-नूर हो जायेंगे, उस वक़्त को सोचकर ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं और बदन पर कपकपी चढ़ जाती है, क़ुरआन और हदीस में क़ियामत के तआ़रूफ़ और उस पर यक़ीन रखने पर बहुत ज़ोर दिया गया है। और वाक़िआ़ यह है कि क़ियामत का इस्तिहज़ार और तसव्वुर ही इंसान को बुराइयों से बचने पर मजबूर कर सकता है, जबकि क़ियामत से ग़फ़लत बरतना इंसान को बे-राह रवी का शिकार बना देता है। बहुत से दूसरे मज़्हब वाले लोग इसी लिए गुमराह हुए कि उनके यहाँ क़ियामत का तसव्वुर ही नहीं वह दुनिया की ज़िन्दगी ही को सब कुछ समझते रहे और जब अगली ज़िन्दगी का उन्होंने तसव्वुर ही क़ाइम न किया तो उसके लिए तैयारी के भी कोई माना बाक़ी न रहे। इसी लिए इस्लाम के बुनियादी और अहम तरीन अ़क़ीदों में से क़ियामत और आख़िरत पर ईमान लाना भी है। क़ुरआन-ए-करीम की मुबारक आयतें और अहादीसे तय्यिबा इस सिलसिले की तफ़्सीलात से भरी पड़ी हैं।

क़ियामत कब आयेगी

क़ियामत का यक़ीनी वक़्त तो अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी को मालूम नहीं। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

إِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ. (لقمان)

बेशक अल्लाह के पास है क़ियामत का इल्म।

और हदीसे जिब्रईल में है कि हज़रत जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम ने जब आंहज़रत

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सवाल किया कि "क़ियामत कब आयेगी?" तो आप ने फ़रमायाः "इस बारे में मेरा इल्म साइल से ज़्यादा नहीं है"। (यानी जिस तरह पूछने वाले को इसकी ख़बर नहीं उसी तरह मुझे भी इसका सही वक़्त मालूम नहीं)। (मुस्लिम शरीफ़ 1/29) तो ज़ाहिर है कि जब हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पता नहीं तो दुनिया में और किसको यह मालूम हो सकता है।

क़ियामत की दस क़रीबी अ़लामतें

हाँ यह बात ज़रूर है कि अहादीस-ए-शरीफ़ा में क़ियामत से पहले की बहुत सी अ़लामतें बतलाई गई हैं, उनमें दो तरह की अ़लामतें हैं एक तो मुत्लक़ अ़लामतें, जैस मुआ़शरे में फैल जाने वाले मुन्करात, बे-हयाइयाँ, फ़हाशियाँ, बद्-दियानती और ना-अह्लों का हुकूमत पर क़ब्ज़ा वग़ैरह और दूसरी क़रीबी अ़लामतें जिनके वुजूद के बाद बस दुनिया की ज़िन्दगी अब और तब की रह जायेगी और उन सब के साबित होने के बाद तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा।

हज़रत हुज़ैफ़ा इब्ने उसैद ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम लोग एक मर्तबा आपस में बातें कर रहे थे। इसी दौरान नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारे पास तश्रीफ़ ले आये और सवाल फ़रमाया कि क्या बातें चल रही थीं? मैंने अ़र्ज़ किया कि हज़रत! हम क़ियामत के बारे में बातें करने में मश्गूल थे। तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक कि तुम उससे पहले दस अ़लामतें न देख लो वे अ़लामतें ये हैं:

1. दुख़ान

(यह एक ख़ास क़िस्म का धुवाँ होगा जो मश्रिक़ व मग़्रिब में 40 दिन तक बराबर फैला रहेगा, जिसके असर से काफ़िरों पर मदहोशी तारी हो जाएगी और अहले ईमान को सिर्फ़ नज़्ला जुकाम जैसी तक्लीफ़ होगी) (मिरक़ात 5/187)

2. दज्जाल

(एक आँख से काना, करीह सूरत दज्जाल ज़ाहिर होगा जिसकी पेशानी पर

"ک، ف، ر" लिखा होगा जिसे हर शख़्स पढ़ लेगा चाहे पढ़ा हुआ हो या न हो, वह अ़जीब व ग़रीब जादू दिखाकर लोगों को गुमराह करेगा और मक्का मदीना के अ़लावा पूरी दुनिया में घूम जायेगा। सारे शैतान, यहूदी और इस्लाम दुश्मन ताक़तें उसके साथ होंगी, वह 40 दिन दुनिया में रहेगा, जिनमें पहला दिन एक साल के बराबर दूसरा एक महीने के बराबर तीसरा एक हफ़्ते के बराबर और बाक़ी दिन आम दिनों के बराबर होंगे। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उसका पीछा करेंगे और उनको देखकर वह ऐसा पिघलने लगेगा जैसे नमक पानी में पिघलने लगता है। यहां तक कि "बाबे लद" पर जाकर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उसे क़त्ल कर डालेंगे) (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन हदीसः 4077)

3. दाब्बतुल अर्ज़

(यह एक अक़्ल को हैरान कर देने वाला जानवर होगा (जिसकी असली सूरत और हालत अल्लाह ही को मालूम है) जो सफ़ा पहाड़ी से निकल कर पूरी दुनिया में घूम जायेगा उसके साथ हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का अ़सा और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अंगूठी होगी, वह अंगूठी से हर मोमिन के चेहरे पर ईमान की मुहर लगा देगा और अ़सा से काफ़िर पर कुफ़्र का निशान लगा देगा, उसके बाद काफ़िर अलग और मोमिन बिल्कुल अलग हो जायेंगे। किसी का ईमान और कुफ़्र छुपा हुआ न रहेगा)

(रूहुल मआ़नी 20/22-24, अल्-मुफ़्हम 7/243)

4. सूरज का मग़्रिब से निकलना

(क़ियामत के बिल्कुल क़रीबी ज़माने में एक दिन सूरज मश्रिक़ से निकलने के बजाये मग़्रिब से निकलेगा और फिर लौटकर मग़्रिब ही में डूब जाएगा। इस अ़लामत के ज़ाहिर होने के बाद तौबा का दरवाज़ा बिल्कुल बन्द हो जायेगा। क्योंकि ईमान बिल्-ग़ैब नहीं रहेगा)

(मुस्लिम शरीफ़ मअ़ल्-मुफ़्हम लिल्-क़रतबी 7/242, फ़तुहुल बारी 14/432)

5. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का नुज़ूल

(हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में मुतवातिर नुसूस (सही अहादीस) से

यह बात साबित है कि आप ज़िन्दा आसमान पर उठाये गये हैं और वहां ज़िन्दा मौजूद हैं और मुक़र्रर वक़्त आने पर दुनिया में नुज़ूल फ़रमाएंगे और शरीअ़ते मुहम्मदिया के मुताबिक़ उम्मत की राहनुमाई फ़रामएंगे और आपके हाथों काना दज्जाल जहन्नम रसीद होगा) (मुस्लिम शरीफ़ 2/401)

6. याजूज माजूज का ख़ुरूज

यह भी अल्लाह तआ़ला की अ़जीब व ग़रीब मख़्लूक़ है। दज्जाल के क़तल हो जाने और पूरी दुनिया में इस्लाम फैलाने के बाद हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ही की ज़िन्दगी में करोड़ों की तादाद में याजूज माजूज पूरी दुनिया में हर जगह उतर आयेंगे, यह इतनी बड़ी तादाद में होंगे कि तमाम मीठे पानी के चश्मे पी पीकर बिल्कुल ख़त्म कर देंगे। और तमाम दुनिया के जानवरों को खा जायेंगे और जब उन्हें कोई नज़र न आयेगा तो अपने तीर आसमान की तरफ़ चलाकर यूँ कहेंगे कि हमने सब दुनिया वालों को ख़त्म कर दिया अब आसमान वालों का नम्बर है। अल्लाह तआ़ला उन तीरों को ख़ून के रंग में रंगकर वापस लौटा देगा जिसपर वह इस ग़लत फ़ह्मी में पड़ जायेंगे कि हमने आसमान वालों को भी ख़त्म कर डाला है। फिर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम उनके हक़ में बद्-दुआ़ करेंगे जिसके नतीजे में अल्लाह तबारक व तआ़ला उनको एक ख़तरनाक बीमारी में मुब्तला करके मार डालेगा और पूरी ज़मीन उन की लाशों से भर जायेगी और सख़्त बद्बू उठ पड़ेगी। फिर अल्लाह तआ़ला बड़े बड़े परिन्दों को भेजेगा जो उनकी लाशों को उठाकर समन्दर में डाल देंगे फिर अल्लाह तआ़ला तेज़ तरीन बारिश से ज़मीन को धो डालेगा और ज़मीन अपने तमाम ख़ज़ानों को उगल देगी यहां तक कि एक अनार एक बड़ी जमाअ़त के लिए और एक ऊंटनी का दूध तमाम घर वालों के लिए काफ़ी हो जायेगा लेकिन यह रौनक़ कुछ सालों तक होगी फिर एक ऐसी उ़म्दा हवा चलेगी जिससे तमाम अहले ईमान की रूह क़ब्ज़ कर ली जायेगी और पूरी दुनिया की ज़मीन पर कुफ़्फ़ार के अ़लावा कोई बाक़ी न रहेगा।

(किताबुल फ़ितन 356-368, अत्-तज़्किरा 780-781, मुस्लिम शरीफ़ 2/402, 2/987)

7. 8. 9. ज़मीन धंसने के तीन वाक़िआ़त

जिनमें से एक वाक़िआ़ मश्रिक़ में दूसरा मग़्रिब में तीसरा जज़ीरतुल अ़रब में

पेश आयेगा।

10. यमन में आग

और सबसे अख़ीर में यमन की तरफ़ से एक आग उठेगी जो लोगों को समेट कर मह्शर की तरफ़ ले जायेगी (कुछ रिवायतों में इस आग के हिजाज़ से निकलने का ज़िक्र है तो मुम्किन है कि दोनों जगह से आग निकल कर लोगों को समेट दे और यह वाक़िआ उस वक़्त होगा जब ज़मीन पर कोई मुसलमान बाक़ी न रहेगा। (मुस्लिम शरीफ़ मअ़ इक्मालिल मुअ़ल्लिम लि काज़ी अ़याज़ 8/442)

अ़लामात की तर्तीब

ऊपर दी गई हदीस में जो अ़लामतें ब्यान की गई हैं वे तर्तीब-वार नहीं हैं कुछ दूसरी हदीसों में तर्तीब-वार अ़लामतें ब्यान हुई हैं मगर उनमें भी इख़्तिलाफ़ है इसलिए इस मोज़ू की तमाम रिवायतों को सामने रखकर मुहक़्क़िक़ीन उ़लमा ने यह राये क़ाइम फ़रमाई है कि ये अ़लामात दो तरह की हैं:

एक तो वे तम्हीदी अ़लामात हैं जिनकी शुरूआ़त ज़मीन धंसने के वाक़िआ़त से होगी और उसके बाद दज्जाल का ज़ाहिर होना, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का नाज़िल होना, दुख़ान और याजूज माजूज के आने के वाक़िआ़त पेश आयेंगे। दूसरे वे अ़लामतें हैं जिनका ताल्लुक़ निज़ामे काइनात की तब्दीली से है इस सिलसिले की शुरूआ़त सूरज के मग़रिब से निकलने से होगी इस अ़लामत को देखकर हर आदमी को अल्लाह की क़ुद्रत पर यक़ीन आ जायेगा इसलिए अब तौबा और ईमान का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा और उसी दिन शाम को "दाब्बतुल अर्ज़" निकलेगा जो काफ़िर और मोमिन के दर्मियान यक़ीनी तौर पर फ़र्क़ पैदा कर देगा, फिर कुछ दिनों के बाद एक ख़ास हवा चलेगी जिसे महसूस करके हर मोमिन वफ़ात पा जायेगा और ज़मीन पर कोई मोमिन बाक़ी नहीं रहेगा, इसके बाद सबसे आख़िरी अ़लामत के तौर पर एक आग आयेगी जो तमाम बाक़ी लोगों को समेटकर मुल्क-ए-शाम की ज़मीन शाम में जमा कर देगी, यहीं मैदाने मह्शर होगा। والله تعالى اعلم

मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है:

وَاٰخِرُ ذٰلِکَ نَارٌ تَخْرُجُ مِنَ الْیَمَنِ تَطْرُدُ النَّاسَ إِلٰی مَحْشَرِهِمْ.

और उन दस अ़लामतों में से आख़िरी अ़लामत एक आग होगी जो यमन से निकलेगी और लोगों को उनके मह़शर (मुल्क-ए-शाम) की तरफ़ खदेड़ देगी।

ऊपर दी गई तर्तीब से काफी हद तक रिवायात का तआ़रूज़ ख़तम हो जाता है। (मुस्तफ़ाद फ़तहुल बारी 14/429, अल्-मुफ़्हम शरह मुख़्तसर मुस्लिम लिल्-क़र्तबी 7/239-243)

क़ियामत से पहले लोगों का (मुल्के) शाम में जमा होना

क़ियामत के बिल्कुल क़रीब आने पर फ़ित्ने के ज़माने में लोगों को ज़बरदस्ती सरज़मीन-ए-शाम में समेट दिया जायेगा और अलग अलग अन्दाज़ में लोग सिमटकर यहां जमा हो जायेंगे। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है:

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: يُحْشَرُ النَّاسُ عَلٰى ثَلاَثِ طَرَائِقَ رَاغِبِيْنَ وَرَاهِبِيْنَ وَاثْنَانِ عَلٰى بَعِيْرٍ وَّثَلاَثَةٌ عَلٰى بَعِيْرٍ وَّأَرْبَعَةٌ عَلٰى بَعِيْرٍ وَّعَشَرَةٌ عَلٰى بَعِيْرٍ وَّيَحْشُرُ بَقِيَّتَهُمُ النَّارُ تَقِيْلُ مَعَهُمْ حَيْثُ قَالُوْا وَتَبِيْتُ مَعَهُمْ حَيْثُ بَاتُوْا وَتُصْبِحُ مَعَهُمْ حَيْثُ أَصْبَحُوْا وَتُمْسِي مَعَهُمْ حَيْثُ أَمْسَوْا.

(بخاری شریف ۲/۹۶۵، حدیث : ٦٥٢٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि लोगों को तीन तरीक़ों पर जमा किया जायेगा, कुछ लोग तो (आफ़ियत की) रग़बत करने वाले और (बद्-अमनी) से डरने वाले होंगे और कुछ दो (शख़्स) एक ऊंट और तीन एक ऊंट पर और चार एक ऊंट पर और दस एक ऊंट पर होंगे और बाक़ी लोगों को आग समेटकर ले चलेगी, अगर वे लोग दोपहर में कहीं आराम करेंगे तो आग भी वहीं ठहरी रहेगी और रात को जहां सोयेंगे तो आग उनके साथ होगी और सुब्ह शाम हर वक़्त आग उनके साथ साथ रहेगी।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़तहुल बारी में अ़ल्लामा ख़िताबी

और अ़ल्लामा तय्यिबी रहमतुल्लाहि अ़लैहिमा के हवाले से ऊपर दी गई हदीस को क़ियामत से पहले के वाक़िए पर मह्मूल फ़रमाया है इस सूरत में मतलब यह होगा कि जब हक़ीक़ी या फ़ित्ने की आग भड़केगी तो एक जमाअ़त (जिसे राग़िबीन और राहिबीन कहा गया है) तो आराम से सवारियों पर सवार होकर पिछले ख़तरों से डरते हुए और आगे के आराम की उम्मीद रखकर मुल्क-ए-शाम पहुंचेगी और दूसरे (जिनकी तरफ़ एक सवारी पर कई कई सवार होने के बारे में इशारा किया गया है) वे लोग होंगे जो पहले से सुस्ती करने की वजह से वक़्त पर अलग अलग सवारी हासिल न कर सकेंगे और एक ऊंटनी पर कई कई लोग नम्बर-वार या एक साथ बैठकर मह्शर की ज़मीन की तरफ़ जायेंगे। उस वक़्त सवारियों की ऐसी कमी हो जायेगी कि आदमी एक ऊंटनी ख़रीदने के लिए अपना शानदार बाग़ तक देने को तैयार हो जायेगा (जैसा कि हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस में है) और तीसरे वे लोग होंगे जिनके पास सवारी ही न होगी तो उन्हें आग हंकाकर पैदल या घसीटकर मह्शर की जगह पर जमा कर देगी।

इसके अ़लावा जिन रिवायतों में मह्शर की सूरत के साथ क़ियामत के दिन का क़िस्सा आया है तो वह उस वक़्त पर मह्मूल करना ज़्यादा बेहतर होगा जब हिसाब वग़ैरह के बाद जन्नत या जहन्नम की तरफ़ ले जाये जायेंगे तो उस वक़्त अह्ले ईमान सवार होंगे और कुफ़्फ़ार को चेहरों के बल घसीटकर निहायत ज़िल्लत से जहन्नम में डाल दिया जायेगा। والله اعلم

(फ़तहुल बारी मुलख़्ख़सन 14/-462-465)

क़ियामत किन लोगों पर क़ाइम होगी

क़ियामत के आने के वक़्त ज़मीन पर कोई अल्लाह अल्लाह कहने वाला बाक़ी न रहेगा। पूरी दुनिया में कुफ़्र और शिर्क का दोर-दोरा होगा यहां तक कि जाहिलियत के ज़माने की तरह अ़रब में भी बुत-परस्ती आ़म हो जायेगी और लोग जानवरों की तरह बे-हयाइयों और बद्-कारियों में खुलेआ़म मुब्तला होंगे। अ़ल्लामा मरवज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी किताबुल फ़ितन में इसकी तफ़्सील इस तरह नक़्ल फ़रमाई है:

فَيَكُوْنُ الَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ إِلَى الشَّامِ لَا يَعْرِفُوْنَ حَقًّا وَّلَا فَرِيْضَةً وَّلَا يَعْمَلُوْنَ بِكِتَابِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَلَا سُنَّةِ نَبِيِّهٖ يُرْفَعُ عَنْهُمُ الْعَفَافُ وَالْوَقَارُ وَيَظْهَرُ فِيْهِمُ الْفُحْشُ وَلَا يَعْرِفُ الرَّجُلُ امْرَأَتَهٗ وَلَا الْمَرْأَةُ زَوْجَهَا يَتَهَارَجُوْنَ هُمْ وَالْجِنُّ مِائَةَ سَنَةٍ تَهَارُجَ الْحَمِيْرِ وَالْكِلَابِ يَقَعُ عَلَى الْمَرْأَةِ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَتَتَهَارَجُ الرِّجَالُ بَعْضُهُمْ بَعْضًا وَيَعْبُدُوْنَ الْأَوْثَانَ وَيَنْسَوْنَ اللّٰهَ تَعَالٰى فَلَا يَعْرِفُوْنَهٗ حَتّٰى أَنَّ الْقَائِلَ لَيَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ مَا فِي السَّمَاءِ مِنْ إِلٰهٍ شِرَارُ الْأَوَّلِيْنَ وَالْآخِرِيْنَ۔ (كتاب الفتن/ ٣٨٠)

तो जो लोग शाम की तरफ़ समेटे जायेंगे वे किसी हक़ और फ़र्ज़ को न पहचानेंगे और किताब और सुन्नत पर अमल न करने वाले होंगे, हया और वक़ार व मुरव्वत से महरूम होंगे, उनमें उरयानियत (नंगापन) फैल जायेगी, शौहर बीवी को और बीवी शौहर को न पहचानेगी, इंसान और जिन्नात सौ साल तक गधों और कुत्तों की तरह खुलेआम ज़िनाकारी करेंगे, आदमी जिन्नात और इंसान औरतों से मुजामअ़त करेंगे और मर्द मर्द से अपनी ख़्वाहिश पूरी करेंगे और बुतों की पूजा करेंगे और अल्लाह तआ़ला को बिल्कुल भूल जायेंगे यहां तक कि एक, दूसरे से कहेगा कि आसमान में कोई ख़ुदा नहीं है, ये लोग पहले आने वाले और बाद में आने वाले सब लोगों से बद्-त्तरीन लोग होंगे।

इसके बाद अचानक क़ियामत आ जायेगी और फिर किसी भी काम के लिए एक सेकिंड की भी मोहलत न मिलेगी। इर्शाद-ए-ख़ुदावन्दी है:

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ. قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ. (السبا ٢٩-٣٠)

और कहते हैं कब है यह वादा अगर तुम सच्चे हो, आप फ़रमा दीजिए कि तुम्हारे लिए वादा है एक दिन का न देर करोगे उससे एक घड़ी न जल्दी।

और बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है:

وَلَتَقُوْمَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ نَشَرَ الرَّجُلَانِ بَيْنَهُمَا ثَوْبَهُمَا فَلَا يَتَبَايَعَانِهٖ وَلَا يَطْوِيَانِهٖ، وَلَتَقُوْمَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ

और ज़रूर क़ियामत क़ाइम होगी जबकि दो शख़्स आपस में अपने कपड़े फैलाने को तैयार होंगे मगर न उसे बेच पायेंगे और न लपेट पायेंगे और क़ियामत आ जायेगी जबकि एक आदमी अपनी

انصَرَفَ الرَّجُلُ بِلَبَنِ لِقْحَتِهِ فَلَا يَطْعَمُهُ وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَهُوَ يَلِيطُ حَوْضَهُ فَلَا يَسْقِي فِيهِ وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ رَفَعَ أَحَدُكُمْ أُكْلَتَهُ إِلَى فِيهِ فَلَا يَطْعَمُهَا.

(بخاری شریف۲/۹۶۳، حدیث: ٦٥٠٦)

ऊंटनी का दूध निकालकर लायेगा मगर उसे पी न पायेगा और क़ियामत क़ाइम हो जायेगी जबकि एक शख़्स अपने हौज़ की लिपाई कर रहा होगा मगर उसमें जानवरों को पानी न पिला पायेगा और ज़रूर क़ियामत आ जायेगी कि एक शख़्स लुक़्मा मुँह में लेना चाहता होगा मगर मुँह तक न ले जा सकेगा (कि क़ियामत आ जायेगी)।

जब सूर फूंका जायेगा

अल्लाह तआ़ला ने अपने एक मुक़र्रब फ़रिश्ते हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम को क़ियामत का सूर (एक सींग जिस में फूंक मारने से आवाज़ निकलेगी) फूंकने के लिए तैयार फ़रमा रखा है और यह फ़रिश्ता सूर फूंकने के लिए बस खुदा तआ़ला के इशारे का मुन्तज़िर है। एक हदीस में आया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

كَيْفَ أَنْعَمُ وَصَاحِبُ الصُّورِ قَدِ الْتَقَمَ الْقَرْنَ وَاسْتَمَعَ الْأُذُنَ مَتَى يُؤْمَرُ بِالنَّفْخِ. (رواه الترمذی۲/٦٩، فتح الباری ١٤/٤٤٨)

मैं कैसे मुत्मइन रह सकता हूँ जबकि सूर का ज़िम्मेदार (फ़रिश्ता) सूर मुँह में डालकर कान अल्लाह की तरफ़ लगाये है कि कब सूर फूंके जाने का हुक्म मिल जाये।

तो जब मुक़र्रर वक़्त आयेगा और हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिस्सलाम रब्बुल आ़लमीन के हुक्म से पहला सूर फूंकेंगे तो उसकी दहशतनाक आवाज़ सुनते ही हर शख़्स बेहोश हो जायेगा। हामिला औ़रतें मारे डर के अपने हमल गिरा देंगी, माएं अपने दूध पीते बच्चो को भूल जायेंगी। असमान फट पड़ेंगे, पहाड़ उड़े-उड़े फिरेंगे, चाँद सूरज बे-नूर हो जायेंगे। मतलब यह कि दुनिया का सारा निज़ाम बिगड़ जायेगा। इर्शाद-ए-खुदावन्दी है:

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ، وَّحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا

फिर जब फूंका जावे सूर में एक बार फूंकना और उठायी जावे ज़मीन और

دَكَّةً وَّاحِدَةً، فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ. وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ.(الحاقة ١٣-١٦)

पहाड़ फिर कूट दिये जायें एक बार फिर उस दिन हो पड़े वह हो पड़ने वाली और फट जाये आसमान, फिर वह उस दिन बिखर रहा है।

उस दिन अल्लाह तआ़ला ज़मीन और आसमानों को लपेटकर अपने हाथ में रखेगा और फ़रमायेगा:

اَنَا الْمَلِكُ اَيْنَ مُلُوكُ الْاَرْضِ؟
(بخاری شریف ٢/٩٦٥، حدیث: ٦٥١٩)

मैं ही बादशाह हूँ, कहां गये दुनिया के बादशाह!

इसके बाद 40 साल तक पूरी दुनिया वीरान रहेगी। (फ़तहुल बारी 14/450)

दूसरी फ़स्ल

दोबारा ज़िन्दगी और मैदाने महशर में जमा होना

फिर दूसरी मर्तबा सूर फूंका जायेगा, जिसकी वजह से तमाम मुर्दे ज़िन्दा हो उठेंगे और बे-इख़्तियार मैदाने महशर की तरफ़ चल पड़ेंगे। क़ुरआन-ए- करीम में अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमायाः

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَاهُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ، قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا، هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ، اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَاهُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ.

(سورهٔ یٰسین آیت ۵۱-۵۳)

और फूंकी जावे सूर फिर तभी वह क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ फैल पड़ेंगे, कहेंगे कि ऐ ख़राबी हमारी! किसने उठा दिया हमको हमारी नींद की जगह से। यह वह है जो वादा किया था रहमान ने और सच कहा था पैग़म्बरों ने, बस एक चिंघाड़ होगी, फिर उसी दम वह सारे हमारे पास पकड़े चले आयेंगे।

और उस दिन सबसे पहले हमारे आक़ा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम होश में आयेंगे, आप फ़रमाते हैं:

فَاِنَّ النَّاسَ يَصْعَقُوْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَاَكُوْنُ اَوَّلَ مَنْ يُّفِيْقُ فَاِذَا مُوْسٰى بَاطِشٌ بِجَانِبِ الْعَرْشِ فَلَا اَدْرِيْ اَكَانَ مُوْسٰى فِيْمَنْ صَعِقَ وَاَفَاقَ قَبْلِيْ اَوْكَانَ مِمَّنِ اسْتَثْنَى اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ.

(بخاری شریف ۹۷۲/۲، رقم: ۶۵۷۱)

लोग क़ियामत के दिन बेहोश होंगे फिर मैं सबसे पहले होश में आऊंगा, तो मैं देखूंगा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम अ़र्श का एक कोना पकड़े खड़े हैं, तो मुझे नहीं मालूम कि क्या हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बेहोश होने वालों में थे और मुझसे पहले होश में आ गये या वह उन लोगों में से हैं जिनको अल्लाह तआ़ला ने बेहोशी से मुस्तसना (अलग) फ़रमाया है।

इमाम क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपने शैख़ अबुल अ़ब्बास से नक़्ल

फ़रमाते हैं कि जब पहली मर्तबा सूर फूंका जायेगा तो जो लोग ज़िन्दा होंगे वे मर जायेंगे और हज़रात अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम जो अगरचे पहले से वफ़ात पा चुके हैं मगर उनको एक ख़ास बर्ज़ख़ी ज़िन्दगी हासिल है तो वह उस सूर फूंके जाने पर बेहोश हो जायेंगे, फिर जब दूसरी मर्तबा सूर फूंका जायेगा तो सबसे पहले हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़शी से ठीक होंगे और जब आप दरबारे ख़ुदावन्दी में पहुचेंगे तो देखेंगे कि सय्यिदना हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पहले से ही अल्लाह तआ़ला के अ़र्श का पाया पकड़े खड़े हैं। तो आपको इस बारे में अंदेशा हो गया कि क्या हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को इस मौक़े पर बेहोशी से महफ़ूज़ रखा गया (क्योंकि वह तूर पहाड़ पर तजल्ली के वक़्त दुनिया में बेहोश हो चुके थे) या यह कि उन्हें आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले बेहोशी ख़त्म होने की फ़ज़ीलत अ़ता की गई है। बहरहाल यह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की एक जुज़ई फ़ज़ीलत है इस से कुल्ली फ़ज़ीलत लाज़िम नहीं आती। (अत्तज़्किरा लिल्-क़ुर्तबी 191-192, रूहुल मआ़नी 24/29)

कुछ रिवायतों में यह भी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिस वक़्त अपने रोज़ा-ए-अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लायेंगे तो 70 हज़ार फ़रिश्ते भी एज़ाज़ के तौर पर आपके साथ होंगे और आप के दाएं बाएं सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु और सय्यिदना हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु होंगे। (अतज़्किरा 214)

इसके बाद जन्नतुल बक़ीअ़ (मदीना मुनव्वरा) और जन्नतुल मुअ़ल्ला (मक्का मुअ़ज़्ज़मा) में दफ़्न हज़रात आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जुलूस में शामिल होकर मैदाने हश्र की तरफ़ चलेंगे।

अल्लाह की अज़्मत व जलाल का ज़बरदस्त मुज़ाहरा

इंसान जब मर जाता है तो उसका बदन अगरचे गल सड़ जाये और फ़ना हो जाये लेकिन उसकी रीढ़ की हड्डी के नीचे एक दाना हर हाल में कहीं न कहीं अल्लाह के इल्म में मेहफ़ूज़ रहता है और उसी दाने पर अल्लाह तआ़ला दोबारा जिस्म अ़ता फ़रमाकर मख़्लूक़ात को ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेगा। हर शख़्स को 60 हाथ का बदन अ़ता किया जायेगा। उस दिन सब बे-ख़तूना और बे-लिबास होंगे और सब बारगाहे इलाही की तरफ़ बे-इख़्तियार दोड़ पड़ेंगे। दुनिया के तमाम

तकब्बुर (गुरूर) करने वालों का गुरूर टूट जायेगा। अमीर व ग़रीब, ग़ुलाम और आक़ा, हाकिम और रिआया सब अह्कमुल हाकिमीन के सामने आजिज़ी के साथ हाज़िर होंगे, दहशत और हैबत के मारे किसी को दम मारने की हिम्मत न होगी, नफ़्सा नफ़्सी का आलम होगा और जो जितना बड़ा ख़ुदा का मुज्रिम होगा उतनी ही ज़्यादा ज़िल्लत और बदहाली और दहशत नाक घबराहट उस पर तारी होगी, उस हौलनाक दिन का एक मंज़र क़ुरआन-ए-करीम ने इस तरह ब्यान फ़रमाया है:

لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ، يَوْمَ هُمْ بَارِزُوْنَ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ، لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ، لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ، اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ، لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ، اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ، وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ، مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ. (الغافر آيت: ١٦-١٨)

ताकि वह डराये मुलाक़ात के दिन से जिस दिन वे लोग निकल खड़े होंगे, छुपी न रहेगी अल्लाह पर उनकी कोई चीज़, किस का राज है उस दिन? अल्लाह का है, अकेला है दबाव वाला, आज बदला मिलेगा हर जी को जैसा उसने कमाया बिल्कुल ज़ुल्म नहीं आज। बेशक अल्लाह जल्द लेने वाला है हिसाब और ख़बर सुना दीजिए उस नज़्दीक आने वाले दिन की जिस वक़्त दिल पहुचेंगे गलों को, तो वे दबा रहे होंगे, कोई नहीं गुनहगारों को दोस्त और न सिफ़ारिशी कि जिनकी बात मानी जाये।

अल्लाहु अक्बर! उस दिन के तसव्वुर से ही दिल कांप उठता है और बदन पर कपकपी चढ़ जाती है, वहां दुनिया का मनूसब, माल व दौलत और ख़ानदान कुछ काम न आयेगा, कामियाब सिर्फ़ और सिर्फ़ वही होगा जिसने उस दिन के आने से पहले ही अह्कमुल हाकिमीन की ख़ुशनूदी हासिल करने का इन्तिज़ाम कर रखा होगा, ऐ रब्ब-ए-करीम! हम सबको उस दिन की सख़्तियों से अमान अ़ता फ़रमा। आमीन सुम्-म आमीन!

मैदाने मह्शर की ज़मीन

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ، وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ، سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ، لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ، اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ. (ابراهيم ٤٨-٥١)

जिस दिन बदली जाये इस ज़मीन से और ज़मीन और बदले जायें आसमान और लोग निकल खड़े हों सामने अल्लाह अकेले ज़बरदस्त के और देखे तू गुनहगारों को उस दिन आपस में जकड़े हुए ज़ंजीरों में, कुरते उनके हैं गंधक के और ढांके लेती है उनको आग, ताकि बदला दे अल्लाह हर एक जी को, उसकी कमाई का, बेशक अल्लाह जल्द करने वाला है हिसाब।

इस ज़मीन और आसमान की तबूदीली के बारे में हज़रात उ़लमा की 3 अलग अलग तश्रीहात हैं:

1. बहुत से हज़रात ने फरमाया कि यह तबूदीली हक़ीक़ी और ज़ाती होगी और मोजूदा ज़मीन की जगह ऐसी ज़मीन बिछा दी जायेगी जिस पर किसी गुनाह का सुदूर न हुआ होगा, हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की एक मौक़ूफ़ रिवायत से इसकी ताईद होती है इस ऐतिबार से यह तबूदीली दोनों सूर फूंकने के दर्मियानी वक़्त में पेश आयेगी, यानी पहली मर्तबा सूर फूंके जाने पर तो तमाम ज़मीन और आसमान बिखर जायेंगे, उसके बाद हश्र क़ाइम होने से पहले पहले अल्लाह तआ़ला नये आसमान और नई ज़मीन पैदा फ़रमा देगा और उसी नई ज़मीन पर हश्र क़ाइम होगा।

(फ़तुहुल बारी 14/457)

2. कुछ हज़रात का ख़्याल यह है कि आसमान और ज़मीन की तबूदीली हक़ीक़ी नहीं होगी, बल्कि उस की सिफ़ात बदल दी जायेंगी, चुनांचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत में है कि क़ियामत के दिन ज़मीन को चमूड़े की तरह खींच दिया जायेगा और उसी पर ख़लाइक़ को जमा किया जायेगा और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत में है कि ज़मीन के तमाम पहाड़ों और इमारतों को बराबर करके बिल्कुल चट्यल मैदान में तब्दील कर दिया जायेगा। (फ़तुहुल बारी 14/458)

3. और तीसरी राये यह है कि ज़मीन और आसमान की तबूदीली पहले मरहले

में सूर फूंके जाने पर तो सिर्फ़ सिफ़ात के ऐतिबार से होगी और फिर उन्हें लपेट कर उनकी जगह दूसरी ज़मीन और आसमान क़ाइम कर दिये जायेंगे।

(अत्तज़्किरा, फ़त्हुल बारी 14/456)

मौजूदा ज़मीन को रोटी बना दिया जायेगा

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

تَكُوْنُ الْاَرْضُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ خُبْزَةً وَّاحِدَةً يَتَكَفَّؤُهَا الْجَبَّارُ بِيَدِهٖ كَمَا يَكْفَأُ اَحَدُكُمْ خُبْزَةً فِي السَّفَرِ نُزُلًا لِّاَهْلِ الْجَنَّةِ، فَاَتٰى رَجُلٌ مِّنَ الْيَهُوْدِ فَقَالَ بَارَكَ الرَّحْمٰنُ عَلَيْكَ يَا اَبَا الْقَاسِمِ اَلَا اُخْبِرُكَ بِنُزُلِ اَهْلِ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ: بَلٰى. قَالَ: تَكُوْنُ الْاَرْضُ خُبْزَةً وَّاحِدَةً كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ فَنَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ اِلَيْنَا ثُمَّ ضَحِكَ حَتّٰى بَدَتْ نَوَاجِذُهٗ ثُمَّ قَالَ: اَلَا اُخْبِرُكَ بِاِدَامِهِمْ؟ قَالَ: اِدَامُهُمْ بَالَامٌ وَنُوْنٌ قَالُوْا: وَمَا هٰذَا؟ قَالَ: ثَوْرٌ وَّنُوْنٌ يَاْكُلُ مِنْ زَائِدِ

क़ियामत के दिन ज़मीन एक रोटी बन जायेगी, जिसे अल्लाह तबारक व तआ़ला (बराबर करने के लिए) अपने मुबारक हाथ से इस तरह उलटे पुलटेगा जैसे तुम में से कोई आदमी सफ़र में (जाते वक़्त) अपनी रोटी को उलटता पुलटता है, (यही रोटी), अहले जन्नत के लिए पहले नाश्ते की जगह पेश की जायेगी, फिर एक यहूदी शख़्स ने आकर कहा कि ऐ अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह रह्मान व रहीम आप पर बरकत नाज़िल फ़रमाये क्या मैं आपको क़ियामत के दिन अह्ले जन्नत की ज़ियाफ़त (मेह्मान नवाज़ी) के बारे में न बताऊं? आपने फ़रमाया कि क्यों नहीं? तो उसने कहा कि ज़मीन रोटी बन जायेगी। जैसा कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया था यह सुनकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारी तरफ़ देखकर मुस्कराये यहां तक कि आपके सामने के दांत ज़ाहिर हो गये, फिर उस यहूदी ने कहा कि मैं आपको अह्ले जन्नत के सालन

كَبِدِهِمَا سَبْعُوْنَ اَلْفًا.

(بخاری شریف ۲/۹٦٥، رقم: ٦٥٢٠)

के बारे में न बताऊं? उनका सालन बैल और मछली का होगा (जो इतने बड़े होंगे) कि उनके कलेजे के ज़ाइद हिस्से से सत्तर हज़ार लोग खायेंगे।

इस हदीस से मालूम हुआ कि मैदान-ए-हश्र में अहले ईमान जन्नती भूखे नहीं रहेंगे बल्कि उसी ज़मीन को उनके लिए रोटी बना दिया जायेगा और यह एक तरह से अल्लाह की तरफ़ से ऐज़ाज़ी नाश्ता होगा और अल्लाह की क़ुदरत-ए-कामिला से यह हरगिज़ बईद नहीं है, हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं:

وَيُسْتَفَادُ مِنْهُ اَنَّ الْمُؤْمِنِيْنَ لَا يُعَاقَبُوْنَ بِالْجُوْعِ مِنْ طُوْلِ زَمَانِ الْمَوْقِفِ بَلْ يَقْلِبُ اللّٰهُ لَهُمْ بِقُدْرَتِهٖ طَبْعَ الْاَرْضِ حَتّٰى يَاْكُلُوْنَهَا مِنْ تَحْتِ اَقْدَامِهِمْ مَاشَآءَ اللّٰهُ بِغَيْرِ عِلَاجٍ وَّلَا كُلْفَةٍ وَّيَكُوْنُ مَعْنٰى قَوْلِهٖ نُزُلًا لِّاَهْلِ الْجَنَّةِ اَىِ الَّذِيْنَ يَصِيْرُوْنَ اِلَى الْجَنَّةِ اَعَمُّ مِنْ كَوْنِ ذٰلِكَ يَقَعُ بَعْدَ الدُّخُوْلِ اِلَيْهَا اَوْ قَبْلَهٗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ.

(فتح الباری ١٤/٤٠٥)

और इस से यह बात साबित होती है कि क़ियामत के दिन मैदान-ए-महशर के लम्बे अर्से में अहले ईमान को भूखा नहीं रखा जायेगा बल्कि अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से उनके लिए ज़मीन की हक़ीक़त और माहियत बदल देगा चुनांचे मोमिनीन अपने अपने क़दमों के नीचे से बग़ैर किसी तक्लीफ़ और परेशानी के जो अल्लाह चाहेगा खायेंगे और ज़मीन के अहले जन्नत के लिए नाश्ता होने का मतलब यह होगा कि यह उन लोगों को दिया जायेगा जो जल्दी ही जन्नत में पहुंचने वाले हैं, यानी कि इस लफ़्ज़ से उमूमी मतलब मुराद है जन्नत में दाख़िले से पहले के लिए और बाद के लिए भी। واللہ اعلم

इस सिलसिले में मुहद्दिसे कबीर हज़रत अल्लामा अनूवर शाह कश्मीरी रहमतुल्लाहि अलैहि की राय यह है कि महशर में लोगों के क़दम तीन जगह अलग अलग वक़्त में होंगे, सबसे पहले सब महशर की ज़मीन पर होंगे, फिर सब पुल सिरात पर जायेंगे जिनमें से कुछ जहन्नम में गिर जायेंगे और बाक़ी बचकर जन्नत की ज़मीन पर पहुंच जायेंगे, जब सब लोग महशर की ज़मीन से

हट जायेंगे और यह ज़मीन ख़ाली हो जायेगी तो उस वक़्त अल्लाह तआ़ला उस ज़मीन को रोटी बनाकर जन्नत में दाख़िल होने वालों को पहली मेह्मानी के तौर पर पेश फ़रमायेगा, واللہ اعلم (फ़ैज़ुल बारी 4/432)

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की एक रिवायत से भी इसकी ताईद होती है।

यहां यह इश्काल हो सकता है कि दुनिया की ज़मीन तो रोड़े और पत्थरों पर मुश्तमिल है उसे अह्ले जन्नत कैसे खा सकते हैं? तो उसका हल फ़रमाते हुए हुज्जतुल इस्लाम हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि उस दिन ज़मीन को छान कर कसीफ़ चीज़ें अलग कर ली जायेंगी और अच्छी चीज़ों को रोटी की शक्ल दी जायेगी। यही अक़्ल का तक़ाज़ा है क्योंकि ज़मीन में हर तरह की इस्तिदादें (क़ाबिलिय्यत) मौजूद हैं और उनमें इम्तियाज़ (फ़र्क़) करना अल्लाह तआ़ल के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं।

(मआ़रिफ़ुल अकाबिर 266, ब-हवालाः हसनुल अ़ज़ीज़ 1/146)

मैदान-ए-मह्शर की इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत

मैदाने मह्शर में तमाम पहले आने वाले और बाद में आने वाले करोड़ों और अरबों जिन्नात और इंसान सब एक वक़्त जमा होंगे और हर शख़्स एक दूसरे को देखता होगा और हर काम का मुशाहदा करता होगा, उस दिन जिसे इ़ज़्ज़त मिलेगी उससे बढ़कर कोई इ़ज़्ज़त नहीं और जो बद्-नसीब उस दिन रुस्वा हो जायेगा उससे बढ़कर कायनात में कोई ज़िल्लत नहीं। ज़रा ग़ौर फ़रमाइये दुनिया में अगर किसी को कामियाबी मिल जाये तो आख़िर कितने लोगों को उसकी ख़बर हो पाती है उस ख़बर होने की आख़िरी हद यह है कि दुनिया में मौजूद बस ज़िंदा लोगों को पता चल जाये लेकिन जो लोग क़ब्र में जा चुके या बाद में पैदा होंगे उन्हें उस कामियाबी की कुछ ख़बर न मिल पायेगी। इस तरह यह इ़ज़्ज़त भी बहुत थोड़ी सी है, उसके बर-ख़िलाफ़ जब मैदाने मह्शर में किसी ख़ुश नसीब बंदे की कामियाबी का ऐलान होगा और सबके सामने खुलेआ़म उसका एज़ाज़ और इक्राम किया जायेगा तो तमाम पहले और बाद में आने वाले उससे बाख़बर होंगे और इ़ज़्ज़त का दाइरा इतना बड़ा होगा जिसको लफ़्ज़ों में ब्यान नहीं किया जा सकता, इसलिए वहां की इ़ज़्ज़त ही हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त कहे

जाने के लाइक़ है। यही हाल वहां की ज़िल्लत का है, दुनिया की बड़ी से बड़ी ज़िल्लत भी थोड़ी सी है लेकिन अल्लाह न करे मैदाने मह्शर की ज़िल्लत से सामना हो जाये तो उससे बढ़कर कोई ज़िल्लत नहीं हो सकती, इसी लिए क़ुरआन-ए-करीम में जगह जगह मैदाने मह्शर में काफ़िरों की ज़िल्लतनाक हालत के मनाज़िर ब्यान फ़रमाये हैं। कुछ आयतें देखिये:

(۱) وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ، اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ، مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ، وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ.

(سورہ ابراھیم: آیت ۴۲،۴۳)

और हरगिज़ मत ख़्याल कर कि अल्लाह तआला बे-ख़बर है उन कामों से जो करते हैं बे-इंसाफ़, उनको तो ढील दे रखी है उस दिन के लिए कि पथरा जायेंगी आँखें, दोड़ते होंगे ऊपर उठाये अपने सर, फिरकर नहीं आयेंगी उनकी तरफ़ उनकी आँखें और दिल उनके उड़ गये होंगे।

(۲) وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا.

(سورہ بنی اسرائیل آیت ۹۷)

और उठायेंगे हम उनको क़ियामत के दिन, चलेंगे मुँह के बल, औंधे और गूंगे और बहरे।

(۳) وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى، قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا، قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى.

(سورہ طٰہ آیت: ۱۲۴ تا ۱۲۶)

और जिसने मुँह फेरा मेरी याद से तो उसको मिलनी है गुज़रान तंगी की और लाएंगे उसको हम क़ियामत के दिन अंधा, वह कहेगा ऐ रब क्यों उठा लाया तू मुझको अंधा और मैं तो था देखने वाला, फ़रमाया यूंहि पहुंची थीं तुझ को हमारी आयतें, फिर तूने उनको भुला दिया और इसी तरह आज तुझको भुला देंगे।

(۴) وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ، رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ.

और कभी तू देखे जिस वक़्त कि मुन्किर अपने रब के सामने सर डाले हुए होंगे (और कह रहे होंगे) ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया अब हमको भेज दे कि हम करें भले काम, हमको

(الم سجدہ/۲۱، آیت ۱۲)

यक़ीन आ गया।

(۵) يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا، يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا، نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا.

(سورہ طٰہٰ آیت ۱۰۲ تا ۱۰۴)

जिस रोज़ सूर में फूंक मारी जायेगी और हम उस दिन मुजि़रम लोगों को इस हालत से जमा करेंगे कि उनकी आँखें नीली होंगी, चुपके चुपके आपस में बातें करते होंगे कि तुम लोग सिर्फ़ दस रोज़ रहे होगे जिसके बारे में वह बात करेंगे, उसको हम ख़ूब जानते हैं जबकि उन सब में का ज़्यादा साइबुर्राय (अच्छी राय रखने वाला) यूँ कहता होगा कि नहीं! तुम तो एक ही रोज़ रहे हो।

ये तो कुछ मनाज़िर ब्यान किये गये हैं वर्ना उस दिन बे-ईमानों और बे-अ़मलों को जिस बद्‌तरीन ज़िल्लत का सामना होगा उस के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता और उसके मुक़ाबले में अह्ले ईमान, जिस इ़ज़्ज़त व तक्‌रीम से नवाज़े जाएंगे वह भी नाक़ाबिले ब्यान है। अल्लाह तआ़ला हम सबको वहां की रूस्वाई से बचाये और हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त से नवाज़े। आमीन

मैदाने मह्शर में सबसे पहले लिबास पोशी (कपड़े पहनाना)

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की रिवायत है। वह फ़रमाते हैं:

قَامَ فِينَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فَقَالَ: إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ الآية. وَإِنَّ أَوَّلَ الْخَلَائِقِ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ الْخَلِيلُ الخ.

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारे दर्मियान तक़रीर करने के लिए खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया कि तुम सब को नंगे पैर, नंगे बदन, ख़त्‌ना के बग़ैर जमा किया जायेगा, (इर्शादे ख़ुदावन्दी है) "जैसे हम ने पहली मर्तबा बनाया उसी तरह हम दोबारा पैदा कर देंगे" और मख़्लूक़ात में जिसे क़ियामत के दिन सबसे पहले लिबास पहनाया

जायेगा वह हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़ला नबिय्यिना व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम हैं।

(بخاری شریف ۲/۹۶۶،رقم: ۶۵۲۶)

एक और रिवायत में है कि क़ियामत में सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को दो क़िब्ती कपड़ों का लिबास पहनाया जायेगा फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अ़र्श की दाईं तरफ़ धारी दार जोड़ा पहनाया जायेगा।

अब सवाल यह है कि यह ऐज़ाज़ सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को दिये जाने की वजह क्या है? तो इस बारे में उ़लमा के बहुत से अक़्वाल हैं:

1. अ़ल्लामा क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि वजह यह है कि जब आप को नमूरूद ने आग में डालने का हुक्म दिया तो आप को अल्लाह के रास्ते में बे-लिबास किया गया, इसके बदले के तौर पर सबसे पहले आपको लिबास पहनाया जायेगा।

2. अ़ल्लामा हलीमी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि: क्योंकि ज़मीन पर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से ज़्यादा अल्लाह से ख़ौफ़ करने वाला कोई न था इसलिए आप को लिबास पहनाने में जल्दी की जायेगी ताकि आपका दिल मुत्मइन हो जाये।

3. और कुछ आसार से यह मालूम होता है कि उस दिन लोगों पर फ़ज़ीलत ज़ाहिर करने के लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के साथ यह मुआ़मला किया जायेगा।

और इस एज़ाज़ी मुआ़मले में यह लाज़िम नहीं आता कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को हमारे आक़ा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर भी मुतलक़ फ़ज़ीलत हासिल हो, इसलिए कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जो जोड़ा पहनाया जायेगा वह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के जोड़े से ज़्यादा शानदार होगा, तो अगरचे अव्वलियत न होगी लेकिन उसकी उ़म्दगी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मुक़ाम और मर्तबे का पता देती है।

(फ़त्हुल बारी 14/468)

महशर में पसीना ही पसीना

मैदाने महशर की हौलनाक हालतों में से एक हालत यह भी होगी कि उस दिन हर बद्-अमल शख़्स अपनी बद्-अमली के बराबर पसीने में डूबा होगा और इस क़द्र पसीना निकलेगा कि महशर की ज़मीन में 70 हाथ तक नीचे चला जायेगा, बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि:

يَعْرَقُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يَذْهَبَ عَرَقُهُمْ فِى الْاَرْضِ سَبْعِيْنَ ذِرَاعًا وَّيُلْجِمُهُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ اٰذَانَهُمْ.

(بخاری شریف ۲/۹٦۷، حدیث/٦۵۳۲)

क़ियामत के दिन लोग पसीने में डूबे होंगे, यहां तक कि उनका पसीना ज़मीन से 70 हाथ तक नीचे उतर जायेगा और उनका पसीना लगाम की तरह चिपट जायेगा यहां तक कि उनके कानों तक पहुंच जायेगा।

और मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अ़न्हु की रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि:

يُدْنِى الشَّمْسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْخَلْقِ حَتّٰى تَكُوْنَ مِنْهُمْ كَمِقْدَارِ مِيْلٍ قَالَ سُلَيْمُ بْنُ عَامِرٍ وَاللّٰهِ مَآ أَدْرِيْ مَا يَعْنِي بِالْمِيْلِ مَسَافَةَ الْأَرْضِ أَوِ الْمِيْلِ الَّتِيْ تُكْحَلُ بِهِ الْعَيْنُ قَالَ فَتَكُوْنُ النَّاسُ عَلٰى قَدْرِ أَعْمَالِهِمْ فِى الْعَرَقِ فَمِنْهُمْ مَنْ يَكُوْنُ إِلٰى كَعْبَيْهِ وَمِنْهُم مَن يَكُوْنُ إِلٰى رُكْبَتَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُوْنُ إِلٰى

क़ियामत के दिन सूरज मख़्लूक़ात से बिल्कुल क़रीब आ जायेगा यहां तक कि लोगों से उसका फ़ासला एक मील के बराबर रह जायेगा। सुलैम बिन आ़मिर फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम मुझे यह नहीं मालूम कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मील से ज़मीन की दूरी मुराद ली है या वह मील (सुरमा की सलाई) मुराद है जिससे आँख में सुरमा लगाया जाता है, आगे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कुछ लोग अपने आमाल के ऐतिबार से पसीने में डूबे हुए होंगे। कुछ लोग ऐसे होंगे जिनका पसीना टख़्नों में डूबा हुआ होगा, कुछ का

حَقْوَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يُلْجِمُهُمُ الْعَرَقُ إِلْجَامًا وَأَشَارَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ بِيَدِهِ إِلَى فِيْهِ.

(مسلم شريف ٢/٣٨٤، الترغيب والترهيب ٤/٢٠٩)

घुटनों तक होगा, कुछ का पीठ तक होगा और कोई पूरा ही पसीने में डूबा हुआ होगा और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मुबारक हाथ से मुँह की तरफ़ इशारा फ़रमाया (यानी पसीना मुँह तक पहुंच रहा होगा)।

इस रिवायत से मालूम हुआ कि एक ही मैदान में जबकि भीड़ इतनी ज़्यादा होगी कि हर शख़्स को सिर्फ़ अपना क़दम ही टिकाना मिल सकेगा लोग अपनी अपनी बद्-आमालियों के बराबर पसीने में डूबे होंगे यह ऐसी हौलनाक सूरत है कि इंसानी अक़्ल उसके बारे में सोचने से भी मजबूर है मगर उस पर ईमान लाना ज़रूरी व लाज़िम है। (फ़त्हुल बारी 14/481)

उस हौलनाक दिन में अल्लाह के कुछ ख़ास बन्दे ऐसे भी होंगे जिनको सूरज की गर्मी बिल्कुल भी नुक़्सान न पहुंचा सकेगी और वे उस दिन भी अमून व अमान और आफ़ियत में होंगे। एक रिवायत में हैः وَلَا يَضُرُّ حَرُّهَا يَوْمَئِذٍ مُؤْمِنًا وَلَا مُؤْمِنَةً यानी उस दिन सूरज की गर्मी से मोमिन मर्द और औरत को कोई तक्लीफ़ न होगी इससे मुराद कामिल मोमिनीन हैं, जैसे हज़रात अम्बिया अलैहिमुस्सलाम, सिद्दीक़ीन और शुहदा कि उनको मैदाने महशर में किसी तक्लीफ़ का सामना न होगा। (फ़त्हुल बारी 14/480-481, अत्तज़्किरा 275-276)

महशर के दिन की लंबाई

महशर का दिन दुनिया के आम दिनों की तरह नहीं होगा बल्कि दुनिया के दिनों के ऐतिबार से उसकी मिक़्दार 50 हज़ार सालों के बराबर होगी जैसा कि क़ुरआन-ए-मजीद में सूरः मआरिज में इर्शाद फ़रमाया गया है और बहुत सी हदीसों में भी यह मिक़्दार आई है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर कामिल:1378)

इस लंबाई की वजह से काफ़िरों और बद्-अमलों का हाल ख़राब से ख़राब हो जायेगा और वह दिन काटे नहीं कटेगा लेकिन अल्लाह तबारक व तआला अपनी क़ुद्रते कामिला से उस लंबे दिन को अहले ईमान के लिए एक फ़र्ज़ नमाज़ गुज़रने के बराबर हल्का फ़रमा देगा मुस्नद अहमद में रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया किः

يُخَفَّفُ الْوُقُوْفُ عَنِ الْمُؤْمِنِ حَتّٰى يَكُوْنَ كَصَلٰوةٍ مَكْتُوْبَةٍ

महशर में वुक़ूफ़ का ज़माना मोमिन पर इतना थोड़ा कर दिया जायेगा जैसा कि एक फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त होता है।

और तबरानी की एक रिवायत में है कि क़ियामत का दिन मोमिन के लिए दुनिया के एक दिन की छोटी से छोटी एक साअ़त (लम्हा) के बराबर हो जायेगा।

(फ़तहुल बारी 14/547)

यानी सुलहा-ए-मोमिनीन उस दिन इतनी आ़फ़ियत से होंगे कि उन्हें वक़्त गुज़रने का पता ही न चलेगा अल्लाह तआ़ला हम सबको मैदाने महशर में ऐसी ही आ़फ़ियत अ़ता फ़रमाये। आमीन ☐ ☐

तीसरी फ़स्ल

हौज़-ए-कौसर

मैदान-ए-महशर में जबकि प्यास की शिद्दत हद से गुज़र रही होगी तो हज़रात अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को अलग अलग हौज़ अ़ता किया जायेगा ताकि वे अपने मोमिन उम्मतियों को पानी पिलायें और उनकी प्यास बुझायें उस दिन सबसे बड़ा हौज़ और पीने वालों की सबसे ज़्यादा भीड़ हमारे आक़ा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हौज़-ए-कौसर पर होगी और आप वहां ब-नफ़्से नफ़ीस (ख़ुद) तशरीफ़ फ़रमा होकर उम्मत को सैराब फ़रमायेंगे एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوْضًا وَّإِنَّهُمْ يَتَبَاهَوْنَ أَيُّهُمْ أَكْثَرُ وَارِدَةً وَإِنِّي أَرْجُو أَنْ أَكُوْنَ أَكْثَرَهُمْ وَارِدَةً.

(ترمذی شریف ۲/۷۰)

हर नबी का अलग हौज़ होगा और वे इस बात पर फ़ख़्र करेंगे कि किस के पास कितने ज़्यादा पीने वाले आते हैं और मुझे उम्मीद है कि मैं ही उनमें सबसे ज़्यादा सैराब करने वाला (पिलाने वाला) हूंगा। (मेरे ही पास सबसे ज़्यादा पीने वाले लोग आयेंगे)।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का हौज़ इन्तिहाई अ़ज़ीमुश् शान होगा, उस की बड़ाई और ख़ूबी ब्यान करते हुए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

حَوْضِي مَسِيْرَةُ شَهْرٍ وَّزَوَايَاهُ سَوَاءٌ وَمَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنَ الْوَرِقِ وَرِيْحُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ وَكِيْزَانُهُ كَنُجُوْمِ السَّمَاءِ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَا يَظْمَأُ بَعْدَهُ أَبَدًا.

(مسلم شریف ۲/۲۴۹، رقم: ۲۲۹۲،
بخاری شریف: ۶۵۷۹)

मेरे हौज़ की लंबाई एक महीना चलने के बराबर है (तक़रीबन सात सौ किलो मीटर) और उसके चारों किनारे बराबर हैं और उसका पानी चांदी से ज़्यादा सफ़ेद है और उसकी ख़ुश्बू मुश्क से ज़्यादा उम्दा है और उसके आगे आबख़ोर (प्याले) आसमान के सितारों की तरह (अन-गिनत) हैं इसलिए जो उसको पी लेगा फिर कभी भी प्यासा न होगा।

और एक रिवायत में हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के उसके पानी के ज़ायक़े के बारे में पूछने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَشَدُّ بَيَاضاً مِّنَ اللَّبَنِ، وَأَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ يَغُتُّ فِيهِ مِيزَابَانِ يَمُدَّانِهِ مِنَ الْجَنَّةِ أَحَدُهُمَا مِنْ ذَهَبٍ وَّالْآخَرُ مِنْ وَّرِقٍ. (مسلم شريف ٢/ ٢٥١)

वह दूध से भी बहुत ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है और उसमें जन्नत से दो परनाले आकर गिर रहे हैं एक सोने का परनाला है और दूसरा चांदी का।

पहचान कैसे होगी ?

एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने हौज़े कौसर की सिफ़ात ब्यान फ़रमा रहे थे, दर्मियान में यह भी फ़रमाया कि मैं उस दिन हौज़ पर खड़े होकर ग़ैर उम्मतियों को इस तरह हटा रहा हूंगा जिस तरह कोई शख़्स अपने ज़ाती जानवरों के पानी पिलाने की जगह से ग़ैरों के जानवरों को हंकाता है। यह सुनकर हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने बड़ी हैरत से सवाल किया कि "ऐ अल्लाह के रसूल! क्या उस दिन आप (इतने बड़े अज़ीम मजमअ यानी भीड़ में) हमें पहचान लेंगे?" तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह खुशख़बरी सुनाईः

نَعَمْ: لَكُمْ سِيمَا لَيْسَتْ لِأَحَدٍ مِّنَ الْأُمَمِ تَرِدُوْنَ عَلَيَّ غُرًّا مُحَجَّلِيْنَ مِنْ آثَارِ الْوُضُوْءِ. (مسلم شريف حديث: ٢٤٧)

जी हाँ! तुम्हारी ऐसी निशानी होगी जो किसी और उम्मत के लिए (इस तरह की) न होगी, तुम मेरे हौज़ पर वुज़ू के असर से चमकते आज़ा के साथ आओगे।

मालूम हुआ कि कसरत से और एहतिमाम से वुज़ू करना मैदाने महशर में उम्मते मुहम्मदिया अला साहिबिहस्सलातु वस्सलाम के इम्तियाज़ (फ़र्क़) की वजह होगा और उसके ज़रिये से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर उम्मती को देखते ही पहचान लेंगे।

सबसे पहले हौज़-ए-कौसर से सैराब होने वाले

वैसे तो हर उम्मती इन्शाअल्लाह हौज़-ए-कौसर से सैराब होगा लेकिन कुछ खुशनसीब और सआदतमंद हज़रात ऐसे होंगे जिनको सबसे पहले सैराब होने

का ऐज़ाज़ मिलेगा, उनकी सिफ़ात बयान करते हुए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

أَوَّلُ النَّاسِ وُرُوْدًا عَلَيْهِ فُقَرَاءُ الْمُهَاجِرِيْنَ الشُّعْثُ رُؤُوْسًا، الدُّنْسُ ثِيَابًا، الَّذِيْنَ لَا يَنْكِحُوْنَ الْمُتَنَعِّمَاتِ وَلَا يُفْتَحُ لَهُمُ الدَّارُ.

(ترمذی شریف ۲/۷۱)

सबसे पहले हौज़े कौसर पर आने वाले मुहाजिर फ़ुक़रा हज़रात होंगे, जो (दुनिया में) बिखरे हुए बाल वाले और मैले कुचेले कपड़ों वाले होंगे जो नाज़ व निअ़म में रहने वाली औ़रतों से निकाह नहीं करते और घर के दरवाज़े उनके लिए खोले नहीं जाते (उनकी दुनियवी बे सरो सामानी की वजह से)।

यानी उनकी बेकसी देखकर कोई ऐश व इश्रत में पलने वाली औ़रत उनसे निकाह करने पर तैयार न होगी और अगर वह किसी के दरवाज़े पर जायेंगे तो उनके लिए लोग दरवाज़े खोलना भी पसन्द न करेंगे, दुनिया में तो उनकी मिस्कीनी का यह हाल होगा और आख़िरत में उनका वह एज़ाज़ व इक्राम होगा कि सबसे पहले हौज़े कौसर पर बुलाये जायेंगे। ذٰلِکَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ۔ यह आ़जिज़ी और मिस्कीनी क़ुर्ब-ए-ख़ुदावन्दी का ज़रिया है।

बे-अ़मल और बिद्अ़ती हौज़-ए-कौसर से धुत्कार दिये जायेंगे

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि मैदाने महशर में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से 70 हज़ार फ़रिश्ते इस काम पर मुक़र्रर होंगे कि कोई काफ़िर या ग़ैर मुस्तहिक़ अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के हौज़ से सैराब न होने पाये। (अत्तज़्किरा 348)

इसलिए हौज़े कौसर पर भी बड़ी तादाद में फ़रिश्तों का पहरा होगा उसी दर्मियान यह सूरत पैश आयेगी कि कुछ लोग जो ज़ाहिरी निशानियों से मुसलमान मालूम होते होंगे हौज़े कौसर की तरफ़ बढ़ रहे होंगे, मगर फ़रिश्ते उन्हें दूर से ही रोक लेंगे, आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उन्हें देखकर फ़रिश्तों से फ़रमायेंगे कि ये तो मेरे आदमी हैं (इन्हें क्यों रोकते हो) तो फ़रिश्ते जवाब देंगे कि हज़रत! आपको मालूम नहीं कि इन्होंने आपके बाद क्या क्या (बुरे) अ़मल

किये हैं। यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उन्हें धुत्कार देंगे। एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ مَنْ وَّرَدَ شَرِبَ وَمَنْ شَرِبَ لَمْ يَظْمَأْ اَبَدًا وَّيَرِدَنَّ عَلَيَّ اَقْوَامٌ اَعْرِفُهُمْ وَيَعْرِفُوْنِيْ ثُمَّ يُحَالُ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَاَقُوْلُ اِنَّهُمْ مِنِّيْ فَيُقَالُ اِنَّكَ لَاتَدْرِيْ مَا عَمِلُوْا بَعْدَكَ فَاَقُوْلُ سُحْقًا سُحْقًا لِّمَنْ بَدَّلَ بَعْدِيْ.

(مسلم شریف ۲/ ۲۴۹)

मैं हौज़े कौसर पर तुम्हारा मुन्तज़िर रहूंगा, जो वहां हाज़िर होगा वह उसका पानी पियेगा और जो पानी पी लेगा वह फिर कभी प्यासा न होगा और मेरे सामने कुछ ऐसे लोग आयेंगे जिन्हें मैं जानता हूंगा और वे मुझे पहचानते होंगे, फिर मेरे और उनके दर्मियान रूकावट कर दी जायेगी तो मैं कहूंगा कि वे तो मेरे लोग हैं, तो जवाब में कहा जायेगा कि आपको मालूम नहीं कि इन्होंने आपके पीछे क्या क्या कारस्तानियाँ की हैं, तो मैं कहूंगा बर्बादी है, बर्बादी है उस शख़्स के लिए जिसने मेरे बाद दीन में तब्दीली का काम किया।

अ़ल्लामा क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि हमारे मोतबर उ़लमा की राय यह है कि जो शख़्स भी अल्लाह हमें पनाह में रखे दीन से फिरने को इख़्तियार करेगा या दीन में कोई नई बिद्अ़त पैदा करेगा जिसकी शरीअ़त में कोई गुंजाइश न हो तो वह क़ियामत के रोज़ हौज़े कौसर से धुत्कार दिये जाने वालों में शामिल होगा और उनमें सबसे सख़्ती के साथ हटाये जाने वालों में वे लोग होंगे जिन्होंने मुसलमानों की जमाअ़त में इख़्तिलाफ़ पैदा किया होगा और उनके रास्ते से अलग राह इख़्तियार की होगी जैसे ख़्वारिज, राफ़ज़ी और मुअ़तज़िला जैसे गुमराह फ़िर्क़े जिन्होंने दीन के अन्दर तब्दीली की कोशिश की, इसी तरह वे ज़ालिम हाकिम भी हौज़े कौसर से धुत्कारे जायेंगे जिन्होंने अह्ले हक़ के साथ ज़ुल्म और ना-इंसाफ़ी और क़त्ल व ग़ारतगरी का मुआ़मला किया होगा और वे अपनी रिआ़या पर ज़ुल्म व सितम में हद से गुज़र गये होंगे और वे बरसरे आ़म मआ़सी व मुन्करात (गुनाहों) के आ़दी लोग भी हौज़ से दूर रखे जायेंगे जो अह्कामे ख़ुदावन्दी की तौहीन करते होंगे, यही हाल दूसरे अह्ले बिद्अ़त और अरबाबे ज़ैग़ व ज़लाल (यानी गुमराह जमाअ़तों) का

होगा, फिर अगर वे दीन में सिर्फ़ अमली तौर पर तब्दीली के मुरतकिब होंगे और अक़ीदा उनका ज़्यादा ख़राब न होगा तो उन्हें बाद में मग़्फ़िरत के बाद हौज़े कौसर से सैराबी का मौक़ा मिल सकेगा और इस एतिबार से अगरचे उनकी पह्चान आज़ा-ए-वुज़ू की रोशनी से हो जायेगी मगर फिर भी वे अपनी बद्-अ़मली की वजह से शुरू में धुत्कारे जाने के मुस्तहिक़ होंगे, लेकिन अगर अक़ीदे ही में नाक़ाबिले तलाफ़ी फ़साद होगा जैसे कि दौरे नबवी के पाये जाने वाले मुनाफ़िक़ीन जो दिल में कुफ़्र छुपाकर सिर्फ़ ज़बान से इस्लाम का दावा करते थे, तो उन्हें कभी भी हौज़े कौसर से सैराबी का मौक़ा हासिल न होगा, पहले उनकी ज़ाहिरी सूरत देखकर बुलाएंगे मगर हक़ीक़त सामने आने पर और भेद खुल जाने पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम سُحْقًا سُحْقًا कहकर उन्हें वहां से धुतकार देंगे। العیاذ باللہ. (अल्लाह की पनाह) (अत्तज़्किरा फ़ी अह्वालिल् मौता वल्-आख़िरत 352)

एक ऐतिराज़ का जवाब

यहां एक ऐतिराज़ यह किया जा सकता है कि हदीस से तो मालूम होता है कि हर साहिबे ईमान उम्मती हौज़े कौसर से पानी पियेगा और जो एक मर्तबा पानी पी लेगा वह फिर कभी प्यासा न होगा और यह भी ज़ाहिर है कि यह हौज़ पुल सिरात से पहले होगा, यानी हौज़ से पानी पीने के बाद ही अह्ले कबाइर के जहन्नम में जाने का फ़ैसला होगा और पुल सिरात से गुज़रते हुए उन्हें जहन्नम में खींच लिया जायेगा तो यह बात बज़ाहिर समझ में नहीं आती कि जब हौज़े कौसर से पानी पी लिया और उसकी वजह से प्यास हमेशा के लिए बुझ गई तो फिर अब किसी बद्-किरदार और ज़ालिम या बिद्अ़ती को जहन्नम में कैसे भेजा जायेगा और क्या जहन्नम की ख़तरनाक आग में जाकर भी वह प्यास से बचा रहेगा?

इसका जवाब देते हुए हदीस की शरह लिखने वालों ने फ़रमाया है कि जिन अह्ले कबाइर का जहन्नम में जाना मुक़द्दर होगा और वे हौज़े कौसर का पानी पी चुके होंगे तो अल्लाह तआ़ला उनको जहन्नम में प्यास के अ़लावा दूसरे तरीक़ों से अ़ज़ाब देगा। हौज़े कौसर का पानी पीने की वजह से वह आइंदा प्यास के अ़ज़ाब से बचे रहेंगे। واللہ تعالیٰ اعلم (अत्तज़्किरा 353)

बहरहाल हमें अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया के तक़ाज़ों को देखते हुए यह

कोशिश करनी चाहिए कि हम किसी ऐसी बद्-अमली और बद्-अक़ीदगी में हरगिज़ मुब्तला न हों जो हमें हौज़े कौसर से महरूम करके मैदाने मह्शर में बद्तरीन रूस्वाई और ज़िल्लत से दोचार कर दे। ख़ास तौर से हर मुसलमान को बिद्अ़त और ज़लालत से बचने की कोशिश करनी चाहिए और किताब व सुन्नत और हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की बातों और कामों और इजमाअ़-ए-उम्मत पर मज़बूती से आ़मिल रहना चाहिए। अल्लाह तआ़ला हम सबको गुमराही और बिद्अ़त से महफ़ूज़ रखे और मैदाने मह्शर में एज़ाज़ के साथ हौज़े कौसर से सैराबी का अपने फ़ज़्ल व करम से मौक़ा अ़ता फ़रमाये। आमीन

□ □

चौथी फ़स्ल

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअ़ते कुब्रा

मैदाने महशर की लंबी हौलनाकियों की वजह से लोग परेशान होंगे और तमन्ना करेंगे कि जल्दी हिसाबो किताब के मर्हले से निमटकर लोग अपनी अपनी जगह पहुंचें और इन्तिज़ार की ज़हमत ख़त्म हो, चुनांचे वे रब्बुल आ़लमीन के दरबार में सिफ़ारिश कराने के लिए हज़रात अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का वसीला तलाश करेंगे। सबसे पहले सय्यिदना हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की ख़िद्मत में हाज़िर होकर सिफ़ारिश की दरख़्वास्त करेंगे मगर वह मज्बूरी ज़ाहिर कर देंगे, फिर हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पास जाएंगे वह भी मज्बूरी ज़ाहिर कर देंगे, फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उसके बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से दरख़्वासत करेंगे वे सब हज़रात सिफ़ारिश की हिम्मत न कर पायेंगे, आख़िर में सय्यिदुल अव्वलीन वल्-आख़िरीन इमामुल अम्बिया वल्-मुरसलीन सरवरे काइनात, फ़ख़्रे दो-आ़लम, शफ़ीअ़-ए-आज़म, साहिबे मुक़ाम-ए-महमूद, सय्यिदना मौलाना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर होंगे और अ़र्ज़ करेंगे:

يَا مُحَمَّدُ! أَنْتَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَخَاتَمُ الْأَنْبِيَاءِ وَغَفَرَ اللّٰهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ، إِشْفَعْ لَنَا إِلٰى رَبِّكَ، أَلَا تَرٰى مَا نَحْنُ فِيْهِ أَلَا تَرٰى مَا قَدْ بَلَغَنَا. الخ.

(مسلم شریف ۱/۱۱۱)

ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आप अल्लाह के रसूल और ख़ातिमुन् नबिय्यीन हैं और अल्लाह तआ़ला ने आपके अगले पिछले सब गुनाहों की माफ़ी का ऐलान फ़रमाया (यानी आपको किसी पूछगछ का ख़त्रा नहीं है) आप अपने परवरदिगार के सामने हमारी सिफ़ारिश फ़रमाइये क्या नहीं देखते हम किस हाल में हैं और हमारा हाल कहाँ तक पहुचं गया है।

उन लोगों की दरख़्वास्त पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम क़ुबूल

फ़रमायेंगे और अ़र्शे ख़ुदावन्दी के नीचे जाकर परवरदिगार-ए-आ़लम के दरबार में सज्दा करेंगे और अल्लाह रब्बुल आ़लमीन उसी वक़्त आप के दिल पर अपनी हम्द व सना के ऐसे शानदार अल्फ़ाज़ और ताबीरात का इल्क़ा फ़रमायेंगे जो इससे पहले किसी के ख़्वाब व ख़्याल और तसव्वुर में भी न आये होंगे, एक अ़र्सा-ए-दराज़ तक (जिसका इल्म अल्लाह ही को है) आप सज्दे की हालत में अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना फ़रमाते रहेंगे, फिर रह्मते ख़ुदावन्दी को जौश आयेगा और आवाज़ दी जायेगी:

يَامُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَأْسَکَ، سَلْ تُعْطَهْ، اِشْفَعْ تُشَفَّعْ۔(مسلم شریف ۱/۱۱۱)

ऐ मुहम्मद! सर उठाइये, मांगये आप को अ़ता किया जायेगा, सिफ़ारिश फ़रमाइये आपकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जायेगी

चुनाँचे आप सज्दे से सर उठायेंगे और सबसे पहले अपनी उम्मत का हिसाब किताब जल्दी शुरू किये जाने की दरख़्वास्त करेंग। (फ़त्हुल बारी 14/535)

हिसाब किताब शुरू कराने की सिफ़ारिश यही आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का बुलन्द तरीन मुक़ाम-ए-मह्मूद है, जिसका ज़िक्र क़ुरआन-ए-करीम की आयतः عَسٰی اَنْ یَّبْعَثَکَ رَبُّکَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا۔ (بنی اسرائیل) में किया गया है।

(फ़त्हुल बारी 14/520)

शफ़ाअ़त की क़िस्में

मश्हूर शारेह-ए-हदीस क़ाज़ी अ़याज़ रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि शफ़ाअ़त की पाँच क़िस्में हैं:

1. मैदाने मह्शर की हौलनाकियों से नजात और हिसाब किताब शुरू कराने की शफ़ाअ़त, यह हमारे आक़ा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ ख़ास है। (जैसा कि ऊपर ज़िक्र गुज़रा)।
2. बहुत से अह्ले ईमान को बिला हिसाब किताब जन्नत में दाख़िल कराने की शफ़ाअ़त, यह भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से साबित है।
3. बहुत से ऐसे अह्ले ईमान के लिए शफ़ाअ़त जिनको जहन्नम की सज़ा सुनाई जा चुकी होगी मगर अभी वे जहन्नम में न गये होंगे, (यह शफ़ाअ़त नबी-ए-अक्रम अ़लैहिस्सलाम भी फ़रामयेंगे और कुछ दूसरे नेक आमाल

वाले अपने रिश्तेदारों के लिए करेंगे जैसे हाफ़िज़े क़ुरआन और शहीद वग़ैरह)।

4. उन मोमिनों के लिए शफ़ाअ़त जो अपनी बद्-अ़मलियों की वजह से जहन्नम में जा चुके होंगे, उनमें से दर्जा ब दर्जा हर एक को अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम, मलाइका और दूसरे मोमिनों की शिफ़ारिश से जहन्नम से नजात दी जायेगी।

5. जन्नतियों के लिए दरजात में इज़ाफ़े की शफ़ाअ़त।

और हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इन क़िस्मों पर नीचे दी गई 4 और क़िस्मों का इज़ाफ़ा किया है।

1. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का अपने चचा अबू तालिब के अ़ज़ाब में कमी की शफ़ाअ़त करना।

2. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का जन्नत में सबसे पहले अपनी उम्मत को दाख़िल कराने की शफ़ाअ़त करना।

3. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का उन लोगों के बारे में जन्नत के दाख़िले की सिफ़ारिश करना जिनकी नेकियाँ और बुराइयाँ बिल्कुल बराबर हों, जिन्हें अस्हाबे आराफ़ कहा जाता है।

4. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का उस शख़्स के बारे में सिफ़ारिश करना जिसने सिर्फ़ कलिमा पढ़ा लेकिन कोई नेक अ़मल उसके आमाल नामे में न हो। (फ़त्हुल बारी 14/528)

इस तरह शफ़ाअ़त की कुल 9 क़िस्में हो गईं, आ़म तौर पर अहादीस-ए-शफ़ाअ़त में रावियों ने दर्मियानी वाक़िआ़त की कड़ियाँ छोड़ दी हैं और हदीस पढ़ने से ऐसा मालूम होता है कि इब्तिदाई मर्हले में गुनहगार उम्मतियों का जहन्नम से निकालने का काम शुरू हो जायेगा, हालांकि ऐसी बात नहीं, बल्कि पहले शफ़ाअ़त-ए-कुब्रा (बड़ी शफ़ाअ़त) होगी, जिसके बाद हिसाब किताब, आमाल के वज़न वग़ैरह के मर्हले पेश आयेंगे, यहां तक कि जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में भेज दिये जाएंगे और फिर आख़िरकार गुनहगारों को निकालने के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम शफ़ाअ़त फ़रमायेंगे जिसे क़ुबूल किया जायेगा और कोई छोटे से छोटा उम्मती भी जहन्नम में बाक़ी न रहेगा। (फ़त्हुल बारी मुलख़्ख़सन 14/535-536)

पांचवी फ़स्ल

हिसाब किताब की शुरूआत

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअ़ते कुब्रा के बाद रब्बे ज़ुल जलाल वल्-इक्राम की तरफ़ से हिसाब किताब का काम शुरू होगा। इस सिलसिले की सबसे पहली शुरूआ़त यह होगी कि तमाम लोगों के आमाल नामें खुद उनके हाथों में पहुंचा दिये जायेंगे। नेक लोगों के आमाल नामे उनके दाएं हाथ में दिये जाएंगे इसीलिए उनको अस्हाबुल यमीन कहा जाता है और बुरे लोगों के आमाल नामे उनके बाऐं हाथ में दिये जाएंगे इसीलिए उनको अस्हाबुश् शिमाल कहा जाता है। एक मरफ़ूअ़ रिवायत में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु इर्शाद फ़रमाते हैं:

اَلْكُتُبُ كُلُّهَا تَحْتَ الْعَرْشِ، فَاِذَا كَانَ يَوْمَ الْمَوْقِفِ بَعَثَ اللّٰهُ رِيْحاً فَتَطِيْرُهَا بِالْاَيْمَانِ وَالشَّمَائِلِ اَوَّلُ خَطٍ فِيْهَا "اِقْرَاْ كِتَابَكَ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْباً".

(التذكرہ ۳۹۱)

आमाल नामे सब अ़र्श के नीचे महफ़ूज़ हैं, जब क़ियामत का दिन होगा तो अल्लाह तआ़ला एक ख़ास हवा चलायेगा जो आमाल नामों को उड़ाकर (आमाल के मुताबिक़) उन्हें लोगों के सीधे या उल्टे हाथों में पहुंचा देगी उन आमाल नामों में ऊपर यह जुम्ला लिखा होगा "तू ही पढ़ ले किताब अपनी, तू ही बस है आज के दिन अपना हिसाब लेना वाला"।

इस मर्हले में नेक लोगों की खुशी का तो कोई ठिकाना न होगा जबकि कुफ़्फ़ार और बद्-अ़मल (अस्हाबे शिमाल यानी जिन को आमाल नामे बाऐं हाथ में दिये जायेंगे) लोगों के चहरे स्याह (काले) पड़ जायेंगे क़ुरआन-ए- करीम ने उस वक़्त का मंज़र इस तरह ब्यान फ़रमाया है:

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتَابَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتَابِيَهْ، اِنِّيْ ظَنَنْتُ

सो जिसको मिला उसका लिखा, दाहिने हाथ में वह कहता है लीजियो पढ़ियो मेरा लिखा, मैंने ख़्याल रखा इस बात

اَنِّیْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ، فَهُوَ فِیْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ، فِیْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ، قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ، كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ، وَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتَابَهٗ بِشِمَالِهٖ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِیْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ، وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ، يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ. مَآ اَغْنٰی عَنِّیْ مَالِيَهْ. هَلَكَ عَنِّیْ سُلْطٰنِيَهْ. خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ، ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ. ثُمَّ فِیْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ. اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ. وَلَا يَحُضُّ عَلٰی طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ. فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ. وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ. لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِئُوْنَ. (الحاقہ ١٩-٣٧)

का कि मुझको मिलेगा मेरा हिसाब, सो वे हैं मन मानी ज़िन्दगी में, ऊंचे बाग़ में, जिसके मेवे झुके पड़े हैं, खाओ पियो जी भरकर, बदला उसका जो आगे भेज चुके हो तुम पहले दिनों में और जिसको मिला उसका लिखा, बाऐं हाथ में वह कहता है कि क्या अच्छा होता जो मुझको न मिलता मेरा लिखा और मुझको ख़बर न होती कि क्या है हिसाब मेरा, किसी तरह वही मौत ख़तम कर जाती, कुछ काम न आया मुझको मेरा माल, बर्बाद हुई मुझसे मेरी हुकूमत, उसको पकड़ो फिर तौक़ डालो, फिर एक ज़ंजीर में जिसकी लंबाई 70 गज़ है उसको जकड़ दो, वह था कि यक़ीन न लाता था अल्लाह पर, जो सबसे बड़ा है और ताकीद न करता था फ़क़ीर के खाने पर, सो कोई नहीं आज उसका यहाँ दोस्त दार और न कुछ मिलेगा खाना मगर ज़ख़्मों का धोवन, कोई न खाये उसको मगर वही गुनहगार।

और सूरः कह्फ़ में हिसाब किताब के वक़्त की हालत इस तरह बयान की गई है:

وَعُرِضُوْا عَلٰی رَبِّكَ صَفًّا، لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ، بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا، وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً،

और सामने आयें तेरे रब के सफ़ बांधकर, आ पहुंचे तुम ही हमारे पास जैसा हमने बनाया था तुमको पहली बार, नहीं तुम तो कहते थे कि न मुक़र्रर करेंगे हम तुम्हारे लिए कोई वादा और रखा जायेगा हिसाब का काग़ज़, फिर तू देखे गुनहगारों को डरते

وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصٰهَا، وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا، وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا.

(الكهف آيت ٤٨-٤٩).

हैं उससे जो उसमें लिखा है और कहते हैं। हाय ख़राबी! कैसा है यह काग़ज़! नहीं छूटी उस से छोटी बात और न बड़ी बात, जो उसमें नहीं आ गई और पायेंगे जो कुछ किया है सामने और तेरा रब ज़ुल्म न करेगा किसी पर।

शुरू शुरू में कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन और बद्-अ़मल, आमाल नामे देखकर कुछ हुज्जत और बहस की कोशिश करेंगे लेकिन ख़ुद उनके आज़ा व जवारेह उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे जिसके बाद किसी कठ हुज्जती का मौक़ा ही न रहेगा और यह भी तमन्ना करेंगे कि उन्हें एक मर्तबा दुनिया में भेज दिया जाये मगर उससे भी इंकार कर दिया जायेगा। उस दिन उन सरकशों की रूस्वाई नाक़ाबिले ब्यान होगी, सर झुके हुए होंगे, चेह्‌रे स्याह होंगे, आँखें नीली हो जायेंगी और दह्‌शत व घब्‌राहट के मारे चीख़ व पुकार मचा रहे होंगे। اللّهم احفظنا منه.

सबसे पहले किस चीज़ का हिसाब होगा

दुनियवी मुआ़मलात और हुक़ूक़ में सबसे पहले नाहक़ क़तल का हिसाब होगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

أَوَّلُ مَا يُقْضٰى بَيْنَ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي الدِّمَاءِ. (ابن كثير ٣٤٩)

सबसे पहले क़ियामत के रोज़ ख़ूने नाहक़ के बारे में फ़ैसला किया जायेगा।

एक हदीस में आया है कि मरने वाला अपने क़ातिल को खींचकर अ़र्शे ख़ुदावन्दी के सामने लायेगा और अ़र्ज़ करेगा कि परवरदिगारे आलम! इससे पूछिये कि इसने मुझे किस वजह से क़त्ल किया है? और एक रिवायत में है कि "अगर तमाम ज़मीन और आसमान सब मिलकर किसी एक मुसलमान को क़त्ल करें तो अल्लाह तआ़ला उन सबको जहन्नम में डाल देगा" और एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मुसलमान को क़त्ल करने में मदद करे अगरचे एक लफ़्ज़ बोलकर भी, तो वह क़ियामत के दिन इस हालत में आयेगा कि उसकी पैशानी पर लिखा होगा कि यह अल्लाह की रह्‌मत से मह्‌रूम है। (इब्ने कसीर 349)

इसलिए बग़ैर किसी वजह के क़त्ल से बचना ज़रूरी है अगर कोई शख़्स किसी ऐसे जुर्म का इर्तिकाब करे जिससे वह जानी सज़ा का मुस्तहिक़ हो जाये फिर भी किसी आम आदमी को उस पर सज़ा जारी करने का हक़ नहीं है, बल्कि सज़ा जारी करने की ज़िम्मेदारी इस्लामी हुकूमत की होती है जहां वाक़िअ़ी इस्लामी निज़ाम क़ाइम होगा वहीं सुबूते शरअ़ी के बाद सज़ा जारी हो सकती है, वर्ना नहीं, अगर इस बात का ख़्याल न रखा जाये तो फिर किसी शख़्स की जान भी महफ़ूज़ नहीं रह सकती।

नमाज़ का हिसाब

और इबादात में सबसे पहले पूछताछ नमाज़ के बारे में होगी। एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

أَوَّلُ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الصَّلٰوةُ فَإِنْ صَلُحَتْ صَلُحَ سَائِرُ عَمَلِهِ وَإِنْ فَسَدَتْ فَسَدَ سَائِرُ عَمَلِهِ. (الترغيب والترهيب ١/ ١٥٠)

क़ियामत के दिन सबसे पहले आदमी की नमाज़ का हिसाब लिया जायेगा अगर नमाज़ ठीक निकली तो बाक़ी आमाल भी ठीक निकलेंगे और नमाज़ में ख़राबी निकली तो बाक़ी आमाल और ख़राब होंगे।

ऊपर दी गई हदीस से नमाज़ की अहमियत का आसानी से अंदाज़ा लगाया जा सकता है, इसके अ़लावा भी क़ुरआनी आयतों और अहादीसे तय्यिबा में नमाज़ की फ़ज़ीलत और अ़ज़्मत इन्तिहाई ताकीदी अंदाज़ में ब्यान हुई है, नमाज़ को दीन का सूतून कहा गया और नमाज़ के बग़ैर किसी मजबूरी के छोड़ने वाले को काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के बराबर बताया गया है, इसलिए उम्मते मुस्लिमा के हर शख़्स पर ज़रूरी है कि वह नमाज़ी बने और अपने घर वालों और मिलने जुलने वालों को भी नमाज़ का आदी बनाये, ताकि मैदाने मह्शर की रूस्वाइयों से हिफ़ाज़त हो सके।

ज़ुल्मों और हक़तल्फ़ियों का बदला

मैदाने मह्शर में कोई ज़ालिम बचकर न जा सकेगा बल्कि उसे ज़ुल्म का बदला देना ही पड़ेगा और वहां रूपए पैसे से अदायगी न होगी बल्कि ज़ुल्म और

हक़ तल्फ़ी के बदले में नेकियाँ दी जायेंगी और जब नेकियाँ बाक़ी ही न रहेंगी तो मज़्लूम की बुराइयाँ ज़ालिम पर लाद दी जायेंगी, यह मंज़र बड़ा इब्रतनाक और हस्रतनाक होगा, आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

مَنْ كَانَتْ لَهُ مَظْلِمَةٌ لِأَخِيهِ مِنْ عِرْضِهِ أَوْ شَيْئٍ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهُ الْيَوْمَ، قَبْلَ أَنْ لَّا يَكُونَ دِيْنَارٌ وَّلَا دِرْهَمٌ. إِنْ كَانَ لَهُ عَمَلٌ صَالِحٌ أُخِذَ مِنْهُ بِقَدْرِ مَظْلِمَتِهِ وَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ صَاحِبِهِ فَحُمِلَ عَلَيْهِ.

(صحیح البخاری ۱/۳۳۱ حدیث ۲۳۸۵، التذکرہ ۳۰۸)

जिस शख़्स ने अपने भाई की माली या ज़ाती कोई नाइंसाफ़ी की हो तो उस दिन के आने से पहले आज ही माफ़ कराले जब दीनार और दिर्हम न होंगे (कि उनसे हक़ चुकाया जायेगा बल्कि) अगर उसके पास नेक आमाल होंगे तो वे मज़्लूम अपने हक़ के बक़द्र नेकियाँ ले लेगा और अगर उसके पास नेकियाँ न होंगी तो मज़्लूम की बुराइयाँ लेकर उसपर लाद दी जायेंगी।

और एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक मर्तबा सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से पूछा कि तुम मुफ़्लिस और कंगाल किसे समझते हो? तो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया हम में मुफ़्लिस तो उसे कहा जाता है जिस बेचारे के पास दिर्हम और सामान कुछ भी न हो। तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

إِنَّ الْمُفْلِسَ مِنْ أُمَّتِيْ مَنْ يَأْتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِصَلٰوةٍ وَّصِيَامٍ وَّزَكٰوةٍ وَّيَأْتِيْ قَدْ شَتَمَ هٰذَا وَأَكَلَ مَالَ هٰذَا وَسَفَكَ دَمَ هٰذَا وَضَرَبَ هٰذَا، فَيُعْطٰى هٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ وَهٰذَا مِنْ حَسَنَاتِهِ فَإِنْ فَنِيَتْ حَسَنَاتُهُ قَبْلَ إِنْقِضَآءِ مَا عَلَيْهِ أُخِذَ مِنْ خَطَايَا هُمْ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ ثُمَّ طُرِحَ فِي النَّارِ.

मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वह होगा जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात (वग़ैरह) लेकर आयेगा (मगर) उसने किसी को गाली दी होगी किसी का माल उड़ाया होगा और किसी का ख़ून बहाया होगा और किसी को मारा होगा, तो उसकी नेकियाँ इसको और उसको बांटी जायेंगी, फिर जब उसकी नेकियों का ज़ख़ीरा हुक़ूक़ वालों के हक़ ख़त्म होने से पहले ख़त्म हो जायेगा तो उनकी बुराइयाँ लेकर उसपर डाल दी जायेंगी और फिर उसे जहन्नम में

डाल दिया जायेगा। اللّٰهم احفظنا منه (مسلم شریف۲/۳۲۰، التذکرہ ۳۰۸)

इब्ने माजा में एक इब्रतनाक वाक़िआ लिखा है कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम हब्शा से हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये तो एक दिन आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा कि बताओ सरज़मीने हब्शा में तुमने सबसे हैरतअंगेज़ बात क्या देखी? तो कुछ नौजवान खड़े हुए और उन्होंने क़िस्सा सुनाया कि हम एक मर्तबा हब्शा में सड़क के किनारे बेठे थे, कि हमारे सामने से एक बुढ़िया गुज़री जिसने सर पर एक मटका उठा रखा था मुहल्ले के कुछ शरीर लड़के उसके पीछे लग गये और उसे इस ज़ौर से धक्का दिया कि वह बेचारी गिर पड़ी और उसका मटका फूट गया, तो उसने शरीर लड़के से कहा कि "ऐ बद्-तमीज़! याद रख जब रब्बुल आलमीन कुर्सी नसीब फ़रमा कर पहले और बाद वालों को जमा फ़रमायेगा और आदमी के हाथ पैर अपने काले करतूतों को खुद ही ब्यान कर देंगे, उसी दिन तू देख लेना कि मेरा और तेरा मुआमला अल्लाह रब्बुल आलमीन के सामने कैसा होगा? यह सुनकर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

صَدَقَتْ، صَدَقَتْ، كَيْفَ يُقَدِّسُ اللّٰهُ أُمَّةً لَّا يُؤْخَذُ لِضَعِيْفِهِمْ مِنْ شَدِيْدِهِمْ (ابن ماجہ ۲۹۹ مطبع رشیدیہ، التذکرہ ۳۱۰)

उसने सच कहा, उसने सच कहा, वह उम्मत कैसे बा-इज़्ज़त हो सकती है जो अपने कमज़ोरों के लिए ताक़तवरों से मुआख़ज़ा न करे।

क़ियामत के दिन इंसानों के अलावा ज़ालिम जानवरों तक से भी हिसाब लिया जायेगा, एक हदीस में इर्शादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैः

لَتُؤَدُّنَّ الْحُقُوْقَ إِلَىٰ أَهْلِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُقَادَ لِلشَّاةِ الْجَلْحَاءِ مِنَ الشَّاةِ الْقَرْنَاءِ (مسلم ۲/۳۲۰، التذکرہ ۳۰۸)

क़ियामत के दिन तमाम हक़ दारों को उनके हक़ ज़रूर पहुंचाये जायेंगे, यहां तक कि बे-सींग की बकरी के लिए सींग वाली बकरी से क़िसास (बदला) लिया जायेगा।

इसलिए आख़िरत पर यक़ीन रखने वाले हर शख़्स पर लाज़िम है कि वह दुनिया ही में लोगों के हुक़ूक़ के तमाम हिसाब किताब साफ़ कर ले और यहाँ

से इस हाल में रुख़्सत हो कि उस पर किसी का कोई हक़ न हो वर्ना ये हुक़ूक़ आख़िरत में बड़ी रूस्वाई की वजह बन जायेंगे।

नाहक़ ज़मीन ग़सब करने यानी ज़बरदस्ती लेने वालों की सज़ा

ख़ास तौर से जायदाद ग़सब करने वाले के बारे में अहादीसे सहीहा में सख़्त तरीन वअ़ीदें आई हैं। मश्हूर मुस्तजाबुद् दअ़वात सहाबी हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

مَنْ اِقْتَطَعَ شِبْراً مِّنَ الْاَرْضِ ظُلْماً طَوَّقَهُ اللّٰهُ اِيَّاهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ سَبْعِ اَرْضِيْنَ.

(مسلم شریف ۲/۳۲)

जो शख़्स एक बालिश्त ज़मीन भी नाजाइज़ तौर पर दबा ले तो यह हिस्सा सातों ज़मीन से निकाल कर उसके गले में तौक़ बनाकर डाल दिया जायेगा।

इस हदीस की तश्रीह में हज़रात मुहद्दिसीन ने नीचे दिये गये अक़्वाल इर्शाद फ़रमाये हैं:

1. सातों ज़मीन से मिट्टी निकालकर उसे उठाने का हुक्म दिया जायेगा, जिसे वह उठा न सकेगा।
2. या सारी मिट्टी निकालकर उसके गले में वाक़िई तौक़ बनाकर डाल दी जायेगी और उसी ऐतिबार से उसकी गर्दन को मोटा भी कर दिया जायेगा।
3. उसे ग़सब शुदा ज़मीन के नीचे सातों ज़मीन तक खोदने का हुक्म दिया जायेगा और खोदते खोदते ज़मीन की हैसियत उसके गले में तौक़ की तरह हो जायेगी।
4. इस ग़सब के गुनाह का वबाल उसकी गर्दन पर लाद दिया जायेगा।

(नववी अ़ला मुस्लिम 2/33, तक्मिला फ़त्हुल मुल्हिम 1/647)

बहरहाल ये सब मतलब हो सकते हैं और इनसे इब्रत हासिल करना ज़रूरी है। अफ़्सोस का मुक़ाम है कि आज मुसलमानों में ज़रा ज़रा सी जगहों, नालियों और रास्तों पर मुक़द्दमा बाज़ियों की कस्रत है। जितने रूपये की जगह नहीं होती उससे कई गुना ज़्यादा रक़्म फ़रीक़ैन की मुक़द्दमा बाज़ियों और रिश्वतों में ख़र्च होकर तबाह हो जाती है मगर मुक़द्दमे का ऐसा जुनून होता है कि किसी

तरह कोई फ़रीक़ मुसालहत पर आमादा नहीं होता। आज यह मुक़द्दमा बाज़ी बड़ी अच्छी लगती है। कल क़ियामत के दिन जब यही नाहक़ क़ब्ज़ा बद्-तरीन रुस्वाई और ज़िल्लत का सबब बनेगा तब आँखें खुलेंगी। इसलिए अक़्लमंदी और आक़िबत अंदेशी का तक़ाज़ा यह है कि हम अपनी ताक़त और दौलत फ़ुज़ूल बर्बाद करने के बजाये क़नाअ़त का रास्ता इख़्तियार करें और आख़िरत की ज़िल्लत से हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करें, अल्लाह तआ़ला हम सबको अक़्ले सलीम अ़ता फ़रमाये। आमीन

ज़कात अदा न करने वालों का बुरा हाल

जो लोग साहिबे निसाब होने के बावुजूद ज़कात की अदायगी में कौताही करते हैं उनका हाल भी मैदाने मह़शर में बड़ा इब्रतनाक होगा, एक लम्बी हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَامِنْ صَاحِبِ ذَهَبٍ وَّلَافِضَّةٍ لَايُؤَدِّيْ مِنْهُمَا حَقَّهُمَآ إِلَّا إِذَا كَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صُفِّحَتْ لَهٗ صَفَآئِحُ مِنْ نَارٍ فَأُحْمِيَ عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَيُكْوٰى بِهَا جَنْبُهٗ وَجَبِيْنُهٗ وَظَهْرُهٗ كُلَّمَا بَرَدَتْ أُعِيْدَتْ لَهٗ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ أَلْفَ سَنَةٍ حَتّٰى يُقْضٰى بَيْنَ الْعِبَادِ فَيَرٰى سَبِيْلَهٗ إِمَّآ إِلَى الْجَنَّةِ وَإِمَّآ إِلَى النَّارِ

الخ. (مسلم شريف ١/٣١٨، الّتذكره ٣٤٠)

जो भी सोने चांदी का मालिक उसकी ज़कात अदा न करेगा तो क़ियामत के रोज़ उसके माल के पत्तरे बनाकर जहन्नम की आग में तपाये जायेंगे, जिनसे उसके पहलू, पैशानी और पीठ को दाग़ा जायेगा। जब वह पत्तर ठन्डे हो जायेंगे तो उन्हें दोबारा (गर्म) किया जायेगा, यह मुआ़मला उस दिन होगा जिसकी मिक़दार 50 हज़ार साल के बराबर है और उसको यह अ़ज़ाब बराबर होता रहेगा यहां तक कि अल्लाह तआ़ला मख़्लूक़ के बारे में फ़ैसला फ़रमायेगा फिर यह देख लेगा कि उसका ठिकाना जन्नत है या जहन्नम।

इसी हदीस में है कि हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने ऊंटों और गायों व बकरियों के मालिक मालदारों के अंजाम के बारे में पूछा तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स इन जानवरों की ज़कात अदा नहीं करेगा तो अल्लाह तआ़ला छांट छांटकर मैदाने मह़शर में बड़े

बड़े और नोकदार सींगों वाले जानवरों के ज़रिये ज़कात न देने वाले मालिक को पैरों से रूंदवायेगा और सींगों से ज़ख़्मी करायेगा, और यह सिलसिला हिसाब किताब मुकम्मल होने तक बराबर जारी रहेगा। اعاذنا الله منه (मुस्लिम शरीफ़ 1/318)

और एक हदीस में है कि बे-ज़कात वाला माल मैदाने मह्शर में ख़तरनाक ज़हरीले अज़्दहे की शक्ल में आकर अपने मालिक का पीछा करेगा। यहां तक कि उसके हाथ पैर पकड़कर चबा जायेगा। اللهم احفظنا منه (मुस्लिम शरीफ़ 1/320)

मालदारों के लिए ख़ासतौर से ये अहादीस इब्रतनाक हैं, ज़कात की अदायगी का एहतिमाम ज़रूरी है, वर्ना उसकी नहूसत दुनिया में ज़ाहिर होती है और आख़िरत में भी उसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी, यह माल अल्लाह तआला की अमानत है। अगर इसमें से मुक़र्ररा फ़र्ज़ हिस्सा मुसतहिक़्क़ीन के हवाले कर दिया जाये तो बाक़ी पूरा माल मह्फ़ूज़ हो जाता है और अगर उस हिस्से की अदायगी में कौताही की जाये तो फिर अंजाम बख़ैर नहीं। इसलिए दुनिया की कुछ दिन की ज़िन्दगी के नफ़ेअ़ के लिए आख़िरत की हमेशा की रूस्वाई को मौल लेना दानिशमंदी नहीं है।

क़ौमी माल में ख़ियानत करने वालों का अंजाम

इसी तरह जो शख़्स "गुलूल" यानी क़ौमी व मिल्ली मुश्तरक माल में ख़ियानत करने वाला होगा उसको भी बड़ी रूस्वाई का सामना करना पड़ेगा, क़ुरआन-ए-करीम में है:

وَمَنْ يَّغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

और जो ख़ियानत करेगा वह ख़ियानत वाली चीज़ें लेकर क़ियामत में हाज़िर होगा।

(آل عمران آیت:۱۶۱)

और हदीस में फ़रमाया गया कि जिस शख़्स ने जिस चीज़ में ख़ियानत की होगी वह उसको अपनी गर्दन पर लादकर मैदाने मह्शर में आयेगा, जैसे अगर ऊंट लिया होगा तो वह गर्दन पर चढ़कर आवाज़ निकाल रहा होगा और घोड़ा चुराया होगा तो वह सर पर हिनहिना रहा होगा। الی آخره (आगे हदीस और भी है)

(मुस्लिम शरीफ़ 2/122)

इसलिए मिल्ली और क़ौमी दर्जे के फ़ंड (जैसे मसाजिद और मदारिस के माल) को बिला इस्तिहक़ाक़ अपने इस्तिमाल में लाना सख़्त ख़तरे की चीज़ है

जो लोग ऐसी ज़िम्मेदारियों पर मुक़र्रर हैं उनको ख़ासकर माली मुआमलात में इन्तिहाई एहतियात से काम लेने की ज़रूरत है वर्ना आख़िरत में जवाब देने से वे बच नहीं सकेंगे। अल्लाह तआला हम सबको आख़िरत में जवाब देने से महफ़ूज़ रखे। आमीन

तकब्बुर करने वालों की ज़िल्लतनाक हालत

जो लोग दुनिया में मुतकब्बिर बन कर रहे होंगे, क़ियामत के दिन उनकी ज़िल्लत और बे-वक़अती का आलम यह होगा कि उन्हें ज़मीन पर रेंगने वाली चियूँटियों की सूरत में मैदाने महशर में लाया जायेगा कि उन्हें लोग अपने पैरों से रोंदेंगे। इर्शाद-ए-नबवी है:

يَبْعَثُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أُنَاساً فِي صُوْرَةِ الذَّرِّ يَطَؤُهُمُ النَّاسُ بِأَقْدَامِهِمْ فَيُقَالُ: مَا هٰؤُلَاءِ فِي صُوَرِ الذَّرِّ فَيُقَالُ هٰؤُلَاءِ الْمُتَكَبِّرُوْنَ فِي الدُّنْيَا.

(رواه البزار الترغيب والترهيب ٤/٢٠٨)

अल्लाह तआला क़ियामत के दिन कुछ लोगों को ज़लील चियूँटियों की शक्ल में उठायेगा, जिनको लोग अपने पैरों से रोंद रहे होंगे, तो कहा जायेगा कि लह लोग चियूँटियों की शक्ल में क्यों हैं? तो जवाब मिलेगा कि यह दुनिया में गुरूर व तकब्बुर करने वाले थे।

यानी जो लोग दुनिया में दूसरों को हक़ीर समझकर उनके साथ ज़िल्लत अंगेज़ बर्ताव करते थे ऐसे मुतकब्बिरीन को क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उनकी औक़ात बता देगा और सारे आलम के पैरों तले रोंदकर उन्हें ज़लील फ़रमायेगा, इसलिए अपने आप को अज़ीम ज़िल्लत से बचाने का रास्ता सिर्फ़ यह है कि हम अपनी इस्लाह की फ़िक्र करें, तवाज़ो आजिज़ी की ज़िन्दगी गुज़ारें और तकब्बुर के असरात से भी पूरी तरह बचने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबको तवाज़ो की दौलत से नवाज़े और आख़िरत की ज़िल्लत और रूस्वाई से महफ़ूज़ रखे। आमीन

ग़द्दारी और बद्-अहदी करने वाले की रुस्वाई

ग़द्दारी करना और अहद करके तोड़ना भी इस्लाम में बद्-तरीन गुनाह है, ऐसे ग़द्दार और बद्-अहद लोगों को मैदाने महशर में सख़्त रूस्वाई का सामना

करना होगा, बद्-अ़हद की खुले आम रुस्वाई और फज़ीहत के लिए उसके पीछे एक अ़लामती झंडा उसकी छोटी बड़ी ग़द्दारी के बराबर लगा दिया जायेगा, जिसे देखते ही लोग पहचान लेंगे कि यह ग़द्दार है, इर्शाद-ए-नबवी है:

إِذَا جَمَعَ اللّٰهُ الْأَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرْفَعُ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَآءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ هٰذِهٖ غَدْرَةُ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ. (مسلم شريف ٢/٨٣، التذكرة ٣٤١)

जब अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन पहले आने वाले और बाद में आने वाले सबको जमा फ़रमायेगा तो हर ग़द्दार के लिए (निशानी के लिए) अलग झंडा लगा दिया जायेगा और कहा जायेगा कि यह फ़्लां के बेटे फ़्लां शख़्स की ग़द्दारी (की निशानी) है।

इसलिए ग़द्दारी और अ़हद तोड़ने से बचना भी ज़रूरी है, यह ऐसा जुर्म है कि आख़िरत में तो इसकी सज़ा है ही, दुनिया में भी ग़द्दारों को हमेशा ज़िल्लत और हिक़ारत ही से याद किया जाता है। और बरसों गुज़रने के बावुजूद भी उनपर लअ़्न तअ़्न (बुरा भला कहना) का सिलसिला जारी रहता है। ग़द्दारी और अ़हद तोड़ना किसी के साथ जाइज़ नही है यहां तक कि अगर ग़ैर मुस्लिम से भी कोई मुआ़हदा कर लिया गया हो तो उसकी पासदारी भी लाज़मी है।

❑ ❑

छटी फ़स्ल

मीज़ाने अमल

क़ियामत के दिन अल्लाह तबारक व तआला अपने अज़ीमुश् शान अद्ल और इंसाफ़ को ज़ाहिर करने के लिए मख़्लूक़ात के आमाल तोलने के लिए "तराज़ू" क़ाइम फ़रमायेगा। इर्शाद-ए-ख़ुदावन्दी है:

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا، وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا، وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ. (الانبياء ٤٧)

और वहां क़ियामत के दिन हम मीज़ाने अद्ल क़ाइम करेंगे, तो किसी पर बिल्कुल ज़ुल्म न होगा और अगर किसी का अमल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको वहां हाज़िर कर देंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।

और दूसरी जगह इर्शाद है:

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ نِ الْحَقُّ، فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ، وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ. (الاعراف آيت : ٩)

और उस रोज़ वज़न भी वाक़ेअ़ होगा, फिर जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा तो ऐसे लोग कामियाब होंगे और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा तो वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़्सान कर लिया, इस वजह से कि हमारी आयतों की हक़ तल्फ़ी करते थे।

इस अज़ीम तराज़ू के एक एक पल्ले में दुनिया जहान कि वुसअ़तें समा जाएंगी और सय्यिदुल मलाइका हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम तोलने के ज़िम्मेदार होंगे। (फ़तहुल बारी 16/659, क़र्तबी अ़न हुज़ैफ़ा 6/201)

यह बड़ा नाज़ुक वक़्त होगा जिसकी नेकियों का पल्ला झुक जायेगा वह अज़ीम सुर्ख़रूई से सरफ़राज़ होगा और जिसकी नेकियों का पल्ला हल्का रह जायेगा यानी उसकी बुराइयाँ ग़ालिब होंगी तो उसकी ज़िल्लत और बद्-हाली नाक़ाबिले ब्यान होगी। एक हदीस में इर्शाद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम है:

يُؤْتٰى بِابْنِ اٰدَمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُوْقَفُ بَيْنَ كِفَّتَيِ الْمِيْزَانِ وَيُوَكَّلُ بِهٖ مَلَكٌ فَاِنْ ثَقُلَ مِيْزَانُهٗ يُنَادِى الْمَلَكُ بِصَوْتٍ يُّسْمِعُ الْخَلَائِقَ : سَعِدَ فُلَانٌ لَّا يَشْقٰى بَعْدَهَا اَبَدًا، وَاِنْ خَفَّ مِيْزَانُهٗ نَادَى الْمَلَكُ بِصَوْتٍ يُّسْمِعُ الْخَلَائِقَ شَقِيَ فُلَانٌ شَقَاوَةً لَّا يَسْعَدُ بَعْدَهَا اَبَدًا.

(قرطبی ٦/٢٠١، کنز العمال ١٤/١٦٦)

आदमी को क़ियामत के दिन लाकर मीज़ाने अ़मल के दोनों पल्लों के सामने खड़ा कर दिया जायेगा और उस जगह एक फ़रिश्ता मुक़र्रर होगा, तो अगर उसका (नेकियों का) तराज़ू भारी रहा तो वह फ़रिश्ता यह ऐलान करेगा जिसे सारी ख़ल्क़े ख़ुदा सुन लेगी कि "फ़्लां सआ़दतयाब हो गया, अब वह कभी भी बद्-नसीब न होगा" और अगर (ख़ुदा न करे) उनका (नेकियों का) तराज़ू हल्का रह गया तो फ़रिश्ता आ़म ऐलान करेगा कि "फ़्लां शख़्स ऐसी महरूमी में गिरफ़्तार हो गया, कि अब कभी भी उसे सआ़दत नसीब न हो सकेगी"।

तराज़ू में आमाल कैसे तोले जाएंगे ?

यहां क़ुद्‌रती तौर पर यह सवाल पैदा होता है कि इंसान आमाल तो करता है मगर वे करने के बाद बज़ाहिर ख़त्म हो जाते हैं और ज़बान से निकली हुई बात फ़िज़ा में तह्‌लील हो जाती है, फिर आख़िर उनको तौला कैसे जायगा? इस इम्कानी सवाल का जवाब देते हुए मश्हूर मुफ़स्सिर और मुहद्दिस-ए-जलील (बुज़ुर्ग) हाफ़िज़ इमादुद्दीन इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इर्शाद फ़रमाया है कि इस बारे में उ़लमा के तीन अक़्वाल हैं:

1. पहला क़ौलः यह है कि ख़ुद आमाल ही को तोला जायगा, मगर उन्हें आख़िरत में अल्लाह तआ़ला हस्बे मुनासबत जिस्मानी सूरतों में तब्दील फ़रमा देगा, फिर उन्हीं जिस्मों को तराज़ू में रखकर तौला जाएगा, इमाम बग़वी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि कुछ इसी तरह की बात हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से भी मरवी है और सही रिवायत में आया है कि क़ियामत के दिन सूरः बक़रा और सूरः आले इम्रान परिन्दों के "बड़े झुन्ड" की शक्ल में आयेंगी और एक रिवायत में है कि क़ुरआन-ए-करीम अपने पढ़ने वाले के पास एक निहायत ख़ूबरू जवान की शक्ल में आता है,

जब पढ़ने वाला पूछता है कि तू कौन है? तो वह कहता है कि मैं तेरा वह क़ुरआन हूँ जिसने तुझे रातों को जगाया और दिन में गर्मी बर्दाश्त कराई, इसी तरह हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अ़न्हु की क़ब्र के सवाल के बारे में हदीस में आया है कि मोमिन के पास एक ख़ूबसूरत नौजवान ख़ुश्बू लगाकर आयेगा वह मोमिन उससे पूछेगा कि तू कौन है? तो वह कहेगा कि मैं तेरा नेक अ़मल हूँ, जबकि काफ़िर और मुनाफ़िक़ के साथ इसके बिल्कुल उलटा मुआ़मला होगा (मज़्कूरा तीन रिवायतें पहले क़ौल की ताईद करती हैं)।

2. दूसरा क़ौलः यह है कि आमाल नामे और रजिस्टर तोले जाएंगे, इसकी ताईद इस वाक़िए से होती है कि क़ियामत के रोज़ एक शख़्स को लाया जायेगा और उसके सामने बुराइयों के 99 रजिस्टर रखे जाएंगे और हर रजिस्टर जहां तक नज़र जायेगी उतना बड़ा होगा, फिर एक छोटी सी परची लाई जाएगी जिसमें "ला इलाह इल्लल्लाह" लिखा होगा वह बन्दा अ़र्ज़ करेगा कि इतने बड़े रजिस्टरों के मुक़ाबले में यह परची भला कैसे फ़ायदा देगी। तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तेरे साथ ज़ुल्म नहीं किया जायेगा, चुनांचे उस परची को दूसरे पल्ले में रखे जाने का हुक्म होगा, उसके रखते ही नेकियों का पल्ला झुक जाएगा। इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को सही क़रार दिया है।

3. तीसरा क़ौलः यह है कि ख़ुद साहिबे अ़मल को तराज़ू में रखकर तोला जाएगा, तो हदीस में आया है कि "क़ियामत के दिन एक बड़ा भारी मोटा ताज़ा आदमी लाया जाएगा मगर अल्लाह के तराज़ू में उसका वज़न मच्छर के पर के बराबर भी न होगा। इर्शादे ख़ुदावन्दी है:

فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا

(الکہف آیت: ۱۰۵)

तो क़ियामत के रोज़ हम उनके नेक आमाल का ज़रा भी वज़न क़ाइम न करेंगे।

और एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सय्यिदना हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु की क़द्र अफ़्ज़ाई फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "क्या तुम्हें उनकी दुब्ली पिंडलियाँ देखकर तअ़ज्जुब होता है? उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु की दो पिंडलियाँ मीज़ाने अ़मल में उहुद पहाड़ से भी ज़्यादा भारी और बावज़न हैं" हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि इन तीनों अक़्वाल में जमा की शक्ल यह है कि हर क़ौल अपनी जगह सही है और

क़ियामत के दिन सूरत-ए-हाल अलग अलग होगी, कभी आमाल बज़ाते ख़ुद तोले जाएंगे, कभी सहीफ़े (कागज़ात) तोले जाएंगे और कभी किसी साहिबे अमल को ही बज़ाते ख़ुद तोला जाएगा, हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि ने उनमें से पहले क़ौल को तर्जीह दी है। (फ़तहुल बारी 6/659, तफ़्सीर इब्ने कसीर मुकम्मल 515)

इसके अलावा इस दौर में ऐसे आलात ईजाद हो गये हैं जिनसे आराज़ को भी नाप लिया जाता है जैसे थर्मा-मीटर से बुख़ार की मिक़दार जानना या बिलड-प्रैशर चेक करना वग़ैरह। तो मुम्किन है कि अल्लाह तआ़ला इसी तरह आमाल के वज़न की भी कोई सूरत निकाले यह उसकी क़ुद्रत और ताक़त से हरगिज़ दूर नहीं है।

तराज़ू में किन लोगों के आमाल तोले जाएंगे ?

मुहक़्क़िक़ीन उलमा के नज़्दीक क़ियामत के दिन लोग आमाल के ऐतिबार से तीन क़िस्मों पर मुश्तमिल होंगे, अव्वल वे लोग जिनके नामा-ए-आमाल में सिरे से किसी बुराई और गुनाह का वुजूद ही न होगा, उनके पास बस नेकियाँ ही नेकियाँ होंगी। इस तरह के लोग उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में बड़ी तादाद में होंगे। उनको हिसाब किताब और आमाल के वज़न के बग़ैर सीधे जन्नत में जाने का फ़ैसला होगा। (उनका ज़िक्र आगे आयेगा, इन्शा अल्लाह)

दूसरे वे कुफ़्फ़ार जिनके पास कुफ़्र के साथ कोई अच्छाई किसी तरह की न होगी, ऐसे लोगों को बिला वज़न जहन्नम रसीद करने का हुक्म होगा।

तीसरे वे बे-अमल मुसलमान और कुफ़्फ़ार होंगे, जिन्होंने मिले जुले आमाल किये होंगे यानी उन्होंने कुछ नेकियाँ भी की होंगी मगर वे नेकियाँ कुफ़्र के मुक़ाबले में बे-हैसियत होंगी, अलबत्ता किसी क़द्र अज़ाब के दरजात कम करने में मददगार बनेंगी। ऐसे लोगों के आमाल तोले जाएंगे और नेकियों का पल्ला हल्का और भारी होने के ऐतिबार से जन्नत या जहन्नम के दरजात का फ़ैसला होगा और कुछ लोगों की नेकियाँ और बुराइयाँ दोनों बिल्कुल बराबर होंगी, उन्हें आराफ़ में रखकर इन्तिज़ार कराया जाएगा, आख़िरकार एक अर्से के बाद उनकी सिफ़ारिश क़ुबूल करके जन्नत में भेज दिया जाएगा। इन्शाअल्लाह।

(मुस्तफ़ाद फ़तहुल बारी 16/658-659)

नेकियों के वज़न में इज़ाफ़ा कैसे ?

अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक नेकियों की क़द्रो क़ीमत और वज़न में इज़ाफ़ा ख़ुलूसे क़ल्ब और इख़्लास की कैफ़ियत से होता है। जितना ज़्यादा हुज़ूर-ए-क़ल्बी और सिर्फ़ रज़ा-ए-इलाही के जज़्बे से अ़मल किया जाएगा उसी ऐतिबार से उस अ़मल का वज़न बढ़ता चला जाएगा और उस जज़्बे में जितनी कमी होगी वैसे ही आख़िरत में वज़न के अन्दर भी कमी हो जाएगी, अगर ख़ुलूस से अ़मल किया जाए तो वज़न में तरक़्क़ी का आलम यह है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ تَمْلَأُ الْمِيزَانَ. (मुस्लिम शरीफ़ 1/118) और कलिमा अल्हम्दुलिल्लाह (क़ियामत के रोज़ इतने बड़े जिस्म में आयेगा कि अकेले) ही मीज़ाने अ़मल को भर देगा और अभी हदीस गुज़र चुकी है कि कलिमा-ए- لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की परची रखते ही नेकियों का पल्ला झुक जाएगा। यह वह ज़िक्रे ख़ुदावन्दी है जो उसने कभी ज़िन्दगी में कामिल इख़्लास से मख़्लूक़ से बे-ग़रज़ होकर किया होगा, अल्लाह तआ़ला उसके इख़्लास की बदौलत उसको निहायत वज़नी बना देगा।

(अत्तज़्किरा 368)

और एक रिवायत में यह भी है कि एक मोमिन के आमाल तोले जाते वक़्त जब उसकी नेकियों में कुछ कसूर रह जाएगी तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक परची नेकियों के पल्ले में डालेंगे जिसमें उसका ज़िन्दगी में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर दरूद शरीफ़ पढ़ने का ज़िक्र होगा, उसके रखते ही नेकियों का पल्ला झुक जाएगा। (अत्तज़्किरा 361)

मतलब यह कि नेकियों में वज़न इख़्लास से आता है, अगर इख़्लास हो तो देखने में छोटे से छोटा अ़मल आख़िरत में बड़ा भारी हो जाएगा और अगर इख़्लास न हो तो देखने में बहुत बड़े नज़र आने वाले आमाल आख़िरत में बिल्कुल बे-वज़न और बे-हैसियत हो जाएंगे।

हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के आमाल सबसे ज़्यादा वज़नी होने की वजह ?

हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के सारी उम्मत से अफ़ज़ल होने की वजह भी यही है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पुर-फ़ैज़ सोह्बत की

वजह से उनको ऐसा कामिल जज़्बा-ए-इख़्लास नसीब हुआ था, जिसकी नज़ीर बाद में नहीं पाई जाती, इसी इख़्लासे कामिल ने उनके आमाल को हद दर्जा वज़्नी बना दिया कि बाद में आने वाला उम्मती अपने बड़े से बड़े अ़मल के ज़रिए भी उनके पांव की धूल को नहीं पहुंच सकता, इसी लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

لَا تَسُبُّوْا أَصْحَابِیْ لَا تَسُبُّوْا أَصْحَابِیْ، فَوَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَّا أَدْرَكَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيْفَهٗ

(مسلم شریف ۲/ ۳۱۰، بخاری شریف ۱/ ۵۱۸، ترمذی شریف ۲/ ۲۲۵)

मेरे सहाबा को बुरा भला मत कहो, मेरे सहाबा को बुरा भला मत कहो, इसलिए कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर तुमसे कोई शख़्स उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी सदक़ा कर दे फिर भी मेरे सहाबा को एक मुद (ग़ल्ला नापने का पैमाना) बल्कि आधे मुद् ग़ल्ला (सदक़ा करने) के सवाब को भी न पहुंच पाएगा।

इसलिए अगर हम चाहते हैं कि हमारे नेक आमालों में ज़्यादा से ज़्यादा वज़न पैदा हो और हमारे दरजात में इज़ाफ़ा हो तो हमें हर मरहले पर इख़्लास को पेश-ए-नज़र रखना ज़रूरी होगा और सिर्फ़ रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी को मक़्सद बनाकर इबादतें करनी होंगी। अल्लाह तआ़ला हम सबको इसकी फ़िक्र अ़ता फ़रमाये और रिया वग़ैरह से महफ़ूज़ रखे। आमीन

कुछ वज़्नी आमाल का ज़िक्र

ऊपर ज़िक्र किया गया कि हर अ़मल में वज़न इख़्लास से आएगा चाहे कोई भी अ़मल हो, फिर भी अहादीस तय्यिबा में कुछ आमाल और अज़्कार को ख़ास तौर पर वज़्नी बताया गया है। जैसे कि एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَا مِنْ شَیْءٍ یُوْضَعُ فِی الْمِیْزَانِ أَثْقَلُ مِنْ خُلُقٍ حَسَنٍ وَّإِنَّ صَاحِبَ حُسْنِ الْخُلُقِ لَيَبْلُغُ بِهٖ دَرَجَةَ صَاحِبِ

मीज़ाने अ़मल में रखी जाने वाली कोई चीज़ हुस्ने अख़्लाक़ से भारी नहीं है। हुस्ने अख़्लाक़ की सिफ़त रखने वाला शख़्स अपनी इस सिफ़त की बदोलत

الصَّوْمِ وَالصَّلٰوةِ.

(नफ़्ल) रोज़े और नमाज़ पढ़ने वाले के दर्जे तक पहुंच जाता है।

(ترمذی شریف ۲/۲۰)

वाक़िआ़ हुस्ने अख़्लाक़ ऐसी सिफ़त है जो इंसान को दुनिया में भी इज़्ज़त देती है और आख़िरत में भी उसे अ़ज़ीमुश्शान इज़्ज़त से सरफ़राज़ करेगी। एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से इर्शाद फ़रमाया कि "ख़ुश अख़्लाक़ी की सिफ़त रखने वाले शख़्स के बारे में मेरा फ़ैसला अटल है कि मैं उसे क़ियामत के दिन अ़र्श के साये में जगह दूंगा और अपने हज़ीरतुल क़ुद्स से सैराब करूंगा और अपने तक़र्रुब से नवाज़ूंगा"।

(المتجر الرابح فی ثواب العمل الصالح عن الطبرانی ۳۷۰)

इसी तरह तस्बीह व तह्मीद के कलिमात अल्लाह के नज़्दीक इन्तिहाई वज़नदार हैं बुख़ारी शरीफ़ की आख़िरी हदीस है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

كَلِمَتَانِ حَبِيْبَتَانِ إِلَى الرَّحْمٰنِ، خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيْلَتَانِ فِي الْمِيْزَانِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ. (بخاری شریف ۲/۱۱۲۹)

दो बोल, रह्मान को बहुत पसन्द हैं, ज़बान पर बहुत हल्के फुल्के है मीज़ाने अ़मल में भारी हैं (वे कलिमे ये हैं) सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम।

और एक रिवायत से मालूम होता है कि नेकियों के पल्ले को वज़नी बनाने में यह बात भी काम आएगी कि किसी शख़्स पर किसी ने कोई बोह्तान लगाया होगा और वह उससे बरी होगा, तो उस बोह्तान की वजह से उसे जो दिली तक्लीफ़ पहुंचेगी ये तक्लीफ़ उसको रहम के क़ाबिल बना देगी। एक रिवायत में है:

يُجَاءُ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَتُوْضَعُ حَسَنَاتُهُ فِيْ كِفَّةٍ وَّسَيِّئَاتُهُ فِيْ كِفَّةٍ فَتَرْجَحُ السَّيِّئَاتُ، فَتَجِيْءُ بِطَاقَةٌ فَتَقَعُ فِيْ كِفَّةِ الْحَسَنَاتِ فَتَرْجَحُ بِهَا، فَيَقُوْلُ: رَبِّ مَا هٰذِهِ الْبِطَاقَةُ؟

एक आदमी क़ियामत के दिन लाया जाएगा, फिर उसकी नेकियाँ एक पल्ले में और बुराइयाँ दूसरे पल्ले में रख दी जाएंगी, तो बुराइयों वाला पल्ला झुक जाएगा, फिर एक परची आएगी जो नेकियों के पल्ले में रखी जाएगी जिसकी वजह से वह पल्ला झुक जाएगा, तो वह

فَمَا مِنْ عَمَلٍ عَمِلْتُهُ فِىْ لَيْلٍ اَوْنَهَارٍ اِلَّا وَقَدْ اِسْتَقْبَلْتُ بِهٖ قَالَ: هٰذَا مَاقِيْلَ فِيْكَ وَاَنْتَ مِنْهُ بَرِئٌ" فَيَنْجُوْ مِنْ ذٰلِكَ.

(نوادرالاصول للحکیم الترمذی ۱/۱۲۰، کنزالعمال ۱۴/۱۶۵)

आदमी (हैरत से) पूछेगा, कि यह परची कैसी है? इसलिए कि मैंने ज़िन्दगी में रात दिन में जो आमाल किये थे वे सब मेरे सामने आ चुके, तो कहा जाएगा कि यह परची उस (बोहतान) के बारे में है जो तुझपर लगाया गया था जबकि तू उससे बरी था, चुनांचे उसी के ज़रीये वह नजात पा जाएगा।

ग़ौर फ़रमाइये जब एक मुबर्रा (पाक) शख़्स पर बोहतान बांधना ऐसी चीज़ है जिससे वह मुबर्रा (पाक) आदमी अल्लाह की नज़र में रहम के क़ाबिल बन जाता है तो इससे अंदाज़ा लगाइये कि ख़ुद बोहतान लगाने वाले के लिए यह बुराई कितनी वज़नी होगी? जो उसे अल्लाह तआ़ला की रह्मत से दूर कर देगी, इसी बिना पर सय्यिदना हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वजूहहु का इर्शाद है:

اَلْبُهْتَانُ عَلَى الْبَرِيْئِ اَثْقَلُ مِنَ السَّمٰوٰتِ. (نوادرالاصول ۱/۱۲۰)

एक (बुह्तान से) बरी शख़्स पर बोह्तान बांधना सब आसमानों से ज़्यादा वज़नी (बुराई) है।

अल्लाह तआ़ला सब मुसलमानों को बोह्तान तराज़ियों से पूरी तरह महफ़ूज़ रखे। आमीन ❐ ❐

सातवीं फ़स्ल

रह्मते खुदावन्दी का ज़बरदस्त मुज़ाहरा

यह अगरचे हक़ है कि अल्लाह तआ़ला मैदाने महशर में इंसाफ़ की तराज़ू क़ाइम फ़रमाएगा ताकि हर एक के सामने उसका अ़मल और उसकी हैसियत आ जाये और उस दिन अर्हमुर्राहिमीन अपने बन्दों के साथ इन्तिहाई रहम व करम अ़फ़्व व दरगुज़र और रह्मत का मुआ़मला भी फ़रमाएगा। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

إِنَّ لِلّٰهِ مِائَةَ رَحْمَةٍ فَمِنْهَا رَحْمَةٌ بِهَا يَتَرَاحَمُ الْخَلْقُ بَيْنَهُمْ وَتِسْعَةٌ وَتِسْعُوْنَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ.

(مسلم شریف ۲/۳۵٦)

अल्लाह तआ़ला की रह्मत के सौ हिस्से हैं जिनमें से सिर्फ़ एक हिस्सा रह्मत का असर है कि मख़्लूक़ आपस में एक दूसरे पर मेहरबानी करती है और उस रह्मत के 99 हिस्से क़ियामत के दिन (मग़्फ़िरत) के लिए मख़्सूस हैं।

तो मैदाने महशर में अर्हमुर्राहिमीन की तरफ़ से जिस रहमत का मुज़ाहरा होगा वह नाक़ाबिले तसव्वुर है, उसकी एक झलक इस रिवायत में ब्यान फ़रमाई गई, आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं:

رَجُلٌ يُؤْتٰى بِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ اِعْرِضُوْا عَلَيْهِ صِغَارَ ذُنُوْبِهٖ، وَارْفَعُوْا عَنْهُ كِبَارَهَا، فَتُعْرَضُ عَلَيْهِ صِغَارُ ذُنُوْبِهٖ فَيُقَالُ عَمِلْتَ يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، كَذَا وَكَذَا، وَعَمِلْتَ يَوْمَ كَذَا وَكَذَا، كَذَا وَكَذَا، فَيَقُوْلُ نَعَمْ

क़ियामत के दिन एक शख़्स को लाया जाएगा और (फ़रिश्तों को) हुक्म होगा कि अभी सिर्फ़ उसके छोटे गुनाह पेश किये जायें और बड़े गुनाह रोककर रखे जाएं, तो उसके छोटे गुनाहों को पेश किया जाएगा और उससे पूछा जाएगा कि तुम ने फ़्लां फ़्लां दिन यह किया? तुमने फ़्लां फ़्लां दिन यह किया? तो वह इस्बात (किसी बात को मान लेना)

لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُنْكِرَ وَهُوَ مُشْفِقٌ مِنْ كِبَارِ ذُنُوبِهِ أَنْ تُعْرَضَ عَلَيْهِ فَيُقَالُ لَهُ فَإِنَّ لَكَ مَكَانَ كُلِّ سَيِّئَةٍ حَسَنَةً فَيَقُولُ رَبِّ قَدْ عَمِلْتُ أَشْيَاءَ لَا أَرَاهَا هَاهُنَا.

(مسلم شريف ١/١٠٦)

में जवाब देगा, इंकार न कर सकेगा और (दिल दिल में) बड़े गुनाहों की पेशी से डर रहा होगा, तो उससे कहा जाएगा कि (जा) तुझे हर बुराई के बदले में नेकी दी जाती है तो वह फ़ौरन (या तो डरा जा रहा था या) यह बोलेगा कि ऐ मेरे रब! कुछ और आमाल भी तो मैंने किए थे जो यहां मुझे दिखाई नहीं दिए, (मतलब यह होगा कि वे भी सामने आयें ताकि उनके बदले में भी नेकियाँ मिलें)।

रावी कहते हैं कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यह हदीस इर्शाद फ़रमा रहे थे तो चेहरे पर मुस्कराहट फैल रही थी, यहां तक कि आपके मुबारक दांत भी ज़ाहिर हो गये थे, बहरहाल उस दिन बहाने बहाने से अह्ले ईमान की मग़्फ़िरत और दरजात की बुलन्दी के फ़ैसले होंगे और अरहमुर्राहिमीन की तरफ़ से भरपूर रह्मत का ज़हूर होगा, अल्लाह तआ़ला हम सबको अपनी पूरी रह्मत का मुस्तहिक़ बनाये। आमीन

अ़र्श के साये में

मैदाने मह्शर में न कोई इमारत होगी, न पेड़ होगा, न किसी का टेंट होगा, न किसी तरह का साया होगा बल्कि सब एक चटयल मैदान में इस तरह जमा होंगे कि हर शख़्स एक दूसरे को देख रहा होगा और एक दूसरे की आवाज़ सुन रहा होगा उस दिन अगर साया होगा तो सिर्फ़ अ़र्शे ख़ुदावन्दी का साया होगा और जो ख़ुश नसीब अ़र्श के साये में पहुंच जाएगा उसको फिर किसी क़िस्म की परेशानी नहीं होगी, गोया कि अ़र्श का साया अल्लाह की तरफ़ से अपने ख़ास और मुक़र्रब बन्दों के लिए ख़ुसूसी नशिस्त गाह के तौर पर इस्तिमाल होगा।

बहुत सी हदीसों में उन ख़ुश नसीब लोगों की फ़ेहरिस्त ब्यान हुई है जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला ने क़ियामत के दिन अपने अ़र्श के नीचे अदब के साथ बिठाने का ऐलान फ़रमाया है। मुस्लिम शरीफ़ में रिवायत है कि:

سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللّٰهُ مِنْ ظِلِّهٖ يَوْمَ لَاظِلَّ إِلَّا ظِلُّهٗ (١) اَلْإِمَامُ الْعَادِلُ (٢) وَشَابٌّ نَشَأَ بِعِبَادَةِ اللّٰهِ (٣) وَرَجُلٌ قَلْبُهٗ مُعَلَّقٌ فِي الْمَسْجِدِ (٤) وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِي اللّٰهِ اِجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ (٥) وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصَبٍ وَّجَمَالٍ فَقَالَ إِنِّيْ أَخَافُ اللّٰهَ (٦) وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتّٰى لَا تَعْلَمَ يَمِيْنُهٗ مَا تُنْفِقُ شِمَالُهٗ (٧) وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللّٰهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ.

(مسلم شريف ١/٣٣١)

सात आदमियों को अल्लाह तबारक व तआ़ला उस दिन अपने (अ़र्श के) साये में रखेगा जब उसके साये के अ़लावा किसी का साया न होगा। 1. आदिल बादशाह 2. वह जवान जो अल्लाह की इबादत में परवान चढ़े 3. वह शख़्स जिसका दिल मस्जिद में अटका रहे 4. वह आदमी जो एक दूसरे से सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के वास्ते का ताल्लुक़ रखें उसी पर जमा हों और उसी पर अलग हों 5. और वह आदमी जिसे कोई ब-वजाहत ख़ूबसूरत औ़रत (बदकारी की) दावत दे तो वह जवाब में कहे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ 6. और वह शख़्स जो इतने ख़ुफ़िया तरीक़े पर सद्क़ा ख़ैरात करे कि उसके दाहिने हाथ को भी यह पता न चले कि बाऐं हाथ ने क्या ख़र्च किया? 7. और वह आदमी जो तन्हाई में अल्लाह तआ़ला को याद करे फिर उसकी आँखें डबडबा आयें।

मगर यह तख़्सीस सात ही तरह के हज़रात के साथ नहीं बल्कि दूसरी कुछ हदीसों में और आमाल पर भी उसी एज़ाज़ का ऐलान किया गया है, मुस्लिम शरीफ़ में है: مَنْ اَنْظَرَ مُعْسِرًا اَوْ وَضَعَ لَهٗ اَظَلَّهُ اللّٰهُ فِيْ ظِلِّهٖ يَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّهٗ. (मुस्लिम शरीफ़ 2/416, फ़तुहुल बारी 3/183) जो शख़्स किसी तंगदस्त को मोहलत दे या उसका क़र्ज़ माफ़ कर दे तो अल्लाह तआ़ला उसे उस दिन अपने साये में जगह अ़ता फ़रमायेगा जब उसके साये के सिवा किसी का साया न होगा। इसके अ़लावा हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने उन सिफ़ात की फ़ेहरिस्त में एक मुस्तक़िल रिसाला "مَعْرِفَةُ الْخِصَالِ الْمُوْصِلَةِ اِلَى الظِّلَالِ" के नाम से लिखा है जिसमें ऊपर दी गई सिफ़ात के साथ नीचे दिये गये आमाल को भी शामिल फ़रमाया है:

1. अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की मदद करना 2. क़र्ज़दार के

क़र्ज़े की अदायगी करना 3. मुकातब (ग़ुलाम की आज़ादी) में मदद करना 4. लोगों के साथ खुश अख़्लाक़ी से पेश आना 5. बारबार ग़म से साबिक़ा पड़ना 6. अमानत और दियानत के साथ तिजारत करना 7. मस्जिद की तरफ़ चल कर जाना 8. नागवारी-ए-तबअ़ के बावुजूद कामिल (तरीक़े पर) वुज़ू करना 9. बचा हुआ खाना मोहताजों को खिलाने का मामूल बना लेना 10. अपना हक़ फ़ित्ने के डर से छोड़ देना और 11. किसी ज़रूरतमंद की किफ़ालत करना।

(फ़त्हुल बारी 3/183)

इस बारे में अ़ल्लामा सख़ावी रहमतुल्लाहि अ़लैहि और अ़ल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने भी बाक़ायदा रिसाले लिखे हैं और ऐसी सिफ़ात की तादाद 90 तक पहुंचा दी है लेकिन वे रिवायतें अक्सर कम्ज़ोर हैं।

(फ़ैज़ुल क़दीर 4/114-117)

बहरहाल दुनिया ही में हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम ऐसे आमाल इख़्तियार करें कि हमें मैदाने मह्शर में ऐज़ाज़ और इक्राम के साथ अ़र्शे खुदावन्दी का मुबारक साया ब-आ़फ़ियत नसीब हो जाये। हमारे आक़ा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह हम पर अ़ज़ीम एहसान है कि आपने हमें उन अस्बाब की ख़बर अ़ता फ़रमा दी है, इन तमाम तफ़्सीलात के आने के बावुजूद अगर कोई शख़्स कौताही करता है तो उससे बड़ा मह्रूम और कोई नहीं हो सकता है।

हर शख़्स अपने मह्बूब के साथ होगा

हज़रत सईद इब्ने ज़ुबैर रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा एक अंसारी सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस हाल में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर हुए कि उनके चेहरे से ग़म व मलाल के आसार नुमायाँ थे, हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें देखकर फ़रमाया, क्या बात है तुम कुछ ग़मगीन नज़र आ रहे हो? तो उन सहाबी ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! एक बात सोचकर मुझे ग़म हो रहा है। हुज़ूर ने फ़रमाया वह क्या बात है? तो अ़र्ज़ किया कि बात यह है कि आज तो हम अल्हम्दुलिल्लाह सुब्ह शाम आपकी ज़ियारत और मज्लिस में हाज़िरी से मुस्तफ़ीद होते हैं लेकिन कल आख़िरत में आप तो अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के साथ ऊंचे दरजे पर होंगे,

(हमारी वहां तक पहुंच कहां होगी?) नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई जवाब इर्शाद नहीं फ़रमाया इस पर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम यह आयत लेकर तश्रीफ़ लाये:

وَمَن يُطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ، وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا. (سورة النساء)

और जो कोई हुक्म माने अल्लाह का और उसके रसूल का तो वह उनके साथ हैं जिन पर अल्लाह ने इनआम किया कि वे नबी और सिद्दीक़ और शुहदा और नेक बख़्त हैं और अच्छी है उनकी रफ़ाक़त।

चुनांचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सहाबी को बुलाया और इस आयत की ख़ुशख़बरी से आगाह फ़रमाया। (तफ़्सीर इब्ने कसीर कामिल 341)

एक मर्तबा हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद से नमाज़ पढ़ाकर हुजरा-ए-मुबारका की तरफ़ तश्रीफ़ ले जा रहे थे, एक देहाती शख़्स आया और सवाल करने लगा "يا رسول الله متى الساعة؟" (ऐ अल्लाह के रसूल! क़ियामत कब आयेगी?) हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "ويحك ما اعددت لها" (अरे तूने क़ियामत की तैयारी क्या कर रखी है?) तो उसने अर्ज़ किया कि हुज़ूर! मेरे पास ज़्यादा रोज़े नमाज़ का ज़ख़ीरा तो है नहीं, बस इतना है कि मुझे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत है। उसका जवाब सुनकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ (आदमी का हश्र उसी के साथ होगा जिससे वह सच्ची मुहब्बत रखता है)। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस्लाम लाने के बाद हमें इस अज़ीम मसर्रत आमेज़ ऐलान से ज़्यादा किसी चीज़ से ख़ुशी नहीं हुई। (इब्ने कसीर 342)

इसी तरह बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह की रिवायत में है कि "जो ताजिर सच्चाई और अमानत के साथ तिजारत करता है तो उसका हश्र क़ियामत के दिन हज़रात अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम, हज़रात सिद्दीक़ीन रज़ियल्लाहु अन्हु, शुहदा और सालिहीन रहिमहुमुल्लाहु तआला के साथ होगा।"।

इसी हदीस से यह भी मालूम हो गया कि अगर बद्-अमलों से मुहब्बत है तो हश्र भी उन्हीं के साथ होगा, इसलिए हमें सोचना चाहिए कि हम किसे महबूब

बना रहे हैं? और सिर्फ़ ऐसे ही शख़्स से मुहब्बत करनी चाहिए जिसकी मुहब्बत हमारे लिए आख़िरत में नफ़ा बख़्श हो सके।

हाफ़िज़-ए-क़ुरआन का एज़ाज़

मैदाने महशर में क़ुरआन-ए-करीम हिफ़्ज़ करने वाले को इन्तिहाई इज़्ज़त से नवाज़ा जाएगा, ख़ुद क़ुरआन-ए-करीम उसकी सिफ़ारिश करेगा और उसको करामत का ताज और इज़्ज़त का जोड़ा पहनाया जाएगा। एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

يَجِيءُ الْقُرْآنُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُوْلُ رَبِّ حَلِّهْ فَيُلْبَسُهُ تَاجَ الْكَرَامَةِ ثُمَّ يَقُوْلُ يَارَبِّ زِدْهُ فَيُلْبَسُ حُلَّةَ الْكَرَامَةِ ثُمَّ يَقُوْلُ يَارَبِّ ارْضَ عَنْهُ فَيَرْضَى عَنْهُ فَيُقَالُ لَهُ اِقْرَأْ وَارْقَ وَيُزَادُ بِكُلِّ آيَةٍ حَسَنَةً.

(ترمذی شریف ۲/۱۱۹)

क़ियामत के दिन क़ुरआन-ए-करीम (अल्लाह के दरबार में) आकर अ़र्ज़ करेगा, कि ऐ मेरे रब! इस (क़ुरआन पढ़ने वाले) को जोड़ा पहनाइये। तो उसे करामत का ताज पहनाया जाएगा, फिर क़ुरआन-ए-करीम सिफ़ारिश करेगा कि इसके एज़ाज़ में और इज़ाफ़ा फ़रमाइये, तो उसको इज़्ज़त का जोड़ा पहना दिया जाएगा, फिर क़ुरआन-ए-करीम कहेगा कि ऐ रब! इससे राज़ी हो जाइये। तो अल्लाह तआ़ला उसको अपनी रज़ा से नवाज़ देगा, फिर उससे कहा जाएगा कि पढ़ता जा और (जन्नत में) चढ़ता जा और हर आयत के बदले एक नेकी में इज़ाफ़ा किया जाता रहेगा।

यह उस शख़्स का एज़ाज़ है जिसकी आज आ़म दुनियादारों की नज़र में कोई इज़्ज़त नहीं, बल्कि अगर कोई इस लाइन में लगता है तो उसे क़रीबी रिश्तेदारों से और दोस्त और अहबाब से तअ़्ने सुनने को मिलते हैं। मैदाने महशर में जब इस शख़्स को "आ़लमी एज़ाज़" से नवाज़ा जाएगा तब उन दुनियादारों को अपनी महरूमी का एहसास होगा और गुज़री हुई ज़िन्दगी पर हसरत व अफ़्सोस होगा, मगर उस वक़्त कोई हसरत काम न आ सकेगी।

हाफ़िज़-ए-क़ुरआन के माँ-बाप का एजाज़

क़ुरआन-ए-करीम के ज़रिये से न सिर्फ़ यह कि हाफ़िज़ को इज़्ज़त मिलेगी बल्कि महशर में जमा हुए तमाम लोगों के सामने हाफ़िज़े क़ुरआन के माँ-बाप को भी शानदार एजाज़ से नवाज़ा जाएगा। एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ قَرَأَ الْقُرْآنَ وَعَمِلَ بِمَا فِيْهِ أُلْبِسَ وَالِدَاهُ تَاجاً يَّوْمَ الْقِيَامَةِ ضَوْؤُهُ أَحْسَنُ مِنْ ضَوْءِ الشَّمْسِ فِيْ بُيُوْتِ الدُّنْيَا لَوْ كَانَتْ فِيْكُمْ فَمَا ظَنُّكُمْ بِالَّذِيْ عَمِلَ بِهٰذَا.

(مشکوة شریف/١٨٦)

जो शख़्स क़ुरआन-ए-करीम को पढ़कर उस पर अ़मल करे तो उसके माँ-बाप को क़ियामत के दिन ऐसा (शानदार) ताज पहनाया जाएगा जिसकी रौशनी उस सूरज की रौशनी से कहीं उ़म्दा होगी जो दुनिया के घरों में निकला हुआ हो, अगर तुम्हारे घरों में हो (यानी जब इतनी दूर से सूरज पूरी दुनिया को रौशन करता है तो क़रीब करने पर उसकी रौशनी का क्या हाल होगा? तो जब माँ-बाप का यह हाल है) तो तुम्हारा क़ुरआन पर ख़ुद अ़मल करने वाले के बारे में क्या ख़्याल है? (यानी इसी से अंदाज़ा कर लो)।

आज के माद्दियत परस्त माहोल में अगर कोई अल्लाह का बंदा अपने लख़्ते जिगर (बेटे) को हिफ़्ज़े क़ुरआन की तालीम दिलाता है तो उसे तरह तरह की नागवार बातों से वास्ता पड़ता है, उन सब बातों को बर्दाश्त करने और अपनी औलाद की बेहतरीन दीनी तर्बिय्यत देने के बदले में माँ-बाप को तमाम पहले आने वालों और बाद में आने वालों के सामने वह इ़ज़्ज़त मिलेगी जिसके बारे में दुनिया में सोचा ही नहीं जा सकता। इस हदीस में ऐसे माँ-बाप के लिए इन्तिहाई अ़ज़ीम ख़ुशख़बरी है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को इस अ़ज़ीम ख़ुशख़बरी का मुस्तहिक़ बनाये। आमीन

महशर में नूर के मिम्बर

मैदाने महशर में एक वक़्त ऐसा भी आएगा कि जगह जगह नूर के रौशन

मिम्बर क़ाइम कर दिए जाएंगे, जिन पर वे लोग तशरीफ़ फ़रमा होंगे जो आपस में एक दूसरे से सिर्फ़ अल्लाह वास्ते का ताल्लुक़ रखते होंगे, जिनकी हालत अम्बिया और शुहदा के लिए भी रश्क के क़ाबिल होगी। एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

اَلْمُتَحَابُّوْنَ فِى جَلَالِي لَهُمْ مَنَابِرُ مِنْ نُوْرٍ يَغْبِطُهُمُ النَّبِيُّوْنَ وَالشُّهَدَآءُ.

(مشكوة شريف/٤٢٦)

मेरी अज़्मत और जलाल (बड़ाई) की वजह से आपस में ताल्लुक़ और मुहब्बत रखने वालों के लिए क़ियामत में नूर के मिम्बर होंगे जिन पर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और शुहदा भी रश्क करेंगे (यानी उनकी तारीफ़ करेंगे)।

4 उमूमी सवाल

मैदाने महशर में सबसे 4 बातों के बारे में पूछा जाएगा, जिस शख़्स ने इन चार सवालों का जवाब अपनी अमली ज़िन्दगी में सही दिया होगा वह कामियाब होगा और जिसने कौताही और ग़फ़लत में ज़िन्दगी गुज़ारी होगी वह नुक़्सान और ख़सारे में रहेगा। वे सवालात क्या हैं उनके बारे में पैग़म्बर अलैहिस्सलातु वस्सलाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

لَنْ تَزُوْلَ قَدَمَا عَبْدٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُسْئَلَ عَنْ أَرْبَعِ خِصَالٍ، عَنْ عُمْرِهٖ فِيْمَآ أَفْنَاهُ، وَعَنْ شَبَابِهٖ فِيْمَآ أَبْلَاهُ، وَعَنْ مَالِهٖ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهٗ وَفِيْمَآ أَنْفَقَهٗ وَعَنْ عِلْمِهٖ مَاذَا عَمِلَ فِيْهِ.

(الترغيب والترهيب ٢١٤/٤)

किसी शख़्स के क़दम क़ियामत के दिन उस वक़्त तक अपनी जगह से न हटेंगे जब तक कि चार बातों की उससे पूछताछ न हो जाये। 1. उम्र कहां लगाई? 2. जवानी कहां गंवाई? 3. माल कहाँ से कमाया और कहां ख़र्च किया? 4. इल्म पर कहां तक अमल किया?

इसलिए अक़्लमंदी का तक़ाज़ा यह है कि हम दुनिया ही में इन सवालों का बेहतर जवाब देने की तैयारी करें ताकि हम आख़िरत के इम्तिहान में सुर्ख़-रू हो सकें। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ से नवाज़े। आमीन □ □

सातवाँ हिस्सा

आख़िरी ठिकाने की तरफ़

जहन्नम! मैदान-ए-महशर में

नूर की तक़सीम

जन्नत की तरफ़ रवानगी

जन्नत की नेअ़मतें

जहन्नम की हौलनाकियाँ

मोमिनीन की जहन्नम से नजात

पहली फ़स्ल

मैदाने महशर में "जहन्नम" को लाये जाने का मंज़र

क़ियामत के दिन निहायत अज़ीम वुस्अत और अज़ाब वाली "जहन्नम" को खींचकर लाया जाएगा, उसकी हालत कितनी दह्शतनाक होगी उसका अंदाज़ा इस हदीस से लगाया जा सकता है, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

يُؤْتَى بِالنَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَهَا سَبْعُوْنَ أَلْفَ زِمَامٍ مَعَ كُلِّ زِمَامٍ سَبْعُوْنَ أَلْفَ مَلَكٍ يَجُرُّوْنَهَا. (مسلم شريف ٢/٣٨١، الترغيب والترهيب ٤/٢٤٩)

क़ियामत के दिन जहन्नम को इस हाल में लाया जाएगा कि उसकी सत्तर हज़ार लगामें होंगी और हर लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे जो उसे खींच रहे होंगे।

अल्लाहु अक्बर! उस मंज़र को सोचकर ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं। अल्लाह तआला हम सबको अपने अज़ाब और जहन्नम से पूरी तरह महफ़ूज़ रखे। आमीन

मुश्रिकीन अपने झूठे ख़ुदाओं के साथ जहन्नम में

हिसाब किताब वग़ैरह की कार्रवाई पूरी हो जाने के बाद हर आदमी और जमाअत को उसके असली ठिकाने तक पहुंचाने का काम शुरू होगा, सबसे पहले मुश्रिकीन से कहा जाएगा कि वे अपने अपने झूठे ख़ुदाओं के पीछे लग लें और फिर उन्हें उनके बुतों पत्थरों और सलीबों समेत जहन्नम में धकेल दिया जाएगा। इर्शादे ख़ुदावन्दी है:

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ، أَنْتُمْ لَهَا وَارِدُوْنَ، لَوْ كَانَ هٰؤُلَاءِ اٰلِهَةً مَا وَرَدُوْهَا، وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ. (الانبياء ٩٨،٩٩)

और तुम और जो कुछ तुम पूजते हो अल्लाह के अलावा, ईंधन है दोज़ख़ का, तुमको उसपर पहुंचना है, अगर होते ये बुत ख़ुदा तो न पहुंचते उस पर और सारे उस में हमेशा पड़े रहेंगे।

और एक लम्बी हदीस में आया है:

يُنَادِي مُنَادٍ لِيَذْهَبْ كُلُّ قَوْمٍ إِلَى مَا كَانُوا يَعْبُدُونَ فَيَذْهَبُ أَصْحَابُ الصَّلِيبِ مَعَ صَلِيبِهِمْ وَأَصْحَابُ الْأَوْثَانِ مَعَ أَوْثَانِهِمْ وَأَصْحَابُ كُلِّ إِلٰهَةٍ مَعَ آلِهَتِهِمْ حَتَّى يَبْقَى مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللّٰهَ مِنْ بَرٍّ وَّفَاجِرٍ وَّغُبَّرَاتٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ.

(بخاری شریف۲/۱۱۰۷ رقم: ۷۴۳۹)

मुनादी ऐलान करेगा कि हर जमाअ़त अपने अपने ख़ुदाओं के पीछे लग ले, तो सलीब को पूजने वाले अपनी सलीब के साथ और बुतों को पूजने वाले अपने अपने बुतों के साथ और हर माबूद (झूठे ख़ुदा) के पुजारी अपने ख़ुदाओं के साथ हो जाएंगे, यहां तक कि सिर्फ़ वे लोग बाक़ी बचेंगे जो अल्लाह तआ़ला की इ़बादत के मुद्दई़ हैं, चाहे नेक हों या बद, और कुछ अह्ले किताब बाक़ी रह जाएंगे।

यहूद और नसारा का अंजाम

उसके बाद यहूद और नसारा से बुलाकर पूछा जाएगा कि बताओ तुम्हारा ख़ुदा कौन है? उस वक़्त यहूदी हज़रत उ़ज़ैर अ़लैहिस्सलाम और ईसाई हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का नाम लेंगे तो अल्लाह तआ़ला उनकी तक्ज़ीब फ़रमाएगा (झुठलायेगा) और उन्हें भी जहन्नम की तरफ़ रवाना कर दिया जाएगा, आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसकी तफ़सील इस तरह ब्यान फ़रमाई है:

ثُمَّ يُؤْتَى بِجَهَنَّمَ تُعْرَضُ كَأَنَّهَا سَرَابٌ فَيُقَالُ لِلْيَهُودِ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ؟ قَالُوا: كُنَّا نَعْبُدُ عُزَيْرًا ابْنَ اللّٰهِ فَيُقَالُ: كَذَبْتُمْ لَمْ يَكُنْ لِلّٰهِ صَاحِبَةٌ وَّلَا وَلَدٌ فَمَا تُرِيدُونَ؟ قَالُوا نُرِيدُ أَنْ تَسْقِيَنَا فَيُقَالُ اشْرَبُوا فَيَتَسَاقَطُونَ فِي جَهَنَّمَ، ثُمَّ يُقَالُ لِلنَّصَارَى مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ؟

फिर जहन्नम लाई जाएगी जो दूर से सराब (चमकता हुआ रेत जो दूर से पानी मालूम होता है) महसूस होगी, फिर यहूदियों से पूछा जाएगा कि तुम किसकी इ़बादत करते थे? वे कहेंगे कि हम अल्लाह के बेटे हज़रत उ़ज़ैर अ़लैहिस्सलाम की इ़बादत करते थे तो कहा जाएगा कि तुम झूठे हो, अल्लाह की न कोई बीवी है, न औलाद, अब तुम क्या चाहते हो? वे कहेंगे कि हम चाहते हैं कि आप हमें पानी पिलायें, तो कहा जाएगा (सराब की तरफ़ इशारा करके) कि जाओ पी

فَيَقُوْلُوْنَ: كُنَّا نَعْبُدُ الْمَسِيْحَ اِبْنَ اللّٰهِ فَيُقَالُ: كَذَبْتُمْ لَمْ يَكُنْ لِلّٰهِ صَاحِبَةٌ وَّلَا وَلَدٌ، فَمَا تُرِيْدُوْنَ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: نُرِيْدُ اَنْ تَسْقِيَنَا فَيُقَالُ اِشْرَبُوْا فَيَتَسَاقَطُوْنَ.

(بخاری شریف ۲/۱۱۰۷ رقم: ۴۷۳۹،
مسلم شریف ۱/۱۰۲)

लो, तो वे (वहां जाकर) जहन्नम में गिर पड़ेंगे। इसके बाद नसारा से पूछा जाएगा कि तुम किसको पूजते थे? वे कहेंगे कि अल्लाह के बेटे हज़रत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम को, तो जवाब मिलेगा कि तुम झूठ बकते हो, अल्लाह तआला की न कोई बीवी है और न कोई बेटा, अब बताओ तुम्हारी क्या चाहत है? वह कहेंगे कि हमें पानी पिलायें तो उन्हें भी (हजन्नम के सराब की तरफ़ इशारा करके) कहा जाएगा कि जाओ पी लो, चुनांचे वे भी वहां जाकर सबके सब जहन्नम में गिर पड़ेंगे।

मालूम हुआ कि तमाम मुश्रिकीन और शिर्क करने वाले तमाम यहूदी और नसारा सबके सब जहन्नम का ईंधन बनेंगे। اعاذنا اللّٰه منه (अल्लाह इससे हमें पनाह में रखे)

ईमान वालों और मुनाफ़िक़ीन में इम्तियाज़ और साक़ की तजल्ली

मुश्रिकीन और अह्ले किताब के जहन्नम में पहुंचने के बाद मैदाने मह्शर में सिर्फ़ सच्चे मोमिन और मुनाफ़िक़ बाक़ी रह जाएंगे, तो उनसे पूछा जाएगा कि सब लोग तो जा चुके तुम लोग यहां क्यों रुके हुए हो? ये हज़रात जवाब देंगे कि हमनें तो दुनिया में भी और लोगों से अलग रास्ता अपनाया था जबकि हम (किसी दर्जे में) उनकी मदद के मोहताज भी थे, इसलिए अब भला हम उनके साथ कैसे हो सकते हैं। हमने तो यह ऐलान सुना है कि हर शख़्स अपने ख़ुदा के पीछे रहे इसलिए हम अपने परवरदिगार का इन्तिज़ार कर रहे हैं। उस वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ से दो तजल्लियों का ज़ुहूर होगा, पहली तजल्ली की शान ऐसी होगी जो मोमिन के ज़हन व दिमाग़ में रासिख़ अल्लाह तआला की सूरत से मुताबक़त न रखेगी और उस तजल्ली का न पहचानना ही मक़्सूदे हक़ होगा इसलिए अह्ले ईमान उसे पहचानने से इंकार कर देंगे, उसके बाद

"तजल्ली-ए-साक़" होगी उसके ज़ाहिर होते ही हर सच्चा मोमिन बे-इख़्तियार बारगाहे हक़ में सज्दे में गिर जाएगा। जबकि मुनाफ़िक़ों की कमर तख़्ता हो जाएगी और वे सज्दा करने के बजाए गुद्दी के बल गिर पड़ेंगे। मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत के अल्फ़ाज़ ये हैं:

حَتّٰى إِذَا لَمْ يَبْقَ إِلَّا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللّٰهَ تَعَالٰى مِنْ بَرٍّ وَّلَا فَاجِرٍ اَتَاهُمْ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى فِيْٓ اَدْنٰى صُوْرَةٍ مِّنَ الَّتِىْ رَاَوْهُ فِيْهَا قَالَ فَمَا تَنْتَظِرُوْنَ ؟ تَتْبَعُ كُلُّ اُمَّةٍ مَّا كَانَتْ تَعْبُدُ قَالُوْا ! يَا رَبَّنَا فَارَقْنَا النَّاسَ فِى الدُّنْيَا اَفْقَرَ مَا كُنَّا اِلَيْهِمْ وَلَمْ نُصَاحِبْهُمْ فَيَقُوْلُ: اَنَا رَبُّكُمْ، فَيَقُوْلُوْنَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْكَ لَا نُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا مَرَّتَيْنِ اَوْ ثَلَاثًا حَتّٰى اِنَّ بَعْضَهُمْ لَيَكَادُ يَنْقَلِبُ فَيَقُوْلُ: هَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ اٰيَةٌ فَتَعْرِفُوْنَهٗ بِهَا ؟ فَيَقُوْلُوْنَ: نَعَمْ. فَيُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ فَلَا يَبْقٰى مَنْ كَانَ يَسْجُدُ لِلّٰهِ مِنْ تِلْقَآءِ نَفْسِهٖ

यहां तक कि जब सिर्फ़ नेक और बद अल्लाह की इबादत करने वाले ही मैदाने महशर में बाक़ी रह जाएंगे (जिनमें मुनाफ़िक़ भी होंगे) तो अल्लाह रब्बुल आलमीन उनके सामने एक मामूली तजल्ली की सूरत में तशरीफ़ फ़रमा होगा और पूछेगा कि तुम लोग किसके इन्तिज़ार में हो? हर क़ौम अपने ख़ुदा के साथ जा चुकी, तो ये लोग अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे रब! हमने दुनिया में लोगों से जुदाई इख़्तियार की जबकि हम आज से ज़्यादा उनके मोहताज थे और हम उनके साथ नहीं रहे (तो अब हम उनके साथ कैसे हो सकते हैं) तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ मोमिनीन (जो तजल्ली-ए-साक़ के ध्यान में होंगे इस मामूली तजल्ली को हस्बे तक़्दीर-ए-ख़ुदावन्दी हक़ीक़ी न समझ रहे होंगे) यह कहेंगे कि हम अल्लाह से पनाह चाहते हैं! हम बिल्कुल अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करेंगे (यही जुमला दो तीन मर्तबा दोहराएंगे) यहां तक कि उनमें से कुछ (मुनाफ़िक़) धोके में पड़ने के क़रीब हो जाएंगे, फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि क्या तुम्हारे और तुम्हारे रब के दर्मियान कोई निशानी मुक़र्रर है जिससे तुम उसे

إِلَّا أَذِنَ اللّٰهُ لَهُ بِالسُّجُوْدِ وَلَا يَبْقَى مَنْ كَانَ يَسْجُدُ اتِّقَاءً وَرِيَاءً إِلَّا جَعَلَ اللّٰهُ ظَهْرَهُ طَبَقَةً وَاحِدَةً كُلَّمَا أَرَادَ أَنْ يَسْجُدَ خَرَّ عَلَى قَفَاهُ ثُمَّ يَرْفَعُوْنَ رُؤُوْسَهُمْ وَقَدْ تَحَوَّلَ فِيْ صُوْرَتِهِ الَّتِيْ رَأَوْهُ فِيْهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمْ فَيَقُوْلُوْنَ أَنْتَ رَبُّنَا، الخ.

(مسلم شريف ١/١٠٢ رقم: ١٨٣)

पहचान लोगे? तो मोमिनीन अर्ज़ करेंगे कि जी हाँ निशानी ज़रूर है इसके बाद साक़ (नूर-ए-अज़ीम) की तजल्ली होगी जिसे देखते ही तमाम मुख़्लिस सज्दा करने वाले अल्लाह की इजाज़त से सज्दे में गिर जाएंगे और जो लोग सिर्फ़ दिखावे और मुश्किलात से बचने के लिए सज्दा करते थे अल्लाह तआला उन सब की कमर को एक तख़्ता बना देगा! जब भी उनमें से कोई सज्दे का इरादा करेगा तो गुद्दी के बल गिर पड़ेगा, फिर अह्ले ईमान सज्दे से सर उठाएंगे, तो मालूम होगा कि अल्लाह तआला उसी तजल्ली में रौनक़ अफ़्रोज़ है जो तजल्ली साक़ से पहले थी, अब अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ तो वे सब बोल उठेंगे कि जी हाँ! आप हमारे रब हैं (यानी सब अह्ले ईमान अल्लाह तआला को देखकर पहचान लेंगे)।

इस रिवायत से मालूम हो गया कि तजल्ली-ए-साक़ के बाद जब मोमिनीन सज्दे से सर उठाएंगे तो उस वक़्त उन्हें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपनी रूयत-ए-मुबारका से मुशर्रफ़ फ़रमाएगा और हर शख़्स अपनी अपनी जगह रहते हुए उसी तरह बग़ैर किसी तक्लीफ़ के रूयत की सआदत हासिल करेगा जेसे लोग हर जगह से बराबर सूरज और चाँद को देखा करते हैं और जो मुनाफ़िक़ सज्दे से महरूम होंगे वे अपने कुफ़्र व निफ़ाक़ की वजह से अल्लाह तआला की ज़ियारत से भी महरूम होंगे, क़ुरआन-ए-करीम में इर्शाद है: كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ (التطفيف: ١٥) (कोई नहीं वे अपने रब से उस दिन रोक दिए जाएंगे)

(फ़तहुल बारी 16/550 फ़तहुल मुल्हिम वग़ैरह)

अल्लाह तआला हम सबको अपनी रूयत नसीब फ़रमाये। आमीन ❐ ❐

दूसरी फ़स्ल

मैदाने महशर की अंधेरियों में नूर की तक़सीम

ईमान वालों और मुनाफ़िक़ीन में फ़र्क़ और आख़िरी इम्तिहान के बाद पूरे मैदान में सख़्त अंधेरा तारी कर दिया जाएगा, फिर ईमान वालों को उनके ईमान और नेक आमाल के ऐतिबार से नूर दिया जाएगा, उसी नूर और रौशनी की वजह से वह अगले अहम तरीन मरहले यानी "पुल सिरात" को पार करेंगे और आख़िरकार जन्नत में पहुंच जाएंगे, मुनाफ़िक़ीन को या तो बिल्कुल नूर से महरूम रखा जाएगा, या मामूली नूर देकर ठीक ज़रूरत के वक़्त उनसे नूर छीन लिया जाएगा और वे हस्रत से अंधेरे में खड़े के खड़े रह जाएंगे। क़ुरआन-ए-करीम में इर्शाद-ए-रब्बानी है:

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ، بُشْرٰكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا، ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ.

जिस दिन तू देखे ईमान वाले मर्दों को और ईमान वाली औरतों को कि दौड़ती हुई चलती है उनकी रौशनी उनके आगे और उनके दाहिने, ख़ुशख़बरी है तुमको आज के दिन बाग़ हैं नीचे बहती हैं जिनके नहरें, हमेशा रहो इनमें, यह जो है यही है बड़ी मुराद मिलनी।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ، قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا، فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ، بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ، يُنَادُوْنَهُمْ

जिस दिन कहेंगे दग़ाबाज़ मर्द और औरतें ईमान वालों को, राह देखो हमारी हम भी रौशनी लें तुम्हारे नूर से, कोई कहेगा लौट जाओ पीछे, फिर ढूंढ लो रौशनी, फिर खड़ी कर दी जाए उनके बीच में एक दीवार, जिसमें होगा दरवाज़ा, उसके अंदर रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब। यह उन को पुकारेंगे क्या हम न थे तुम्हारे साथ? कहेंगे क्यों नहीं! लेकिन

أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ، قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ. فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا، مَأْوَاكُمُ النَّارُ، هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ. (الحديد ١٢-١٥)

तुमने बिचला दिया अपने आप को और राह देखते रहे और धोखे में पड़े और बहक गये अपने ख़्यालों पर यहां तक कि आ पहुंचा हुक्म अल्लाह का और तुमको बहका दिया अल्लाह के नाम से उस दग़ाबाज़ ने, तो आज तुमसे क़ुबूल न होगा फ़िदया देना और न मुन्किरों से, तुम सब का घर दोज़ख़ है और वही है साथी तुम्हारी और बुरी जगह जा पहुंचे।

नूर में ज़्यादती के असबाब

अहादीसे तय्यिबा में उन मुबारक आमाल की तर्ग़ीब दी गई है, जो मैदाने मह्शर में नूर की ज़्यादती का सबब बनेंगे। उनमें से कुछ आमाल का खुलासा यह है:

1. अंधेरी रात में जमाअ़त की नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद जाने वालों को आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कामिल नूर की ख़ुशख़बरी सुनाई है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)
2. रोज़ाना पाँचों वक़्त की नमाज़ों की पाबन्दी को नूर की वजह क़रार दिया गया और नमाज़ छोड़ने को नूर से मह्रूमी की वजह बताया गया। (मुस्नद अहमद)
3. सूरह-ए-कह्फ़ पढ़ने वाले का इतना नूर होगा जो उस की जगह से मक्का मुकर्रमा तक फैला होगा और एक रिवायत में है कि जो शख़्स जुमे के दिन सूरह-ए-कह्फ़ पढ़ने का मामूल रखेगा उसको क़दम से आसमान तक नूर-ए-अ़ज़ीम दिया जाएगा। (तबरानी)
4. क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना क़ियामत के दिन नूर की वजह होगा। (मुस्नद अहमद)
5. दुरूद शरीफ़ पढ़ने से नूर दिया जाएगा। (दैलमी)
6. हज और उ़मरे से वापसी पर जो बाल मुंडवाए जाते हैं उसके हर बाल के बदले नूर दिया जाएगा। (तबरानी)

7. मिना में जमूरात की रमी करना नूर की वजह होगा। (बज़्ज़ार)
8. जिस शख़्स के बाल इस्लाम की हालत में सफ़ेद हो जायें (मुसलमान बूढ़ा हो जाये) तो यह सफ़ेद बाल उसके लिए नूर होंगे। (तबरानी)
9. अल्लाह के रासते में जिहाद में चलाये जाने वाला हर तीर नूर की वजह होगा। (बज़्ज़ार)
10. बाज़ार में अल्लाह को याद रखने वाले को भी हर बाल के बदले नूर दिया जाएगा। (बैहक़ी)
11. जो शख़्स किसी मुसलमान की तक्लीफ़ दूर कर दे तो अल्लाह तआला उसके लिए पुल सिरात पर नूर के दो बड़े हिस्से मुक़र्रर करेगा जिससे एक जहान रौशन हो जाएगा जिसकी मिक्दार अल्लाह के अलावा किसी को मालूम नहीं है। (तबरानी, मुलख़्ख़स अज़ मआरिफ़ुल क़ुरआन 8/308-309)

इसके बर-ख़िलाफ़ बुरे आमाल जितने ज़्यादा होंगे रौशनी उसी ऐतिबार से कम होती जाएगी। ख़ास तौर से अल्लाह के बंद्रों के हक़ अदा न करना और उनको तक्लीफ़ देना क़ियामत में सख़्त अंधेरियों की वजह होगा। इसलिए ऐसे बुरे आमाल से अपने को बचाना ज़रूरी है और आमाले सालिहा इख़्तियार करके दुनिया ही में क़ियामत के नूर की ज़्यादती के असबाब हासिल करना ज़रूरी है। अल्लाह तआला पूरी उम्मत को नूरे ताम (पूरे नूर) की दौलत से नवाज़े। आमीन

पुल सिरात

इसके बाद जहन्नम पर एक पुल क़ाइम किया जाएगा जिसका ना "सिरात" होगा यह पुल बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार की धार से ज़्यादा तेज़ होगा (मुस्लिम शरीफ़ 1/103)

इस पुल पर से गुज़र कर अह्ले ईमान जन्नत की तरफ़ जाएंगे, जो जितना ज़्यादा पक्का और नेक अमल वाला होगा वह उतनी ही तेज़ी और आफ़ियत से पुल सिरात पर से गुज़र जाएगा और जो लोग कम अमल होंगे वे अपने आमाल के ऐतिबार से देर में गुज़र सकेंगे और जो बद-अमल होंगे उनको पुल सिरात के किनारे लगी हुई संडासियाँ पकड़कर सज़ा देने के लिए जहन्नम में डाल देंगी। اللهم احفظنا منه (अल्लाह इससे हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

ثُمَّ يُضْرَبُ الْجِسْرُ عَلٰى جَهَنَّمَ وَتَحِلُّ الشَّفَاعَةُ وَيَقُوْلُوْنَ اللّٰهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ، قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! وَمَا الْجِسْرُ قَالَ دَحْضٌ مَّزِلَّةٌ فِيْهَا خَطَاطِيْفُ وَكَلَالِيْبُ وَحَسَكٌ تَكُوْنُ بِنَجْدٍ فِيْهَا شُوَيْكَةٌ يُقَالُ لَهَا السَّعْدَانُ فَيَمُرُّ الْمُؤْمِنُوْنَ كَطَرْفِ الْعَيْنِ وَكَالْبَرْقِ وَكَالرِّيْحِ وَكَالطَّيْرِ وَكَأَجَاوِيْدِ الْخَيْلِ وَالرِّكَابِ، فَنَاجٍ مُّسَلَّمٌ وَّمَخْدُوْشٌ مُّرْسَلٌ، وَّمَكْدُوْسٌ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ، الخ.

(مسلم شریف ۱/۱۰۲)

फिर जहन्नम पर पुल बनाया जाएगा और सिफ़ारिश की इजाज़त हो जाएगी और लोगों की ज़बानों पर यह जुमला होगा, "ऐ अल्लाह महफ़ूज़ रख! ऐ अल्लाह महफ़ूज़ रख!" अर्ज़ किया गया कि ऐ अल्लाह के रसूल! यह पुल क्या है? तो आप ने फ़रमाया कि वह सख़्त फिसलने वाली जगह है जिसमें आंकड़े और संडासियाँ और "नज्द के इलाक़े में पाये जाने वाले" सअ्दान नामी कांटे की तरह कांटे हैं, फिर मोमिन पुल पर से पलक झपकने और बिजली कूँदने और हवा चलने और परिन्दे उड़ने और उम्दा क़िस्म के घोड़ों और सवारियों की रफ़्तार से गुज़रेंगे, फिर कोई सही सालिम नजात पा जाएगा और कोई संडासियों से छिल छिलाकर छुट जाएगा और कोई अटक कर जहन्नम में जा गिरने वाला होगा।

पुल सिरात़ पर से कोई काफ़िर या मुनाफ़िक़ नहीं गुज़रेगा, सिर्फ़ अह्ले ईमान ही गुज़रेंगे, जिनमें से सज़ा के मुस्तहिक़ बद्-अ़मल जहन्नम में गिर जाएंगे और एक मुद्दत के बाद उनकी माफ़ी हो जाएगी।

शफ़ाअ़त का दूसरा मर्हला

पुल सिरात़ पर गुज़रने से पहले जो हज़रात शफ़ाअ़त और सिफ़ारिश के अह्ल होंगे उनको सिफ़ारिश की इजाज़त दे दी जाएगी। जैसा कि ऊपर दी गई हदीस के जुम्ले وتحل الشفاعة से मालूम होता है यह सिफ़ारिश का दूसरा मर्हला है जिसमें कुछ मख़्सूस क़िस्म के हज़रात को बतौरे एज़ाज़ व इक्राम यह हक़ दिया जाएगा कि वे अपने जानने वालों के हक़ में सिफ़ारिश करें जो मोमिन तो हैं लेकिन आमाल में कौताही करने की वजह से जहन्नम के हक़दार हो चुके हैं,

उन इज़्ज़त वाले सिफ़ारिश करने वालों में हज़रात अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम और नीचे दिए गये लोग शामिल होंगे।

(मुस्तफ़ाद नववी अ़ला मुस्लिम 1/109, इक्माालुल मअ़ल्लिम)

1. बा-अ़मल हाफ़िज़-ए-क़ुरआन को अपने अह्ले ख़ानदान के दस लोगों को अ़ज़ाब से बचाने की सिफ़ारिश करने की इजाज़त मिलेगी, चुनाँचे उनके हक़ में उसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी। (मिश्कात 1/187)
2. दुनिया में अगर किसी बद्-अ़मल शख़्स ने किसी नेक अ़मल वाले शख़्स पर कोई एह्सान किया होगा तो वह बद्-अ़मल, नेक अ़मल वाले शख़्स को देखकर उसको एहसान याद दिलायेगा और सिफ़ारिश को चाहने वाला होगा, तो उसकी सिफ़ारिश से बद्-अ़मल शख़्स अ़ज़ाब से बच जाएगा। (अत्तज़्किरा)
3. कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि उ़लमा और शुहदा को भी इस मर्हले पर सिफ़ारिश की इजाज़त दी जाएगी। (मिश्कात शरीफ़ 2/495)

पुल सिरात़ पर "अमानत" और "रहम" की जांच

पुल सिरात़ के दायें बायें "अमानतदारी" और "रिश्तेदारी" मुजस्सम शक्ल (उनको जिस्म दिया जायेगा) में मौजूद होंगे, और पुल सिरात़ से गुज़रने वालों का जाइज़ा ले रहे होंगे और ये दोनों सिफ़ाते आ़लिया अपनी रिआ़यत रखने वालों के हक़ में गवाही देंगी और कौताही करने वालों के ख़िलाफ़ हुज्जत क़ाइम करेंगी। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

وَتُرْسَلُ الْأَمَانَةُ وَالرَّحِمُ فَيَقُومَانِ جَنَبَتَيِ الصِّرَاطِ يَمِيناً وَّشِمَالاً

और अमानत और रिश्ता-ए-क़राबत को छोड़ दिया जाएगा तो वे पुल सिरात़ के सीधे उलटे किनारे पर खड़े हो जाएंगे।

(بخاری شریف، مسلم شریف ۱/۱۱۲)

इसकी शरह फ़रमाते हुए हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

وَالْمَعْنَى أَنَّ الْأَمَانَةَ وَالرَّحِمَ لِعِظَمِ شَأْنِهِمَا وَفَخَامَةِ مَا يَلْزَمُ الْعِبَادَ مِنْ رِعَايَةِ حَقِّهِمَا يُوقَفَانِ هُنَاكَ

और मतलब यह है कि अमानत दारी और रिश्तेदारी की अ़ज़्मत-ए- शान और बन्दों पर ज़रूरी उनके हुक़ूक़ की रिआ़यत की अ़ज़ीम अहमियत की वजह से उन दोनों को पुल सिरात़ पर अमीन और

لِلْأَمِيْنِ وَالْخَائِنِ وَالْوَاصِلِ وَالْقَاطِعِ فَيُحَاجَّانِ عَنِ الْحَقِّ وَيَشْهَدَانِ عَلَى الْمُبْطِلِ.

(فتح الباری ۱۴/۵۵۳)

ख़ाइन और रिश्तेदारी का ख़्याल रखने वाले और तअ़ल्लुक़ ख़त्म करने वाले के लिए खड़ा किया जाएगा, तो ये दोनों हक़ अदा करने वाले की तरफ़ से बचाव करेंगे और झूठे शख़्स के ख़िलाफ़ गवाही देंगे।

इसलिए अगर हमें अपनी इज़्ज़त का ख़्याल है और पुल सिरात पर ख़ैरियत से गुज़रने की फ़िक्र है तो हमें अमानत और दियानत और रिश्तेदारी का लिहाज़ रखना ज़रूरी है, अगर ऐसा न किया गया तो फिर सख़्त रूसुवाइयों का सामना करना पड़ेगा। اللهم احفظنا منه. (अल्लाह इससे हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए)

पुल सिरात पर से गुज़रते हुए ईमान वालों की शान

पुल सिरात पर से गुज़रते हुए नेक मोमिनीन की शान अ़जीब और रश्क के क़ाबिल होगी, सबसे पहले जो जमाअ़त गुज़रेगी उस में सत्तर हज़ार लोग शामिल होंगे जिनके चेहरे चौधवीं के चाँद की तरह चमक दमक रहे होंगे, उनके बाद तेज़ रौशनी वाले सितारों की तरह चमकदार चेहरे वाले हज़रात गुज़रेंगे फिर इसी तर्तीब से दर्जा ब-दर्जा ईमान वाले गुज़रते रहेंगे। इर्शाद नबवी है:

ثُمَّ يَنْجُو الْمُؤْمِنُوْنَ فَتَنْجُو أَوَّلُ زُمْرَةٍ وُجُوْهُهُمْ كَالْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ سَبْعُوْنَ أَلْفًا لَا يُحَاسَبُوْنَ، ثُمَّ الَّذِيْنَ يَلُوْنَهُمْ كَأَضْوَأِ نَجْمٍ فِي السَّمَاءِ ثُمَّ كَذٰلِكَ.

(مسلم شریف ۱/۱۰۷)

फिर ईमान वाले नजात पाएंगे, तो उनमें से पहली जमाअ़त इस शान से गुज़रेगी कि उनके चहरे चौधवीं रात के चाँद की तरह चमकदार होंगे, ये सत्तर हज़ार की तादाद में होंगे जिनका हिसाब किताब कुछ न होगा, फिर उनके बाद (इस तरह चमकदार चेहरे वाले होंगे) जैसे आसमान में चमकने वाला सबसे रौशन सितारा होता है, फिर इसी तरह दर्जा ब-दर्जा।

हमारी यह ख़्वाहिश होनी चाहिए कि हम ऐसे आमाल लेकर दुनिया से जाएं कि पुल सिरात से गुज़रते वक़्त हम सर से लेकर पांव तक रौशनी में हों और हमारे बदन के हर हर हिस्से से नूर-अफ़्शानी हो रही हो। وما ذلک علی الله بعزیز. (और अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है) □ □

तीसरी फ़स्ल

जन्नत की तरफ़ रवानगी और मुआमलात की सफ़ाई

पुल सिरात से ब-हिफ़ाज़त गुज़र जाने के बाद जन्नतियों की जमाअत जन्नत की तरफ़ चलेंगी, तो जन्नत के दरवाज़े तक पहुंचने से पहले उन सबको एक ख़ास नहर पर रोक लिया जाएगा और उनके दर्मियान अगर हक़ तलफ़ी वग़ैरह या कीना कपट की कोई बात होगी तो जन्नत में दाख़िले से पहले वहीं माफ़ी तलाफ़ी करके उन्हें पाक साफ़ कर दिया जाएगा। क़ुरआन-ए-करीम में इर्शाद फ़रमाया गयाः

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ. (الاعراف)

और कुछ उनके दिलों में गुबार था हम उसको दूर कर देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी।

और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी और ज़्यादा तफ़्सील इस तरह ब्यान फ़रमाईः

يَخْلُصُ الْمُؤْمِنُوْنَ مِنَ النَّارِ فَيُحْبَسُوْنَ عَلٰى قَنْطَرَةٍ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ فَيُقَصُّ لِبَعْضِهِمْ مِّنْ بَعْضِهِمْ مَّظَالِمُ كَانَتْ بَيْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَتّٰى اِذَا هُذِّبُوْا وَنُقُّوْا اُذِنَ لَهُمْ فِيْ دُخُوْلِ الْجَنَّةِ فَوَالَّذِيْ نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهٖ لَاَحَدُهُمْ اَهْدٰى بِمَنْزِلِهٖ فِي الْجَنَّةِ مِنْهُ بِمَنْزِلِهٖ كَانَ فِي الدُّنْيَا.

(بخاری شریف ۲/۹٦۷،رقم: ٦٥٣٥)

ईमान वाले जहन्नम से छुटकारा पा जाने के बाद जन्नत और जहन्नम के दर्मियान एक पुल पर रोक लिए जाएंगे, फिर उनसे आपस में दुनिया में जो हक़ तल्फ़ियाँ हुई होंगी उनकी माफ़ी तलाफ़ी की जाएगी यहां तक कि जब उन्हें पाक साफ़ कर दिया जाएगा तो उन्हें जन्नत में दाख़िले की इजाज़त मिलेगी और क़सम उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है जन्नतियों में से हर शख़्स अपने जन्नत के घर के बारे में दुनिया के घर से ज़्यादा पहचान और मारिफ़त रखता है।

जन्नत का दरवाज़ा खुलवाने के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़ारिश

जब जन्नत वाले, जन्नत के क़रीब पहुंचेंगे तो जन्नत का दरवाज़ा बंद पाएंगे, जन्नत में जाने का शौक़ बहुत ज़्यादा होगा इसलिए जल्द से जल्द जन्नत में दाख़िले के लिए हज़रात अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से सिफ़ारिश की दरख़्वासत करेंगे, आख़िरकार सय्यिदुल अव्वलीन वल्-आख़िरीन सय्यिदना व मौलाना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बारगाहे रब्बुल आ़लमीन में सज्दे में गिर जाएंगे और अपनी उम्मत के जन्नत में दाख़िले की सिफ़ारिश पेश फ़रमाएंगे। इर्शादे नबवी है:

فَاٰتِيْ تَحْتَ الْعَرْشِ فَاَقَعُ سَاجِداً لِّرَبِّيْ ثُمَّ يَفْتَحُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيَّ وَيُلْهِمُنِيْ مِنْ مَّحَامِدِهٖ وَحُسْنِ الثَّنَآءِ عَلَيْهِ، شَيْئاً لَّمْ يَفْتَحْهُ لِاَحَدٍ قَبْلِيْ ثُمَّ قَالَ: يَا مُحَمَّدُ اِرْفَعْ رَاْسَكَ، سَلْ تُعْطَهْ، اِشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَاَرْفَعُ رَاْسِيْ فَاَقُوْلُ يَارَبِّ اُمَّتِيْ اُمَّتِيْ فَيُقَالُ يَامُحَمَّدُ اَدْخِلِ الْجَنَّةَ مِنْ اُمَّتِكَ مَنْ لَّاحِسَابَ عَلَيْهِ مِنْ بَابِ الْاَيْمَنِ مِنْ اَبْوَابِ الْجَنَّةِ وَهُمْ شُرَكَآءُ النَّاسِ فِيْمَا سِوٰى ذٰلِكَ مِنَ الْاَبْوَابِ. (مسلم شریف ١/١١١)

तो मैं अ़र्श के नीचे आकर अपने परवरदिगार के सामने सजूदे में गिर जाउंगा, फ़िर अल्लाह तआ़ला मेरे सीने को खोल देगा और मेरे दिल से अपनी हमद व सना और बेह्तरीन तारीफ़ के वे कलिमात इल्क़ा फ़रमायेगा जो मुझ से पहले किसी के लिए इल्क़ा न किए गये होंगे, फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, ऐ मुहम्मद! आप अपनी उम्मत में से उन लोगों को जिन पर हिसाब किताब नहीं, उन्हें जन्नत के दाहिने दरवाज़े से दाख़िल फ़रमा दीजिए और ये लोग दूसरे दरवाज़ों में दूसरे लोगों के साथ शरीक होने का हक़ भी रखते हैं (यानी उन्हें यह एजाज़ हासिल होगा कि जिस दरवाज़े से चाहें दाख़िल हो जाए)।

और एक रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اٰتِيْ بَابَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَاَسْتَفْتِحُ فَيَقُوْلُ الْخَازِنُ مَنْ اَنْتَ ؟

में क़ियामत में जन्नत के दरवाज़े पर जाकर उसे खुलवाने की कोशिश करूंगा

فَأَقُوْلُ: مُحَمَّدٌ! فَيَقُوْلُ بِکَ أُمِرْتُ لَآ اَفْتَحُ لِأَحَدٍ قَبْلَکَ.

(مسلم شریف ١/١١٢)

तो जन्नत का ख़ाज़िन पूछेगा कि आप कौन हैं? मैं कहूंगा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)! तो वह जवाब देगा कि आप ही के बारे में मुझे हुक्म हुआ है, कि आप से पहले मैं किसी के लिए दरवाज़ा न खोलूंगा।

जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होने वाले ख़ुशनसीबों का हाल

सही अहादीस से यह बात साबित है कि उम्मते मुहम्मदिया अ़ला साहिबिहस्सलातु वस्सलाम के सत्तर हज़ार या सात लाख ख़ुशनसीब लोग एक साथ पहले मर्हले में दाख़िले से मुशर्रफ़ होंगे। (मुस्लिम शरीफ़ 1/116)

और तिर्मिज़ी की एक रिवायत से मालूम होता है कि उन सत्तर हज़ार में हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार और होंगे और साथ में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसकी शान के मुताबिक़ मुट्ठी भर लोग भी बिला हिसाब किताब दाख़िल होने वाले होंगे। (अत्तज़्किरा 433, फ़तहुल बारी 14/501)

और एक रिवायत में यह तफ़्सील है कि सबसे पहले आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को सत्तर हज़ार की तादाद से ख़ुशख़बरी सुनाई गई, जिस पर आप ने और बढ़ाने की दरख़्वास्त फ़रमाई तो आप को ख़ुशख़बरी सुनाई गई कि सत्तर हज़ार में हर एक के साथ सत्तर हज़ार लोग इस भीड़ में शामिल होंगे।

(नवादिरुल वुसूल, अत्तज़्किरा 433)

इस ऐतिबार से उन ख़ुशनसीबों की तादाद 49 करोड़ तक पहुंच जाती है। अल्लाह तआ़ला हम सबको उस मुबारक जमाअ़त का साथ नसीब फ़रमाये। आमीन

जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन बा-सआ़दत हज़रात का तज़्किरा फ़रमाया तो सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम में इस बात पर बहस शुरू हो गई कि ये ख़ुश नसीब लोग किस तबक़े से ताल्लुक़ रखने वाले होंगे तो कुछ हज़रात ने फ़रमाया कि यह मुक़ाम तो बस अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को मिल सकता है? कुछ ने राय दी कि इसमें वे लोग ही शामिल होंगे जो शुरू ही से इस्लाम में

शामिल रहे हैं और जिन्होंने ज़िन्दगी में कभी भी शिर्क नहीं किया है और कुछ दूसरी रायें भी सामने आईं। नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि किस बारे में बहस की जा रही है? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सब रायें ब्यान फ़रमा दीं तो आप ने फ़रमायाः

هُمُ الَّذِينَ لَا يَرْقُونَ وَلَا يَسْتَرْقُونَ وَلَا يَتَطَيَّرُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ.

(مسلم شريف ١/١١٧)

वे ख़ुशनसीब लोग वे हैं जो न तो झाड़ फूंक करते हैं और न कराते हैं और न (बद्फ़ाली) के लिए परिन्दों को उड़ाते हैं और अपने रब पर कामिल तवक्कुल (पूरा भरोसा) करते हैं।

इस हदीस का मतलब यह है कि जन्नत में सबसे पहले दाख़िले का शरफ़ हासिल करने वाले लोग वे होंगे, जो अपने कमाले तवक्कुल की वजह से दुनियवी अस्बाब को ख़ातिर में न लाते होंगे और हर उस बात से बचते होंगे जिसमें शिर्क का छोटा सा शुब्ह भी पाया जाये जैसे आयाते क़ुरआनिया और कलिमाते सहीहा पर बने तावीज़ और झाड़फूंक अगरचे ठीक है मगर उसमें अवाम व ख़ास के अक़ीदे बिगड़ने का इम्कान ज़्यादा रहता है इसलिए वे लोग इस तरह के अस्बाब को इख़्तियार करने में एहतियात से काम लेते होंगे और अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा करने वाले होंगे। (मुस्तफ़ाद फ़त्हुल बारी 14/498)

यहां यह वाज़ेह रहना चाहिए कि अल्लाह तआला पर तवक्कुल का मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि आदमी दुनिया के अस्बाब को छोड़कर, हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाये और अल्लाह तबारक व तआला से नतीजे की उम्मीद रखे, बल्कि तवक्कुल का मतलब यह है कि अस्बाबे दुनियवी ज़ाहिरी इख़्तियार करके कामियाबी की उम्मीद अल्लाह तआला से रखी जाये जैसे खेत में मेहनत करके बीज डाल दे फिर पैदावार की उम्मीद अल्लाह तआला से रखे, इसी तरह दुकान में सामान रखकर बैठे फिर नफ़े की उम्मीद अल्लाह तआला से रखे, चुनाँचे हज़रात अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की सिफ़त यही रही है हालांकि उनसे बड़ा अल्लाह तआला पर तवक्कुल करने वाला कोई नहीं हो सकता, उन्होंने माल हासिल करने के अस्बाब इख़्तियार फ़रमाये इसी तरह दुश्मनों से मुक़ाबले के लिए फ़ौज और हथियार इस्तिमाल फ़रमाए और फिर कामियाबी और नाकामी के बारे में अल्लाह तआला की क़ुद्रत और फ़ैसले पर भरोसा फ़रमाया, यही

असल में तवक्कुल की हक़ीक़त है। (फ़त्हुल बारी 14/500)

और ऊपर दी गई हदीस में जिन असबाब को छोड़ने के बारे में आया है वे सिर्फ़ ऐसे असबाब हैं जिन्हें इख़्तियार करने में शिर्क का शुब्ह पैदा होने का अंदेशा हो और ये कामिल दर्जा है जो शख़्स इस दर्जे पर न हो उसे भी ग़ैर मुतवक्किल नहीं कहा जा सकता।

जन्नत में जन्नत वालों के दाख़िले का शानदार मंज़र

जन्नत के आठ दरवाज़े हैं और नेक आमाल की मुनासबत से लोग उन दरवाज़ों से जन्नत में दाख़िल होंगे, एक दरवाज़ा "रय्यान" के नाम से होगा जिससे रोज़ेदारों को दाख़िले की दावत दी जाएगी इसी तरह दूसरे आमाल करने वालों का हाल होगा। कुछ ख़ुशनसीब अल्लाह के बन्दे ऐसे भी होंगे जैसे सय्यिदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु कि उनका नाम हर दरवाज़े से पुकारा जाएगा यानी हर दरवाज़ा चाहेगा कि उसकी तरफ़ से सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत में दाख़िल होने का शरफ़ हासिल करें। ग़रज़ अजीब फ़रहत व सुरूर और जौश व जज़्बात का मंज़र होगा, जन्नत वाले चमकते दमकते चेहरों और ख़ुशी और मसर्रत से भरे हुए दिलों के साथ जत्थे के जत्थे बनाकर जन्नत में दाख़िल हो रहे होंगे, जन्नत के तमाम दरवाज़े पूरी तरह खुले हुए होंगे और पहरे दार फ़रिश्ते आने वालों का पुर-तपाक इस्तिक़्बाल कर रहे होंगे और हर तरफ़ से मुबारकबादियों की आवाज़ें गूंज रही होंगी और इधर सब जन्नत वाले अपने महबूब परवरदिगार की हम्द व सना और शुक्र की अदायगी में मश्ग़ूल होंगे, मतलब यह कि ऐसा बशाशत अंगेज़, फ़रहत आमेज़ और मूसर्रत आगीं माहोल होगा, जिसको ब्यान करने से अल्फ़ाज़ क़ासिर और ज़बानें आजिज़ हैं और जिसके बारे में सोचकर ही दिल के जज़्बात खिल उठते हैं और इस सआदत के हासिल करने का शौक़ चुटकियाँ लेने लगता है। रहमते ख़ुदावन्दी से क्या बईद है कि वह इस शौक़ को सिर्फ़ अपनी रहमत से हक़ीक़त बना दे, इन्शाअल्लाह। इस ख़ुशनुमा मंज़र को क़ुरआन-ए-करीम ने इस तरह ब्यान फ़रमाया है:

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ، حَتَّى إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ

और ले जाये जाएंगे वे लोग जो अपने रब से डरते थे जन्नत की तरफ़ गिरोह

اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ، وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ.

(سورة الزمر۷۳-۷٤)

दर गिरोह, यहां तक कि जब पहुंच जाएं उस पर और खोले जाएं उसके दरवाज़े और कहने लगें उनको उस के पहरेदार सलाम पहुंचे तुम पर, तुम लोग पाकीज़ा हो, इसलिए दाख़िल हो जाओ इसमें हमेशा रहने को और बोलेंगे शुक्र अल्लाह का जिसने सच्चा किया हम से अपना वादा और वारिस किया हमको इस ज़मीन का, घर बना लें जन्नत में जहां चाहें, तो क्या ख़ूब बदला है मेहनत करने वालों का।

अल्लाह तआ़ला हम सबको अपने फ़ज़्ल व करम से ऐसे ख़ुशनसीब बन्दों में शामिल फ़रमाये। आमीन

जन्नत की वुस्अत (लंबाई-चौड़ाई)

जन्नत की लंबाई-चौड़ाई का दुनिया में कोई अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। क़ुरआन-ए-करीम में हमारे तसव्वुर का ख़्याल रखते हुए यह इर्शाद फ़रमायाः

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۔

(آل عمران ۱۳۳)

और दोड़ो मग़्फ़िरत की तरफ़ जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से है और जन्नत की तरफ़ जिसकी लंबाई-चौड़ाई ऐसी है जैसे सब आसमान और ज़मीन और वह तैयार की गई है ख़ुदा से डरने वालों के लिए।

और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि जन्नत में दाख़िल होने वाले सबसे आख़िरी शख़्स को दुनिया के दस गुने के बराबर लंबाई-चौड़ाई वाली जन्नत अ़ता फ़रमाई जाएगी। (मुस्लिम शरीफ़ 1/101) जब छोटे दर्जे के जन्नती के हिस्से में इतनी बड़ी जन्नत आएगी तो आला दर्जे वालों का क्या हाल होगा? इसका अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

क़ुरआन-ए-करीम में जन्नत की नेअ़्मतों का मुख़्तसर हाल

जन्नत में क्या क्या नेअ़्मतें किस अंदाज़ की होंगी उसके बारे में सोचने से हमारी अक़्लें आ़जिज़ हैं, वहां की नेअ़्मतें ऐसी होंगी जो किसी आँख ने कभी देखी नहीं और किसी के दिल में उनका ख़्वाब व ख़्याल भी नहीं गुज़रा, आज जो हमें उन नेअ़्मतों के बारे में क़ुरआन और हदीस में बताया जा रहा है यह अस्ल में शौक़ दिलाने का ज़रिया है इन बशारत आमेज़ हालात को सुनकर हमारे दिल में जो तसव्वुरात पैदा होते हैं वाक़िआ़ यह कि जन्नत की नेअ़्मतें हमारे इन मेहदूद तसव्वुरात से कहीं ज़्यादा बढ़कर हैं और उनका अस्ल इल्म इन्शाअल्लाह उन्हें देखकर ही होगा।

क़ुरआन-ए-करीम में जन्नत वालों से वादा करते हुए फ़रमाया गयाः

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ، جَزَآءً بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ.

(الم سجده - ١٤)

सो किसी शख़्स को ख़बर नहीं जो जो आँखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिए ख़ज़ाना-ए-ग़ैब में मौजूद है, यह उनको उनके आमाल का बदला मिला है।

और एक जगह इर्शादे आ़ली हैः

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ۝

(حم السجدة ١ ٣:٣٢)

और तुम्हारे लिए वहां है जो चाहे जी तुम्हारा और तुम्हारे लिए वहां है जो कुछ मांगो, मेहमानी है उस बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ़ से।

इसके अ़लावा क़ुरआन-ए-करीम में जन्नत की नेअ़्मतों का अलग अलग इजमाली तज़्किरा भी किया गया है। जैसे बताया गया किः

- जन्नत में ऐसे बाग़ होंगे जिनमें नहरें बह रही होंगी। (सूरः बक़रा:25 वग़ैरह)
- जन्नत के फल ऐसे होंगे कि देखने में एक जैसे होंगे मगर हर फल के ज़ाइक़े में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ होगा। (सूर बक़रा:25) और अनवाअ़ (क़िस्में) भी अलग अलग होंगी, अनार, केले, खजूर, अंगूर, ग़रज़ हर तरह के फल मिलेंगे।
- जन्नत की हूरें और जन्नत वालों की बीवियाँ निहायत ख़ूबसूरत, हम उम्र

शर्मीली, साफ़ सुथ्री, पाकीज़ा और भरपूर जवानी वाली होंगी।

(सूरः बक़रा:25, आले इम्रान:15, अस्-साफ़्फ़ात:48, अर्-रहमान:56)

- जन्नत के मकानात और महल्लात निहायत साफ़ सुथूरे और बा-रौनक़ होंगे। (सूरः अत्-तौबा-:72, अस्-सफ़:12)
- जन्नती लोग मोती और सोने के शानदार कंगन पहने हुए होंगे (ताकि असूल दौलत मंदी का इज़्हार हो सके)। (सूरः कह्फ़:31, अल्-हज्ज:23, फ़ातिर:33)
- जन्नत में निहायत लज़ीज़ सफ़ेद रंग की उम्दा शराब मिलेगी जिसको पीकर न चक्कर आएंगे, न दिमाग़ ख़राब होगा। (सूरः अस्-साफ़्फ़ात: 44-47)
- जन्नत में ख़ूबसूरत लड़के जन्नत वालों की ख़ातिर तवाज़ो के लिए सोने चांदी की रकाबियाँ और प्याले इधर उधर ले जाते फिरेंगे। (सूरःअज़्-ज़ुख़्रुफ़:71)
- जन्नत में पानी की उम्दा नहरें हैं जिनके पानी में किसी क़िस्म की बू वग़ैरह नहीं है। (सूरः मुहम्मद:15)
- और दूध की नहरें हैं जिनका ज़ाइक़ा बिल्कुल असली हालत में रहता है, दुनिया के दूध की तरह (वक़्त गुज़ारने से) तब्दील नहीं होता। (सूरः मुहम्मद:15)
- और शहद की ऐसी नहरें हैं जिनका झाग साफ़ करके उतारा जा चुका है यानी बिल्कुल निथरा हुआ शहद है। (सूरः मुहम्मद:15)
- जन्नत में जो दिल चाहेगा वैसे परिन्दों को गोश्त मिलेगा। (सूरः वाक़िआ:21)
- जन्नत में जगह जगह तर्तीब के साथ ग़ालीचे और मख़्मल के फ़र्श बिछे हुए हैं। (सूरः अल्-ग़ाशिया:14-15)

अहादीसे तय्यिबा में जन्नत का ब्यान

अहादीसे शरीफ़ा में भी बहुत तफ़्सील के साथ जन्नत की न ख़त्म होने वाली नेअ्मतों का मुबारक तज़्किरा फ़रमाया गया है जिनको पढ़ने से तब्ई तौर पर दिल में उन अज़ीम नेअ्मतों का मुस्तहिक़ बनने का शौक़ पैदा हो जाता है। ऐसी ही चंद हदीसों का ख़ुलासा नीचे दिया जाता है आंहज़्रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

○ जन्नत की ख़ुश्बू 500 साल की दूरी से आने लगती है।

(सही इब्ने हब्बान 9/239, अत्तर्ग़ीब 4/270)

○ जन्नत के सौ दरजात हैं और हर एक दूसरे दरजे के बीच ज़मीन व आसमान के बराबर दूरी है। (बुख़ारी शरीफ़ 1/391, अत्तर्ग़ीब 4/281)

○ जन्नत की इमारतों में एक ईंट सोने और एक चांदी की लगी है और उनका सिमेंट मुश्क है और उनकी कंकरियों की जगह हीरे जवाहरात हैं और मिट्टी ज़ाफ़रान की है, जो उन में दाख़िल हो जाएगा वह कभी परेशान न होगा, हमेशा मज़े में रहेगा और कभी वहाँ किसी को मौत न आएगी, न कपड़े पुराने होंगे और न कभी जवानी ख़त्म होगी।

(मुसनद अहमद 2/305, अत्तर्ग़ीब 4/281)

○ एक जन्नती को ऐसा ख़ैमा दिया जाएगा जो सिर्फ़ एक ख़ौलदार मोती से बना होगा जिसकी लंबाई और चौड़ाई 60 मील के बराबर होगी और उस मोमिन के बहुत से घर वाले उसमें रहते होंगे, उस ख़ैमे की लंबाई-चौड़ाई की वजह से वे एक दूसरे को देख न सकेंगे।

(बुख़ारी 2/724, मुस्लिम 2/380, अत्तर्ग़ीब 4/284)

○ जन्नत में एक नहर है जिसका नाम "कौसर" है, उस नहर के किनारे सोने के हैं और उसकी नालियों में हीरे जवाहरात बिछे हुए हैं और उसकी मिट्टी मुश्क से ज़्यादा मुअत्तर और उसका पानी शहद से ज़्यादा मीठा और औले से ज़्यादा सफ़ेद है। (तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/174, अत्तर्ग़ीब 4/285)

○ जन्नत में एक पेड़ इतना बड़ा सायादार है कि अगर कोई तेज़ रफ़्तार घुड़सवार 100 साल तक लगातार दोड़ता रहे फिर भी उस पेड़ के साये को पार न कर सकेगा।

(बुख़ारी 2/724, मुस्लिम 2/378, मुसनद अहमद 2/257, अत्तर्ग़ीब 4/287)

○ जन्नत की औरतों और हूरों के हुस्न व ख़ूबसूरती का आलम यह है कि अगर उनमें से कोई औरत दुनिया में झांक भी ले तो पूरी ज़मीन उसकी बे-मिसाल ख़ुशबू से मुअत्तर और उसकी रौशनी और चमक दमक से मुनव्वर हो जाये और उस औरत की औढ़नी की क़ीमत तमाम दुनिया जहान की दौलतों से भी कहीं ज़्यादा है। (बुख़ारी शरीफ़ 1/392, अत्तर्ग़ीब 4/295)

○ जन्नत की हूरें एक वक़्त में सत्तर बेश-क़ीमत जोड़े पहनेंगी और उन जोड़ों

के पहनने के बावुजूद उनकी पिंडलियों की चमक दमक यहां तक कि उनकी हड्डियों का गूदा ऊपर से साफ़ झलकता होगा जो उनके निहायत हुस्न और जमाल और लताफ़त की अलामत होगा। (अत्तर्ग़ीब 4/297)

- जन्नत की हूरें अपने शौहरों को निहायत शानदार अंदाज़ में मसहूरकुन (दिल को लुभाने वाली) आवाज़ में गानें सुनाएंगी और हम्द व सना और शुक्र के अशुआर अपनी ख़ूबसूरत आवाज़ में पढ़ा करेंगी। (अत्तर्ग़ीब 4/300)
- जन्नत में एक अज़ीम बाज़ार होगा जहां जन्नती हर हफ़्ते जाया करेंगे, वहां शुमाल की तरफ़ से ऐसी हवाएं चलती होंगी जिनकी वजह से उन जन्नतियों के हुस्न व जमाल में बेहद इज़ाफ़ा हो जाएगा, तो जब वे अपने घरों को लोटेंगे तो उनकी बीवियाँ कहेंगी कि आपके बाज़ार जाने से आपके हुस्न व जमाल में वाक़िई इज़ाफ़ा हो गया है, यह सुनकर वे जन्नती अपनी बीवियों के बारे में भी यही जुम्ला कहेंगे। (मुस्लिम 2/379, अत्तर्ग़ीब 4/20)
- जन्नत में हर शख़्स को दुनिया के सौ मर्दों के बराबर खाने पीने और जिमाअ (सोहबत) करने की ताक़त अ़ता होगी और सबकी उम्रें 33 साल के जवान के बराबर हमेशा रहेंगी। (किताबुल आ़क़िबत 282-283)
- कम से कमतर दर्जे के जन्नती को जन्नत में 80 हज़ार ख़ुद्दाम (ख़िद्मत करने वाले) और 72 बीवियाँ अ़ता होंगी। (किताबुल आ़क़िबत 284)

अल्लाह तआ़ला हम सबको उन कभी न ख़त्म होने वाली नेअ़मतों से सरफ़राज़ फ़रमाए। आमीन ☐ ☐

चौथी फ़स्ल

क़ुरआन-ए-करीम में जहन्नम का ज़िक्र

इसके बर-ख़िलाफ़ कुफ़्फ़ार और बद्-अ़मल लोगों को सज़ा देने के लिए अल्लाह तआ़ला ने जहन्नम बनाई है जिसकी सज़ाएं और हौलनाकियाँ ना-क़ाबिले ब्यान हैं। क़ुरआन-ए-करीम में जगह जगह जहन्नम की सख़्तियों को ज़िक्र करके उससे डराया गया है, इस सिलसिले की कुछ आयतों का ख़ुलासा नीचे दिया गया है:

- जहन्नम की आग को दहकाने के लिए ईंधन के तौर पर इंसान और पत्थर इस्तिमाल होंगे। (सूरः बक़रा:24, अत्-तहरीम:6)
- काफ़िरों की खाल जब जहन्नम की आग से जल जाएगी तो फ़ौरन दूसरी नई खाल उनपर चढ़ा दी जाएगी (ताकि बराबर शदीद तक्लीफ़ का एह्सास होता रहे)। (सूरः अन्-निसा:56)
- आग ही जहन्नमियों का ओढ़ना बिछोना होगी। (सूरः अल्-अअ़्राफ़:41)
- जहन्नमियों को (पानी के बजाय सड़ा हुआ) पीप पिलाया जाएगा जिसे उन्हें ज़बरदस्ती पीना पड़ेगा। (सूरः इब्राहीम:16-17)
- जहन्नमियों का लिबास गंधक का होगा (जिसमें आग जल्दी लगती है) (सूरः इब्राहीम:50)
- जहन्नमियों की (अ़ज़ाब की शिद्दत से) ऐसी दहाड़ और चीख़ व पुकार होगी कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देगी। (सूरः हूद:106, अम्बिया:100)
- जहन्नमियों पर निहायत खौलता हुआ पानी डाला जाएगा वह पानी जब बदन के अंदर पहुंचेगा तो पेट की अंतड़ी औझड़ी सब गलाकर निकाल देगा और खाल भी गल पड़ेगी और ऊपर से लोहे के हथोड़े से पिटाई होती रहेगी, बहुत कोशिश करेंगे कि किसी तरह जहन्नम से निकल भागें मगर फ़रिश्ते पिटाई करके फिर उन्हें जहन्नम में धकेलते रहेंगे। (सूरः अल्-हज्ज:19-22)

- हर तरफ़ से आग में जलने की वजह से जहन्नमियों की सूरतें बिगड़ जाएंगी। (सूरः अल्-मोमिनूनः104)
- जहन्नमियों को सेंढे (ज़क्क़ूम) का पेड़ खिलाया जाएगा जो जहन्नम की पैदावार होगा, जो शैतान जैसा निहायत बद्-सूरत होगा जिसे देखकर भी कराहत आएगी उसी से वे पेट भरेंगे और ऊपर से जब प्यास लगेगी तो सख़्त तरीन खोलता हुआ पानी और पीप पिलाया जाएगा। (सूरः अस्-साफ़्फ़ात:57, 62-67, अद्-दुख़ानः43-48)
- जहन्नमियों की गर्दन में तौक़ पड़े होंगे और पैरों में बेड़ियाँ पड़ी होंगी और (मुज्रिमों की तरह) उन्हें घसीट कर खोलते हुए पानी में डाल दिया जाएगा फिर कभी आग में धोंकाया जाएगा। (सूरः ग़ाफ़िर 71-72) काफ़िरों को सत्तर गज़ लम्बी ज़ंजीर में जकड़कर लाया जाएगा। (सूरः अल्-हाक़्क़ा:30)
- जहन्नम के पहरे पर निहायत ज़बरदस्त क़ुव्वत वाले और सख़्तगीर फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो अल्लाह के हुक्म की तामील में ज़र्रा बराबर भी कौताही नहीं करते (यानी न वे जहन्नमी पर रहम खाएंगे और न उन्हें चक्मा देकर कोई जहन्नमी निकल सकेगा)। (अत्-तह्रीम:6)

अहादीस-ए-शरीफ़ा में जहन्नम की हौलनाकियों का ब्यान

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहादीसे तय्यिबा में निहायत तफ़्सील और वज़ाहत के साथ जहन्नम और उसके हौलनाक अ़ज़ाबों से उम्मत को ख़बरदार फ़रमाया है, कुछ अहादीस का ख़ुलासा नीचे लिखा जाता है:

- जहन्नम की आग दुनिया की आग के मुक़ाबले में 69 गुना ज़्यादा जलाने की सलाहियत रखती है। (मुस्लिम 2/381)
- जहन्नम की आग को एक हज़ार साल तक दहकाया गया जिसकी वजह से वह सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार साल तक दहकाया गया जिसकी वजह से वह जलते जलते सफ़ेद हो गई, उसके बाद फिर एक हज़ार साल दहकाया गया तो वह स्याह हो गई, तो अब वह निहायत अंधेरी और स्याही के साथ दहक रही है। (तिर्मिज़ी 2/86),

- जहन्नमियों का खाना "ज़क़्क़ूम" (सेंढा) इतना बद्‌बूदार है कि अगर उसकी एक बूंद भी दुनिया में उतार दी जाये तो तमाम दुनिया वालों का उसकी बद्‌बू की वजह से यहां रहना मुश्किल हो जाये, तो अंदाज़ा लगाइये कि जिसका खाना ही यह होगा उसका क्या हाल होगा।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/86, इब्ने हब्बान 9/278)

- जहन्नमियों को पिलाया जाने वाला "ग़स्साक़" (ज़ख़्मों को धोवन) इतना सख़्त बद्‌बूदार है कि उसका अगर सिर्फ़ एक डोल भी दुनिया में डाल दिया जाये तो सारी दुनिया उसकी बद्‌बू से सड़ जायेगी। (तिर्मिज़ी 2/86)

- जहन्नमियों को पिलाया जाने वाला पानी इस क़द्र सख़्त गर्म होगा कि उसको मुँह से क़रीब करते ही चेहरा बिल्कुल झुलस जाएगा यहां तक कि गर्मी की शिद्दत से उसके सर की खाल तक पिघल जाएगी, फिर जब वह जहन्नमी उस बद्‌बूदार और गर्म तरीन पानी को न चाहते हुए भी पियेगा तो वह उसकी सब अंतड़ियाँ काटकर पीछे के रास्ते से बाहर निकाल देगा। [illegible]

(तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/85)

- जहन्नम की लपटों से जहन्नमी का चेहरा इस तरह झुलस जाएगा कि ऊपर का होंट आधे सर तक सिमट जाएगा और नीचे का होंट उसकी नाफ़ तक सुकड़ जाएगा। [illegible] (तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/151)

- काफ़िर जहन्नमी की ढाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर होगी और उसकी खाल की मोटाई 3 दिन की दूरी के बराबर हो जायेगी (ताकि बदन बड़ा होने से तक्लीफ़ और ज़्यादा बढ़ जाये)। (मुस्लिम शरीफ़ 2/382)

- एक रिवायत में है कि काफ़िर की खाल की मोटाई 42 हाथ की होगी और ढाढ़ उहुद पहाड़ के बराबर होगी और एक काफ़िर के बैठने की जगह इतनी बड़ी होगी जैसे मक्का मुअ़ज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा की दूरी है। (तक़रीबन 450 किलो मीटर) (तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/85)

- काफ़िर की ज़बान जहन्नम में एक फ़र्सख़ (तीन मील का फ़ासला) और दो फ़र्सख़ के बराबर बाहर निकाल दी जाएगी यहां तक कि दूसरे जहन्नमी उस पर चला करेंगे। (तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/85)

- जहन्नम के अज़्दहे (बड़े साँप) ऊंट की गर्दन के बराबर मोटे होंगे और इतने

सख़्त ज़हरीले होंगे कि डसने के बाद उनके ज़हर की टीसें सत्तर साल तक उठती रहेंगी और जहन्नम के बिच्छू गधों के बराबर होंगे, जिनके डसने की टीस चालीस साल तक महसूस होगी।

(मुसनद अहमद 4/119, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 4/258)

- जहन्नमियों पर रोने की हालत तारी कर दी जाएगी तो रोते रोते उनके आँसू ख़ुश्क हो जाएंगे तो फिर वे ख़ून के आँसू इस क़द्र रोएंगे कि उनके चहरों में (इतने बड़े बड़े) गढ्ढे हो जाएंगे कि अगर उनमें कश्तियाँ चलाई जाएं तो वे भी चलने लगें। (सुनन-ए-इब्ने माजा किताबुज़् ज़ुह्द बाब 38, हदीस 4324, पेज 983, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 4/270)

- जहन्नम में सबसे कमतर अ़ज़ाब वाला शख़्स वह होगा जिसके जूते में जहन्नम के अंगारे रख दिए जाएंगे जिनकी गर्मी से उसका दिमाग़ ऐसे खोलेगा जैसे देगची में आग पर पानी खोलता है और वह समझेगा कि मुझसे ज़्यादा सख़्त अ़ज़ाब में कोई नहीं है, हालांकि वह सबसे कमतर अ़ज़ाब वाला होगा।

(बुख़ारी 2/971, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 4/266)

- जहन्नम में दाख़िले के बाद सबसे पहले जहन्नमियों को ज़हरीले साँपों के ज़हर वाला एक मश्रूब पीने को मिलेगा, जिसके ज़हर की शिद्दत इस क़द्र ज़्यादा होगी कि उसको मुँह से क़रीब करते ही उसका गोश्त और हड्डियाँ तित्तर बित्तर हो जाएंगी। (मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा 7/72)

इसलिए हमें अल्लाह के अ़ज़ाब से हर वक़्त डरते रहना चाहिए और हमेशा इसकी फ़िक्र रहनी चाहिए कि हम अपनी बद्-अ़मली की वजह से ख़ुदा न ख़्वास्ता अ़ज़ाब के हक़्दार न हो जायें। अल्लाह तआ़ला पूरी उम्मत को अपने अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखे। आमीन ☐ ☐

पांचवीं फ़स्ल

बद्-अ़मल ईमान वालों को जहन्नम से निकालने के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सिफ़ारिश

एक अ़र्से के बाद जबकि वे ईमान वाले जिन्होंने बद्-अ़मलियाँ कर रखी होंगी जहन्नम में जाकर मुक़र्ररा सज़ा भुगत चुके होंगे तो अल्लाह रब्बुल आ़लमीन अपनी अ़ज़ीमुश् शान रह्मत का इज़्हार फ़रमाते हुए उन मोमिनीन की जहन्नम से रिहाई की कार्रवाई की शुरूआ़त फरमएगा, सबसे पहले हमारे आक़ा और मौला सरवरे काइनात फ़ख़्रे दो-आ़लम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सज्दा रेज़ हो जायेंगे और एक ज़माने तक सज्दे में रहकर हम्द व सना में मश्ग़ूल रहेंगे, उसके बाद अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) सर उठाइये, इर्शाद फ़रमाइये आपकी बात सुनी जाएगी और सिफ़ारिश फ़रमाइये आपकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी, तो नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी उम्मत के गुनहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने के लिए दरख़्वास्त करेंगे कि يا رب امتی امتی! (ऐ रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत) तो अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाएगा जाइये! जिस शख़्स के दिल में एक गेहूं या जौ के बराबर भी ईमान हो, उसे जहन्नम से निकाल लीजिए, तो आप तशरीफ़ लाकर ऐसे ईमान वालों को निकाल देंगे फिर वापस जाकर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सज्दा रेज़ हो जाएंगे और इजाज़त मिलने पर फिर सिफ़ारिश फ़रमाएंगे, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि जाइये! जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे जहन्नम से निकाल लीजिए, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ लाकर ऐसे लोगों को जहन्नम से छुटकारा अ़ता फ़रमाएंगे, उसके बाद फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दरबारे ख़ुदावन्दी में मज़ीद सिफ़ारिश करेंगे, तो इर्शाद होगा कि जाइये जिस शख़्स के दिल में राई के दाने से भी तीन गुना कम ईमान हो उसे जहन्नम से निकाल दीजिए, तो आंहज़रत

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस कमतरीन हद के ईमान वालों को भी जहन्नम से निकाल लेंगे, उसके बाद अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेंगे कि इलाहुल आ़लमीन! मुझे ऐसे लोगों को भी निकालने का हुक्म फ़रमाइये जिसने कलिमा-ए-ला इलाह इल्लल्लाह पढ़ लिया हो तो उस पर अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगाः

لَيْسَ ذَاكَ إِلَيْكَ وَلٰكِنْ وَعِزَّتِيْ وَكِبْرِيَائِيْ وَعَظَمَتِيْ وَجِبْرِيَائِيْ لَأُخْرِجَنَّ مَنْ قَالَ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ.

(مسلم شريف عن انس ١/١١٠)

इसका आपको इख़्तियार नहीं है, लेकिन मेरी इज़्ज़त, मेरी किब्रियाई, मेरी अ़ज़्मत की क़सम मैं ज़रूर ब-ज़रूर उस शख़्स को जहन्नम से ख़ुद निकालूंगा जिसने भी कलिमा-ए-तय्यिबा पढ़ा होगा (यानी दिल से मोमिन होगा)।

एक रिवायत में नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि हर नबी को दुनिया में एक ऐसी दुआ़ का इख़्तियार दिया गया है जिसकी क़ुबूलियत का पक्का वादा था, तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ने इस दुआ़ का इस्तिमाल दुनिया ही में कर लिया मगर मैंने अपनी दुआ़ आख़िरत में अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त और सिफ़ारिश के लिए महफ़ूज़ कर ली है।

(मुस्लिम शरीफ़ 1/112-113)

एक बार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत फ़रमाते हुए ग़ौर किया कि हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत के गुनहगारों के बारे में यह फ़रमायाः

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ، فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَإِنَّهُ مِنِّيْ، وَمَنْ عَصَانِيْ فَإِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ. (ابراهيم ٣٦)

इन बुतों ने बहुत से लोगों को गुमराह कर दिया तो जो शख़्स मेरी राह पर चलेगा वह तो मेरा है और जो शख़्स मेरा कहना न माने तो आप बहुत बख़्शने वाले मेहरबान हैं।

और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के बारे में इस तरह इल्तिजा (गुज़ारिश) फ़रमाईः

إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ٥

अगर आप इनको सज़ा दें तो ये आपके बन्दे हैं और अगर आप इनको माफ़

कर दें तो आप ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं। (المائدة ١١٨)

ऊपर दी हुई आयतों को पढ़कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपनी उम्मत का ख़्याल आ गया, और बे-इख़्तियार रोते हुए اَللّٰهُمَّ اُمَّتِیْ اُمَّتِیْ (ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत का क्या होगा?) कहकर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हाथ उठा दिये। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि जाओ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से पूछकर आओ कि आपको किस चीज़ ने रूलाया? हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने तशरीफ़ लाकर आप से सवाल किया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पूरी बात बतला दी। तो अल्लाह तआ़ला ने दोबारा हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम के ज़रिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह तसल्ली भरा पैग़ाम भेजकर मसुरूर फ़रमाया कि:

اِنَّا سَنُرْضِيْكَ فِيْ اُمَّتِكَ وَلَا نَسُوْءُكَ. (مسلم شريف ١/١١٣)

(प्यारे मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम!) हम आपकी उम्मत के बारे में आप को ख़ुश कर देंगे और आपको नागवार न रहने देंगे।

इससे अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि हमारे आक़ा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को अपनी उम्मत से किस क़द्र ताल्लुक़ और मुहब्बत है कि आपको उम्मत के एक आदमी का भी जहन्नम में रहना बिल्कुल पसन्द नहीं है।

जन्नतियों की अपने बद्-अ़मल भाइयों के लिए सिफ़ारिश

जन्नती लोग अपने बद्-अ़मल मोमिन भाइयों के हक़ में भी बारगाहे ख़ुदावन्दी में इन्तिहाई इसरार व आ़जिज़ी के साथ सिफ़ारिश करेंगे और कहेंगे कि कुछ लोग दुनिया में हमारे साथ नमाज़ पढ़ते, रोज़े रखते और हज करते थे अब वे यहां जन्नत में नज़र नहीं आ रहे, उनको जहन्नम से निकालने का फ़ैसला फ़रमाया जाये, तो अल्लाह तआ़ला उन जन्नतियों की सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमाएगा और हुक्म देगा कि जिन जिन लोगों को तुम जानते पहचानते हो उन्हें वहां से निकाल लाओ, ये हज़रात जहन्नम में जाकर अपनी जान पहचान के सब लोगों को जहन्नम से निकाल लाएंगे और उस वक़्त अल्लाह तआ़ला उन

बद्-अ़मल लोगों की सूरतें आग से महफ़ूज़ फ़रमा देगा ताकि उन्हें पहचानने में परेशानी न हो, उसके बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि जाओ जिसके पास एक दीनार के बराबर भी ईमानी अ़मल हो उसे निकाल लाओ, वे उन्हें भी निकाल लाएंगे, फिर उनके लिए आधे दीनार और अख़ीर में एक राई के दाने के बराबर भी ईमानी अ़मल की हद मुतअ़य्यन की जाएगी और सब ऐसे बद्-अ़मलों को जहन्नम से छुटकारा नसीब हो जाएगा। (मुस्लिम शरीफ़ 1/103)

अल्लाह तआ़ला के ख़ास आज़ाद किए हुए लोग

उसके बाद अल्लाह अर्हमुर्राहिमीन इर्शाद फ़रमाएगाः

شَفَعَتِ الْمَلَائِكَةُ وَشَفَعَ النَّبِيُّوْنَ وَشَفَعَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَلَمْ يَبْقَ إِلَّا أَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ.

फ़रिश्ते, अम्बिया और ईमान वाले सब सिफ़ारिश कर चुके, अब रब्ब-ए-करीम अर्हमुर्राहिमीन के अ़लावा कोई बाक़ी नहीं रहा।

और फिर अल्लाह तआ़ला एक मुट्ठी भर कर (जिसकी गुंजाइश का इल्म अल्लाह के सिवा किसी और को नहीं) ऐसे जहन्नमियों को जहन्नम से निकालेगा जिनके पास ईमान-ए-क़ल्बी के अ़लावा कोई भी ज़ाहिरी अ़मल (नमाज़, रोज़ा, तस्बीह वग़ैरह) न होगा, ये लोग जल भुनकर बिल्कुल कोयला हो चुके होंगे, इन सबको जन्नत के दरवाज़े के नज़्दीक "नहरे हयात" में डुबकी लगायी जायेगी जिसके असर से ये सब तर व ताज़ा होकर निकलेंगे और इनकी गर्दनों में ख़ास क़िस्म के छल्ले डाल दिए जाएंगे जिन्हें देखकर जन्नत वाले उन्हें पहचान लेंगे कि ये अल्लाह के आज़ाद किए हुए जन्नती हैं जो बग़ैर किसी ज़ाहिरी अ़मल के सिर्फ़ दिल में ईमान की बदोलत जन्नत में आये हैं, बहरहाल उसके बाद अल्लाह तआ़ला उनसे फ़रमाएगा कि जाओ जन्नत में दाख़िल हो जाओ और जहां तक तुम्हारी नज़र जाए और जो कुछ तुम्हें अच्छा लगे वे सब तुम्हारा है तो वे बोल उठेंगे कि इलाहुल आ़लमीन! आपने तो हमें इस क़द्र नवाज़ा है कि शायद काइनात में किसी को इस क़द्र नवाज़ा न होगा तो अल्लाह तआ़ला उनसे फ़रमाएगा कि मेरे पास तुम्हारे लिए इससे भी बड़ी फ़ज़ीलत वाली नेअ़्मत है, वह हैरत से पूछेंगे कि वह नेअ़्मत क्या है? तो अल्लाह तआ़ला उन्हें यह अ़ज़ीम बशारत सुनाएगा किः

رِضَائِیْ فَلَا اَسْخَطُ عَلَیْكُمْ بَعْدَهٗ اَبَدًا. (مسلم شریف ۱/۱۰۳)

(सबसे अफ़ज़ल नेअ्मत) मेरी ख़ुशनूदी है, अब मैं कभी भी तुमसे नाराज़ न हूंगा।

अल्लाहु अक्बर! रह्मते ख़ुदावन्दी की शान कितनी अ़ज़ीम है, इस हदीस से दौलते ईमान की क़द्रो क़ीमत और अहमियत का भी अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि आख़िरत में सबसे ज़्यादा जो चीज़ काम आएगी वह ईमान होगा, अल्लाह तआ़ला हर शख़्स को ईमाने कामिल से सरफ़राज़ फ़रमाये। आमीन

जन्नत में दाख़िल होने वाले आख़िरी शख़्स का हाल

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में सबसे आख़िर में दाख़िल होने वाले शख़्स का हाल यह होगा कि वह गिरता पड़ता चल रहा होगा और जहन्नम की आग की लपटें उसे झुलसा रही होंगी आख़िरकार जब वह जहन्नम से बहुत मुश्किल से निकल पाएगा तो जहन्नम की तरफ़ देखकर बे-इख़्तियार यह कह उठेगा कि वह ज़ात बड़ी बा-बरकत है जिसने मुझे तुझ (जहन्नम) से छुटकारा अ़ता फ़रमाया और बेशक अल्लाह तआ़ला ने मुझे वह नेअ्मत बख़्शी है जो पहले आने वालों और बाद में आने वालों में से किसी को भी नहीं अ़ता की गई। फिर उसके सामने एक पेड़ ज़ाहिर होगा तो वह अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब्ब-ए-करीम! आप मुझे इस पेड़ के क़रीब फ़रमा दीजिए ताकि मैं इसके साये में बैठूं और इसके पानी से प्यास बुझाऊं। इस पर अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि ऐ आदमी! अगर मैं तेरी मुराद पूरी कर दूं तो तू कुछ और मांगेगा? वह शख़्स कहेगा कि नहीं परवरदिगार! और फिर ज़्यादा सवाल न करने का पक्का वादा करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसकी मजबूरी को क़ुबूल फ़रमाएगा क्योंकि वह उसकी बेसब्र तबीअ़त को जानता है और उसे उसके मत्लूबा पेड़ के नीचे पहुंचा देगा। वह शख़्स उसके क़रीब जाकर उसके साये में बैठेगा और वहां मौजूद पानी पियेगा। फिर उसके लिए एक दूसरा पेड़ सामने लाया जाएगा। जो पहले पेड़ से और अच्छा होगा तो फिर वह शख़्स अल्लाह तआ़ला से उसके क़रीब जाने की दरख़्वास्त करेगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा कि ऐ आदमी क्या तूने कुछ और सवाल न करने का वादा नहीं किया था?

और अगर मैं तेरी मुराद पूरी कर दूं तो फिर तू कुछ और सवाल करेगा? तो वह शख़्स फिर सवाल न करने का वादा करेगा और अल्लाह तआ़ला उसकी बेसब्री को जानते हुए नज़रअंदाज़ फ़रमाकर उसे उस पेड़ के क़रीब पहुंचा देगा और वह उसके साये और पानी से फ़ायदा उठाएगा। फिर एक तीसरा पेड़ जन्नत के दरवाज़े के बिल्कुल पास नज़र आयेगा जो पहले दोनों पेड़ों से ज़्यादा ख़ूबसूरत होगा। तो यह शख़्स उसके क़रीब जाने की भी दरख़्वासत करेगा आख़िरकार जब उसे उस पेड़ तक पहुंचा दिया जाएगा तो उसे वहां जन्नत वालों की आवाज़ें सुनाई देंगी। तो वह दरख़्वासत करेगा कि ऐ रब्ब-ए-करीम! अब बस मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दीजिए। तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उस शख़्स से मुख़ातिब होकर फ़रमाएगा कि आख़िर तेरा सवाल करना कब ख़त्म होगा? क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं है कि मैं तुझे दुनिया की दोगुनी जन्नत अ़ता कर दूं? तो वह शख़्स हैरत ज़दा होकर कहेगा कि ऐ रब्ब-ए-करीम! आप रब्बुल आ़लमीन होकर मुझ से मज़ाक़ फ़रमाते हैं? इतनी रिवायत ब्यान करके इस हदीस के रावी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसूऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु हंसने लगे और वहां मौजूद लोगों से फ़रमाया कि मुझसे नहीं पूछते कि मैं क्यों हंस रहा हूँ? तो लोगों ने यही सवाल आपसे किया तो आपने फ़रमाया कि इसी तरह इस रिवायत को ब्यान करके आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी तबस्सुम (मुस्कराना) फ़रमाया था। और जब सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इसकी वजह पूछी तो आपने फ़रमाया था कि मैं रब्बुल आ़लमीन के हंसने की वजह से हंस रहा हूँ क्योंकि जब वह बंदा अ़र्ज़ करेगा कि ऐ इलाहुलआ़लमीन आप रब्बुल आ़लमीन होकर मुझसे मज़ाक़ कर रहे हैं। तो रब्बुल आ़लमीन फ़रमाएगा कि मैं तुझसे मज़ाक़ नहीं कर रहा हूँ बल्कि मैं जिस बात को चाहूं उसको पूरा करने पर क़ादिर हूँ। (मुस्लिम शरीफ 1/105)

अल्लाह तआ़ला के हंसने का मतलब उसका राज़ी और ख़ुश होना है.

और इस रिवायत को हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इस इज़ाफ़े के साथ रिवायत फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से फ़रमाएगा कि मांग ले जो मांगना है? तो वह जो चाहेगा मांग लेगा और अल्लाह तआ़ला उसे और ज़्यादा बातें याद दिलाता रहेगा यहां तक कि जब उसकी सब आरज़ूएं ख़त्म हो जाएंगी तो अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमाएगा कि तुझे तेरी आरज़ूओं

के साथ और दस गुना नेअ्मतें अता की जाती हैं। फिर वह जन्नत में जाकर जब अपने महल में दाख़िल होगा तो जन्नत की हूरों में से उसकी दो बीवियाँ उसे देखकर कहेंगी "तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने तुमको हमारे लिए और हमको तुम्हारे लिए वुजूद बख़्शा"। वह जन्नती शख़्स (उनकी इस प्यार भरी बातें और अल्लाह की अ़ज़ीम नेअ्मतें देखकर) बोल उठेगा कि मुझे जो नेअ्मतें मिली हैं वे काइनात में किसी और को न मिली होंगी।

(मुस्लिम शरीफ़ 1/106)

जब मौत को भी मौत आ जाएगी

उसके बाद जब सब जन्नती जन्नत में और सब जहन्नमी जहन्नम में अपने अपने असली ठिकानों तक पहुंच जाएंगे और जिनका जहन्नम से निकलना मुक़द्दर होगा वे सब निकलकर जन्नत में दाख़िल हो चुकेंगे, तो जहन्नम के बीच एक दीवार पर मौत को एक मेंढे की शक्ल में लाया जाएगा और तमाम जन्नत वालों और जहन्नम वालों को जमा करके पूछा जाएगा कि जानते हो यह मेंढा कौन है? सब जवाब देंगे कि "यह मौत है" फिर सबकी नज़रों के सामने उस मेंढे को ज़िब्ह कर दिया जाएगा और ऐलान होगा किः

يَآ أَهْلَ الْجَنَّةِ خُلُوْدٌ فَلَا مَوْتَ، وَيَا أَهْلَ النَّارِ خُلُوْدٌ فَلَا مَوْتَ.

(بخاری شریف ۶۹۱/۲)

ऐ जन्नतियो! अब यहां तुम्हें हमेशा रहना है, अब मौत नहीं आएगी और ऐ जहन्नमियो! अब तुम इसमें हमेशा रहोगे, अब तुम्हें मौत न आएगी (यानी अब मौत को ख़ुद मौत आ गई है)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक दूसरी हदीस में इर्शाद फ़रमाया कि उस दिन जन्नतियों को इस क़द्र ख़ुशी होगी कि अगर ख़ुशी की शिद्दत से किसी को मौत आया करती तो सब जन्नती इस ख़बर की ख़ुशी में वफ़ात पा जाते, जबकि जहन्नमियों को इस क़द्र ग़म होगा कि अगर किसी को ग़म की शिद्दत से मौत आया करती तो सब जहन्नमी इस ग़म में मर जाते कि अब हमेशा जहन्नम में रहना पड़ेगा, यहां से निकलने की उम्मीद ही ख़त्म हो गई है।

(मुस्तफ़ाद तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/148, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 4/317)

बहरहाल मौत, हश्र व नश्र और जन्नत व जहन्नम के ये होश उड़ा देने वाले हालात हमारी ग़फ़लतों को दूर करने के लिए काफ़ी हैं और इन हालात का तज़्किरा और याद दिहानी इस बात की अ़लामत है कि हमारे दिल में अल्लाह तबारक व तआ़ला से शर्म व हया का जज़्बा और उसका हक़ अदा करने का जज़्बा मौजूद है, इसलिए कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हया-ए-ख़ुदावन्दी की एक निशानी "मौत और उसके बाद के हालात याद रखने" को भी क़रार दिया है। अल्लाह तबारक व तआ़ला हम सबको उसकी याद दिहानी की दौलत अ़ता फ़रमाये। आमीन ❑ ❑

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है

- दुनियवी ज़ैब व ज़ीनत से इज्तिनाब
- अल्लाह की नज़र में दुनिया की हैसियत
- दुनिया की मुहब्बतः हर बुराई की जड़
- क़नाअ़त' दाइमी दौलत
- हर वक़्त मुस्तइद रहिए!

हर्फ़े आख़िर

दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत छोड़ने की हिदायत

ज़ेरे बहस हदीस के आख़िर में ख़ुलासे के तौर पर यह मुकम्मल जुम्ला इर्शाद फ़रमाया गया कि "وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ تَرَكَ زِيْنَةَ الدُّنْيَا" यानी जो शख़्स आख़िरत में कामिल तौर पर कामियाबी का उम्मीदवार हो उसे दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत से दिल हटाना होगा और पूरी तवज्जोह आख़िरत की तरफ़ करनी पड़ेगी। अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में जगह जगह दुनिया की बे-वक़्अती को साफ़ तौर से फ़रमाया है। एक जगह इर्शाद है:

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ط وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ٥ (الانعام/٣٢)

और दुनियवी ज़िन्दगानी तो कुछ भी नहीं अ़लावह लह्व व लइ़ब (खेलकूद) के और आख़िरत का घर मुत्तक़ियों के लिए बेह्तर है, क्या तुम सोचते समझते नहीं हो।

और एक दूसरी आयत में इर्शाद है:

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ط وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ٥ (العنكبوت ٦٤)

और यह दुनियवी ज़िन्दगी बज़ाते ख़ुद अ़लावह लह्व व लइ़ब (खेलकूद) के और कुछ भी नहीं और अस्ल ज़िन्दगी आ़लम-ए-आख़िरत है, अगर उनको इस का इ़ल्म होता तो ऐसा न करते।

और सूरः हदीद में और ज़्यादा वज़ाहत के साथ ऐलान फ़रमाया:

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ط كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ

तुम ख़ूब जान लो कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनियवी ज़िन्दगी सिर्फ़ लह्व व लइ़ब और एक ज़ाहिरी ज़ीनत और आपस में एक दूसरे पर फ़ख़्र करना और अम्वाल और औलाद में एक का दूसरे से अपने को ज़्यादा बतलाना है, जैसे बारिश बरसती

مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۖ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۗ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝

(الحديد آيت : ٢٠)

है कि उसकी पैदावार काशतकारों को अच्छी मालूम होती है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है तो तू उसको ज़र्द देखता है, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है और आख़िरत का हाल यह है कि उसमें (कुफ़्फ़ार के लिए) सख़्त अ़ज़ाब है और (ईमान वालों के लिए) ख़ुदा की तरफ़ से मग़्फ़िरत और रज़ामन्दी है और दुनियवी ज़िन्दगी सिर्फ़ धोके का सामान है।

दुनियवी ज़ैब व ज़ीनत की मिसाल

क़ुरआन-ए-करीम में कई जगह दुनिया की ना-पायेदारी (मज़्बूत न होने) को साफ़ मिसालों के ज़रिये समझाया गया है। एक आयत में इर्शाद है:

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ۗ حَتّٰى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ اَتٰهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

(سورۂ یونس آیت ٢٤)

दुनिया की ज़िन्दगानी की वही मिसाल है जैसे हमने पानी उतारा आसमान से, फिर रिला-मिला निकला उससे ज़मीन का सब्ज़ा जिसको आदमी और जानवर खाते हैं, यहां तक कि जब ज़मीन बारौनक़ और मुज़य्यन हो गई और ज़मीन वालों ने ख़्याल किया कि यह हमारे हाथ लगेगी, कि अचानक उसपर हमारा हुक्म रात या दिन को आ पहुंचा, फिर कर डाला उसको काटकर ढेर, जैसा कल यहां न थी आबादी, इसी तरह हम खोलकर ब्यान करते हैं निशानियों को उन लोगों के सामने जो ग़ौर करते हैं।

यानी जिस तरह ज़मीन सैराबी के बाद शादाब (तर व ताज़ा) नज़र आती है मगर यह शादाबी उसकी कुछ दिनों की है। अगर कोई आसमानी आफ़त उस पर नाज़िल हो जाये तो उसकी रौनक़ मिन्टों-सेकिंडों में ख़त्म हो जाती है। यही हाल दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत का है कि वह सिर्फ़ वक़्ती है चंद ही दिनों में यह

रौनक़ बे-रौनक़ी में तब्दील हो जाने वाली है।

और सूरः कह्फ़ में इर्शादे ख़ुदावन्दी है:

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۞ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۞
(الکہف آیت: ٤٥/٤٦)

और बतला दीजिए उनको दुनियवी ज़िन्दगी की मिसाल जैसे पानी उतारा हमने आसमान से फिर रिला मिला निकला उसकी वजह से ज़मीन का सब्ज़ा, फिर कल को हो गया चूरा चूरा, हवा में उड़ता हुआ और अल्लाह को है हर चीज़ पर क़ुद्रत, माल और बेटे रौनक़ हैं दुनिया की ज़िन्दगी में और बाक़ी रहने वाली नेकियों का तेरे रब के यहां बेह्तर मुआमला है और बेह्तर उम्मीद है।

दुनिया की हर खेती का अंजाम यही है कि उसके पक जाने के बाद उसे काट कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जाता है, और फिर उसका भुस हवा में उड़ता फिरता है यही हाल इस दुनिया और इसके माल व दौलत और ख़ज़ानों का है कि एक दिन वह आने वाला है जब पूरे आ़लम को बर्बाद कर दिया जाएगा और मामूली चीज़ों का तो पूछना ही किया बड़े-बड़े ज़बरदस्त पहाड़ धुनी हुई रूई की तरह उड़े उड़े फिरेंगे लिहाज़ा ऐसी फ़ना हो जाने वाली चीज़ में जी लगाना और दिन व रात बस उसी की धुन और फ़िक्र में रहना अक़्लमंदों का काम नहीं है।

अल्लाह तआ़ला की नज़र में दुनिया की हैसियत

तमाम दुनिया और उसकी नेअ़्मतें अल्लाह की नज़र में बिल्कुल बेकार और बे-हैसियत हैं, इसी लिए अल्लाह तआ़ला दुनिया की नेअ़्मतें कुफ़्फ़ार को पूरी फ़रावानी से देता है और उनका कुफ़्र व शिर्क उन नेअ़्मतों के हासिल करने में रूकावट नहीं बनता। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

لَوْ كَانَتِ الدُّنْيَا تَعْدِلُ عِنْدَ اللّٰهِ جَنَاحَ بَعُوْضَةٍ مَا سَقٰى كَافِرًا مِّنْهَا

अगर अल्लाह तआ़ला की नज़र में दुनिया की हैसियत एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो उसमें से किसी काफ़िर

को एक घूंट पानी भी नसीब न फ़रमाता।

شَرْبَةَ مَاءٍ. (ترمذی شریف ۲/۵۸)

एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के साथ तशरीफ़ ले आ रहे थे तो रास्ते में बक्री का एक मरा हुआ बच्चा नज़र आया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से पूछा कि क्या ख़्याल है इस बच्चे के घर वालों ने इसे बे-हैसियत समझकर यहां फैंक दिया है। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने उसकी ताईद फ़रमाई तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَلدُّنْيَا اَهْوَنُ عَلَى اللّٰهِ مِنْ هٰذِهٖ عَلٰى اَهْلِهَا. (ترمذی شریف ۲/۵۸)

अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक दुनिया इस बक्री के बच्चे के अपने घर वालों की नज़र में ज़लील (बे-क़ीमत) होने से ज़्यादा बे-हैसियत और बेकार है।

और एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

إِنَّ الدُّنْيَا مَلْعُوْنَةٌ، مَلْعُوْنٌ مَافِيْهَا إِلَّا ذِكْرُ اللّٰهِ وَمَا وَالَاهُ، وَعَالِمٌ أَوْمُتَعَلِّمٌ. (ترمذی شریف ۲/۵۸)

बेशक दुनिया ख़ुद भी लानत के क़ाबिल है और उसमें जो चीज़ें हैं वे भी लानत के क़ाबिल हैं, सिवाये अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र और उससे मिले हुए आमाल के और सिवाये आ़लिम या मुतअ़ल्लिम के।

यानी दुनिया में रहकर अगर इंसान अल्लाह से ग़ाफ़िल और आख़िरत से बे-परवाह हो जाये तो यह दुनिया की पूरी ज़िन्दगी और उसकी सारी नेअ़मतें इंसान को लानत के तौक़ में मुब्तला करने वाली हैं, इसलिए दुनिया से बस इतना ही ताल्लुक़ रहना चाहिए जितनी उसकी ज़रूरत है इसलिए कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है कि दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी का मुक़ाबला इस तरह करो कि एक तरफ़ तो सिर्फ़ एक उंगली में लगी हुई पानी की बूंद हो और दूसरी तरफ़ पूरा का पूरा समन्दर हो जिसकी गहराई का कोई अंदाज़ा नहीं, तो यह बूंद पूरी दुनिया की ज़िन्दगी है जो निहायत थोड़ी सी है और यह समन्दर की मिसाल पूरी आख़िरत है जो लामहदूद और कभी न ख़त्म होने वाली है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ 2/58)

इसलिए दुनिया में जितने दिन रहना है उतनी फ़िक्र यहां के बारे में की जाये और आख़िरत में जितने दिन रहना है उतनी वहां कि फ़िक्र करनी ज़रूरी है।

काफ़िरों की दुनियवी शान व शौकत देख कर परेशान न हों

आ़म तौर पर दुनिया में कुफ़्फ़ार की शान व शौकत, माल व दौलत और ज़ाहिरी ऐश व आराम देख कर लोग उनकी हिर्स करने में पड़ जाते हैं या दिल तंग होते हैं और एह्सासे कमतरी का शिकार हो जाते हैं और उनकी दोड़ में शामिल होने के लिए हलाल और हराम में तमीज़ बिल्कुल ख़त्म कर देते हैं जैसा कि आजकल के नाम निहाद दानिशवरों का हाल है, तो उनको ख़बरदार करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमायाः

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ۚ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (آل عمران ١٩٦-١٩٧)

आप को धोखा न दे काफ़िरों का शहरों में चलना फिरना, यह फ़ायदा है थोड़ा सा, फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है

दुनिया और उसकी सब चमक दमक सिर्फ़ आ़रज़ी हैं, इंसान की ज़िन्दगी में अगर कोई नेअ़्मत हासिल हो जाये तो कोई ज़मानत नहीं कि वह आख़िरी दम तक बाक़ी भी रहे, इसलिए कि दुनिया बदलती रहती है, माल, सहत, इ़ज़्ज़त और आ़फ़ियत के ऐतिबार से लोगों के हालात बदलते रहते हैं, इसलिए दुनिया की बड़ी से बड़ी कही जाने वाली नेअ़्मत भी बाक़ी रहने वाली नहीं है और उससे फ़ायदा उठाने का सिलसिला यक़ीनन ख़त्म हो जाने वाला है, अगर ज़िन्दगी में ख़त्म न हुआ तो मरने के बाद यक़ीनन ख़त्म हो जाएगा, मरने के बाद न बीवी बीवी रहेगी, न माल माल रहेगा, न जाएदाद और खेती बाड़ी साथ रहेगी। इन सब चीज़ों का साथ छूट जाएगा। इसलिए क़ुरआन और हदीस में इंसानों को हिदायत दी गई है कि वे दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत को मक़्सद न बनायें बल्कि उसके मुक़ाबले में आख़िरत की कभी न ख़त्म होने वाली नेअ़्मतें हासिल करने की भाग-दौड़ और फ़िक्र करनी चाहिए। क़ुरआन-ए-करीम में

इर्शाद फ़रमाया गया:

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ، ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۔ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۔ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ۔ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِالْعِبَادِ ۔

(آل عمران آیت: ١٤- ١٥)

फ़रेफ़्ता किया है लोगों को मरग़ूब चीज़ों की मुहब्बत ने, जैसे औरतें और बेटे और ख़ज़ाने जमा किये हुए सोने और चांदी के और घोड़े निशान लगाये हुए और जानवर और खेती, यह फ़ायदा उठाना है दुनिया की ज़िन्दगानी में और अल्लाह ही के पास है अच्छा ठिकाना, आप फ़रमा दीजिए: क्या बताऊं मैं तुमको इससे बेहतर? परहेज़गारों के लिए अपने रब के यहाँ बाग़ हैं, जिनके नीचे बह रही हैं नहरें, हमेशा रहेंगे उनमें और औरते हैं सुथरी और रज़ामन्दी अल्लाह की और अल्लाह की निगाह में हैं बन्दे।

मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने दुनिया के निज़ाम को क़ाइम और बाक़ी रखने के लिए जैसे कि इन चीज़ों की मुहब्बत लोगों के दिलों मे रासिख़ फ़रमा दी है क्योंकि अगर इन चीज़ों से लोगों को दिली ताल्लुक़ न होगा तो दुनिया की आबादी और शादाबी के असबाब कैसे हासिल होंगे? माल के हासिल करने के लिए भाग-दौड़ कौन करेगा? सनअ़त व हिर्फ़त यानी कारीगरी, हुनर, कारोबार और खेती के काम कैसे तरक़्क़ी करेंगे? इसलिए इन दुनियवी असबाब से लोगों का ताल्लुक़ क़ुदरत के निज़ाम के ऐन मुताबिक़ है, मगर इस ताल्लुक़ के दो पहलू हैं, एक पसन्दीदा है और दूसरा नापसन्दीदा है, यानी अगर औरतों से ताल्लुक़ हरामकारी की तरफ़ रग़बत की वजह से है तो नापसन्द है और अगर इफ़्फ़त व इज़्ज़त की हिफ़ाज़त और नेक औलाद के हासिल करने के लिए अपनी निकाह की हुई बीवियों से ताल्लुक़ है तो यह ऐन इबादत है, इसी तरह माल में दिल लगाना अगर तकब्बुर और ग़ुरूर और फ़ख़्र व मुबाहात (शेख़ी) और दूसरों पर ज़ुल्म और जब्र के साथ है तो यह बद्-तरीन ग़लती है लेकिन अगर सद्क़ा ख़ैरात के शौक़ और लोगों के हुक़ूक़ की अदायगी के मक़्सद से हलाल कारोबार में वक़्त लगता है तो ज़ाहिर है कि उसे बुरा नहीं कहा जाएगा।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर कामिल 232)

मतलब यह निकला कि दुनिया से वह ताल्लुक़ जो इंसान को आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफ़िल कर दे वह मना है और अगर ताल्लुक़ बक़द्रे ज़रूरत और सिर्फ़ ज़रूरत के लिए हो और उसकी वजह से इंसान आख़िरत से ग़फ़्लत न बरते और अल्लाह तआ़ला और उसके बन्दों के हुक़ूक़ की अदायगी में कौताही इख़्तियार न करे तो उसमें हर्ज नहीं है। इसलिए इंसान को कभी भी दुनिया के अंदर अपने को ऐसा मशग़ूल नहीं करना चाहिए कि आख़िरत उसकी नज़र से ओझल हो जाये और बस दुनिया और उसकी लज़्ज़तों में मदहोश होकर रह जाये।

दुनिया में इश्तिग़ाल (मशग़ूल होना) किस हद तक

हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमसे ख़िताब करते हुए इर्शाद फ़रमाया किः मुझे तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा ख़तरा उन ज़मीन की बरकतों से है जो अल्लाह तआ़ला तुम पर ज़ाहिर फ़रमा देगा। आपसे सवाल किया गया कि ज़मीन की बरकतों से क्या मुराद है? तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इससे मुराद दुनिया की चमक दमक और ज़ैब व ज़ीनत है। यह सुनकर एक साहब ने अ़र्ज़ किया कि "क्या ख़ैर का नतीजा मुसीबत की शक्ल में निकलता है?" (यानी माल ज़ाहिर में तो नेअ़्मत है फिर उसके मिलने पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़तरे का इज़्हार क्यों फ़रमा रहे हैं?) इस सवाल पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ामोश हो गये यहां तक कि हमें यह ख़्याल हुआ कि शायद आप पर वह़ी आएगी फिर हमने देखा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी मुबारक पेशानी से पसीना साफ़ फ़रमा रहे हैं (जो इस बात की दलील थी कि आप पर इस वक़्त वह़ी आई है) इसके बाद आपने पूछा कि सवाल करने वाला शख़्स कहां है? तो वह शख़्स सामने आया और अ़र्ज़ किया कि मैं हाज़िर हूं। रावी-ए-हदीस हज़रत अबू सईद ख़ुद्री रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उस सवाल करने वाले के सामने आने पर हमने अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया (कि उसकी बदौलत इल्मी फ़ायदे का मौक़ा मिलेगा)। इसके बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सवाल करने वाले के सवाल का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाया किः

لَايَاْتِي الْخَيْرُ إِلَّا بِالْخَيْرِ، إِنَّ هٰذَا الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ وَّإِنَّ كُلَّ مَا نَبَتَ الرَّبِيْعُ يَقْتُلُ حَبَطًا أَوْ يُلِمُّ إِلَّا اٰكِلَةَ الْخُضْرَةِ تَاْكُلُ حَتّٰى إِذَا امْتَدَّتْ خَاصِرَتَاهَا اسْتَقْبَلَتِ الشَّمْسَ فَاجْتَرَّتْ وَثَلَطَتْ وَبَالَتْ ثُمَّ عَادَتْ فَأَكَلَتْ وَإِنَّ هٰذَا الْمَالَ حُلْوَةٌ، مَنْ اَخَذَهُ بِحَقِّهِ وَوَضَعَهُ فِيْ حَقِّهِ فَنِعْمَ الْمَعُوْنَةُ هُوَ وَمَنْ أَخَذَهُ بِغَيْرِ حَقِّهِ كَانَ كَالَّذِيْ يَاْكُلُ وَلَا يَشْبَعُ.

(بخاری شریف ۹۵۱/۲،
مسلم شریف ۳۳٦/۱)

ख़ैर से तो ख़ैर ही निकलती है (लेकिन) यह माल दिलकश और मीठा मज़ेदार है (जैसे) सींचाई की नाली से उगने वाला सब्ज़ा (बे-हिसाब खाने वाले जानवर को) हैज़े की वजह से मार देता है या मरने के क़रीब पहुंचा देता है, सिवाये उस जानवर के जो हरयाली घास को खाकर पेट भरने के बाद सूरज की धूप में बैठकर जुगाली करता है और लीद और पैशाब से फ़ारिग़ होने के बाद फिर वापस आकर घास चरता है (तो वह हैज़े से बच जाता है और मरता नहीं तो इसी तरह) इस माल में बड़ी मिठास है, जो इसको सही तरीक़े से हासिल करके सही जगह ख़र्च करे तो उसके लिए यह बेहतरीन मददगार है और जो इसे ग़लत तरीक़े पर कमाये तो वह उस जानवर की तरह होकर मरेगा जो बराबर खाता रहता है और उसकी भूख कभी ख़त्म नहीं होती (और आख़िरकार वह हैज़े से हलाक हो जाता है)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस मुबारक इर्शाद से दुनिया में इश्तिग़ाल की अस्ली हद मालूम हो गई कि दुनिया से सिर्फ़ ज़रूरत के बक़द्र और ज़रूरत के लिए ही फ़ायदा उठाना फ़ायदेमंद है। इसमें ऐसा दिल लगाना कि बस आदमी 99 ही की गरदान में हर वक़्त मुब्तला रहे और आख़िरत को बिल्कुल भूल जाये यह इन्तिहाई ख़तरनाक और वबाले जान है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दूसरी हदीस में इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ طَلَبَ الدُّنْيَا حَلَالًا اِسْتِعْفَافًا عَنْ مَسْئَلَةٍ وَّسَعْيًا عَلٰى أَهْلِهٖ وَتَعَطُّفًا

जो शख़्स हलाल तरीक़े से, सवाल से बचने, घर वालों की ज़रूरियात पूरा करने और अपने पड़ौसियों पर मेहरबानी

عَلٰی جَارِہٖ جَآءَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ وَوَجْہُہٗ کَالْقَمَرِ لَیْلَۃَ الْبَدْرِ وَمَنْ طَلَبَ الدُّنْیَا مُفَاخِرًا مُکَاثِرًا مُرَائِیًا لَقِیَ اللّٰہَ وَھُوَ عَلَیْہِ غَضْبَانُ.

(شعب الایمان ۷/۲۹۸)

करने की ग़रज़ से दुनिया कमाए तो वह क़ियामत में इस हाल में आएगा कि उसका चेहरा चौधवीं के चाँद की तरह चमकता होगा और जो शख़्स फ़ख़्र और मुबाहात (ग़ुरूर) और नाम के लिए दुनिया कमाये तो वह अल्लाह तआ़ला के दरबार में इस हाल में हाज़िर होगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ुस्सा होंगे।

इसलिए हमे चाहिए कि अल्लाह तआ़ला से शर्म व हया के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए हम दुनिया से ताल्लुक़, उसकी हद के अंदर रहकर रखें और इससे आगे न बढ़ें। अल्लाह तआ़ला हमें तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन

दुनिया सुकून की जगह है ही नहीं

दुनिया में कोई शख़्स यह दावा नहीं कर सकता कि वह पूरी तरह सुकून में है, क्योंकि यहां हर शख़्स के साथ कुछ न कुछ ऐसे काम लगे हुए हैं जो बार बार उसके सुकून में ख़लल डालते रहते हैं और इस मुआ़मले में अमीर ग़रीब, छोटे बड़े, बादशाह या अ़वाम किसी में कोई फ़र्क़ नहीं है, बल्कि ग़ौर किया जाये तो दुनिया में जो शख़्स जितने बड़े औ़हदे पर काम कर रहा होता है या जितना बड़ा मालदार और इज़्ज़तदार होता है उतना ही उसके दिमाग़ पर फ़िक्रों और ख़तरों का बोझ होता है, ऐसे लोगों की जान के लाले पड़े रहते हैं हर वक़्त कमान्डोज़ में घिरे रहते हैं, अपनी मर्ज़ी से आज़ादाना कहीं आना जाना उनके लिए मुश्किल होता है। फिर हर वक़्त इज़्ज़त जाते रहने के डर से उनकी नींदें हराम हो जाती हैं, पूरी पूरी रात नर्म और नाज़ुक गद्दों पर करवटें बदलते गुज़र जाती है और फ़र्ज़ कीजिए अगर इंसान बिल्कुल ही सुकून से हो। माल, दौलत और हर लज़्ज़त के हासिल करने का इन्तिज़ाम उसके पास हो फिर भी वह पूरी तरह सुकून से नहीं हो सकता, क्योंकि भूख के वक़्त उसे भूख से और प्यास के वक़्त प्यास से वास्ता पड़ेगा और खाने पीने के बाद फिर जिस्मानी गंदगी (पैशाब, पाख़ाना) को निकालने की फ़िक्र होगी और उसके तक़ाज़े के वक़्त बेचैनी बर्दाश्त करनी होगी और यह गंदगियाँ अन्दर जाकर रूक जायें तो फिर

उनको निकालने के लिए क्या क्या तद्बीरें करनी पड़ेंगी, मतलब यह कि सब कुछ होने के बावुजूद क़ुद्रती ज़रूरतों से इंसान मरते दम तक छुटकारा नहीं पा सकता।

इसके बर-ख़िलाफ़ जन्नत अस्ल सुकून की जगह है जहाँ हर तरह की मन चाही नेअ्मतें हासिल होंगी और खाने पीने के बाद ही एक ख़ुश्बूदार डकार से सारा खाया पिया हज़्म हो जाएगा, न बेचैनी होगी न तक्लीफ़ और न बद्बू का एहसास होगा। इसलिए उस अ़ज़ीम सुकून की जगह को ही अस्ल हासिल करने का मक़्सद बनाना चाहिए और दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत में पड़कर जन्नत से ग़ाफ़िल न होना चाहिए।

दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है

इसीलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ

(مسلم شریف ۲/۴۰۷)

दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है।

इसलिए कि मोमिन का अस्ल ठिकाना जन्नत है जो हक़ीक़त में आफ़ियत की जगह है, उस अस्ल ठिकाने के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी हक़ीक़त में क़ैदख़ाने से कम नहीं है, जहां इंसान तरह तरह की क़ैदों का पाबन्द है और उसके बर-ख़िलाफ़ काफ़िर को आख़िरत में सख़्त तरीन अ़ज़ाब का सामना करना है इसलिए वहां के अ़ज़ाब के मुक़ाबले में जब तक उसकी जान में जान है और जब तक उसे दुनिया में अ़ज़ाब से मोह्लत मिली हुई है वह उसके लिए जन्नत के दर्जे में है।

दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की जड़ है

दुनिया से ऐसा ताल्लुक़ जो आख़िरत को भुला दे यही तमाम गुनाहों और मआ़सी की जड़ और बुनियाद है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ

(شعب الایمان ۷/۳۳۸)

दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की बुनियाद है।

ग़ौर करने से यह बात आसानी से समझ में आ जाती है कि दुनिया में जो

शख़्स भी गुनाह करता है उसकी असल वजह दुनिया से ताल्लुक़ ही होता है, जैसे किसी का माल नाजाइज़ तरीक़े पर हासिल करे, या लह्व व लइब (खेल-कूद) में मुब्तला हो या बद्कारी करे हरामकारी के रास्ते पर चले ये सब चीज़ें दुनिया से मुहब्बत ही की वजह से सामने आती हैं। सय्यिदना ईसा अ़लैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया:

"दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की जड़ है और माल (मदावा यानी इलाज तो क्या होता) वह ख़ुद ही मरीज़ है"। आपसे पूछा गया कि माल का मरज़ क्या है? तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि जब माल आता है तो इंसान तकब्बुर व गुरूर और फ़ख़्र व मुबाहात (शेख़ी) से बहुत कम मह्फ़ूज़ रह पाता है और अगर मान लें कि इन बातों से मह्फ़ूज़ भी रह जाये फिर भी उस माल के रख रखाव की फ़िक्र इंसान को अल्लाह तआ़ला की याद से मह्रूम कर ही देती है।(शुअ़बुल ईमान 7/238)

इसी वजह से औलिया अल्लाह की शान यह होती है कि उनका दिल दुनिया की मुहब्बत से ख़ाली होता है। एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है:

إِذَا أَحَبَّ اللّٰهُ عَبْداً حَمَاهُ مِنَ الدُّنْيَا كَمَا يَحْمِيْ أَحَدُكُمْ مَرِيْضَهُ الْمَاءَ.

(شعب الايمان ٧/٢٣٨)

जब अल्लाह तआ़ला अपने किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसको दुनिया से इस तरह बचाता है जैसे कोई शख़्स अपने मरीज़ को (सर्दी की बीमारी के वक़्त) पानी से बचाता है।

इसलिए कि दुनिया से ताल्लुक़ अल्लाह तआ़ला से क़रीब होने में सबसे बड़ी रूकावट है। इसी वजह से अल्लाह तआ़ला अपने ख़ास बन्दों को दुनिया की मुहब्बत से पूरी तरह हिफ़ाज़त में रखता है।

दुनिया से तअ़ल्लुक़ आख़िरत के लिए नुक़्सान देने वाला है

दुनिया से तअ़ल्लुक़ और उसकी लज़्ज़तों में मश्ग़ूल होना ज़ाहिर में तो बहुत अच्छा मालूम होता है और बहुत से लोग बस दुनियवी लज़्ज़तों ही को अपना मक़्सद बना लेते हैं लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि दुनिया में ये वक़्ती लज़्ज़तें

आख़िरत की हमेशा की ज़िन्दगी की हमेशा की नेअ्मतों में कमी और नुक़्सान का सबब है जो हक़ीक़त में अ़ज़ीम तरीन नुक़्सान है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ اَحَبَّ دُنْيَاهُ اَضَرَّ بِاٰخِرَتِهٖ وَمَنْ اَحَبَّ اٰخِرَتَهٗ اَضَرَّ بِدُنْيَاهُ فَاٰثِرُوْا مَايَبْقٰى عَلٰى مَا يَفْنٰى.

(البیهقی فی شعب الایمان ۲۸۸/۷، مجمع الزوائد ۲۴۹/۱۰)

जो शख़्स अपनी दुनिया में जी लगाये वह अपनी आख़िरत का नुक़्सान करेगा और जो शख़्स अपनी आख़िरत से मुहब्बत रखे (और उसके बारे में फ़िक्रमंद रहे) तो वह सिर्फ़ अपनी दुनिया का (वक़्ती) नुक़्सान करेगा, इसलिए बाक़ी रहने वाली आख़िरत की ज़िन्दगी को दुनिया की ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी पर तर्जीह दिया करो।

और एक रिवायत में इर्शाद हैः

حُلْوَةُ الدُّنْيَا مُرَّةُ الْاٰخِرَةِ وَمُرَّةُ الدُّنْيَا حُلْوَةُ الْاٰخِرَةِ.

(شعب الایمان ۲۸۸/۷، مجمع الزوائد ۲۴۹/۱۰)

दुनिया की मीठी चीज़ आख़िरत में कड़वाहट का सबब है और दुनिया की कड़वी ज़िन्दगी आख़िरत में मिठास का सबब है।

चुनाँचे कितने ऐसे लोग हैं जो दुनिया में निहायत इ़ज़्ज़त ऐश और आराम और राहत में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। लेकिन यही ऐश से भरपूर ग़फ़्लत वाली ज़िन्दगी उनके लिए आख़िरत में सख़्त तरीन अ़ज़ाब का सबब बन जाएगी और इसी तरह कितने अल्लाह के बन्दे ऐसे हैं जिनकी ज़िन्दगी दुनिया में निहायत तंगी और परेशानी के साथ गुज़रती है लेकिन उन आज़माइशों पर सब्र की बदौलत उनका मुक़ाम आख़िरत में इस क़द्र बुलन्द हो जाएगा जिसके बारे में दुनिया में सोचा भी नहीं जा सकता। इसलिए हमेशा आख़िरत बनाने की फ़िक्र करना ज़रूरी है। एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः "जिस शख़्स के दिल में दुनिया की मुहब्बत घर कर जाये तो तीन बातें उसको चिपट जाती हैं 1. ऐसी बद्बख़्ती जिसकी मुसीबत कभी ख़त्म नहीं होती, 2. ऐसी हिर्स जिससे कभी पेट नहीं भरता, और 3. ऐसी ख़्वाहिश जो कभी पूरी नहीं होती। तो दुनिया (किसी के लिए) तलबगार है और (कोई)

उसका तलबगार है, इसलिए जो शख़्स दुनिया के पीछे पड़ता है तो आख़िरत उसका पीछा पकड़ लेती है यहां तक कि उसकी मौत आ जाती है और (इसके बर-ख़िलाफ़) जो आख़िरत का चाहने वाला होता है तो दुनिया उसका पीछा करती है यहां तक कि वह अपने मुक़द्दर का रिज़्क़ हासिल कर लेता है।

(रवाहु तबरानी ब-असनादे हसन, अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 4/85)

दुनिया की मुहब्बत दिली बे-इत्मीनानी का सबब है

दुनिया से ताल्लुक़ जब बढ़ता है तो साथ ही में दिली बे-इत्मीनानी भी बढ़ती जाती है और सारे असबाब और ज़रिये हासिल होने के बावुजूद इंसान सुकून से महरूम रहता है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنْ كَانَتِ الدُّنْيَا هَمَّهُ فَرَّقَ اللّٰهُ عَلَيْهِ أَمْرَهُ وَجَعَلَ فَقْرَهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ، وَلَمْ يَأْتِهِ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا مَا كُتِبَ لَهُ وَمَنْ كَانَتِ الْاٰخِرَةُ نِيَّتَهُ جَعَلَ اللّٰهُ غِنَاهُ فِيْ قَلْبِهٖ وَجَمَعَ لَهٗ أَمْرَهُ وَأَتَتْهُ الدُّنْيَا وَهِيَ رَاغِمَةٌ

(شعب الايمان ٧/٢٨٨، ابن ماجه حديث ٤١٠٥، الترغيب والترهيب ٤/٥٦)

दुनिया जिस शख़्स का मक़्सद बन जाये तो अल्लाह तआला उसके मुआमलात परागन्दा (ख़राब) फ़रमा देता है और मोहताजगी उसकी आँखों के सामने कर देता है और उसे दुनिया में सिर्फ़ इसी क़द्र मिलता है जितना उसके लिए मुक़द्दर है और (इसके बर-ख़िलाफ़) आख़िरत जिसका नस्बुल ऐन होती है तो अल्लाह तआला उसके दिल में ग़िना डाल देता है और उसके मुआमलात को जमा फ़रमा देता है और दुनिया उसके पास ज़लील होकर आती है।

और एक हदीस-ए-क़ुद्सी में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया:

اِبْنَ اٰدَمَ: تَفَرَّغْ لِعِبَادَتِيْ أَمْلَأْ صَدْرَكَ غِنًى وَّأَسُدَّ فَقْرَكَ وَإِلَّا تَفْعَلْ مَلَأْتُ صَدْرَكَ شُغْلًا وَّلَمْ أَسُدَّ فَقْرَكَ.

ऐ इंसान! मेरी बन्दगी के लिए फ़ारिग़ हो जा, तो मैं तेरे सीने को ग़िना से भर दूंगा और तेरी ज़रूरत पूरी कर दूंगा और अगर तूने ऐसा नहीं किया तो मैं तेरे सीने को मश्ग़ूलियत से भर दूंगा

और तेरी मोहताजगी दूर नहीं करूंगा। (شعب الايمان ٧/٢٨٩)

इसलिए दिल के इत्मीनान को हासिल करने के लिए भी ज़रूरी है कि दुनिया से ताल्लुक़ ऐतिदाल की हद में रहे उससे आगे न बढ़े और अगर ताल्लुक़ हद से बढ़ जाएगा तो फिर महरूमी ही महरूमी है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَرْبَعَةٌ مِّنَ الشَّقَاءِ: جُمُوْدُ الْعَيْنِ، وَقَسْوَةُ الْقَلْبِ وَطُوْلُ الْاَمَلِ وَالْحِرْصُ عَلَى الدُّنْيَا. (مجمع الزوائد عن البزار ١٠/٢٢٦)

चार चीज़ें बद्-बख़्ती की अलामत हैं। 1. आँख से आँसू न निकलना, 2. दिल का सख़्त होना, 3. लम्बे मन्सूबे बांधना और दुनिया पर हरीस होना।

शौक़ीन मिज़ाज लोग अल्लाह तआला को पसन्द नहीं

शौक़ीन मिज़ाज और फ़ैशन पसन्द करने वाले लोग अल्लाह की नज़र में पसन्दीदा नहीं हैं। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे लोगों को उम्मत के बद्-तरीन लोगों में शुमार फ़रमाया है। इर्शादे नबवी है:

شِرَارُ اُمَّتِي الَّذِيْنَ وُلِدُوْا فِي النَّعِيْمِ وَغُذُوْا بِهٖ، هِمَّتُهُمْ اَلْوَانُ الطَّعَامِ وَاَلْوَانُ الثِّيَابِ يَتَشَدَّقُوْنَ فِي الْكَلَامِ. (كتاب الزهد لابن المبارك ٢٦٣)

मेरी उम्मत के बद्-तरीन लोग वे हैं जो ऐश और इश्रत में पैदा हुए और उसी में पले और बढ़े, जिनको हर वक़्त बस अच्छे अच्छे खानों और तरह तरह के कपड़े पहनने की फ़िक्र लगी रहती है और जो (तकब्बुर की वजह से) मिठार मिठार कर बातचीत करते हैं।

सय्यिदना हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है कि तुम (ज़ैब व ज़ीनत के लिए) बार बार ग़ुस्लख़ानों के चक्कर लगाने और बालों की बार-बार सफ़ाई से बचते रहो और उम्दा उम्दा क़ालीनों के इस्तिमाल से भी बचो, इसलिए कि अल्लाह के ख़ास बन्दे ऐश और आराम को पसन्द नहीं करते। (किताबुज़् ज़ुहद 263)

दुनिया से बे-रग़्बती सुकून का सबब है

दुनिया में रहकर दुनिया में मदहोश न रहना इंसान के लिए सबसे बड़ा सुकून का ज़रिया है ऐसा आदमी ज़ाहिरी तौर पर कितना ही ख़स्ता हाल क्यों न हो मगर उसे अन्दरूनी तौर पर वह दिली इत्मीनान नसीब होता है जो बड़े बड़े सरमाया दारों को भी हासिल नहीं होता, इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَلزُّهْدُ فِی الدُّنْيَا يُرِيحُ الْقَلْبَ وَالْجَسَدَ.

दुनिया से बे-रग़्बती दिल और बदन दोनों के लिए राहत बख़्श है।

(كتاب الزهد ٢١٠ مجمع الزوائد ١٠/٢٨٦)

दुनिया में सबसे बड़ी दौलत सुकून और आराम है। अगर सुकून न हो तो सब दौलतें बेकार हैं और यह सुकून जभी मिल सकता है जब हम दुनिया से सिर्फ़ ज़रूरत के बक़द्र और ज़रूरत के लिए ताल्लुक़ रखें और अल्लाह तआला की नेअ्मतों का शुक्र गुज़ार रहकर उसकी रज़ा पर राज़ी रहें।

हज़रत लुक़्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इर्शाद फ़रमाया दीन पर सबसे ज़्यादा मददगार सिफ़त दुनिया से बे-रग़्बती है क्योंकि जो शख़्स दुनिया से बे-रग़्बत होता है वह ख़ालिस रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी के लिए अमल करता है और जो शख़्स इख़्लास से अमल करे उसको अल्लाह तआला अज्र व सवाब से सरफ़राज़ फ़रमाता है। (किताबुज़् ज़ुहद 274) यह सिफ़ते ज़ुहद इंसानों को लोगों का महबूब बना देती है और ऐसे शख़्स को ही क़ुबूलियत इन्दल्लाह और इन्दन्नास (अल्लाह और बन्दों में मक़्बूल होना) की दौलत नसीब होती है।

क़नाअत दाइमी दौलत है

ज़्यादा की फ़िक्र करने के बजाये जितना ख़ुदा ने दिया है उसपर राज़ी रहना क़नाअत कहलाता है और जिस शख़्स को क़नाअत की दौलत नसीब हो जाये वह हर हाल में मगन रहता है, फिर वह कभी एहसासे कमतरी में मुब्तला नहीं होता और न दूसरे की हिर्स करता है। एक हदीस में इर्शाद नबवी हैः

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ اَسْلَمَ وَرُزِقَ كَفَافًا وَقَنَّعَهُ اللّٰهُ بِمَا اٰتَاهُ.

(जिस शख़्स को तीन सिफ़ात हासिल हो गईं) वह फ़लाह पा गया 1. जो इस्लाम से मुशर्रफ़ हो, 2. जिसे ज़रूरत

के बक़द्र रोज़ी मिलती हो, और 3. अल्लाह ने उसे अपने दिए हुए रिज़्क़ पर क़नाअ़त से नवाज़ दिया हो।

(شعب الایمان ۲۹۰/۷)

एक और हदीस में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

عَلَيْكُمْ بِالْقَنَاعَةِ فَإِنَّ الْقَنَاعَةَ مَالٌ لَّايَنْفَدُ. (مجمع الزوائد ۲۵۶/۱۰)

तुम क़नाअ़त को इख़्तियार करो, इसलिए कि क़नाअ़त ऐसा माल है जो कभी ख़त्म नहीं होता।

आदमी सबसे ज़्यादा अपनी औलाद की रोज़ी के बारे में फ़िक्रमंद रहता है और उसके लिए पहले ही से इन्तिज़ाम करके जाता है, दुआएं करता है, मेहनत और भाग दौड़ करता है। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी इसके बारे में फ़िक्र फ़रमाई, बिलाशुब्ह अगर आप यह दुआ फ़रमा देते कि आपके ख़ानदान का हर आदमी दुनिया की हर दौलत से बे-हिसाब नवाज़ा जाये तो यक़ीनन वह दुआ क़ुबूलियत का शरफ़ हासिल कर जाती लेकिन आप ने अपने ख़ानदान वालों के लिए कस़रते माल और दौलत की दुआ नहीं फ़रमाई, बल्कि आपने फ़रमायाः

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ اٰلِ مُحَمَّدٍ قُوْتاً

(مسلم ۴۰۹/۲، شعب الایمان ۲۹۱/۷)

ऐ अल्लाह! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के ख़ानदान वालों की रोज़ी क़ूत (बराबर सराबर) मुक़र्रर फ़रमा दे।

यानी न इतनी कम कि मख़्लूक़ के सामने ज़िल्लत का सबब हो और न इतनी ज़्यादा हो कि आख़िरत को भुला दे। आपने यह भी इर्शाद फ़रमाया कि "क़ियामत के दिन मालदार और ग़रीब सबको यही हस़रत होगी कि उन्हें दुनिया में बस बराबर सराबर रोज़ी मिली होती"। (अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब 4/81)

और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शादे आ़ली हैः

إِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ يَبْتَلِي عَبْدَهُ بِمَآ أَعْطَاهُ فَمَنْ رَّضِيَ بِمَاقَسَمَ اللّٰهُ لَهُ بَارَكَ اللّٰهُ فِيهِ وَوَسَّعَهُ وَمَنْ لَّمْ يَرْضَ لَمْ يُبَارَكْ لَهُ.

अल्लाह तआ़ला अपने दिए हुए माल के ज़रिये अपने बन्दे को आज़माता है, तो जो शख़्स अल्लाह की तक़्सीम पर राज़ी रहे अल्लाह तआ़ला उसे बरकत से नवाज़ता है और उसको वुस्अ़त (गुन्जाइश) अ़ता फ़रमाता है और जो

(مجمع الزوائد ۱۰/۲۵۷)

उस पर राज़ी न रहे (बल्कि ज़्यादा की चाहत करे) तो उसको बरकत से महरूमी रहती है।

मतलब यह कि क़नाअत और इस्तिग़ना इन्तिहाई सुकून और इज़्ज़त व शरफ़ की चीज़ है।

एक मर्तबा हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मते अक़्दस में हाज़िर हुए और फ़रमायाः

يَا مُحَمَّدُ اِعِشْ مَاشِئْتَ فَإِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاعْمَلْ مَاشِئْتَ فَإِنَّكَ مَجْزِيٌّ بِهٖ، وَأَحْبِبْ مَنْ شِئْتَ فَإِنَّكَ مُفَارِقُهٗ وَاعْلَمْ أَنَّ شَرَفَ الْمُؤْمِنِ صَلٰوتُهٗ بِاللَّيْلِ وَعِزَّهٗ اسْتِغْنَائُهٗ عَنِ النَّاسِ.

(الطبرانی باسناد حسن)

مجمع الزوائد ۱۰/۲۱٦

ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)! आप जितना चाहें रहें (बहरहाल) एक दिन वफ़ात पानी है और आप जो चाहें आमाल करें उनका बदला आपको मिल कर रहना है और आप जिस से चाहें (दुनिया में) ताल्लुक़ रखें उसे (बहरहाल) छोड़कर जाना है और अच्छी तरह मालूम हो कि मोमिन के लिए शरफ़ की बात उसका रात में नमाज़ पढ़ना है और मोमिन की असल इज़्ज़त की चीज़ उसका लोगों से मुस्तग़्नी रहना है।

दुनिया में मुसाफ़िर की तरह रहो

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेरे बदन का कुछ हिस्सा हाथ में पकड़कर इर्शाद फ़रमायाः

كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيْبٌ.

(بخاری شریف ۲/۹٤۹)

तुम दुनिया में इस तरह रहो जैसे कि तुम मुसाफ़िर हो।

यानी जिस तरह मुसाफ़िर रास्ते में ठहरने की जगह से दिल नहीं लगाता बल्कि अपनी मंज़िले मक़्सूद तक पहुंचने और वहां के सुकून के लिए हर वक़्त फ़िक्रमंद रहता है इसी तरह मोमिन को अपने "आख़िरत के मुसाफ़िर" होने का

तसव्वुर हर वक़्त दिमाग़ में रखना चाहिए। यह ऐसी अज़ीम नसीहत है जो तमाम नसीहतों का निचोड़ है और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुक़द्दस ज़िन्दगी इसी हिदायत की अ़मली तफ़्सीर थी।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शान

ख़ादिमे रसूल हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रहने की जगह पर हाज़िर हुआ (जिसमें कोई आराम की चीज़ न थी) और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक खुर्री चटाई पर आराम फ़रमा थे जिसकी सख़्ती के निशानात आपके मुबारक बदन पर साफ़ नज़र आ रहे थे। मैं यह मंज़र देखकर रो दिया, तो आप ने फ़रमायाः मियाँ अ़ब्दुल्लाह! क्यों रोते हो? तो मैंने अ़र्ज़ किया किः ऐ अल्लाह के रसूल! यह (दुनिया के बादशाह) क़ैसर व किस्रा तो नर्म और नाज़ुक रेशम के क़ालीन पर लेटें और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (दोनों जहानों के सरदार होने के बावुजूद) इस खुर्री चटाई पर तशरीफ़ फ़रमा हैं। (यह देखकर मुझे रोना आ रहा है) इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

فَلَا تَبْكِ يَا عَبْدَ اللّٰهِ فَإِنَّ لَهُمُ الدُّنْيَا وَلَنَا الْاٰخِرَةَ وَمَا أَنَا وَ الدُّنْيَا، وَمَا مَثَلِيْ وَمَثَلُ الدُّنْيَآ إِلَّا كَمَثَلِ رَاكِبٍ نَّزَلَ تَحْتَ شَجَرَةٍ ثُمَّ سَارَ وَ تَرَكَهَا.

(الترغيب و الترهيب ٤/٩٨)

अ़ब्दुल्लाह मत रोओ, क्योंकि उनके लिए दुनिया ही सब कुछ है और हमारे लिए आख़िरत (की नेअ़्मतें हैं) और मुझे दुनिया से क्या लेना देना, मेरी और दुनिया की मिसाल तो ऐसी है जैसे कोई मुसाफ़िर सवार (आराम के लिए) किसी पेड़ के नीचे उतरकर आराम करे और फिर कुछ देर बाद उसे छोड़कर चलता बने।

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मत की राहनुमाई और हिदायत के लिए इख़्तियारी तौर पर फ़क्र का रास्ता इख़्तियार किया और अपने "उस्वा-ए-मुबारक यानी बेहतरीन तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी" से दुनिया से बे-रग़बत रहने की तल्क़ीन फ़रमाई, जिसका खुलासा यह है कि आदमी जिस हाल में भी रहे आख़िरत से ग़ाफ़िल न रहे और दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत और लह्व व लइ़ब में मुब्तला होकर अपनी आख़िरत का नुक़्सान न करे। बल्कि दुनिया में मिलने वाले फ़ुर्सत के लम्हात को आख़िरत की कामियाबी के हुसूल का ज़रिया बनाने

की भरपूर कोशिश बराबर करता रहे।

सेहत और वक़्त की ना-क़द्री

आम तौर पर इंसान अल्लाह तआला की दो अ़ज़ीम नेअ़्मतों सेहत और वक़्त की निहायत ना-क़द्री करता है और नेअ़्मतों से उसे जितना फ़ायदा उठाना चाहिए और आख़िरत में उनके ज़रिये जितनी कामियाबी हासिल करनी चाहिए उसमें सख़्त ग़फ़्लत और सुस्ती से काम लेता है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद-ए-आली है:

نِعْمَتَانِ مَغْبُوْنٌ فِيْهِمَا كَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ: الصِّحَّةُ وَالْفَرَاغُ.

(بخاری شریف رقم: ٦١٤٢)

दो नेअ़्मतें ऐसी हैं जिनमें बहुत से इंसान नुक़्सान में हैं: 1. सेहत व सुकून, 2. फ़ुर्सत के लम्हात।

इस हदीस की शरह फ़रमाते हुए मुहद्दिस इब्ने बत्ताल रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि सेहत और फ़ुर्सत के लम्हात अल्लाह तआला की अ़ज़ीम नेअ़्मतें हैं उनकी क़द्रदानी यह है कि अल्लाह तआला की इताअ़त की जाये और उसकी मना की हुई चीज़ों से परहेज़ किया जाये, अगर उसमें कोताही हुई (जिसमें आम लोग मुब्तला हैं) तो वह शख़्स आख़िरत के नुक़्सान में होगा।

और अ़ल्लामा इब्ने जोज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि कभी इंसान सेहतमंद होता है मगर उसे फ़ुर्सत नहीं मिलती और कभी फ़ुर्सत में होता है मगर सेहत साथ नहीं देती और जब ये दोनों चीज़ें जमा हो जायें तो अब उस पर सुस्ती छा जाती है इसलिए जो शख़्स सुस्ती को दूर करके उन नेअ़्मतों को इबादत और इताअ़त में लगाये वह तो फ़ायदे और नफ़े में रहेगा और जो सुस्ती में पड़कर वक़्त बेकार करेगा उसके लिए नुक़्सान ही नुक़्सान है।

और अ़ल्लामा तय्यिबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि: यूं समझ लीजिए कि सेहत और वक़्त इंसानी ज़िन्दगी की असल दौलत है। अब यह इंसान की समझ है कि वे उन्हें किसके हाथ बेचता है। अगर अल्लाह तआला के काम में लगाये तो जैसे कि अल्लाह के हाथ बेचकर उसका यक़ीनी बदला हासिल करके कामियाब होगा और अगर वक़्ती लज़्ज़तों या सुस्ती में उन्हें ख़त्म कर देगा तो ज़ाहिर है कि फिर उसको हसरत और अफ़्सोस के अ़लावा कुछ हाथ न आयेगा।

(फ़तहुल बारी 14/276-277)

हर वक़्त मुस्तइद (तैयार) रहिए!

इसलिए अक़्लमंदी का तक़ाज़ा यह है कि आदमी हर वक़्त आख़िरत के लिए तैयार रहे और आज का काम कल पर न टाले, बल्कि ज़िन्दगी में जितनी भी नेकियाँ समेटी जा सकें कम से कम वक़्त में समेट ले क्योंकि पता नहीं कि फिर यह मौक़ा हाथ आये कि न आये। हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फ़रमाया करते थेः "जब तू शाम में हो तो सुब्ह का इन्तिज़ार मत कर और जब तू सुब्ह में हो तो शाम का इन्तिज़ार न कर और सेहत के ज़माने में बीमारी के वक़्त का भी काम कर ले (यानी सेहत के वक़्त आमाल का ज़ख़ीरा जमा कर ले जो बीमारी में काम आये) और ज़िन्दगी में मरने के बाद के लिए ज़ख़ीरा इकट्ठा कर ले। (बुख़ारी शरीफ़ 4616)

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा का यह मक़ौला आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इस इर्शाद से मिलता है, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को नसीहत करते हुए फ़रमायाः

اِغْتَنِمْ خَمْساً قَبْلَ خَمْسٍ: شَبَابَکَ قَبْلَ هَرَمِکَ، وَصِحَّتَکَ قَبْلَ سُقْمِکَ، وَغِنَاکَ قَبْلَ فَقْرِکَ، وَفَرَاغَکَ قَبْلَ شُغْلِکَ وَحَیَاتَکَ قَبْلَ مَوْتِکَ. (فتح الباری ۱۴/۲۸۲)

पाँच बातों को पाँच बातों से पहले ग़नीमत समझो, जवानी को बुढ़ापे से पहले, सेहत को बीमारी से पहले, मालदारी को फ़क्र व फ़ाक़े से पहले, फ़ुर्सत के लम्हात को मश्ग़ूलियत से और ज़िन्दगी को मौत से पहले।

इस हदीस में इन पाँच अस्बाब को ब्यान किया गया है जिनमें मद्होश होकर इंसान आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है, तो नबी-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ये चीज़ें सिर्फ़ आ़रज़ी हैं, कुछ पता नहीं कब उनका तसलसुल ख़त्म हो जाये और फिर बाद में हसरत के सिवा कुछ हाथ न आये, लोग आ़म तौर पर जवानी के ज़माने को खेलकूद और तफ़रीहात में ख़त्म कर देते हैं हालांकि यह इतना क़ीमती ज़माना है कि इसमें इ़बादत का सवाब बुढ़ापे की इ़बादत से कहीं ज़्यादा है। एक हदीस-ए-क़ुद्सी में है कि अल्लाह तआ़ला इ़बादत गुज़ार मुत्तक़ी जवान से ख़िताब करके फ़रमाता है कि "तेरा मुक़ाम मेरी नज़र में कुछ फ़रिश्तों के बराबर है"। (किताबुज़् ज़ुहद 117)

और एक रिवायत में है कि "जो नौजवान दुनिया की लज़्ज़तों और लह्व व लइब (बेकार कामों) को सिर्फ़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए छोड़ दे तो अल्लाह तआला उसको "72 सिद्दीक़ीन" के बराबर अज्र अता फ़रमाता है।

(किताबुज़् ज़ुह्द 117)

और पहले यह रिवायत गुज़र चुकी है कि इबादत गुज़ार जवान को मैदान-ए-मह्शर में अर्शे ख़ुदावन्दी का साया अता किया जाएगा।

ग़रज़ यह निहायत क़ीमती ज़माना आम तौर पर ग़फ़्लत में ख़त्म कर दिया जाता है और उस नुक़्सान की परवाह नहीं की जाती, यही हाल सेहत, मालदारी और ऐश व आराम का है। ज़रूरत है कि हम ग़ाफ़िल न रहें बल्कि पूरी तरह तैयार रहकर आख़िरत की तैयारी करते रहें। अल्लाह तआला सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल व करम से हमें आख़िरत की फ़िक्र की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाएं। आमीन

जन्नत तक जाने का रास्ता

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि से मुरसलन रिवायत है कि एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क्या तुम में से हर शख़्स जन्नत में दाख़िल होना चाहता है? हाज़िरीन ने अर्ज़ किया कि "जी हाँ! या रसूलल्लाह!" तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

فَاقْصِرُوْا مِنَ الْاَمَلِ، وَثَبِّتُوْا اٰجَالَكُمْ بَيْنَ اَبْصَارِكُمْ وَاسْتَحْيُوْا مِنَ اللّٰهِ حَقَّ الْحَيَاءِ.

तो अपनी आरज़ूएं मुख़्तसर करो और अपनी मौत हर वक़्त अपनी आँखों के सामने रखो और अल्लाह तआला से इस तरह हया करो जैसे उससे हया करने का हक़ है।

हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! हम सब अल्लाह तआला से हया करते हैं, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

لَيْسَ كَذٰلِكَ الْحَيَاءُ مِنَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ اللّٰهِ اَنْ لَّا تَنْسَوْا

अल्लाह तआला से हया का यह मतलब नहीं है, बल्कि अल्लाह से हया यह है कि

الْمَقَابِرَ وَالْبِلٰی وَاَنْ لَا تَنْسَوُا الرَّأْسَ وَمَا وَعٰی وَاَنْ لَّاتَنْسَوُا الْجَوْفَ وَمَا احْتَوٰی وَمَنْ يَّشْتَهِيْ كَرَامَةَ الْاٰخِرَةِ يَدَعُ زِيْنَةَ الدُّنْيَا، هُنَالِكَ اسْتَحْيَ الْعَبْدُ مِنَ اللّٰهِ وَهُنَالِكَ اَصَابَ وِلَايَةَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ. (كتاب الزهد ١٠٧)

तुम क़ब्रिस्तानों और मरने के बाद की बोसीदगी को मत भूलो और सर और सर से जुड़ी चीज़ों को मत भूलो और पेट और उसमें जाने वाली चीज़ों से ग़ाफ़िल मत हो और जो शख़्स आख़िरत की इज़्ज़त चाहता हो वह दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत को छोड़ दे, (जब आदमी ऐसा करेगा) तो वह अल्लाह तआला से शर्माने वाला होगा और उस वक़्त वह अल्लाह तआला का तक़र्रुब और विलायत हासिल कर पायेगा।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह पाक इर्शादे आली हर मुसलमान को हर वक़्त पैश-ए-नज़र रखना चाहिए और उसका आपस में एक दूसरे से ज़िक्र भी करते रहना चाहिए, अल्लाह करे कि यह हिदायत हमारे दिलों की गहराई में उतर जाये और हमें ऐसे आमाल की तौफ़ीक़ नसीब हो जिससे हम दुनिया व आख़िरत में अपने ख़ालिक़ और मालिक के महबूब और मुक़र्रब बन जायें, उस क़ादिर-ए-मुतलक़ ज़ात से कुछ बईद नहीं कि ज़र्रे को आफ़ताब और तिनके को माहताब बना दे, न-अह्लों को अहलियत से नवाज़ दे और नालाइक़ों को लियाक़त अता कर दे, ख़ैर और तौफ़ीक़ सिर्फ़ उसी के इख़्तियार में है। हम उसी की ज़ात से दारैन की ख़ैर व आफ़ियत को मांगने वाले हैं। बेशक वही दुआओं का सुनने वाला और वही आजिज़ों को शरफ़-ए-क़ुबूलियत से नवाज़ने वाला है।

واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين وصلى الله تعالىٰ على خير خلقه سيدنا و مولانا محمد وعلى اله وصحبه اجمعين، برحمتك يا ارحم الراحمين.

كتبه احقر محمد سلمان منصور پوری غفرله ولوالديه

خادم الحديث النبوی الشريف

بالجامعة القاسمية، شاهی مراد آباد

١٤٢٣/٢/٢٣ھ

ماخذ و مراجع

मआख़ज़ व मराजेअ़

(इस किताब की तर्तीब व तालीफ़ में नीचे दी गई किताबों से मदद ली गई है)

1.	अल्-क़ुरआनुल करीम	तर्जुमाः हज़रत शैख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन देवबन्दी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	मज्मउ़ल मलिक, मदीना मुनव्वरा
2.	अल्-क़ुरआनुल करीम	तर्जुमाः हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि० दिल्ली-6
3.	सहीह बुख़ारी	अल्-इमाम अबू मुहम्मद बिन इस्माईल बिन बरदुज़्बह बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 226 हिज्री)	मक्तबा अल्-इस्लाह लाल बाग़, मुरादाबाद
4.	सहीह मुस्लिम	अल्-इमाम अबुल हुसैन मुस्लिम बिन अल्-हज्जाज अल्-क़ुशैरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 261 हिज्री)	मुख़्तार एन्ड कम्पनी, देवबन्द
5.	जामेअ़ तिर्मिज़ी	अल्-इमाम अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा बिन सूरत तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	मुख़्तार एन्ड कम्पनी, देवबन्द
6.	सुनन अबी दाऊद	अल्-इमाम अबू दाऊद सुलैमान बिन अल्-अशुअ़स रहमतुल्लाहि अ़लैहि सजिस्तानी (वफ़ात 275 हिज्री)	अशरफ़ी बुक डिपो, देवबन्द मुरक्क़मः दारूल फ़िक्र, बैरूत
7.	सुनन निसाई	अल्-इमाम अबू अ़ब्दुर रहमान अहमद बिन शुऐब अन्-निसाई रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 303 हिज्री)	मक्तबा थानवी, देवबन्द, दारूल फ़िक्र, बैरूत
8.	सुनन इब्ने माजा	अल्-इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद अल्-क़ज़वीनी (वफ़ात 275 हिज्री)	अशरफ़ी बुक डिपो, देवबन्द दारूल फ़िक्र, बैरूत
9.	मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल (तह्क़ीक़ः अहमद मुहम्मद शाकिर)	अल्-इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 241 हिज्री)	दारूल हदीस, अल्-क़ाहिरा
10.	अल्-मुअ़्जमुल औसत्	अल्-अ़ल्लामा अबुल क़ासिम सुलैमान बिन अहमद अत्-तबरानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 360 हिज्री)	मक्तबतुल मआरिफ़, अर्-रियाज़
11.	किताबुद दुआ़	अल्-अ़ल्लामा अबुल क़ासिम सुलैमान बिन अहमद अत्-तबरानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 360 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
12.	मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा	अल्-अ़ल्लामा अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्ने अबी शैबा अल्-कूफ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 225 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत

13.	शुअ़बुल ईमान	अल्-इमाम अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बैहक़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 458 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
14.	मिश्कातुल मसाबीह	अल्-इमाम वलिउद्दीन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अल्-ख़तीब अत्-तबरेज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	अशरफ़ी बुक डिपो, देवबन्द
15.	मकारिमुल अख़्लाक़	अल्-इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबी दुनिया रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 281 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
16.	मौसूअ़ह रसाइल इब्ने अबी दुनिया	अल्-इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबी दुनिया रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 281 हिज्री)	मुअस्ससतुल कुतुब अस्-सक़ाफ़िया, बैरूत
17.	किताब मुजाहिदायतः	अल्-इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबी दुनिया रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 281 हिज्री)	मुअस्ससतुल कुतुब अस्-सक़ाफ़िया, बैरूत
18.	सहीह इब्ने हब्बान	अल्-हाफ़िज़ मुहम्मद बिन हब्बान अबू हातिम अत्-तमीमी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 354 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
19.	मुसन्नफ़ अ़ब्दुर रज़्ज़ाक़	अल्-हाफ़िज़ अबू बक्र अ़ब्दुर रज़्ज़ाक़ बिन हुमाम अस्-सनुआनी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 211 हिज्री)	दारूल क़लम, बैरूत
20.	अल्-जामिउ अह्कामिल क़ुरआन	अल्-इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अल्-उन्दलुसी अल्-क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 668 हिज्री)	दारूल फ़िक्र, बैरूत
21.	तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर	अल्-अ़ल्लामा जलालुद्दीन अ़ब्दुर रहमान बिन अबी बक्र अस्-सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 911 हिज्री)	मत्बअ़ अमीरिया, मिस्र
22.	तफ़्सीर इब्ने कसीर (मुकम्मल)	हाफ़िज़ इमादुद्दीन इब्ने कसीर अद्-दमिश्क़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 774 हिज्री)	दारूस्सलाम, रियाज़
23.	तफ़्सीर-ए-ख़ाज़िन	अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम अल्-बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	दारूल मअ़रिफ़ह, बैरूत
24.	अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब	अल्-हाफ़िज़ ज़कीउद्दीन अ़ब्दुल अज़ीम बिन अ़ब्दुल क़वी अल्-मुन्ज़िरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 656 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
25.	अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब	अल्-इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन असअ़द याफ़अ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 768 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
26.	मज्मउ़ज़् ज़वाइद	अल्-हाफ़िज़ नूरूद्दीन अ़ली बिन अबी बक्र अल्-हैसमी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 807 हिज्री)	दारूल किताबुल अ़रबी, बैरूत

27.	नवादिरूल उसूल	अल्-अल्लामा अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अल्-हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 320 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
28.	इक्मालुल मुअ़ल्लिम	अल्-हाफ़िज़ अबुल फ़ज़्ल अयाज़ बिन मूसा बिन अयाज़ अल्-हैसबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 554 हिज्री)	दारूल वफ़ा, दमिश्क़
29.	अल्-मुफ़्हम (शरह मुस्लिम)	अल्-इमाम अबुल अ़ब्बास अहमद बिन उ़मर बिन इब्राहीम अल्-क़र्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 656 हिज्री)	दारू इब्ने कसीर, दमिश्क़
30.	अल्-मिन्हाज शरह मुस्लिम	अल्-अ़ल्लामा मुहीयुद्दीन बिन यहया अन्-नववी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 676 हिज्री)	बैतुल अफ़्कार अद्-दौलिया, रियाज़
31.	रियाज़ुस्सालिहीन	अल्-अ़ल्लामा मुहीयुद्दीन बिन यहया अन्-नववी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 676 हिज्री)	इदारा इशाअ़ते दीनियात, दिल्ली
32.	फ़तहुल बारी	अल्-अ़ल्लामा अल्-हाफ़िज़ इब्ने हजर अल्-अ़स्क़लानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 852 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
33.	दलाइलुन् नुबुव्वतः	अल्-अ़ल्लामा अबु बक्र अहमद बिन अल्-हुसैन अल्-बैहक़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 458 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
34.	तफ़्सीर रूहुल मआ़नी	अ़ल्लामा अबुल फ़ज़्ल सय्यिद महमूद आलूसी अल्-बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 1270 हिज्री)	मत्बअ़ मुनीरिया, मिस्र
35.	अर्-रौज़ुल अनफ़	अल्-अ़ल्लामा अबुल क़ासिम अ़ब्दुर रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह अस्-सुहैली रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 581 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
36.	अशरफ़ुल वसाइल	अल्-अ़ल्लामा शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल्-हैसमी रहमतुल्लाहि अ़लैहि. (वफ़ात 974 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
37.	फ़ैज़ुल क़दीर	अल्-अ़ल्लामा ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ब्दुर रऊफ़ मुहम्मद बिन अ़ली अल्-मनावी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 1031 हिज्री)	दारूल फ़िक्र, बैरूत
38.	कन्ज़ुल उ़म्माल	अल्-अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली अल्-मुत्तक़ी बिन हिसामुद्दीन अल्-हिन्दी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 975 हिज्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
39.	शमाइलुर्रसूल	अल्-हाफ़िज़ इब्ने कसीर अद्-दमिशक़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 774 हिज्री)	दारूल क़िब्ला, जद्दा

40.	किताबुज़् ज़ुहद	शैख़ुल इस्लाम अब्दुल्लाह बिन अल्-मुबारक अल्-मरवज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 181 हिज़्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
41.	किताबुज़् ज़वाजिर	अल्-इमाम अबुल अ़ब्बास अहमद बिन मुहम्मद बिन अ़ली बिन हजर अल्-मक्की रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 974 हिज़्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
42.	अल्-फ़तावा अल्-हदीसिया	अल्-इमाम अबुल अ़ब्बास अहमद बिन मुहम्मद बिन अ़ली बिन हजर अल्-मक्की रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 974 हिज़्री)	दारूल मारिफ़त, बैरूत
43.	मिरक़ातुल मफ़ातीह	अल्-अ़ल्लामा अ़ली बिन सुलतान अल्-क़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 1014 हिज़्री)	असहहुल मताबेअ़, बम्बई
44.	शरह फ़िक़्ह-ए-अकबर	अल्-अ़ल्लामा अ़ली बिन सुलतान अल्-क़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 1014 हिज़्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
45.	अल्-इसाबा	अल्-हाफ़िज़ इब्ने हजर अल्-अस्क़लानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 852 हिज़्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
46.	असदुल ग़ाबा	अल्-इमाम इज़्ज़ुद्दीद इब्ने अल्-असीर अल्-जज़्र रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 630 हिज़्री)	दारूल फ़िक्र, बैरूत
47.	शर्हुस् सुदूर	अल्-हाफ़िज़ जलालुद्दीन अस्-सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 911 हिज़्री)	दारूत तुरास, मदीना मुनव्वरा
48.	अत्-तज़्किरा फ़ी अह्वालिल् मौता वल्-आख़िरतः	अल्-हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अल्-क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (671 हिज़्री)	मक्तबा तिजारिया, मक्का मुअ़ज़्ज़मा
49.	अल्-बिदाया वन्-निहाया	अल्-हाफ़िज़ इब्ने कसीर अद्-दमिश्क़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 774 हिज़्री)	दारूल मअ़रिफ़त, बैरूत
50.	किताबुल आ़क़िबतः	अल्-हाफ़िज़ अब्दुल हक़ बिन अब्दुर रह्मान रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 582 हिज़्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
51.	उक़्दुल जमान	अल्-अ़ल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ़ अस्-सालिही अश्-शाफ़िई रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 942 हिज़्री)	मक्तबतुल ईमान, मदीना मुनव्वरा
52.	किताबुर रूह	अल्-इमाम मुहम्मद बिन अबी बक्र अद्दमिश्क़ी अल्-मारूफ़ बि-इब्ने अल्-क़य्यिम अल्-जोज़ियहः रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 751 हिज़्री)	दारूल किताब अल्-अ़रबी, बैरूत
53.	अदबुल ख़स्साफ़	अल्-इमाम अबू बक्र अल्-ख़स्साफ़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 261 हिज़्री)	दारूल कुतुब, अल्-इल्मियहः, बैरूत
54.	किताबुल फ़ितन	अल्-इमाम अबू अब्दुल्लाह नईम बिन हम्माद अल्-मरवज़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 229 हिज़्री)	मक्तबा तिजारिया, मक्का मुअ़ज़्ज़मा

55.	इह्या-उल-उलूम	हुज्जतुल इस्लाम इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि	नवल किशौर, लखनऊ
56.	फ़ैज़ुल बारी	अमालीः अल्-अ़ल्लामा मुहम्मद अनवर शाह कश्मीरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	मज्लिसे इल्मिया, ढाभेल
57.	तक्मिला फ़त्हुल मुल्हिम	अल्-अ़ल्लामा मुहम्मद तक़ी अल्-उसमानी	मक्तबा दारूल उलूम, कराची
58.	अद्दुर्रुल मुख़्तार	अश् शैख़ अलाउद्दीन अल्-हस्कफ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 1088 हिजूरी)	एच. एम. सईद कम्पनी, कराची
59.	रद्दुल मुह्तार	अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 1252 हिजूरी)	एच. एम. सईद कम्पनी, कराची दारूल फ़िक्र, बैरूत इहया उत्-तुरास अल्-अ़रबी, बैरूत
60.	शरह उक़ूद रस्मुल मुफ़्ती	अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 1252 हिजूरी)	मक्तबा अख़्तरी, सहारनपूर
61.	रसाइल इब्ने आ़बिदीन	अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी रहमतुल्लाहि अ़लैहि (वफ़ात 1252 हिजूरी)	सुहैल अकेडमी, लाहौर
62.	अल्-लिबास वज़्-ज़ीनत मिनस्सुन्नतिल मुतह्हरीत	मुहम्मद अ़ब्दुल हकीम अल्-क़ाज़ी	दारूल हदीस, अल्-क़ाहिरा
63.	मआ़रिफ़ुल क़ुरआन	हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहमतुल्लाहि अ़लैहि	फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि० दिल्ली-6
64.	मज़ाहिर-ए-हक़	अ़ल्लामा क़ुतुबुद्दीन शाहजहानपुरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	कुतुबख़ाना रहीमिया, देवबन्द
65.	मज़ाक़ुल आ़रिफ़ीन	मौलाना मुहम्मद अहसन सिद्दीक़ी नानौतवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	मत्बअ़ः तेज कुमार, लखनऊ
66.	मआ़रिफ़-ए-इम्दादिया	हाफ़िज़ मुहम्मद इक़बाल क़ुरैशी	मक्तबा इम्दादिया, मुलतान
67.	मआ़रिफ़ुल अकाबिर	हाफ़िज़ मुहम्मद इक़बाल क़ुरैशी	फ़रीद बुक डिपो, प्रा० लि०
68.	इस्लाहुर रूसूम	हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	फ़रीद बुक डिपो, प्रा० लि०, दिल्ली-6
69.	इम्दादुल फ़तावा	हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	इदारा तालीफ़ात-ए-औलिया, देवबन्द
70.	इत्रे हिदाया	अ़ल्लामा फ़तह मुहम्मद साहब लखनवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	कानपूर
71.	ग़ैर इस्लामी हुकूमत के शरअ़ी अह्काम	मुरत्तबः मुफ़्ती मुहम्मद ज़ैद साहब मज़ाहिरी	इदारा इफ़ादात अशरफ़िया, हथौरा बान्दा
72.	अहसनुल फ़तावा	हज़रत मौलाना मुफ़्ती रशीद अहमद साहब लुधियानवी	दारूल इशाअ़त, दिल्ली
73.	फ़तावा महमूदिया	हज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद हसन साहब गंगोही रहमतुल्लाहि अ़लैहि	मक्तबा महमूदिया, मेरठ
74.	बीस बड़े मुसलमान	मौलाना अब्दुर रशीद अरशद	मक्तबा रशीदिया लाहौर
75.	बीस मर्दाने हक़	मौलाना अब्दुर रशीद अरशद	मक्तबा रशीदिया लाहौर

76.	इस्लाही निसाब	हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	दारूल इशाअ़त, दिल्ली
77.	क़सदुस सबील	हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि	दारूल इशाअ़त, दिल्ली
78.	तारीख़ुल ख़ुलफ़ा (उर्दू तर्जुमा)	अ़ल्लामा जलालुद्दीन अस्-सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि	ज़करिय्या बुक डिपो, देवबन्द
79.	अन्नईमुल मुक़ीम	हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहमतुल्लाहि अ़लैहि	कुतुबख़ाना नईमया, देवबन्द
80.	मशाहीर के आख़िरी कलिमात	ज़ाहिद हुसैन अंजुम	ताज कम्पनी, दिल्ली